दुआओं की
मुसतनिद और भरोसेमन्द पुस्तक

हिस्ने हसीन

विल्कुल नई शैली और नए अन्दाज़ में क़ुरआनी वज़ीफ़ों, मस्नून दुआओं और इस्लामी अज़्कार पर आधारित पुस्तक, जिसमें सहूलत के लिए समस्त दुआएं हिन्दी रोमन में भी लिखी गई हैं।

दुआओं की मुस्तनद
और
भरोसेमन्द पुस्तक

हिस्ने हसीन

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

विषय सूची

क्या? | कहां?

नवीं फ़स्ल

दस्वीं फ़स्ल

ग्यारहवीं फ़स्ल

पहला बाब

दूसरा बाब

तीसरा बाब

चौथा बाब

पाँचवाँ बाब

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दो शब्द

इस किताब के हिन्दी रोमन के संबन्ध में

दुआओं प[illegible] अ[illegible] रेत मजमूआ "हिस्ने हसीन" नामक यह पुस्तक जिसे पढ़ने का आप को गर्व प्राप्त हो रहा है, इसे अपने समय काल के मश्हूर आलिमे-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद रह0 ने हदीस की भरोसे-मन्द किताबों से जमा किया है संपादक रह0 के दावा के मुताबिक़ पूरी किताब में जितनी भी दुआयें जमा की गयीं हैं वह सभी सही सन्दों के साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित हैं। यही इस किताब की पहली ख़ूबी है जिसके नाते यह किताब और दूसरी दुआओं की किताबों पर भारी है।

इस किताब की दूसरी ख़ूबी यह है कि इस में सुब्ह-सवेरे सोकर उठने के समय से ले कर रात में दोबारा सोने के समय तक की तमाम दुआओं को, इसी प्रकार पैदा होने से लेकर मरने के बाद तक पढ़ी जाने वाली तमाम दुआओं और वज़ीफ़ों को बड़े ख़ूबसूरत अन्दाज़ में इकट्ठा कर दिया है।

इस किताब की तीसरी ख़ूबी यह है कि मौलाना मुहम्मद इद्रीस साहिब कराची पाकिस्तान ने अ़रबी से आसान उर्दू ज़बान में तर्जुमा करने के साथ-साथ कम पढ़े वर्ग के फ़ायदे के लिये हाशिया भी दर्ज कर दिया है, जो अपनी जगह पर बहुत ही फ़ायदे

मन्द है, इसके साथ ही मौलाना ने अपने तौर पर नई तरतीब भी दी है।

इस की चौथी ख़ूबी यह है कि समस्त अरबी दुआओं और वज़ीफ़ों के साथ उन का हिन्दी रोमन भी दिया है ताकि मामूली तौर पर अरबी का ज्ञान रखने वाला, हिन्दी जानने वाला दोनों की मदद से समझ बूझ के साथ उन दुआओं को सही उच्चारण के साथ पढ सके। पढ़ने वालों से निवेदन है कि नीचे बताये गये तरीकों को पहले ज़रूर पढ़ लें ताकि रोमन में लिखी गयी दुआओं को आसानी के साथ पढ़ सकें।

★ जो हर्फ़ लफ़्ज़ के शुरू में हो और उस पर कोई मात्रा न हो, वह हमेशा ज़बर (‑) के साथ पढ़ा जाता है, जैसे, "मलिकु"। इस शब्द में तीन हर्फ़ हैं। लाम पर इ की मात्रा और काफ़ पर उ की मात्रा है, लेकिन मीम् पर कोई मात्रा नही है, इसलिये मीम हर्फ़ को ज़बर के साथ पढ़ा जायेगा।

★ जो हर्फ़ लफ़्ज़ के बीच में हो और उस पर कोई मात्रा न हो वह जज़्म और साकिन पढ़ा जायेगा जैसे, "मुल्कु" "हम्दु" आदि।

★ हमने साकिन को ज़ाहिर करने के लिये उन के नीचे (्) का निशान दे दिया है। अगर भूल से किसी हर्फ़ के नीचे यह निशान न लगा हो फिर भी उस को साकिन ही पढ़ा जाये।

★ आम तौर पर लोग ऐसे हर्फ़ को आधा करके लिखते हैं जैसे, "मुल्कु" "हम्दु" लेकिन चूंकि अरबी ज़बान में जज़्म वाला हर्फ़ पूरा लिखा जाता है और उस के ऊपर जज़्म का यह(ˆ) निशान रहता है, इसलिये हमने भी रोमन में पूरा ही हर्फ़ लिखा है और नीचे उस हर्फ़ के जज़्म होने का निशान (्) दे दिया है।

★ अगर किसी लफ़्ज़ के बीच वाले हर्फ़ पर ज़बर है तो उस से पहले यह निशान (-) है। इस का अर्थ यह है कि इस निशान के बाद आने वाले हर्फ़ पर ज़बर है, जैसे "मु-हम्मद" "ख़-ल-क़" आदि

★ जिस हर्फ़ पर तश्दीद है उसे आधा और पूरा हर्फ़ के साथ लिखा है, जैसे "मु-हम्मद" "रब्बु" "रज़्ज़ाकु" वग़ैरह।

★ हिन्दी में "ज़ाल, ज़े, ज़्वाद, ज़ो" वग़ैरह हर्फ़ों में फ़र्क़ करना बड़ा कठिन है इसलिये सब के नीचे (·) लगा दी है।

यह हैं इस पुस्तक में दिये रोमन को सही ढंग से पढ़ने के कुछ ज़रूरी उसूल। यह बात ज्ञात रहे कि किसी ज़बान को दूसरी ज़बान में सही तौर पर नही बदला जा सकता, इसलिये हिन्दी पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि वह केवल रोमन ही पर भरोसा न करें, बल्कि अ़रबी को भी सामने रख कर पढ़ने में उससे मदद लें। रोमन बस एक ज़िम्नी चीज़ है जिस से बहुत मामूली मदद मिल सकती है।

अल्लाह पाक हम सब को इस किताब में दी गयी तमाम दुआ़ओं को सही ढंग से पढ़ने की तौफ़ीक़ दे और इस किताब के संपादक, उर्दू-हिन्दी अनुवादक, कम्पोज़ीटर, पब्लिशर, समस्त सहयोगियों और सहायकों को नेक बदला अता फ़रमाये, जिनकी अन्थक कोशिशों से यह किताब आपके पास सही रूप में पहुंच रही है।

ख़ालिद हनीफ़ सिद्दीक़ी (फ़लाही)
जामा मस्जिद दिल्ली
19.4.2002
जुमअ़तुल् मुबारक

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दीबाचा (भूमिका)

हिस्ने हसीन् पुस्तक के ख़ुत्बे का हिन्दी अनुवाद और इस के लिखने का कारण

ऐ अल्लाह! तू मख़्लूक़ के सर्दार मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर अपनी रहमत और सलामती नाज़िल फ़रमा, और उनके आल् और अस्हाब पर भी।

"लाइला-हइल्लल्लाहु" (कलिमए तौहीद) अल्लाह तआ़ला की मुलाक़ात (और दीदार) का सामान (और वसीला) है। मुहताज बन्दा मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन जज़री शाफ़ई़ कहते हैं जो (बहुत) कमज़ोर और मिस्कीन है, तमाम मख़्लूक़ से रिश्ता तोड़ कर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ तवज्जुह देने वाला है, उस के करम से उम्मीद वार है कि वह उसे ज़ालिम क़ौम से नजात देगा--अल्लाह तआ़ला इस सख़्ती (और नागहानी मुसीबत) में उस के साथ करम और मेहरबानी करे, कि उस अल्लाह बुज़ुर्ग और बर्तर की हम्द व सना के बाद, जिस ने दुआ़ को क़ज़ा के रद्द करने का वसीला बनाया है, और नबियों के सर्दार मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर और उन के प्रहेज़गार और महबूब

और पसन्दीदा आल और असहाब पर दुरूद व सलाम भेजने के बाद,

1- मालूम होना चाहिये कि यह किताब नबियों के सर्दार के मुबारक कलाम से (लिया हुआ) एक मज़बूत किला है, और रसूले अमीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ज़ाने से (चुना हुआ) मोमिनों के लिये (दुश्मन से मुक़ाबले का) हथियार है, और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अक़वाल से (जमा किया हुआ) एक अज़ीम तावीज़ है और (गुनाहों से) मासूम और सुरक्षित (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के) पाकीज़ा अहादीस का मजमूआ है।

(संपादक रह0 फ़रमाते हैं) मैं ने इस (के इन्तिख़ाब करने और इकट्ठा करने में (मख़्लूक़ की) ख़ैरख़्वाही को पूरे तौर पर इस्तेमाल किया है और सहीह हदीस की किताबों से जमा किया है, और सख़्ती (और मुसीबत) के समय इस (दुआओं के मजमूआ) को (मुसीबतों के मुक़ाबले का) "सामान" बना कर पेश किया है, और इन्सान व जिन्नात की बुराई से बचने के लिये इस (ख़ालिस दुआओं के मजमूआ) को (सना वग़ैरह से) अलग करके एक "ढाल" बानया है।

और मैं ख़ुद भी इस अचानक आने वाली मुसीबत से बचने के लिए जो मुझ पर आई इसी मज़बूत किला में बैठा (और पनाह लिए) हुआ हूँ, और जिन निशानों पर बैठने वाले तीरों (दुआओं) पर यह किताब आधारित (मुश्तमिल) है, उनके ज़रिआ से ही मैंने ख़ुद को हर ज़ालिम के ज़ुल्म से बचाया है। मैंने (इस सिलसिले में यह अश्आर भी कहे हैं :

अला क़ूला लि-शख़सिन् क़द् त-क़व्वा
अ़ला ज़ोफ़ी व-लम् यख़शा रक़ी-बह्

ख़-बा-तु लहू सिहा-मन् फ़िल्लयाली
व-अरजू अन् तकू-न लहू मुसी-बह्

तर्जुमा : ख़बरदार! उस (ज़ालिम) शख़्स से कह दो जो बहादुर बना हुआ है मुझे कमज़ोर समझ कर, और अपने हक़ीक़ी निगेहबान से नहीं डरता। मैं ने रातों में (बैठ कर) यह दुआओं के तीर उस (के मुक़ाबले) के लिये पोशीदा तौर पर तैयार किये हैं। और मुझे (अल्लाह की ज़ात से) उम्मीद है कि यह तीर उसको ज़रूर निशाना बनाएँगे (यानी यह दुआयें ज़रूर काम करेंगी)।"

मैं अल्लाह पाक से दुआ करता हूँ कि वह इस (दुआओं के मजमूआ) से (और मुसलमानों को भी) नफ़ा पहुंचायें, और इस के ज़रीआ हर मुसलमान की मुसीबत और परेशानी को दूर फ़रमायें।

अगर्चे (दुआओं का यह मजमूआ (किताब) बहुत मुख़्तसर और छोटा सा है, मगर मैं ने (इन्सान की ज़रूरतों के) हर बाब की कोई सहीह हदीस नही छोड़ी जिस को सामने न रखा हो (और इस किताब में ज़िक्र न किया हो)

और जब मैं इस किताब को तर्तीब दे कर मुकम्मल कर चुका हूँ तो मुझे एक ऐसे दुश्मन (तैमूरी लश्कर के सर्दार) ने अपने पास हाज़िर होने का हुक्म दिया (जो इतना शक्ति शाली और ज़ालिम था कि) उस को अल्लाह पाक के अलावा और कोई रोक ही नहीं सकता था, तो मैं भाग कर छुप गया और इसी क़िला "हिस्ने हसीन" में पनाह ले लिया (यानी छुपने के ज़माना में इस किताब का ख़त्म करता रहा) तो एक रात मुझे नबियों के सर्दार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सपने में ज़ियारत हुई। मैंने देखा कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाएँ तरफ़ बैठा हुआ हूँ, और गोया नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम मुझ से कह रहे हैं: कहो क्या चाहते हो? मैं ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह पाक से मेरे और तमाम मुसलमानों के लिये (इस किताब के ज़रीआ तमाम मुसीबतों और आफ़तों से सुरक्षित रहने की) दुआ फ़रमाइये। तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुआ के लिये अपने मुबारक हाथ उठाए - गोया मैं आपके मुबारक हाथों की तरफ़ देख रहा हूँ। फिर आप ने दुआ फ़रमायी, और (दुआ से फ़ारिग़ होकर) अपने चेहरे पर हाथ फेरे - जुमेरात की रात मैंने यह सपना देखा और इतवार की रात को दुश्मन (नगर का घेराव छोड़ कर) भाग गया।

अल्लाह तआ़ला ने इस किताब में (जमा किये गये) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक ज़बान से निकले हुये) पाक कलिमों और मस्नून दुआओं (के ख़त्म) की बदौलत मुझ से और पूरे (नगर के) मुसलमानों से इस नागहानी मुसीबत (और बला) को दूर फ़रमाया।

2- यह भी (इस किताब "हिस्ने हसीन" के पढ़ने वालों को) मालूम होना चाहिए कि मैं (अपनी सूझ-बूझ और हदीस से दिलचस्पी रखने की बुनियाद पर) आशा करता हूँ कि इस किताब की तमाम हदीसें दुरुस्त होंगी, इसलिये (मेरे इस यक़ीन दहानी के बाद) शक-शुब्हा दूर हो जाना चाहिए।

यह मुख़्तसर और छोटा सा मजमूआ़ (हिस्सने हसीन नाम की किताब) में अल्लाह के फ़ज़्ल से उन हदीसों को भी शामिल किया है जिन पर कई- कई भाग की (दुआओं की) किताबें शामिल नहीं हैं। और जब यह (दुआओं का इन्तिख़ाब) समापन पर पहुंच जाएगा तो हम अल्लाह तआ़ला से उम्मीद रखते हैं कि (उस की तौफ़ीक़ से) इस के अख़ीर में एक- एक का इज़ाफ़ा

करेंगे जो इन दुआओं में आयी हुई मुश्किल और कठिन लफ़्ज़ों की परेशानी को दूर कर देगी (यानी उन की शरह कर देगी)

किताब के अबवाब और फ़सलें

1) मुक़द्दमा :- इस किताब में कुल 11 फ़स्लें हैं।

पहली फ़स्ल :- दुआ की फ़ज़ीलत का बयान

दूसरी फ़स्ल :- ज़िक्र की फ़ज़ीलत का बयान

तीसरी फ़स्ल :- दुआ के आदाब का बयान

चौथी फ़स्ल :- ज़िक्र के आदाब का बयान

पाँचवी फ़स्ल :- उन वक़्तों का बयान जिनमें दुआ क़ुबूल होती है।

छटी फ़स्ल :- उन हालतों का बयान जिनमें दुआ क़ुबूल होती है।

सात्वीं फ़स्ल :- उन स्थानों का बयान जिनमें दुआ क़ुबूल होती है।

आठवीं फ़स्ल :- उन लोगों का बयान जिन की दुआएँ (ख़ास कर) क़ुबूल होती हैं।

नवीं फ़स्ल :- इस्मे आज़म का बयान

दस्वीं फ़स्ल :- अस्माए-हुस्ना का बयान

ग्यारहवीं फ़स्ल :- दुआ के क़ुबूल होने पर शुक्र अदा करने का बयान

2- **पहला बाब** :- इस में सुबह-शाम, दिन-रात और इन्सान की ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ हालात और समय, और मरते दम तक पेश आने वाली ज़रूरतों की उन दुआओं का बयान है जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सहीह अहादीस से साबित हैं।

3- **दूसरा बाब** :- उन अज़कार (और दुआओं) का बयान जो किसी समय के साथ ख़ास नहीं हैं।

4- **तीसरा बाब** :- उन दुआओं का बयान जिन से गुनाह और ख़ताएँ माफ़ होती हैं।

5- **चौथा बाब** :- क़ुरआन पाक और उसकी चन्द सूरतों और चन्द आयतों की तिलावत की फ़ज़ीलत का बयान।

6- **पाँचवाँ बाब** :- उन दुआओं का बयान जिन के पढ़ने के लिये कोई वक़्त सहीह अहादीस से मुक़र्रर नहीं है।

7- **ख़ातिमा (समापन)** :- नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे रसूल हैं जिन की बदौलत अल्लाह पाक ने जिहालत को ख़त्म कर के इल्म की रोशनी अता फ़रमायी। चुनान्चे आप ने (हक़ का) रास्ता पूरे तौर पर साफ़ फ़रमा दिया और किसी के लिये हुज्जत की गुंजाइश बाक़ी नहीं छोड़ी-उन पर दुरूद-सलाम की फ़ज़ीलत का बयान।

अल्लाह तआ़ला उन पर अनगिनत (बे शुमार) रहमतें नाज़िल फ़रमाए और सलाम भी, जब तक (दुनिया में) उस का ज़िक्र करने वाले उस के ज़िक्र में लगे रहें और उस के ज़िक्र से ग़ाफ़िल (बे ख़बर और बे पर्वाह) लोग ग़फ़लत में पड़े रहें।

मुहम्मद अल् जज़री

★★★

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

दुआ माँगने की फ़ज़ीलत का बयान

1) हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : – "दुआ माँगना भी बिल्कुल इबादत करने की तरह है। फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने (दलील के तौर पर क़ुरआन करीम की) यह आयत तिलावत फ़रमाई :

तर्जुमा – "और तुम्हारे पर्वरदिगार ने फ़रमाया है : मुझ से दुआ माँगा करो, मैं तुम्हारी दुआ क़ुबूल करूँगा। निःसंदेह जो लोग (तकब्बुर की वजह से) मेरी इबादत से मुँह मोड़ते हैं वह ज़लील और रुसवा हो कर ज़रूर ही जहन्नम में दाख़िल होंगे।" (पारा 24, सूरः मोमिन, आयत 60)

2) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व स्ललम ने फ़रमया:

"तुम में से जिस शख़्स के लिये दुआ का दर्वाज़ा खोल दिया गया (यानी दुआ माँगने की तौफ़ीक़ दे दी) उस के लिये रहमत के दर्वाज़े खोल दिये गये। अल्लाह पाक से जो दुआएँ माँगी जाती हैं उन में अल्लाह पाक को सब से अधिक पसंद यह

है कि उस से (दुनिया और आख़िरत में) अम्न और शान्ति की दुआ माँगी जाये।

इसी हदीस की दूसरी सनद में "उस के लिये जन्नत के दर्वाज़े खोल दिये गये" आया है। और एक दूसरी सनद में "उस के लिये क़ुबूलियत के दर्वाज़े खोल दिये गये" आया है। और तीनों शब्दों का अर्थ एक ही है।

3) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"दुआ़ के अ़लावा कोई चीज़ तक़दीर के फ़ैसले को रद्द नहीं कर सकती, नेक अ़मल के अ़लावा कोई वस्तु आयु को बढ़ा नहीं सकती।

4) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तक़दीर के फ़ैसले से बचने में कोई उपाय काम नहीं देता (हाँ) अल्लाह से दुआ़ माँगना उस (आफ़त और मुसीबत) में लाभ पहुँचाता है जो नाज़िल हो चुकी है, और उस (मुसीबत) में भी जो अभी तक नाज़िल नही हुई। और बेशक बला नाज़िल होने को होती है कि इतने में दुआ़ उस से जा मिलती है, इसलिये क़यामत तक इन दोनों में खींचा तानी होती रहती हैं (और इस प्रकार इन्सान दुआ़ की बदौलत उस बला और मुसीबत से छुटकारा पा जाता है)

5) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"अल्लाह पाक के नज़दीक दुआ़ से अधिक और किसी वस्तु की अहमियत नही"

6) एक और हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"जो शख़्स अल्लाह से कोई सवाल नहीं करता, अल्लाह पाक उस से नाराज़ हो जाते हैं।"

इसी हदीस की दूसरी सनद में "जो अल्लाह से नहीं माँगता वह उस से नाराज़ हो जाता है" आया है (और दोनों का अर्थ एक ही है)

7) एक और हदील में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा को संबोधित कर के फ़रमाया :

"तुम अल्लाह से दुआ़ माँगने में आ़जिज़ न बनो (यानी कोताही न करो) इसलिए कि दुआ़ करते रहने की सूरत में कोई शख़्स हरगिज़ (अचानक किसी आफ़त से) हलाक न होगा।"

8) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया

"जो शख़्स यह चाहे कि अल्लाह तआ़ला उस की दुआ़ मुसीबत और परेशानी के समय क़ुबूल फ़रमायें उसे चाहिये कि वह अच्छी हालत में भी अधिक से अधिक दुआ़ माँगा करे।"

9) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"दुआ़ मोमिन का हथियार है, दीन का सुतून है, आसमान और ज़मीन का नूर है"

10) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक ऐसी क़ौम के पास से गुज़रे जो किसी

मुसीबत में गिरिफ़्तार थी तो (उन की हालत को देख कर) आप ने फ़रमाया :

"ऐसा मालूम होता है कि यह लोग अल्लाह पाक से अम्न और शान्ति की दुआ़ नहीं माँगा करते थे।"

11) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"जो भी मुसलमान कुछ माँगने के लिये अल्लाह पाक की ओर अपना मुँह उठाता है (और दुआ़ माँगता है) तो अल्लाह पाक उस को वह वस्तु अवश्य देते हैं। या वही वस्तु उस को तुरन्त दे देते हैं, या उस के वास्ते (दुनिया और आख़िरत में) उस को जमा कर देते हैं।"[1]

---

1. यानी दुआ़ के क़ुबूल होने की तीन सूरतें होती हैं : 1- अगर अल्लाह पाक उचित समझता है तो उस की माँग पूरी कर देता है। 2- अगर तुरन्त पूरी करना उचित नहीं समझता तो देर से उचित समय पर माँग पूरी करता है। 3- अगर तुरन्त और देर से भी नहीं पूरी करता है तो उस का कोई अच्छा बदला दुनिया और आख़िरत में दे देता है, लेकिन अल्लाह पाक से दुआ़ माँगने का बदला तो हर हाल में मिल ही जाता है, इसलिये कोई भी दुआ़ किसी भी हाल में रद्द नहीं की जाती।

दूसरी फ़स्ल

अल्लाह पाक को याद करने की फ़ज़ीलत का बयान

1) हदीस क़ुदसी में आया है कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

"मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ (जैसा वह मेरे बारे में गुमान रखता है मैं वैसा होता हूँ) और मैं उस के साथ होता हूँ जब वह मेरा ज़िक्र करता है। चुनान्चे अगर वह अपने दिल में (एकान्त में) मेरा ज़िक्र करता है तो मैं भी अपनी तन्हाई में उसे याद करता हूँ। और अगर वह किसी सभा में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं भी उस की सभा से बेहतर सभा में (यानी फ़रिश्तों की सभा में) उस का ज़िक्र करता हूँ।"

2) एक हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"क्या मैं तुम्हें ऐसा काम न बताऊँ जो तुम्हारे कामों में सब से बेहतर है और तुम्हारे मालिक (यानी अल्लाह पाक) के नज़दीक सब से पाकीज़ा है, और तुम्हारे दर्जों को सब से ज़्यादा बुलन्द करने वाला है और सोने-चाँदी के (अल्लाह की राह में)

ख़र्च करने से भी बेहतर है, और इस से भी बेहतर है कि तुम अपने दुश्मन से (जिहाद के मैदान में) मुक़ाबला करो और फिर तुम उन की गर्दनें काटो और वह तुम्हारी गर्दनें काटें।

वह सुन कर सहाबा ने कहा : क्यों नहीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! ज़रूर बतलाइये। आप ने फ़रमाया:

"वह काम अल्लाह का ज़िक्र है।"

3) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"कोई सदक़ा (यानी नेक काम) अल्लाह के ज़िक्र से अफ़ज़ल नही है।"

4) एक हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआ़ला के कुछ फ़रिश्ते इस काम पर लगे हैं कि राह में घूम फिर कर अल्लाह का ज़िक्र करने वालों को तलाश करते रहते हैं फिर जब वह किसी जमाअ़त को अल्लाह का ज़िक्र करते हुये पाते हैं तो आपस में एक दूसरे को आवाज़ देते हैं कि आओ अपने मक़्सद (यानी अल्लाह के ज़िक्र) की तरफ़ आ जाओ, तो वह सब फ़रिश्ते मिल कर पहले आसमान तक इन ज़िक्र करने वालों को अपने परों के छाँव में ले लेते हैं।"----पूरी हदीस।

5) एक हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"उस शख़्स की मिसाल जो अपने पर्वरदिगार का ज़िक्र करता है और उस शख़्स की जो अपने पर्वरदिगार का ज़िक्र नहीं करता "ज़िन्दा" और "मुर्दा" की तरह है।*

6) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"जब भी कोई जमाअ़त अल्लाह का ज़िक्र करने के लिये बैठती है तो फ़ौरन (रहमत के) फ़रिश्ते उन को (चारों ओर से) घेर लेते हैं और (अल्लाह की) रहमत उन को ढाँप लेती है, सुकून और इतमिनान की उन पर बारिश होने लगती है और अल्लाह तआ़ला उन फ़रिश्तों से इन ज़िक्र करने वालों का ज़िक्र करते हैं जो उस के पास (मौजूद रहते) हैं।"

7) एक और हदीस में आया है कि एक सहाबी ने कहा:

ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! इस्लाम के अहकाम (जिस पर अज्र और सवाब मिलता है) बहुत हो गये, आप तो मुझे कोई ऐसी बात बता दीजिये जिसको मैं मज़बूती के साथ पकड़ सकूँ (और बराबर करता रहूँ) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारी ज़बान बराबर अल्लाह के ज़िक्र से ताज़ा रहनी चाहिये।"

8) एक हदीस में आया है कि एक सहाबी (मआ़ज़ बिन जबल रज़ि) कहते हैं:

*नोट :- यानी जिसके दिल में अल्लाह की याद और ज़बान पर उस का नाम है वह ज़िन्दा है और जो शख़्स उन दोनों से वन्चित है वह मुर्दा है इसलिये अल्लाह पाक ने क़ुरआन मजीद में जगह जगह मोमिन को "हय्यि" यानी ज़िन्दा और काफ़िर को "मय्यित" यानी मुर्दा के नाम से ज़िक्र किया है।

"अन्तिम बात जिस पर मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जुदा हुआ हूँ वह यह है कि मैं ने आप से पूछा : कौन सा काम अल्लाह पाक को सब से ज़्यादा पसन्द है? आप ने फ़रमाया: (वह काम यह है) कि तुम्हें इस हालत में मौत आये कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह के ज़िक्र से तर हो।"

9) एक और हदीस में आया है कि इन्ही सहाबी (मआ़ज़ रज़ि0) ने पूछा :

"ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! आप मुझे कुछ वसिय्यत फ़रमा दीजिये। आप ने फ़रमाया: हर दम अल्लाह से डरते रहो और हर पत्थर और पेड़-पौधों के पास (यानी हर जगह पर) अल्लाह का ज़िक्र किया करो। और जो भी कोई बुरा काम कर बैठो तो फ़ौरन अल्लाह के सामने उस से तौबा करो। चोरी-छुप्पे किये गुनाह की छुपे तौर पर तौबा, और खुले आ़म किये गुनाह की खुले आ़म तौबा।"

10) एक हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"किसी भी आदमी ने कोई काम ऐसा नहीं किया जो अल्लाह की याद से ज़्यादा उस को अल्लाह की सज़ा से नजात दिलाने वाला हो।"

11) इसी रिवायत में आया है कि सहाबा ने पूछा:

"ऐ अल्लाह के रसूल! क्या अल्लाह की राह में जिहाद भी नहीं? आप ने फ़रमाया : हाँ, अल्लाह की राह में जिहाद भी नहीं, लेकिन वह शख़्स जो अपनी तल्वार से दुश्मन की गर्दनों को इतनी ज़्यादा काटे कि वह टूट जाये (तो उस का अ़मल, अल्लाह के ज़िक्र

से ज़्यादा अल्लाह की सज़ा से नजात दिलाने वाला हो सकता है)।

यह आख़िरी जुम्ला आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तीन मर्तबा फ़रमाया।

12) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"अगर एक आदमी की गोद दिर्हम से भरी हो और वह उन को बाँट रहा हो और दूसरा आदमी अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हो, तो अल्लाह का ज़िक्र करने वाला उस (दिर्हम के बाँटने वाले) से अफ़ज़ल होगा।"

13) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"जब तुम जन्नत की क्यारियों में से गुज़रो तो ख़ूब पेट भर कर चर लिया करो (यानी अल्लाह का ज़िक्र ख़ूब कर लिया करो) सहाबा ने पूछा : जन्नत के बाग़ क्या हैं? आप ने फ़रमाया: ज़िक्र की सभाएँ।"

14) एक और हदीस में आया है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा:

"आज तमाम महशर वालों को मालूम हो जाएगा कि इज़्ज़त और मर्तबों के क़ाबिल कौन लोग हैं? यह सुन कर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा गया: ऐ अल्लाह के रसूल! यह कौन लोग हैं? आप ने फ़रमाया: यह लोग मस्जिदों में अल्लाह के ज़िक्र की सभायें आयोजित करने वाले लोग हैं।"

15) एक और हदीस में आया है कि:

"हर आदमी के दिल की दो कोठरियाँ होती हैं। एक में फ़रिश्ता रहता है और दूसरी में शैतान। तो जब वह शख़्स अल्लाह की याद में लग जाता है तो शैतान पीछे हट जाता है और जब अल्लाह की याद नहीं करता तो शैतान अपनी चोंच उस के दिल में रख देता है (यानी उस के दिल पर सवार हो जाता है) और भिन्न-भिन्न प्रकार के शक व शुब्हे डालता रहता है।"

16) एक और हदीस में आया है कि :

"जिस शख़्स ने फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त के साथ पढ़ी और फिर सूरज निकलने तक वहीं बैठा हुआ अल्लाह का ज़िक्र करता रहा, फिर दो रक्अ़तें (इशराक़ की) पढ़ीं (फिर मस्जिद से वापस आया) तो उस को एक हज्ज और उम्रा के सवाब जितना सवाब मिलेगा।"

इसी रिवायत के दूसरे अल्फ़ाज़ यह हैं कि "वह एक हज्ज और एक उम्रा का सवाब ले कर वापस होगा।"

17) एक और हदीस में आया है कि

"(अल्लाह की याद से) ग़ाफ़िल लोगों (के दर्मियान) में अल्लाह को याद करने वाला उस मुजाहिद के समान है जो (जंग के मैदान से) भागने वालों (की जमाअ़त) में डटा रहा।"

18) एक और हदीस में आया है कि:

"जो कोई जमाअ़त किसी भी मज्लिस में जमा हुयी और अल्लाह को याद किये बिना वहाँ से उठ गयी तो यूँ समझो कि वह एक मरे हुये गधे के शव (पर जमा हुये थे और उस) को खा कर उठ गये। और उन की याद की मज्लिस क़यामत के दिन उन के लिये अफ़सोस और निराशा का सबब होगी।"

19) एक और हदीस में आया है कि:

"जो शख़्स भी किसी रास्ता पर (किसी काम के लिये) चला और उस बीच अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया तो उस की यह ग़फ़्लत उसके लिये अफ़सोस और निराशा का सबब होगी। और जो शख़्स भी अपने बिस्तर पर लेटा और उसने अल्लाह का ज़िक्र नहीं किया, तो उसकी यह ग़फ़्लत उसके लिये अफ़सोस और निराशा का सबब होगी।"

20) एक और हदीस में आया है कि :

"एक पहाड़ दूसरे पहाड़ को उस का नाम ले कर आवाज़ देता है कि ऐ फ़लाँ (पहाड़) क्या तेरे पास से कोई ऐसा आदमी गुज़रा है जिस ने (गुज़रते समय) अल्लाह का ज़िक्र किया हो? तो जब वह (जवाब में) कहता है कि हाँ, तो वह खुश होता है और उस को मुबारक बाद देता है----पूरी हदीस तक।"

21) एक और हदीस में आया है कि :

"अल्लाह के नेक बन्दे वह हैं जो अल्लाह के ज़िक्र के लिये सूरज, चाँद, हलाल पहली का चाँद, सितारों और छावँ की देख भाल रखते हैं (और हर समय और मौक़ा के मुताबिक़) अच्छे ढंग से अल्लाह का ज़िक्र करते हैं

22) एक और हदीस में आया है कि :

"(क़यामत के दिन) जन्नती लोग किसी वस्तु पर अफ़सोस न करेंगे सिवाए उस घड़ी के जो उन पर बीत गयी और उस में उन्होने अल्लाह का ज़िक्र नही किया (कि काश उस घड़ी में भी हम अल्लाह का ज़िक्र करते और उस का भी सवाब पाते)

23) एक और हदीस में आया है कि :

"तुम ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र किया करो कि लोग तुम को पागल कहने लगें।"

24) एक और हदीस में आया है कि :

"नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सहाबा को हुक्म दिया करते थे कि वह तक्बीर (अल्लाहु अक्बर) पाकी (*सुब्हा-नल् मलिकिल् कुद्दूस*) और तहलील (यानी *लाइला-ह इल्लल्लाह*) की गिन्ती का ख़्याल रखा करें और उन्हें उंगलियों पर गिना करें। फ़रमाया: इसलिये कि क़ियामत के दिन उन उंगलियों से सवाल किया जायेगा और उन्हें (बोलने की ताक़त देकर) बुलवाया जायेगा (और वह बतलायेंगी कि कितनी संख्या में बन्दे ने तक्बीर, पाकी और तहलील बयान की थी)

25) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रतों को मुख़ातब करके फ़रमाया :

"तुम तस्बीह (*सुब्हा-नल्लाह*) तक़्दीस (*सुब्हान-नल् मलिकिल् कुद्दूस*) और तहलील (*लाइला-ह इल्लल्लाह*) को अपने ऊपर लाज़िम कर लो और (कभी) उन से लापरवाही न करो, कि तुम अल्लाह की रहमत से वन्चित कर दी जाओ।"

26) एक और हदीस में आया है हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि :

"मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सीधे हाथ की उंगलियों पर तस्बीह पढ़ते देखा है।"

27) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"मुझे सुबह की नमाज़ के बाद से सूरज निकलने तक अल्लाह का ज़िक्र करने वाले लोगों के साथ बैठना इसलिये

अधिक पसन्द है कि में हज़रत इस्माईल अलै० की नस्ल के चार गुलामों को आज़ाद कर दूँ और (इसी तरह) मैं उन लोगों के साथ बैठूँ जो अस्र की नमाज़ के बाद से सूरज के छुपने (ग़ुरूब) तक अल्लाह का ज़िक्र करते रहते हैं, यह मुझे उस से ज़्यादा पसन्दीदा है कि मैं चार गुलाम (इस्माईल अलै० की नस्ल के) आज़ाद करूँ।"

28) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

अकेले यात्रा करने वाले आगे निकल गये। सहाबा ने पूछा: "अकेले यात्रा करने वाले कौन लोग हैं? आप ने फ़रमाया: "ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और औरतें"

इसी रिवायत के दूसरे अल्फ़ाज़ में है कि

"अल्लाह के ज़िक्र के दीवाने" यह अल्लाह का ज़िक्र उन के (पापों के) बोझ को हल्का करता रहता है, चुनान्चे यह क़यामत के दिन (अल्लाह के दरबार में) हल्के-फुल्के हो कर आएंगे।"

29) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बतलाया :

"अल्लाह तआ़ला ने हज़रत यहया बिन ज़करिया (अलै०) को पाँच बातों का निर्देश दिया था कि वह खुद भी उन पर अमल करे और बनी इस्राईल को भी हुक्म दें कि वह भी उन पर अ़मल करें।

(रावी ने) पूरी हदीस बयान की, यहाँ तक कि हज़रत यहया ने कहा मैं तुम को हुक्म देता हूँ कि तुम (ज़्यादा से ज़्यादा) अल्लाह का ज़िक्र किया करो, इसलिये कि उस का ज़िक्र करने वाले की उदाहरण उस व्यक्ति की सी है जिस का पीछा करते हुये

दुश्मन भी तेज़ी के साथ निकला हो और वह (शख़्स भागते-भागते) एक सुरक्षित क़िले तक पहुँच गया हो और उस में पनाह ले कर दुश्मन से अपनी जान बचा ली हो। बिल्कुल इसी प्रकार अल्लाह का बन्दा (अपने दुश्मन) शैतान से अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र के अ़लावा और किसी वस्तु से अपने को नहीं बचा सकता।"

30) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"अल्लाह की क़सम! दुनिया में कुछ लोग नर्म और गद्देदार बिछौनों पर लेट कर भी (सोने के बजाए) अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र किया करते हैं, उन्हें क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला जन्नत के ऊँचे दर्जे में दाख़िल फ़रमायेगा।"

31) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"बेशक वह लोग जिन की ज़बानें[1] सदा अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से तर (व ताज़ा) रहती हैं वह हँसते हुये जन्नत में जायेंगे।

★ ★ ★

---

1. स्पष्ट रहे कि यह अल्लाह का ज़िक्र जिस के फ़ज़ाइल ऊपर हदीसों में बयान किये गये हैं केवल "अल्लाह, अल्लाह" के साथ मख़्सूस नहीं, बल्कि तमाम मस्नून दुआएं और ज़िक्र, तमाम क़ौली और फ़ेली इबादतें क़ुरआन व हदीस और दीनी पुस्तकों को पढ़ना-पढ़ाना, वअ़ज़-नसीहत सब इस में शामिल हैं, और सब से पहले अल्लाह के कलाम (क़ुरआन पाक) की तिलावत है, कि वह तो ख़ुद अल्लाह का कलाम है जिस की शान यह है "सुन लो! अल्लाह का ज़िक्र (यानी क़ुरआन की तिलावत) से ही दिल को इतमिनान(संतोष)हासिल होता है।" यह किताब भी उन्हीं दुआओं और ज़िक्रों का मजमूआ है और इसलिये लिखी गयी है कि अल्लाह तआ़ला हमें तौफ़ीक़ फ़रमायें कि हम ज़्यादा से ज़्यादा पाबन्दी के साथ उन को पढ़ा करें, और हम हल्के-फुलके और हँसते हुये जन्नत में जायें- आमीन!

तीसरी फ़स्ल

दुआ माँगने के तरीक़ों का बयान

दुआ माँगने के कुछ आदाब तो रुक्नियत के दर्जे को पहुँचते हैं*1 और कुछ शर्त के दर्जे को (यानी बाज़ रुक्न है और बाज़ शर्त) और कुछ "मामूरात" हैं (यानी जिन के करने का हुक्म दिया गया है) और कुछ "मनहिय्यात" (यानी जिन्हें करने से रोका गया है) वह आदाब यह हैं।*2 :

---

1. "रुक्न" से मुराद वह काम जिस पर दुआ के क़बूल होने-न होने का मदार हो, जिन्हें दुआ की रूह और जान कह सकते हैं। जैसे "इख़्लास" कि इस के बिना दुआ, दुआ ही नहीं होती।

"शर्त" वह चीज़ जिस पर दुआ की क़बूलियत निर्भर हो कि अगर वह न पायी जाये तो दुआ क़बूल ही न हो, अगर्चे कितने ही इख़्लास से की जाये। जैसे हराम चीज़ों (यानी हराम खान-पान, हराम पहनावा, हराम रोज़ी) से बचना, कि अगर यह शर्त न पाई जाएगी और दुआ करने वाला इन हराम वस्तुओं का इस्तेमाल न छोड़ेगा तो दुआ क़बूल न होगी, जैसा कि हदीस शरीफ़ में इस की वज़ाहत मौजूद है।

"मामूरात" से मुराद वह बेहतरीन काम और अच्छी सूरतें हैं जो दुआ को ज़्यादा से ज़्यादा कारगर और क़बूल होने योग्य बना देती हैं, इसलिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इनको करने का आदेश दिया है। अगर इन पर न अ़मल किया जाये तब भी दिल से निकली

हुयी दुआ अल्लाह ने चाहा तो क़बूल हो जायेगी। जैसे, दुआ माँगते समय दोनों घुटनों के बल बैठना, या क़िब्ला की तरफ़ मुँह कर के बैठना कि यह चीज़ें अल्लाह की तरफ़ तवज्जुह अदब और एहतराम (आदर-सम्मान) की पहचान हैं, अगर्चे दुआ के क़बूल होने या न होने का दारो मदार इन पर नहीं है।

"मनहिय्यात" से मुराद वह नापसन्दीदा काम, या दुआ माँगने के वह तरीक़े जो दुआ के मुनासिब, या अल्लाह तआला के शायाने शान नहीं है, जैसे, दुआ माँगते समय आकाश की ओर आँख उठाना और देखना, इस प्रकार की दुआ, दुआ की वह बुरी शक्ल है जिस से नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है इसलिये कि यह तरीक़ा अल्लाह के आदर-सम्मान और दुआ माँगने वाले के लिये उचित नहीं है। हो सकता है कि वह तरीक़ा बे अदबी, गुस्ताख़ी बन कर दुआ को क़बूल होने से रोक दे, इसलिये इन से बचना चाहिये। ताहम वह दुआ के क़बूल होने में रुकावट नहीं है।

2. यह तमाम आदाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मन्क़ूल हैं लेकिन संपादक रहD ने अपने अल्फ़ाज़ में इन को बयान किया है और हर अदब से मुतअल्लिक़ हदीस के हवाले हदीस की किताबों के इशारों में दिये हैं। हम ने संक्षिप्त में इन इशारों को भी छोड़ दिया है और हिस्ने हसीन किताब के अन्दाज़ में ही उन तमाम आदाब का तर्जुमा कर दिया है। केवल नंबर शुमार का इज़ाफ़ा किया है।

यह कुल 43 आदाब हैं जिन में कुछ दुआ के अर्कान हैं और कुछ शर्तें, कुछ ऐसे हैं जिन के करने का हुक्म आया है और कुछ को करने से मना किया गया है। पढ़ने वालों की सहूलत के उद्देश्य से और उन की जानकारी की ग़रज़ से हम ने हर अदब के सामने ब्रिकेट ( ) के दर्मियान उन का हुक्म लिख दिया है कि यह रुक्न है और यह शर्त, और मामूरात (यानी जिन को करने का हुक्म दिया गया है) के लिये "मुस्तहब" का शब्द लिखा है और "मनहिय्यात (यानी जिन को करने से रोका गया है) के लिये "मकरूह"।

★

1) खाने, पीने, पहनने और हराम कमाने (यानी रोज़ी कमाने के हराम सूत्रों) से बचना। (शर्त)

2) अल्लाह तआला के लिये इख़लास (रुक्न)

3) दुआ माँगने से पहले कोई नेक कार्य करना (जैसे सदका देना या नमाज़ पढ़ना वग़ैरह) सख़्तियों और मुसीबतों के समय ख़ास तौर पर अपने नेक कामों का ज़िक्र करना (यानी उन के वास्ते से दुआ माँगना। (मुस्तहब)

4) (नापाकी, गन्दगी और पलीदी से) पाक और (मैल-कुचैल से) साफ़ सुथरा होना। (मुस्तहब)

5) वुज़ू करना। (मुस्तहब)

6) क़िब्ला की ओर मुँह करना। (मुस्तहब)

7) (दुआ माँगने से पहले) नमाज़ (हाजत) पढ़ना (मुस्तहब)

8) (दुआ के लिये) दोनों घुटनों के बल बैठना (मुस्तहब)

9) (दुआ माँगने से) पहले और बाद में अल्लाह तआला की हम्द व सना करना (मुस्तहब)

10) इसी प्रकार (दुआ के) अव्वल और अन्त में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम भेजना (मुसत्हब)

11) दोनों हाथों को फैला कर दुआ माँगना (मुस्तहब)

12) (सवाल करने वाले की तरह) दोनों हाथ ऊपर उठाना (मुस्तहब)

13) दोनों हाथों को मोंढों तक उठाना (मुस्तहब)

14) दोनों हाथों को खुला रखना (मुस्तहब)

15) (दुआ के समय क़ौली और अ़मली तौर पर) अल्लाह की शान के मुताबिक़ उस के आदाब और एहतराम को इख़्तियार करना (मुस्तहब)

16) (दुआ माँगने में) आ़जिज़ी और इन्किसारी इख़्तियार करना (मुस्तहब)

17) गिड़गिड़ाना (मुस्तहब)

18) दुआ माँगने के समय आकाश की ओर नज़र उठाना (मकरूह)

19) अल्लाह पाक के "अस्माए हुस्ना" और उस की ख़ूबियों और अच्छाइयों का वास्ता दे कर दुआ माँगना (मुस्तहब)

20) दुआ में तकल्लुफ से क़ाफ़िया बन्दी से परहेज़ न करना (मकरूह)

21) दुआ में जान बूझं कर गाने की तरह अच्छी आवाज इख़्तियार करना (मकरूह)

22) नबियों के वसीले से दुआ माँगना (मुस्तहब)

23) अल्लाह के नेक बन्दों (उस के वलियों) के वसीले से दुआ माँगना (मुस्तहब)

24) दुआ में आवाज़ को पस्त (यानी नीची आवाज़ में दुआ माँगना) (मुस्तहब)

25) अपने गुनाहों का इक़रार (स्वीकार) करना (मुस्तहब)

26) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जो दुआएँ

सहीह हदीसों से साबित हैं उन्हीं को इख़्तियार करना, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किसी दूसरे को बतलाने की ज़रूरत ही नहीं छोड़ी है (यानी वह तमाम आवश्यकताएँ जिन के लिये इन्सान दुआ़ माँगता है आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन सब के लिये दुआएँ बतला दी हैं) (मुस्तहब)

27) ठोस और जामे (यानी तमाम आवश्यक्ताओं को शामिल) दुआ़एँ इख़्तियार करना (मुस्तहब)

28) अपनी ज़ात से दुआ़एँ शुरू करे, फिर अपने माँ-बाप और सारे मोमिन भाइयों के लिये दुआ़ करे। (यानी पहले अपने लिये फिर एक के बाद दूसरे के लिये पद के लिहाज़ से दुआ़ माँगे) (मुस्तहब)

29) अगर इमाम हो तो अकेले अपने लिये दुआ़ न माँगे, बल्कि अपने और तमाम मुक़्तदियों के लिये दुआ़ माँगे (जैसे "मेरी" के स्थान पर "हमारी" और "मैं" के स्थान पर "हम" के शब्द का प्रयोग करे) (मुस्तहब)

30) पूरे विश्वास के साथ और यक़ीनी तौर पर दुआ़ माँगना (कि अल्लाह तआ़ला दुआ़ वास्तव में क़बूल करते हैं और मैं बिला किसी खटक के दुआ़ माँगता हूँ) और दुआ़ को अपनी तरफ़ से किसी चीज़ पर मौक़ूफ़ भी न करे (यानी यह न कहे कि अगर तू चाहे तो मेरा क़र्ज़ अदा कर दे, बल्कि इस प्रकार माँगे "मेरे मौला! मेरा क़र्ज़ अदा कर दे") (रुक्न)

31) बड़े शौक़ और ध्यान से दुआ़ माँगे (बेतव्वजुही से न माँगे) (मुस्तहब)

32) दिल (की गहराइयों) से पूरी कोशिश और मेहनत से

दुआ माँगे और दिल (दुआ की तरफ़) पूरी तरह मुतवज्जह हो और अल्लाह से पूरी आशा रखे। (रूक्न)

33) (एक ही मक्सद और मुराद के लिये) बार-बार दुआ माँगे (मुस्तहब)

34) एक ही दुआ बार-बार माँगने का कम से कम दर्जा तीन मर्तबा है (यानी हर दुआ कम से कम तीन मर्तबा माँगे) (मुस्तहब)

35) किसी दुआ पर इसरार न करे (कि मेरी यह दुआ तो तुझे क़बूल करनी ही होगी) (मक्रूह)

36) किसी गुनाह की बात या रिश्ता-नाता तोड़ने की दुआ न करे। (शर्त)

37) जो चीज़ पहले ही हो चुकी है उस के ख़िलाफ़ दुआ न माँगे (जैसे, मेरे मौला! तू मुझे औरत से मर्द, या मर्द से औरत बना दे) (शर्त)

38) दुआ में हद से आगे न बढ़े कि किसी असंभव और न होने वाली चीज़ के लिये दुआ माँगे। (शर्त)

39) अल्लाह की रहमत में तन्गी न करे (यानी यह न कहे कि मेरे मौला! तू केवल मुझे ही माफ़ कर दे और किसी को माफ़ न कर) (मक्रूह)

40) अपनी समस्त आवश्यकताएँ (छोटी हों या बड़ी कितनी ही हल्की क्यों न हों) अल्लाह ही से माँगे। (मुस्तहब)

41) दुआ माँगने वाला और सुनने वाला दोनों आमीन कहें। (मुस्तहब)

42) दुआ पूरी करने के पश्चात् दोनों हाथों को मुँह पर फेरे। (मुस्तहब)

43) दुआ के क़बूल होने में जल्द बाज़ी न करे, जैसे यूँ न कहे, "दुआ पूरी होने में ही नहीं आती" या "मैं ने दुआ की थी लेकिन क़बूल ही नही हुयी" (शर्त)

★★★

चौथी फ़स्ल

अल्लाह के ज़िक्र के आदाब का बयान

(क़ुरआन और हदीस के) आ़लिमों ने फ़रमाया है कि -

1) ज़िक्र करने वाला जिस स्थान पर ज़िक्र करे, वह स्थान (उन तमाम चीज़ों से जिन से ख़्याल बटे और तवज्जुह हटे) ख़ाली और पाक-साफ़ होना चाहिये।

2) ज़िक्र करने वाले के अन्दर (दुआ़ के आदाब में) जो बातें बताई गयी हैं (जैसे इख़्लास, ख़ुशू-ख़ुज़ू, ज़ाहिरी-बातिनी पाकी, सफ़ाई-सुथराई वग़ैरह) इन सब का पाया जाना चाहिये (क्योंकि अल्लाह का ज़िक्र सब से अफ़ज़ल इबादत है, इसलिये इस में दुआ़ से कहीं ज़्यादा अदब-एहतराम और एहतियात की ज़रूरत है)

3) ज़िक्र करने वाले का मुँह और ज़बान बिल्कुल पाक-साफ़ होनी चाहिये। अगर किसी चीज़ की बू मुँह में हो तो दातुन वग़ैरह करके उस को ज़रूर ही दूर कर लेना चाहिये।

4) अगर किसी स्थान पर बैठ कर ज़िक्र कर रहा है तो मुँह क़िब्ले की तरफ़ होना चाहिये।

5) आजिज़ी, इन्किसारी, सुकून-इतमिनान और दिल की पूरी तवज्जुह के साथ ज़िक्र के लिये बैठे।

6) जो कुछ भी ज़िक्र करे उस के माना और मफ़हूम को अच्छी तरह समझे और उन में ग़ौर व फ़िक्र करे।

7) अगर किसी ज़िक्र का अर्थ न जानता हो तो (किसी आलिम से) पूछले और समझ ले।

8) संख्या बढ़ाने के चक्कर में जल्द बाज़ी न करे। इसलिये उलमा ने कलिमए-तय्यिबा के ज़िक्र में "लाइला-ह इल्लल्लाहु" में शब्द "ला" के मद को ख़ूब अच्छी तरह खींचने (और "इल्लल्लाहु" पर ज़ोर देने) को मुस्तहब फ़रमाया है।

9) जो भी ज़िक्र नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है वह चाहे वाजिब हो या मुस्तहब, जब तक उस को ज़बान से इस प्रकार अदा न करे कि ख़ुद सुन ले, उस वक़्त तक उस का कुछ एतबार नहीं (यानी दिल ही दिल में सोचना ज़िक्र नहीं कहलाता)

10) सब से ज़्यादा फ़ज़ीलत वाला ज़िक्र-क़ुरआन मजीद है, उन ज़िक्रों को छोड़ कर जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से विशेष रूप से साबित हैं (क्योंकि उस स्थान पर वही ज़िक्र करना चाहिये जो आप ने बतलाया है। जैसे, रुकूअ़ में आप ने "सुब्हा-न रब्बि-यल् अ़ज़ीम" बतलाया है और सज्दा में "सुब्हा-न रब्बि-यल आला", इसलिये रुकूअ़ और सिज्दा में यही पढ़ना चाहिये। इसीलिये कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रुकूअ़ और सिज्दा में क़ुरआन पढ़ने से मना फ़रमाया है।)

11) अल्लाह के ज़िक्र की फ़ज़ीलत केवल तहलील

(लाइला-ह इल्लल्लाह) तस्बीह (सुब्हा-नल्लाह) तक्बीर (अल्लाहु अक्बर) ही में नही है, बल्कि किसी भी अ़मल में अल्लाह तआ़ला की इताअ़त करने वाला, अल्लाह का ज़िक्र करने वाला है (और वह अ़मल ज़िक्र कहलाएगा।

12) जब बन्दा नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बयान मुख़्तलिफ़ ज़िक्रों को, मुख़्तलिफ़ हालात और समय में रात-दिन, सुबह-शाम पाबन्दी के साथ पढ़ता रहेगा तो अल्लाह तआ़ला के यहाँ उस का नाम "बहुत अधिक अल्लाह को याद करने वाली औ़रतों और मर्दों में" शामिल हो जायेगा (जिसका ज़िक्र क़ुरआन पाक में आया है)

13) जिस शख़्स का कोई वज़ीफ़ा रात या दिन के किसी हिस्सा में, या किसी नमाज़ के बाद या इन के अ़लावा और किसी समय और हालात में मुक़र्रर हो (और पाबन्दी के साथ उस को पढ़ा करता हो) अगर किसी दिन वह छूट जाये तो उस का क़ज़ा कर लेना ज़रूरी है। और जिस समय भी संभव हो उस को पढ़ लेना और पूरा कर लेना चाहिये, और उसे उस दिन बिल्कुल ही न छोड़ देना चाहिये, ताकि वह पाबन्दी की आ़दत बाक़ी रहे। इस की क़ज़ा में सुस्ती हर्गिज न करनी चाहिये (क्योंकि सुस्ती करने में सख़्त नुक़्सान है)

★★★

नोट -गोया अल्लाह तआ़ला की हर इबादत और इताअ़त अ़ल्लाह का ज़िक्र है, चाहे वह अल्लाह-अल्लाह का शब्द हो, चाहे कुरआन पाक की तिलावत, चाहे कुरआन व हदीस का ज्ञान प्राप्त करना हो, चाहे वअ़ज़ और नसीहत करना हो, चाहे और कोई इबादत और इताअ़त, रोज़ा नमाज़ वग़ैरह हो)

पाँचवी फ़स्ल

उन वक़्तों का बयान जिन में दुआ क़बूल होती है

जिन वक़्तों में दुआ क़ुबूल होती है वह यह हैं–[1]

1– शबे क़द्र में (और ज़्यादा उम्मीद यह है कि शबे क़द्र रमज़ान के अन्तिम अशरे की ताक़ रातों में यानी 21वीं, 23वीं, 25वीं, 27वीं या 29वीं रात में आती है। 21वीं और 27वीं के बारे में सब से ज़्यादा भरोसा है।)

2) अरफ़ात का पूरा दिन (ज़िलहिज्जा की नवीं तिथि को)

---

1. दुआ के क़बूल होने के इन समय का ज़िक्र सहीह हदीसों में भी बयान हुआ है लेकिन संपादक रह0 ने उन को अपने तौर पर बयान किया है और इशारों की सूरत में हदीस की किताबों के हवाले दिये हैं। हम ने भी इसी प्रकार नंबर शुमार के इज़ाफ़े के साथ तर्जुमा कर दिया है। जिस समय के मुतअल्लिक़ हदीस मालूम करनी हो कि किस किताब में है तो "हिस्ने हसीन" किताब में देखें।

3) रमज़ान का (पूरा) महीना।

4) जुमा की रात (यानी जुमेरात और जुम्अः के बीच की रात)

5) जुमा का (पूरा) दिन।

6) (रोज़ाना) रात का दूसरा आधा हिस्सा।

7) (रोज़ाना) रात का पहला तिहाई हिस्सा।

8) (रोज़ाना) रात का अन्तिम तिहाई हिस्सा

9) (रोज़ाना) रात का अन्तिम तिहाई का दर्मियान

10) (रोज़ाना) सहरी के समय।

11) सब से अधिक दुआ के क़बूल होने की आशा जुमा की (दुआ क़बूल होने की) घड़ी है। यह घड़ी कब से कब तक रहती है? इस बारे में अहादीस में बहुत सी रिवायतें हैं, जैसे:

1- यह घड़ी इमाम के खुत्बा के लिये (मिंबर पर) बैठने से ले कर जुमा की नमाज़ समाप्त होने तक है।

2- जमाअत खड़ी होने के समय से ले कर सलाम फेरने तक है।

3- दुआ करने वाला जब खड़ा हुआ जुमा की नमाज़ पढ़ रहा हो वह समय है।

4- कुछ उलमा का कहना है कि (जुमा के दिन) अस्र की नमाज़ के बाद से सूरज डूबने तक है।

5- कुछ उलमा ने कहा कि जुमा के दिन की अन्तिम घड़ी है।

6- कुछ और उलमा ने कहा कि (जुमा के दिन) सुबह सादिक़ से ले कर सूरज के निकलने के समय तक है।

7- कुछ उलमा ने कहा है कि (जुमा के दिन) सूरज निकलने के बाद है।

8- प्रसिद्ध सहाबी अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़ि0 का मानना है कि दुआ क़बूल होने की यह घड़ी (जुमा के दिन दोपहर को) सूरज ढलने के ज़रा देर बाद से एक हाथ बराबर ढलने तक है।

9- किताब "हिस्ने हसीन" के संपादक इमाम जज़री रह0 फ़रमाते हैं कि मेरा तो अक़ीदा है कि (दुआ के क़बूल होने की वह घड़ी) इमाम के जुमा की नमाज़ के सूरः फ़ातिहा पढ़ने से ले कर आमीन कहने तक के दर्मियान है, ताकि जो हदीसें सहीह सनद के साथ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित हैं वह सब सूरतें (जो ऊपर बयान हुई हैं) जमा हो जायें, जैसा कि मैं ने एक दूसरे स्थान पर उस को स्पष्ट रूप से बयान किया है।

10- इमाम नववी रह0 का कहना है कि (उस घड़ी के बारे में) सही और ऐसा दुरुस्त समय कि उस के अलावा किसी क़ौल को इख़्तियार करना जाइज़ ही नहीं, वह है जो सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबू मूसा अश-अरी रज़ि0 से रिवायत है कि क़बूल होने की उस घड़ी का समय इमाम के ख़ुत्बा के लिये मिंबर पर बैठने से ले कर नमाज़ के ख़त्म होने तक है (यही

ऊपर बयान सब से पहला क़ौल है)[1]

★★★

---

1. दुआ के क़बूल होने का वास्तव में जो समय है वह दो समय है (1) शबे क़द्र (यानी क़द्र वाली रात) (2) जुमा के दिन। मगर न तो क़द्र की रात को सुनिश्चित किया गया है और न ही क़बूल होने की घड़ी को कि जुमा के दिन वह कौन सी घड़ी है? इसलिये क़द्र की रात के बारे में उलमा के कई बयान हैं और जुमा वाली क़बूल होने की घड़ी के बारे में भी। उन में से चन्द बयानों को संपादक रह० ने ऊपर बयान कर दिया है। कुछ उलमा ने तहक़ीक़ करने के बाद कहा है कि उस घड़ी को खोल कर बयान न करने में हिक्मत यह है कि अल्लाह और उस के रसूल की इच्छा यह है कि बन्दा क़द्र की रातों की तलाश में रमज़ान की तमाम रातों में न सही, अन्तिम अशरे में तो जाग कर अल्लाह को याद कर ले, इन्हीं रातों में किसी न किसी रात को दुआ के क़बूल होने का समय आ ही जायेगा और अल्लाह पाक ने चाहा तो अवश्य ही क़बूल हो जायेगी।

इसी प्रकार जुमा के दिन दुआ के क़बूल होने की घड़ी की तलाश में तमाम दिन न सही, सूरज के ढलने के बाद से लेकर सूरज डूबने तक तो ज़िक्र में लगा रहे कि इसी दर्मियान में दोपहर से शाम तक क़बूल होने की वह घड़ी भी आ जायेगी और अल्लाह ने चाहा तो उस बन्दे की दुआ अवश्य क़बूल होगी। इसलिये मुसलमानों का इसी पर अमल होना चाहिये कि रमज़ान में कम से कम अन्तिम दस रातों में जाग कर अल्लाह की याद और इबादत वग़ैरह में लगे रहें, और हर जुमा को सूरज के ढलने के बाद से ले कर सूरज के डूबने तक इबादत और दूसरी दुआओं में लगे रहें। इसलिये कि सप्ताह के सातों दिन में जुमा का एक दिन अल्लाह की इबादत के लिये ख़ाली होना चाहिये। इसलिये तमाम दुनिया के मुसलमान हमेशा से जुमा के दिन की छुट्टी करते चले आये हैं। यह छुट्टी टहलने-घूमने अथवा विश्राम और आराम करने के लिये नहीं है, बल्कि अल्लाह पाक की इबादत के लिये है।

छटी फ़स्ल

उन हालतों का बयान जिनमें दुआ़ क़बूल होती है

(दुआ़ करने वाला नीचे बयान की गयी हालतों[1] में दुआ़ करे तो आशा है कि अल्लाह पाक ज़रूर क़बूल फ़रमायेंगे)

1) नमाज़ के लिये अज़ान होने के समय (यानी अज़ान सुनने, उस का उत्तर देने और अज़ान की दुआ़ पढ़ने के बाद दुआ़ करे)

---

1. "हालत" से मुराद दुआ़ माँगने वाले की वह कैफ़ियत और तरीक़ा है जो माँगने वाला दुआ़ के समय अपनाता है। और "समय" से मुराद वह घड़ी और ज़माना है जिस में दुआ़ माँग रहा है। उर्दू भाषा में आ़म तौर पर एक को दूसरे से ताबीर करते हैं। जैसे, अज़ान होते समय भी कह सकते हैं और अज़ान होने की हालत में भी कह सकते हैं। मगर दोनों में फ़र्क़ है। समय का संबन्ध दुआ़ करने वाले की ज़ात से नहीं है और हालत का संबन्ध दुआ़ करने वाले की ज़ात से है। दुआ़ करने वाले की इन हालतों का बयान भी सहीह हदीसों में आया है, मगर यहाँ भी संपादक ने पहले की तरह अपने ही शब्दों में उन हालतों को बयान किया है और इशारों की सूरत में हदीस की किताबों का हवाला दिया है। इसी प्रकार हम ने भी नंबर शुमार के इज़ाफ़े के साथ उन्हीं के अल्फ़ाज़ में तर्जुमा किया है।

2) अज़ान और तक्बीर के दर्मियान (यानी अज़ान और इक़ामत के दर्मियान जहाँ भी मौक़ा मिल जाये दुआ करे)

3) जो शख़्स किसी मुसीबत या सख़्ती में गिरफ़्तार हो वह "हय्या अ-लल् फ़लाह" के बाद दुआ करे।

4) अल्लाह की राह (यानी जिहाद) में सफ़ें बाँधने की हालत में दुआ करे।

5) जब घमासान की लड़ाई हो रही हो, एक दूसरे पर आक्रमण कर रहे हों, उस हालत में दुआ करे।

6) फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद (यानी जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने और सलाम फेरने के बाद) दुआ करे।

7) और (नमाज़ में) सज्दा के अन्दर दुआ माँगे (मगर वही दुआ माँगे जो क़ुरआन और हदीस में आयी हो)

8) क़ुरआन पाक की तिलावत (से फ़ारिग़ होने) के बाद।

9) ख़ास कर ख़त्म कर लेने के बाद (चाहे स्वँय ख़त्म किया हो या किसी दूसरे ने)

10) ख़ास कर क़ुरआन ख़त्म करने वाले की दुआ।

11) ज़मज़म का पानी पीने की हालत में (यानी ज़मज़म कुएँ पर खड़े होकर पानी पिये और दुआ करे)

12) मरने वाले की जान निकलते समय (स्वँय मरने वाला भी दुआ करे और मौजूद लोग भी) मय्यित के पास आने के समय दुआ करे।

13) मुर्ग़ की नमाज़ के समय (यानी मुर्ग़ के बाँग देने की

आवाज़ सुन कर दुआ करे)

14) मुसलमानों की (दीनी) सभाओं में (उन मुसलमानों के साथ या अकेले दुआ करे)

15) ज़िक्र की सभाओं में (चाहे ज़िक्र करने वालों का जमावड़ा हो, या क़ुरआन-हदीस के पढ़ने-पढ़ाने की सभा हो, या वअ़ज़-नसीहत की)

16) इमाम के "व-लज़्ज़ाल्लीन" कहने के बाद।

17) मय्यित की आँखें बन्द करने के समय।

18) नमाज़ की इक़ामत (यानी तक्बीर) के समय।

19) वर्षा होने के समय। इमाम शाफ़ई रह० ने अपनी किताब "अल् उम्म" में इस हदीस को "मुर्-सल" रिवायत किया है और कहा है कि:

> "मैंने बहुत से हदीस के उलमा से बारिश होते समय दुआ क़बूल होने की हदीस को सुना और उसे याद कर लिया है।"

20) इमाम जज़री रह० फ़रमाते हैं 1- काबा शरीफ़ को देखने के वक़्त (चाहे मक्का शरीफ़ पहुंच कर पहली मर्तबा देखे, या जिस समय भी काबा शरीफ़ पर नज़र पड़े, दुआ करे) 2-पार:8, सूर: इन्आम आयत न0 124 में जो एक साथ दो मर्तबा अल्लाह तआला का नाम आया है, उन दोनों नामों के बीच

नोट : "मुर-सल्" उस हदीस को कहते हैं जिस में ताबई नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हदीस बयान करे और उस सहाबी का नाम न ले जिस से उस ने वह हदीस सुनी है।

में दुआ करे। वह आयत यह है:

मिस्-ल मा ऊति-य रुसुलुल्लाहि अल्लाहु आ-लमु हैसु यज्-अलु रिसा-ल-तहू

इमाम जज़री रह० फ़रमाते हैं : "हम ने बहुत से उलमा से इस आयत में अल्लाह पाक के दो नामों के दर्मियान दुआ के क़बूल होने को आज़माया हुआ कहते सुना है और याद किया है।" और हाफ़िज़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ रस्-ग़नी रह० ने तो अपनी तफ़्सीर में शैख़ अिमाद मुक़द्दसी से इस स्थान पर दुआ का क़बूल होना स्पष्ट शब्दों में लिखा है।

सात्वीं फ़सल

उन स्थानों का बयान जिन में दुआ क़बूल होती है

1) तमाम पाक स्थान। इमाम हसन बसरी रह0 ने मक्का वालों के नाम एक ख़त लिखा है, उस में वह (मक्का शरीफ़ में) दुआ क़बूल होने के यह 15 स्थान बयान करते हैं :

1- तवाफ़ में (यानी जिस स्थान पर तवाफ़ करते हैं)

2- मुल्-तज़िम के पास (यानी काबा शरीफ़ का वह हिस्सा जिस से तवाफ़ करने वाले चिमटते हैं। यह हिस्सा हजरे अस्वद और काबा के दर्वाज़े के दर्मियान चार हाथ के बराबर जगह है)

3- मीज़ाब (यानी काबा शरीफ़ की छत के परनाला) के नीचे।

4- बैतुल्लाह शरीफ़ के अन्दर।

5- ज़मज़म के कुएँ के पास।

6+7- सफ़ा और मर्वा (के पर्वत) पर

8- मस्आ (यानी सफ़ा और मर्वा के दर्मियान दौड़ने की जगह) में।

9- मुक़ामे इब्राहीम के पीछे।

10- अरफ़ात (के मैदान) में (जहाँ 9 ज़िलहिज्जा को सूरज ढलने के बाद से सूरज डूबने तक हाजी ठहरते हैं और यही हज्ज का अस्ली रुक्न है)

11- मुज़-दलिफ़ा में (जहाँ हाजी लोग अरफ़ात से वापस आ कर मग़िब और इशा की नमाज़ (एक साथ) पढ़ते हैं और रात बिताते हैं)

12- मिना में (जहाँ दस ज़िलहिज्जा को हाजी लोग जमुरात को कंकरियाँ मारते हैं और क़ुरबानी करते हैं)

13+14+15- तीनों जुमरों के पास (यह तीन पीलर (स्तंभ) हैं जिन पर हाजी कंकरियाँ मारते हैं)

2) इमाम जज़री रह० फ़रमाते हैं :

"अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की क़ब्र के पास दुआ क़बूल न होगी तो फिर किस जगह क़बूल होगी? (यानी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पवित्र रौज़ा (समाधि) तो दुआ क़बूल होने का वह पवित्र स्थान है कि इस को तो पहले नंबर पर होना चाहिये।"

और मुल-तज़िम के पास दुआ क़बूल होने की एक हदीस लगातार हमें मक्का के रावियों से पहुँची है।

आठवीं फ़स्ल

उन लोगों का बयान जिन की दुआएँ अल्लाह पाक के दर्बार में (जल्द) क़बूल होती हैं।

(सही हदीसों से साबित है कि) नीचे बयान किये गये लोगों की दुआएँ ख़ास तौर पर क़बूल होती हैं।[1]

1) मजबूर, लाचार और बेबस लोग।

2) सताए हुये लोग (एक रिवायत में है कि) अगर्चे वह पापी ही क्यों न हों (एक और रिवायत में है) अगर्चे वह काफ़िर ही हों।

3) पिता की दुआ (अपनी औलाद के लिये)

1- यह बयान भी संपादक ने अपने अल्फ़ाज़ में नक़ल किया है, इसलिये हम ने भी पहले की तरह इसी प्रकार नंबर शुमार के साथ तर्जुमा कर दिया है।

4) इमाम आदिल की दुआ (यानी न्याय और इन्साफ़ करने वाले ख़लीफ़ा या बादशाह या हाकिम की दुआ अपनी प्रजा के लिये)

5) हर नेक बन्दे के दुआ।

6) माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार और सेवा करने वाली औलाद की दुआ (अपने माता-पिता के लिये)

7) मुसाफ़िर की दुआ।

8) रोज़ा दार की दुआ रोज़ा खोलने के समय।

9) एक मुसलमान की दुआ अपने दूसरे मुसलमान भाई के लिये उस के पीठ पीछे।

10) हर मुसलमान की दुआ जब तक कि वह किसी पर अत्याचार करने या रिश्ता-नाता तोड़ने की न करे, या (दुआ करने के बाद निराश हो कर या शिकायत के तौर पर) यह न कहे कि "मैं ने दुआ माँगी थी वह क़बूल ही नहीं हुयी"

11) एक हदीस में आया है कि:

"अल्लाह पाक के कुछ (जहन्नम के अज़ाब से) आज़ाद किये हुये बन्दे हैं जिन में से हर एक की दिन-रात में एक दुआ (ज़रूर) क़बूल होती है।"

और किताब "जामे अबू मन्सूर" में (एक रिवायत) है कि:

"सहीह दुआ हाजी की होती है यहाँ तक कि वह (हज्ज कर के अपने घर) वापस आ जाये।"

★★★

नवीं फ़स्ल

इस्मे आज़म और दुआ के क़बूल होने में उस के असर (प्रभाव) का बयान

1) एक हदीस में आया है कि :

"अल्लाह तआला का वह इस्मे आज़म[1] जिस के साथ जो भी दुआ की जाये अल्लाह तआला उसको क़बूल करते हैं, और उसके साथ जो भी अल्लाह से सवाल किया जाये अल्लाह पाक उस को पूरा करते हैं, (पारः 17, सुरः अम्बिया, आयत न० 87) में है :

---

1. दुआ के क़बूल होने के सिलसिले में जिस प्रकार अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लैलतुल् क़द्र और जुमे के दिन दुआ क़बूल होने वाली घड़ी को सुनिश्चित नहीं फ़रमाया, इसी प्रकार इस्में आज़म को भी सुनिश्चित नहीं फ़रमाया ताकि दुआ करने वाला आवश्यकताओं और ज़रूरतों की बिना पर इस्मे आज़म की तलाश में अल्लाह पाक के अधिक से अधिक नामों से दुआ माँगे और इस प्रकार अल्लाह पाक की अधिक प्रशंसा और हम्द व सना करने का गर्व हासिल करे कि यही सब से बड़ी इबादत है। और आशा है कि इसी वसीले से अल्लाह पाक उस की दुआ क़बूल फ़रमा लेंगे। यह अल्लाह की बहुत बड़ी रहमत और मेहरबानी है कि वह इन हिक्मतों और तदबीरों से अपने बन्दों से अधिक से अधिक इबादत करा के उन्हें दुनिया और आख़िरत में अधिक से अधिक सवाब का हक़दार बना देता हैं।

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ

"लाइला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मि-नज़्ज़ालिमी-न

तर्जुमा - "(ऐ अल्लाह!) तेरे अ़लावा कोई माबूद नहीं है, तू पवित्र है। बेशक मैं ही अत्याचार करने वालों में से हूँ)"

2) एक और हदीस में आया है कि :

"अल्लाह पाक का वह इस्मे आज़म जिस के साथ अल्लाह से जो भी माँगा जाये देता है और जो भी दुआ़ की जाये अल्लाह (ज़रूर) क़बूल करता है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

"अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क बि-अन्न-क अन्त-अल्लाहु-ल-अ-हुदस्स-मदुल्लज़ी लम यलिद वलम यूलद व-लम् यकुल्लहु कुफ़ु-वन् अ-ह-दुन्

तर्जुमा - (मेरे मौला! मैं तुझ से सवाल करता हूँ इसलिये कि मैं गवाही देता हूँ कि तू ही अल्लाह है, तेरे अ़लावा कोई माबूद नहीं है, तू अकेला है, बेनियाज़ है, जिस से न कोई पैदा हुआ और न वह किसी से पैदा हुआ, और न ही कोई उस की बराबरी का है)

कुछ रिवायतों में इसी हदीस के अल्फ़ाज़ इस प्रकार हैं :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِىْ لَمْ
يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क बि-अन्न-क अन्- तल्लाहुल् अ-हदुस्स-मदुल्लज़ी लम् यलिद् व-लम् यू-लद् व-लम् यकुल्लहू कुफु-वन् अ-हदुन!

तर्जुमा -(मेरे मौला! मैं तुझ से सवाल करता हूँ इसलिए कि तू ही अल्लाह है, अकेला है, बे नियाज़ है, जिस से न कोई पैदा हुआ, और न वह किसी से पैदा हुआ और न ही कोई उसकी बराबरी का है)

3) एक और हदीस में आया है कि :

"अल्लाह तआ़ला का वह बहुत बड़ा और सब से बड़ा नाम जिस से जब भी दुआ की जाये, अल्लाह तआ़ला ज़रूर ही क़बूल फ़रमाते हैं, और जो भी माँगा जाये वह ज़रूर देते हैं, यह है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، وَحْدَكَ
لَا شَرِيْكَ لَكَ الْحَنَّانُ الْمَنَّانُ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क बि-अन्न ल-कल् हम्दु लाइला-ह इल्ला अन्-त, वह्-दक, ला शरी-क ल-क, अल् हन्नानुल् मन्नानु, बदीउस्समावाति वल् अर्ज़ि या ज़ल् जलालि वल् इक्रामि

तर्जुमा - (मेरे मौला! मैं तुझ से माँगता हूँ, इसलिये कि तेरे ही लिये हर प्रकार की प्रशंसा है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, तू अकेला है, तेरा कोई साझीदार नहीं है, तू बड़ा मेहरबान है,

बहुत अधिक एहसान करने वाला है, आसमान और ज़मीन का तू ही बनाने वाला है, ऐ (बड़ाई और) जलाल और (इनाम और) एहसान के मालिक)

★ और बाज़ रिवायतों में (ज़ुल् जलालि वल् इक्रामि के स्थान पर "या हय्यु या क़य्यूमु (यानी हमेशा जीवित रहने वाले, और (सब को) क़ायम रखने वाले) भी इस दुआ के अन्त में आया है।

4) एक और हदीस में आया है कि इस्मे आज़म इन दो आयतों में है -

(١) وَإِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ

1- वइलाहुकुम् इलाहुन्वाहिदुन् ला इला-ह इल्ला हु-वर्रहमानुर्रहीमु (पारः 2, सूरः बक़रः 163)

(और तुम्हारा माबूद तो वही अकेला माबूद है, उस के अलावा और कोई माबूद नहीं, वह बड़ा ही रहम करने वाला और बहुत ही मेहरबान है)

(٢) الٓمّٓ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ

2- अलिफ़ लाममीम अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-वल हय्युल् क़य्यूमु

(अलिफ़ लाम्मिम, अल्लाह, उस के अलावा कोई माबूद नहीं, वही हमेशा जीवित रहने वाला और (सब को) क़ायम रखने वाला है (पारः3, सूरः आले इमरान, आयत न01, 2)

5) एक और हदीस में आया है कि अल्लाह का इस्मे आज़म तीन सूरतों में है:

1- सूरः ब-क़-र : 2-सूरः आले इमरान 3-सूरः ताहा

6) क़ासिम[1] (बिन अ़ब्दुर्रहमान) ने कहा है कि

"मैंने (इस हदीस की रोशनी में) उस को तलाश किया तो "अल् हय्युल् क़य्यूमु" को इस्मे आज़म पाया।"

7) हिस्ने हसीन किताब के संपादक इमाम जज़री रह० फ़रमाते है

"मेरे नज़दीक" अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल क़य्यूमु" इस्मे आज़म है, ताकि सब हदीसों के दर्मियान मुवाफ़िक़त हो जाये, और इसलिये भी कि इमाम वाहिदी की किताब "किताबुद्दुआ" की हदीस जो यूनुस बिन अ़ब्दुल आला से रिवायत है, वह भी इस की ताईद करती है ---अल्लाह बेहतर जाने।

और आगे फ़रमाते हैं कि यह क़ासिम, अब्दुल रहमान के बेटे हैं और मुल्क शाम के रहने वाले ताबई हैं। हज़रत अबू उमामा बाहली रज़ि० के भरोसे मन्द शागिर्द हैं।

1- यह क़ासिम, अ़ब्दुर्रहमान के बेटे शाम के रहने वाले ताबई हैं, हज़रत अबू उमामा रज़ि० बाहली के भरोसे मन्द शार्गिद हैं।

दस्वीं फ़स्ल

अल्लाह तआ़ला के अस्माए हुस्ना का बयान

हदीस शरीफ़ में आया है[1] कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया

"अल्लाह पाक के अस्माए–हुस्ना जिन के साथ दुआ मॉंगने का हमें हुक्म दिया गया है 99 हैं [2] जो शख़्स उन का अहाता

---

1. इस हदीस में जिन 99 नामों का ज़िक्र आया है उन में से अधिकांश नामों का ज़िक्र क़ुरआन मजीद में है, केवल चन्द नाम ऐसे हैं जो हू बहू क़ुरआन में नहीं हैं, लेकिन उन का भी मुद्दा (अस्ल) जिस से वह नाम निकले हैं क़ुरआन में बयान हैं जैसे, एक शब्द "मुन्तक़िम" है, या शब्द कुरआन में नहीं है, मगर "इ़न्तिक़ाम" का शब्द आया है, जिस का अर्थ हू बहू वही है जो "मुन्तक़िम" का है (यानी बदला लेने वाला)

2. अल्लाह पाक के अस्माए हुस्ना जिन का ज़िक्र सूरः बनी इस्राईल की आयत "वलिल्लाहिल् असमाउल् हुस्ना फ़द्ऊहु बिहा" (और अल्लाह के सभी नाम अच्छे हैं पस उन नामों से उस को पुकारो) में आया है, इन 99 नामों ही में महदूद (सीमित) नही हैं, बल्कि इन के अ़लावा भी क़ुरआन व हदीस में नाम आये हैं जैसे, "ग़ाफ़िर" उन 99 नामों में ⊗

कर लेगा (यानी उन को याद कर के पढ़ता रहेगा) वह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(इस हदीस के दूसरे अल्फ़ाज़ इस प्रकार हैं :

"जो शख़्स उन को याद कर लेगा (और बराबर पढ़ता रहेगा) वह ज़रूर ही जन्नत में दाख़िल होगा।"

वह नाम यह हैं -

1) अल्लाहु - अल्लाह का नाम-जो शख़्स रोज़ाना एक हज़ार मर्तबा "या अल्लाहु" पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो उस के

⊠नहीं है, मगर क़ुरआन में आया है। इसलिए जो नाम भी क़ुरआन में आये हैं वह सब इस आयत में शामिल हैं उन नामों से दुआ करनी चाहिए।

हाँ अपनी ओर से अल्लाह का कोई ऐसा नाम जो कुरआन और हदीस में न आया हो, उसके नाम के तौर पर नहीं ले सकते, अगर्चे अर्थ के एतबार से दुरुस्त भी हो।

1. **अस्माए हुस्ना के पढ़ने का तरीक़ा** : हम ने तो नंम्बर शुमार के हिसाब से नाम, उन का अर्थ और फ़ाइदे बयान कर दिये हैं। जब उन नामों की तिलावत करना चाहें तो इस प्रकार आरंभ करें हु-वल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-वर्रहमानुर्रहीमु ---अन्त तक लगातार पढ़ते चले जायें। हर नाम के अन्तिम हर्फ़ पर पेश पढ़ें और दूसरे नाम से मिला दें, जिस नाम पर सांस लेने के लिये रुकें उस को न मिलाएँ, और दूसरा नाम "अल्" से आरंभ करें। अगर किसी एक नाम का वज़ीफ़ा पढ़ें तो शुरू में "या" का इज़ाफ़ा करदें जैसे, "अर्रहमानु" का वज़ीफ़ा पढ़ना हो तो "या रहमानु" पढ़े, "यर्रहमानु" न पढ़ें। इसी प्रकार तमाम नामों को समझ लीजिये।

दिल से हर प्रकार के शक-शुब्हे दूर हो जायंगे और विश्वास और हौसला की शक्ति पैदा होगी। ऐसा बीमार जिसका उपचार सम्भव नहीं ज़्यादा से ज़्यादा बार "या अल्लाहु" का विर्द रखे और इस के बाद सेहत की दुआ माँगे तो उस को सम्पूर्ण रूप से स्वास्थ नसीब होगा।

2) अर्रहमानु - اَلرَّحْمٰنُ बहुत अधिक रहम करने वाला = जो शख़्स रोज़ाना हर नमाज़ के बाद 100 मर्तबा "या रहमानु" पढ़ेगा, तो उस के दिल से अल्लाह ने चाहा तो हर प्रकार की सख़्ती और सुस्ती दूर हो जयेगी।

3) अर्रहीमु - اَلرَّحِيْمُ बड़ा मेहरबान = जो शख़्स रोज़ाना हर नमाज़ के बाद 100 मर्तबा "या रहीमु" पढ़ेगा दुनिया की तमाम आफ़तों और विवादों से अल्लाह ने चाहा तो सुरक्षित रहेगा और तमाम मख़्लूक़ उस पर मेहरबान हो जाएगी।

4) अल्-मलिकु- اَلْمَلِكُ हक़ीक़ी बादशाह = जो शख़्स रोज़ाना सुबह की नमाज़ के बाद "या मलिकु" को अधिक से अधिक पढ़ेगा अल्लाह उसे ग़नी फ़रमा देंगे।

5) अल् क़ुद्दूसु - اَلْقُدُّوْسُ बुराइयों से पाक-साफ़ = जो शख़्स रोज़ाना ज़वाल (सूरज ढलने) के बाद इस नाम को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो उस का दिल रूहानी बीमारियों से पाक हो जायेगा।

6) अस्सलामु - اَلسَّلَامُ बे ऐब ज़ात = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ा करेगा, अल्लाह ने चाहा तो तमाम आफ़तों से सुरक्षित रहेगा। जो शख़्स 115 मर्तबा इस नाम को पढ़ कर बीमार आदमी पर दम करेगा, अल्लाह तआला उस को सेहत

अ़ता करेंगे।

7) अल् मोमिनु - اَلْمُؤْمِنُ अम्न और ईमान देने वाला = जो शख़्स किसी डर के समय 360 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो हर प्रकार के डर और नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा। जो शख़्स इस नाम को पढ़े या लिख कर अपने पास रखे, उसका ज़ाहिर और बातिन अल्लाह पाक की हिफ़ाज़त में रहेगा।

8) अल् मुहैमिनु - اَلْمُهَيْمِنُ देख-रेख करने वाला = जो शख़्स स्नान के बाद दो रकअ़त नमाज़ पढ़े और सच्चे दिल से 100 मर्तबा यह नाम पढ़े, अल्लाह तआ़ला उसके ज़ाहिर और बातिन को पाक कर देंगे। और जो आदमी 115 मर्तबा पढ़े तो अल्लाह ने चाहा तो पोशीदा चीज़ों की जानकारी हो जायेगी।

9) अल् अ़ज़ीज़ु - اَلْعَزِيْزُ = जो शख़्स 40 दिन तक 40 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह तआ़ला उस को इज़्ज़त वाला बना देंगे और हर तरह से बे नियाज़ बना देंगे। और जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ के बाद 41 मर्तबा पढ़ता रहे वह अल्लाह ने चाहा तो किसी का मोहताज न होगा और बदनामी के बाद नेकनामी पायेगा।

10) अल् जब्बारु - اَلْجَبَّارُ सब से ज़बर्दस्त = जो शख़्स रोज़ाना सुबह-शाम 236 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो ज़ालिमों के अत्याचार और ज़्यादती से महफ़ूज़ रहेगा। और जो शख़्स चाँदी की अंगूठी पर यह नाम खुदाई कर के पहनेगा उसका रोब और दबदबा लोगों के दिलों में पैदा होगा।

11) अल् मु-त-कब्बिरु - اَلْمُتَكَبِّرُ बड़ाई और बुज़ुर्गी

वाला=जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला उसे इज़्ज़त और बड़ाई अ़ता फ़रमायेंगे। और अगर हर काम के शुरू में इस नाम को ज़्यादा से ज़्याद पढ़ेगा तो अल्लाह ने चाहा तो उस काम में कामियाबी होगी।

12) **अल् ख़ालिक़ु** - اَلْخَالِقُ पैदा करने वाला=जो शख़्स सात दिन तक लगातार 100 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा तो अल्लाह ने चाहा तो तमाम आफ़तों से सुरक्षित रहेगा। जो शख़्स सदा इस नाम को पढ़ता रहे तो अल्लाह पाक एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर देते हैं जो उसकी तरफ़ से इबादत करता है और उस का मुखड़ा चमकता रहता है।

13) **अल्बारिउ** - اَلْبَارِئُ जान डालने वाला=अगर बाँझ औरत सात रोज़े रखे और पानी से रोज़ा खोलने के बाद 21 मर्तबा "*अल् बारिउल् मु-सव्विरू*" पढ़े, अल्लाह ने चाहा तो उसे औलाद प्राप्त होगी।

14) **अल् मु-सव्विरू** - اَلْمُصَوِّرُ सूरत देने वाला=इस की भी विशेष्ता न0 13 जैसी ही है।

15) **अल् ग़फ़्फ़ारू** - اَلْغَفَّارُ माफ़ करने और पर्दा डालने वाला =जो शख़्स जुम्आ की नमाज़ के बाद 100 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो उस पर माफ़ी के प्रभाव ज़ाहिर होने लगेंगे। और जो शख़्स अ़स्र की नमाज़ के बाद रोज़ाना "या ग़फ़्फ़ारू इग़फ़िर्ली" पढ़ेगा, अल्लाह तआ़ला उसको बख़्शे हुये लोगों में दाख़िल करेंगे।

16) **अल् क़ह्हारु** - اَلْقَهَّارُ सब को अपने क़ाबू में रखने वाला=जो शख़्स दुनिया की मुहब्बत में गिरफ़्तार हो वह

अधिक से अधिक इस नाम को पढ़े तो इन शाअल्लाह दुनिया की मुहब्बत उस के दिल से जाती रहेगी और अल्लाह से मुहब्बत पैदा हो जायेगी।

17) अल् वह्हाबु - اَلْوَهَّابُ सब कुछ देने वाला =जो शख़्स खान-पान की तन्गी में गिरफ़्तार हो वह ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ा करे, या लिख कर अपने पास रखे, या दिन चढ़े (चाश्त) की नमाज़ के अन्तिम सज्दा में 40 मर्तबा यह नाम पढ़ा करे तो अल्लाह तआ़ला फ़क़ीरी से उस को आश्चर्य जनक रूप से नजात देदेंगे। और अगर कोई ख़ास ज़रूरत पेश आ जाये तो घर या मस्जिद के आँगन में तीन मर्तबा सज्दा करके हाथ उठाये और 100 मर्तबा इस नाम को पढ़े, अल्लाह ने चाहा तो ज़रूरत पूरी हो जायेगी।

18) अर्रज़्ज़ाक़ु - اَلرَّزَّاقُ बहुत बड़ा रोज़ी देने वाला = जो शख़्स सुबह की नमाज़ से पहले अपने घर के चारों कोनों में 10-10 मर्तबा इस नाम को पढ़ कर दम करेगा, अल्लाह तआ़ला उस पर रोज़ी के दर्वाज़े खोल देंगे और बीमारी और ग़रीबी उस के घर में कदापि न आयेगी। दाहिने कोने से शुरू करें और मुँह क़िबला की ओर रखें।

19) अल् फ़त्ताहु- اَلْفَتَّاحُ कठिनाइयों को दूर करने वाला =जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ के बाद दोनों हाथों को सीने पर बाँध कर 70 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो उस का दिल ईमान के नूर से रोशन हो जायेगा।

20) अल् अ़लीमु - اَلْعَلِيْمُ बहुत इल्म वाला = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगा तो अल्लाह तआ़ला उस पर इल्म (ज्ञान) के दर्वाज़े खोल देंगे।

21) अल् क़ाबिज़ु - اَلْقَابِضُ रोज़ी तंग करने वाला = जो शख़्स रोटी के चार टुकड़ों पर इस नाम को लिख कर 40 दिन तक खायेगा, वह भूख-प्यास, घाव और हर प्रकार के दर्द आदि की तक्लीफ़ से सुरक्षित रहेगा।

22) अल् बासितु - اَلْبَاسِطُ रोज़ी कुशादा करने वाला = जो शख़्स चाश्त की नमाज़ के बाद आकाश की ओर हाथ उठा कर रोज़ाना दस मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा और मुँह पर हाथ फेरेगा, अल्लाह तआला उसे मालदार कर देगा और कभी किसी का मुहताज न होगा।

23) अल् ख़ाफ़िज़ु - اَلْخَافِضُ नीचा करने वाला = जो शख़्स रोज़ाना 500 मर्तबा "या ख़ाफ़िज़ु" पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उस की अवश्यकतायें पूरी करेगा और उस की कठिनाइयों को दूर फ़रमा देगा। जो शख़्स तीन रोज़े रखे और चौथे रोज़ एक स्थान पर बैठ कर 70 मर्तबा इस को पढ़ेगा अल्लाह ने चाहा तो दुश्मन पर विजय प्राप्त करेगा।

24) अर्राफ़िउ- اَلرَّافِعُ ऊँचा करने वाला = जो शख़्स हर महीने की चौदहवीं रात को आधी रात में 100 मर्तबा इसे पढ़े तो अल्लाह तआला लोगों से बे पर्वाह कर देंगे और उसे माल दार बना देंगे।

25) अल् मुइज़्ज़ु - اَلْمُعِزُّ इज़्ज़त देने वाला = जो शख़्स पीर या जुमे के दिन मग़रिब की नमाज़ के बाद 40 मर्तबा इसे पढ़ा करेगा, अल्लाह तआला उस को लोगों में इज़्ज़त वाला (इज़्ज़त दार) बना देगा।

26) अल् मुज़िल्लु -اَلْمُذِلُّ ज़िल्लत देने वाला = जो

शख़्स 75 मर्तबा इस को पढ़ कर सज्दे में जा कर दुआ करेगा, अल्लाह तआला उस को हसद करने वालों, ज़ुल्म ढाने वालों और दुश्मनों की बुराइयों से सुरक्षित रखेंगे। अगर कोई ख़ास दुश्मन हो तो सज्दे में उस का नाम ले कर कहे "ऐ अल्लाह! फ़लाँ ज़ालिम या दुश्मन की बुराई से सुरक्षित रख" कह कर दुआ करे, अल्लाह ने चाहा तो क़बूल होगी।

27) अस्समीउ - اَلسَّمِيْعُ सब कुछ सुनने वाला = जो शख़्स जुमेरात के दिन चाश्त की नमाज़ के बाद 500, या 100, या 50 मर्तबा इसे पढ़ेगा, अल्लाह तआला ने चाहा तो उस की दुआयें क़बूल होंगी। दर्मियान में किसी से बात-चीत बिल्कुल न करे। और जो शख़्स जुमेरात के दिन फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ नमाज़ों के दर्मियान 100 मर्तबा पढ़ेगा, अल्लाह तआला उस पर रहमत की नज़र फ़रमायेंगे।

28) अल् बसीरू - اَلْبَصِيْرُ सब कुछ देखने वाला = जो शख़्स जुमा की नमाज़ के बाद 100 मर्तबा "या बसीरू" पढ़ा करेगा, अल्लाह तआला उस की नज़र में रोशनी और दिल में नूर पैदा फ़रमा देंगे।

29) अल् ह-कमु - اَلْحَكَمُ हाकिम = जो शख़्स रात के अन्तिम पहर में वुज़ू के साथ 99 मर्तबा यह नाम पढ़ेगा अल्लाह तआला उस के दिल को अपने राज़ और नूर का स्थान बना देंगे। और जो जुमे की रात में यह नाम इतना ज़्यादा पढ़े कि बेहाल और बे क़ाबू हो जाये तो अल्लाह पाक उस के दिल को खोल देंगे और पोशीदा बातों को उस के दिल में डाल देंगे।

30) अल् अद्लु - اَلْعَدْلُ सरापा इन्साफ़ = जो शख़्स जुमे के दिन, या जुमा की रात में रोटी के 20 टुकड़ों पर इस नाम

को लिख कर रखेगा, अल्लाह तआला मख़्लूक़ को उस के ताबे और मातहत फ़रमा देंगे-इनशाअल्लाह!

31) **अल्लतीफ़ु** - اَللَّطِيْفُ बड़ा मेहरबानी करने वाला = जो शख़्स 133 मर्तबा "या लतीफ़ु" पढ़ा करे, इन्शा अल्लाह उसकी रोज़ी में बर्कत होगी और उसके सब काम अच्छे ढंग से पूरे होंगे। जो शख़्स फ़ाक़ा, दुःख, बीमारी अथवा किसी और मुसीबत में हो, वह अच्छी तरह वुज़ू कर के दो रकअत नमाज़ पढ़े और अपने इरादे और चाहत को दिल में रख कर 100 मर्तबा यह नाम पढ़े, अल्लाह ने चाहा तो उस का मक़सद पूरा होगा।

32) **अल् ख़बीरु** - اَلْخَبِيْرُ जानने वाला, आगाह = जो शख़्स 7 दिन तक यह नाम ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो उस पर पोशीदा राज़ ज़ाहिर होने लगेंगे। जो शख़्स अपने नफ़्स की ख़्वाहिश में गिरफ़्तार हो वह इस नाम को पढ़ा करे तो अल्लाह ने चाहा तो उन से नजात पायेगा।

33) **अल् हलीमु** - اَلْحَلِيْمُ बड़ा बुर्दबार = जो शख़्स इस नाम को काग़ज़ पर लिख कर पानी से धो कर जिस वस्तु पर उस पानी को छिड़के या मले, अल्लाह ने चाहा तो उस में ख़ैर और बर्कत होगी और समस्त आफ़तों से वह सुरक्षित रहेगा।

34) **अल् अज़ीमु** - اَلْعَظِيْمُ बड़ा बुज़ुर्ग = जो शख़्स इस नाम को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ेगा अल्लाह ने चाहा तो उसे इज़्ज़त और बड़ाई प्राप्त होगी।

35) **अल् ग़फ़ूरु** - اَلْغَفُوْرُ नौचा करने वाला = जो शख़्स इस नाम को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ेगा अल्लाह तआला ने चाहा तो उस की तमाम तकलीफ़ें, रन्ज और परेशानियाँ दूर हो जायेंगी

माल और औलाद में बर्कत होगी। हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स सज्दे में "रब्बिग़फ़िर्ली" (ऐ मेरे मौला मुझे माफ़ कर दे) तीन मर्तबा कहेगा, अल्लाह तआ़ला उस के अगले-पिछले गुनाह माफ़ फ़रमादेंगे।

36) अश्शकूरु - اَلشَّكُوْرُ क़द्र करने वाला = जो शख़्स रोज़ी-रोटी की तन्गी, या किसी और दुःख-दर्द, रन्ज-ग़म और परेशानी में गिरफ़्तार हो, वह इस नाम को 41 मर्तबा रोज़ाना पढ़े, अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो उसे आज़ादी नसीब होगी।

37) अल् अ़लिय्यु - اَلْعَلِيُّ बहुत बुलन्द और ऊँचा = जो शख़्स इस नाम को हमेशा पढ़ता रहे और लिख कर अपने पास रखे, अल्लाह ने चाहा तो उस का मर्तबा बुलन्द होगा और उसे मक़्सद में कामयाबी और खुशहाली नसीब होगी।

38) अल् कबीरु - اَلْكَبِيْرُ बहुत बड़ा = जो शख़्स अपने पद से हटा दिया गया हो वह 7 रोज़े रखे और रोज़ाना एक हज़ार मर्तबा इस नाम को पढ़े वह इनशा अल्लाह अपने पद पर बहाल हो जायेगा और बज़ुर्गी और बड़ाई नसीब होगी।

39) अल् हफ़ीज़ु - اَلْحَفِيْظُ सब की रक्षा करने वाला = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा "या हफ़ीज़ु" को पढ़ेगा और लिख कर अपने पास रखेगा अल्लाह ने चाहा तो हर प्रकार के ख़ौफ़ डर व हानि से महफ़ूज़ रहेगा।

40) अल् मुक़ीतु - اَلْمُقِيْتُ सब को रोज़ी और क़ुव्वत देने वाला = जो शख़्स किसी ख़ाली प्याले में 7 मर्तबा इस नाम को पढ़ कर दम करेगा और उस में स्वँय पानी पिये, या किसी दूसरे को पिलायेगा, या सूंघेगा तो अल्लाह ने चाहा तो वह अपने

कामयाब होगा।

41) अल् हसीबु - الْحَسِيْبُ सब के लिये किफ़ायत करने वाला = जिस शख़्स को किसी भी चीज़ या शख़्स का डर हो वह जुमेरात से आरंभ कर के आठ रोज़ तक सुबह-शाम 70 मर्तबा "हस्बि-यल्लाहुल् हसीबु" पढ़े वह इन्शा अल्लाह हर चीज़ की बुराई से सुरक्षित रहेगा।

42) अल् जलीलु - الْجَلِيْلُ बड़े और बुलन्द मर्तबा वाला = जो शख़्स मुश्क और केसर से इस नाम को लिख कर अपने पास रखेगा और ज़्यादा से ज़्यादा "या जलीलु" को पढ़ेगा, अल्लाह तआ़ला उस को इज़्ज़त, बड़ाई और मर्तबा अ़ता फ़रमायेंगे।

43) अल् करीमु - اَلْكَرِيْمُ बहुत मेहरबानी करने वाला = जो शख़्स रोज़ाना सोते समय "या करीमु" पढ़ते-पढ़ते सो जाया करे, अल्लाह तआ़ला उस को उलमा और नेक लोगों में इज़्ज़त नसीब फ़रमायेंगे।

44) अर्रक़ीबु - اَلرَّقِيْبُ बड़ा नेगहबान = जो शख़्स अपने बाल-बच्चों और धन-माल के ऊपर 7 मर्तबा इस नाम को पढ़ कर दम किया करे और इस नाम को पढ़ा करे, अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो सब आफ़तों से सुरक्षित रहेगा।

45) अल् मुजीबु - الْمُجِيْبُ दुआयें सुनने और क़बूल करने वाला = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा "या मुजीबु" पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो उस की दुआयें अल्लाह के दर्बार में क़बूल होने लगेंगी।

46) अल्वासीउ - اَلْوَاسِعُ कुशादगी वाला = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा "या वासिउ" को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो

उस को ज़ाहिरी और बातिनी गिज़ा (खुराक) नसीब होगी।

47) अल् हकीमु- اَلْحَكِيْمُ बड़ी हिक्मतों वाला = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा "या हकीमु" पढ़ा करे अल्लाह तआला उस पर इल्म और हिक्मत के दर्वाज़े खोल देंगे। जिस का कोई काम पूरा न होता हो वह पाबन्दी से इस नाम को पढ़ा करे तो अल्लाह ने चाहा तो उस का काम पूरा हो जायेगा।

48) अल् वदूदु- اَلْوَدُوْدُ बड़ा प्रेम करने वाला = जो शख़्स 1000 मर्तबा "या वदूदु" पढ़ कर खाने पर दम कर के पत्नी के साथ बैठ कर वह खाना खायेगा तो इन्शा अल्लाह पति और पत्नी के दर्मियान टन्टा और झगड़ा समाप्त हो जाएगा और परस्पर मुहब्बत पैदा हो जायेगी।

49) अल् मजीदु - اَلْمَجِيْدُ बड़ा बुज़ुर्ग = जो शख़्स किसी घातक बीमारी जैसे, कोढ़ और आत-शक (गुप्त अंग की बीमारी) में गिरिफ़्तार हो वह 13, 14, और 15 तिथि के रोज़े रखे और इफ़्तार के बाद ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ा करे और पानी पर दम कर के पिये, अल्लाह ने चाहा तो वह बीमारी समाप्त हो जायेगी।

50) अल् बाइसु- اَلْبَاعِثُ मुर्दों को जीवित करने वाला = जो शख़्स रोज़ाना सोते समय सीने पर हाथ रख कर 101 मर्तबा "या बाइसु" पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो उस का दिल इल्म और हिक्मत से ज़िन्दा हो जायेगा।

51) अश्शहीदु- اَلشَّهِيْدُ हाज़िर नाज़िर = जिस शख़्स की पत्नी या औलाद ना फ़रमानी (अवज्ञा) करती हो, वह सुबह के समय उस के माथे पर हाथ रख कर 21 मर्तबा "या

शहीदु" पढ़ कर दम करे, अल्लाह ने चाहा तो फ़र्मांबर्दार (आज्ञा कारी) हो जायेगा।

52) अल्हक़्क़ु- اَلْحَقُّ बरहक़-बरक़रार=जो शख़्स चौकोर काग़ज़ के चारों कोनों पर "अल्हक़्क़ु" लिख कर सेहरी के समय काग़ज़ को हथेली पर रख कर आकाश की ओर बुलन्द कर के दुआ करे, अल्लाह ने चाहा तो गुमशुदा शख़्स या सामान मिल जायेगा और हानि से सुरक्षित रहेगा।

53) अल् वकीलु- اَلْوَكِيْلُ बिगड़ी बनाने वाला=जो शख़्स किसी भी आसमानी ख़ौफ़ के समय ज़्यादा से ज़्यादा "या वक़ीलु" को पढ़ा करे और इस नाम को अपना वकील बना ले, वह इन्शा अल्लाह तआ़ला हर आफ़त और परेशानी से सुरक्षित रहेगा।

54) अल् क़विय्यु- اَلْقَوِيُّ बड़ी ताक़त और कुव्वत वाला=जो शख़्स वास्तव में मज़लूम और कमज़ोर हो, वह उस ज़ालिम और ताक़त वर दुश्मन से बचाव की नियत से ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ा करे तो इन्शाअल्लाह उस से सुरक्षित रहेगा(बे वजह और नाहक़ यह अ़मल हर्गिज़ न करे)

55) अल् मतीनु- اَلْمَتِيْنُ ज़र्वदस्त शक्ति शाली=जिस महिला के दूध न हो उस को "अल् मतीनु" काग़ज़ पर लिख कर धोकर पिलायें, अल्लाह ने चाहा तो खूब दूध होगा।

56) अल्-वलिय्यु- اَلْوَلِيُّ सहायक-सहयोगी=जो शख़्स अपनी पत्नी की आ़दतों और हर्कतों से खुश न हो वह जब उस के सामने जाये तो इस नाम को पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो वह नेक आ़दतों वाली बन जायेगी।

57) अल् हमीदु- اَلْحَمِيْدُ प्रशंसा के योग्य=जो शख़्स 45 दिन तक लगातार 93 मर्तबा एकान्त में "या हमीदु" पढ़ा करेगा, उस की तमाम बुरी आदतें और हर्कतें दूर हो जाएंगी-इन्शाअल्लाह।

58) अल् मुह़सी- اَلْمُحْصِیْ अपने इल्म और गिन्ती में रखने वाला=जो शख़्स रोटी के 20 टुक्ड़ों पर रोज़ाना 20 मर्तबा यह नाम पढ़ कर दम करे और खाये, अल्लाह ने चाहा तो मख़्लूक़ उस के अधीन और मातहत हो जाएगी।

59) अल् मुब्दिउ- اَلْمُبْدِئُ पहली बार पैदा करने वाला=जो शख़्स सेहरी के समय गर्भवती महिला के पेट पर हाथ रख कर 99 मर्तबा "या मुबदिउ" पढ़ेगा, इन्शाअल्लाह न उस का गर्भ पात होगा, न समय से पहले बच्चा पैदा होगा।

60) अल् मुईदु- اَلْمُعِيْدُ दोबारा पैदा करने वाला=गुम हुये शख़्स को वापस बुलाने के लिये जब घर के सब आदमी सो जायें तो घर के चारों कोनों में 70-70 मर्तबा इस नाम को पढ़े, अल्लाह ने चाहा तो सात दिन के भीतर वापस आ जायेगा, या पता चल जायेगा।

61) अल् मुह्यी- اَلْمُحْيِیْ जीवन देने वाला=जो शख़्स बीमार हो वह कसरत से इस को पढ़ता रहे। या अगर किसी और बीमार पर भी दम करे, अल्लाह ने चाहा तो वह तन्दुरुस्त हो जायेगा। और जो शख़्स 89 मर्तबा इस को पढ़ कर अपने ऊपर दम करे वह हर प्रकार की बन्दिश से सुरक्षित रहेगा।

62) अल् मुमीतु- اَلْمُمِيْتُ मौत देने वाला=जिस का नफ़्स उस के बस और क़ाबू में न हो वह सोते समय सीने पर

रख कर इस नाम को पढ़ते हुये सो जाये, तो इन्शाअल्लाह उस का नफ़्स उस के क़ाबू में हो जायेगा।

63) अल् हय्यु- اَلْحَیُّ हमेशा-हमेशा जीवित रहने वाला=जो शख़्स रोज़ाना 3000 मर्तबा इस नाम को पढ़ता रहेगा, अल्लाह ने चाहा तो वह कभी बीमार न होगा। और जो शख़्स इस नाम को चीनी के बर्तन पर मुश्क और गुलाब से लिख कर मीठे पानी से धो कर पिये, या किसी बीमार को पिलाये, इन्शाअल्लाह स्वास्थ लाभ प्राप्त होगा।

64) अल् क़य्यूमु- اَلْقَیُّوْمُ सब को क़ायम रखने और संभालने वाला=जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो लोगों में उस की इज़्ज़त और साख ज़्यादा होगी। और एकान्त में बैठ कर अगर पढ़ेगा तो अल्लाह ने चाहा वह खुशहाल हो जायेगा। और जो सुबह की नमाज़ के बाद से सूरज के निकलने तक "या हय्यु या क़य्यूमु" को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो उस की सुस्ती और काहिली दुर हो जायेगी।

65) अल् वाजिदु- اَلْوَاجِدُ हर वस्तु को पाने वाला=जो शख़्स खाना खाते समय इस नाम को पढ़े, तो वह खाना उस के दिल के लिये कुव्वत और ताक़त और नूरानियत का सबब होगा- इन्शाअल्लाह तआ़ला।

66) अल् माजिदु- اَلْمَاجِدُ बजुर्गी और बड़ाई वाला=जो शख़्स एकान्त में यह नाम इतना ज़्यादा पढ़े कि बेक़ाबू हो जाये तो इन्शाअल्लाह उस के दिल पर अल्लाह पाक का नूर ज़ाहिर होगा।

67) अल् वाहिदु+अल् अ-हदु- اَلْوَاحِدُ اَلْاَحَدُ

एक अकेला = जो शख़्स रोज़ाना 1000 मर्तबा इस नाम को पढ़ा करे, उस के दिल से अल्लाह ने चाहा तो मख़्लूक़ का डर और उस से मुहब्बत जाती रहेगी। जिस के औलाद न होती हो वह इस नाम को लिख कर अपने पास रखे, अल्लाह ने चाहा तो उस को नेक औलाद नसीब होगी।

68) अस्स-मदु- اَلصَّمَدُ बेनियाज़ = जो शख़्स सहर के समय (पिछले पहर) सज्दा में सर रख कर 115 या 125 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा, इन्शाअल्लाह उसे ज़ाहिरी और बातिनी सच्चाई नसीब होगी। और जो वुज़ू कर के इस नाम को पढ़ेगा वह इन्शाअल्लाह मख़्लूक़ से बेनियाज़ हो जायेगा।

69) अल् क़ादिरु- اَلْقَادِرُ क़ुदरत वाला = जो शख़्स दो रकअ़त नमाज़ पढ़ कर 100 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह पाक उस के दुश्मनों को ज़लील कर देंगे (अगर वह हक़ पर होगा तो) और अगर किसी का कोई मुश्किल काम हो, या किसी काम में कठिनाई आ जाये तो 41 बार "या क़ादिरु" पढे। अल्लाह ने चाहा तो वह कठिनाई दूर हो जायेगी।

70) अल् मुक़-तदिरु- اَلْمُقْتَدِرُ पूरी क़ुदरत रखने वाला = जो शख़्स सोकर उठने के बाद ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़े, या कम से कम 20 मर्तबा पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो उस के समस्त कार्य सरल और दुरुस्त हो जायेंगे।

71) अल् मु-क़द्दिमु- اَلْمُقَدِّمُ पहले और आगे करने वाला = जो शख़्स लड़ाई के समय इस नाम को पढ़ता रहेगा अल्लाह पाक उसे (आगे बढ़ने की) क़ुव्वत और साहस अ़ता फ़रमायेंगे और दुश्मनों से सुरक्षित रखेंगे। और जो शख़्स हर समय इस नाम को पढ़ेगा अल्लाह ने चाहा तो वह शख़्स अल्लाह का

हुक्म मानने वाला (आज्ञाकारी) बन्दा बन जायेगा।

72) **अल् मु-अख़्ख़िरु-** اَلْمُؤَخِّرُ पीछे और बाद में रखने वाला = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगा उसे इन्शाअल्लाह सच्ची तौबह नसीब होगी। और जो शख़्स रोज़ाना 100 मर्तबा इस नाम को पाबन्दी के साथ पढ़ा करे उस को अल्लाह ने चाहा तो ऐसी नज़दीकी नसीब होगी कि उस के बिना चैन ही न आयेगा।

73) **अल् अव्वलु-** اَلْاَوَّلُ सब से पहले = जिस के लड़का न होता हो वह 40 दिन तक 40 मर्तबा रोज़ाना "अल् अव्वलु" पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो उस की इच्छा (मुराद) पूरी होगी। जो शख़्स मुसाफ़िर हो वह जुमा के दिन एक हज़ार मर्तबा इस नाम को पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो बहुत जल्द ख़ैरियत से घर पहुँच जायेगा।

74) **अल् आख़िरु-** اَلْاٰخِرُ सब के बाद = जो शख़्स रोज़ाना इस नाम को पढ़ा करे उस के दिल से अल्लाह के अलावा की मुहब्बत दूर हो जायेगी और अल्लाह ने चाहा तो सारी उम्र की कोताहियों का कफ़्फ़ारा हो जायेगा और अन्त बेहतर होगा।

75) **अज़्ज़ाहिरु-** اَلظَّاهِرُ ज़ाहिर और खुला हुआ = जो शख़्स इशराक़ की नमाज़ के बाद 500 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसकी आँखों में रोशनी और दिल में नूर अता फ़रमायेंगे - इन्शाअल्लाह!

76) **अल्बातिनु-** اَلْبَاطِنُ पोशीदा छुपा हुआ = जो शख़्स रोज़ाना 33 बार इस नाम को पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो उस पर पोशीदा राज़ ज़ाहिर होने लगेंगे और उस के दिल मे

अल्लाह से मुहब्बत और लगाव पैदा होगा। और जो दो रक्अत नमाज़ अदा करने के बाद "हु-वल् अव्वलु वल् आख़िरू वज़्ज़ाहिरू वल् बातिनु वहु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीरून" पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो उस की समस्त आवश्यकताएँ पूरी होंगी।

77) अल् वालियु- اَلْوَالِیُ देख-रेख और निग्रानी करने वाला = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगा, वह अचानक पेश आने वाली आफ़तों से सुरक्षित रहेगा। ऐसे प्याले में जो प्रयोग में न लाया गया हो यह नाम लिख कर उस में पानी भर कर मकान में छिड़केगा तो वह मकान भी अल्लाह ने चाहा तो तमाम आफ़तों से सुरक्षित रहेगा। अगर किसी को अपने मातहत करना चाहे तो 11 मर्तबा इस नाम को पढ़े, अल्लाह ने चाहा तो वह शख़्स फ़रमाबरदार हो जायेगा।

78) अल् मु-तआलीयु- اَلْمُتَعَالِیُ सब से बुलन्द और ऊँचा = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो उस की तमाम कठिनाइयाँ दूर हो जायंगी। जो महिला माहवारी की हालत में ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगी अल्लाह ने चाहा तो उस की तक्लीफ़ दूर हो जाएगी।

79) अल् बर्र- اَلْبَرُّ बड़ा अच्छा व्यवहार करने वाला = जो शख़्स शराब, बलात्कार और दूसरी बुराइयों में गिरफ़्तार हो रोज़ाना 7 मर्तबा इस नाम को पढ़े तो उन गुनाहों की ओर झुकाव समाप्त हो जायेगा। जो शख़्स दुनिया के मुहब्बत में गिरफ़्तार हो इस नाम को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े, तो दुनिया की मुहब्बत उस के दिल से जाती रहे। और जो शख़्स अपने बच्चे पर पैदा होने के बाद ही सात मर्तबा इस नाम को पढ़कर दम कर दे और अल्लाह पाक के हवाले कर दे तो वह बालिग़ होने तक

तमाम आफ़तों से सुरक्षित रहेगा। इन्शाअल्लाह तआ़ला।

80) **अत्तव्वाबु**- اَلتَّوَّابُ बहुत ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला = जो शख़्स चाश्त की नमाज़ के बाद 360 मर्तबा इस नाम को पढ़ा करेगा, इन्शाअल्लाह उसे सच्ची तौबा नसीब होगी। और जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ा करेगा, अल्लाह ने चाहा तो उस के तमाम काम सरल होगें। अगर किसी ज़ालिम पर 10 मर्तबा पढ़ कर दम कर दे तो अल्लाह ने चाहा तो उस से छुटकारा मिल जायेगा।

81) **अल्. मुन्-तक़िमु**- اَلْمُنْتَقِمُ बदला लेने वाला = जो शख़्स हक़ पर हो और दुश्मन से बदला लेने की उस में हिम्मत न हो वह तीन जुमा तक ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़े, अल्लाह तआ़ला उस से खुद ही बदला ले लेंगे।

82) **अल् अ़फुव्वु**- اَلْعَفُوُّ बहुत अधिक माफ़ करने वाला = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ा करे, अल्लाह तआ़ला उस के पापों को माफ़ फ़रमा देंगे, इन्शाअल्लाह।

83) **अर्रऊफु**- اَلرَّؤُفُ बहुत मेहरबान = जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो मख़्लूक़ उस पर मेहरबान हो जायगी और वह मख़्लूक़ पर। और जो शख़्स 10 मर्तबा दुरूद शरीफ़ और 10 मर्तबा इस नाम को पढ़े तो अल्लाह ने चाहा तो उस का गुस्सा समाप्त हो जायेगा। अगर किसी दूसरे नाराज़ शख़्स पर दम करे तो उस का भी गुस्सा समाप्त हो जायेगा।

84) **मालिकुल् मुल्कि** - مَالِكُ الْمُلْكِ मुल्कों का मालिक = जो शख़्स इस नाम को पढ़ता रहेगा अल्लाह तआ़ला

उस को ग़नी और लोगों से बेनियाज़ कर देंगे और वह किसी का मुहताज न रहेगा।

85) ज़ुल जलालि वल् इकरामि- ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ जलाल और इनाम व इकराम करने वाला=जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ा करेगा तो अल्लाह तआ़ला उस को इज़्ज़त और बड़ाई अ़ता करेंगे और मख़्लूक़ से उसे बेनियाज़ कर देंगे।

86) अल् मुक़सितु- اَلْمُقْسِطُ न्याय और इन्साफ़ क़ायम करने वाला=जो शख़्स रोज़ाना इस नाम को पढ़ा करे तो अल्लाह ने चाहा तो वह शैतान के वस्वसों से सुरक्षित रहेगा। और अगर किसी ख़ास मक़्सद के लिये 700 मर्तबा इस नाम को पढ़ेगा तो अल्लाह ने चाहा तो वह मक़्सद हासिल होगा।

87) अल् जामिउ- اَلْجَامِعُ सब को जमा करने वाला=जिस शख़्स के संबन्धी बिखर गये हों वह चाश्त के समय आसमान की ओर मुँह कर के दस मर्तबा इस नाम को पढ़े और एक उँगली बन्द कर ले। इसी प्रकार हर दस मर्तबा पर उँगली बन्द करता जाये। अन्त में दोनों हाथों को मुँह पर फेर ले, अल्लाह ने चाहा तो उस के संबन्धी और रिश्तेदार बहुत जल्द इक्ट्ठा हो जायेंगे। अगर कोई वस्तु गुम हो जाये तो "अल्लाहुम्म या जामिउन्नासि लियौमिल्लारै-ब फ़ीहि इज्मा ज़ाल्लती" पढ़ा करे तो वह वस्तु अल्लाह ने चाहा तो मिल जायेगी। जाइज़ मुहब्बत के लिये भी यह दुआ बेहतरीन है।

88) अल् ग़निय्यु- اَلْغَنِىُّ बड़ा बेनियाज़ और बेपर्वाह=जो शख़्स रोज़ाना 70 मर्तबा "या ग़निय्यु" पढ़ा करे, अल्लाह तआ़ला उस के माल में बर्कत देंगे और वह किसी का

मुहताज नहीं रहेगा। और जो शख़्स किसी ज़ाहिरी या पोशीदा बीमारी में गिरफ़्तार हो वह अपने तमाम बदन के हिस्सों पर "या ग़निय्यु" पढ कर दम किया करे, अल्लाह नें चाहा तो नजात पायेगा।

89) **अल् मुग़नी-** اَلْمُغْنِیُّ बेनियाज़ और ग़नी बना देने वाला = जो शख़्स शुरू और आख़िर में 11-11 मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ कर 11-11 सौ मर्तबा वज़ीफ़ा की तरह यह नाम पढ़े तो अल्लाह पाक उस को ज़ाहिरी और बातिनी बेनियाज़ी अ़ता फ़रमायेंगे। सुबह की नमाज़ के बाद पढ़े, या इशा की नमाज़ के बाद। इस के साथ सूरः मुज़्ज़म्मिल भी तिलावत करे।

90) **अल् मानिउ-** اَلْمَانِعُ रोक देने वाला = अगर पत्नी से झगड़ा-लड़ाई हो जाती हो तो बिस्तर पर लेटते समय 20 मर्तबा यह नाम पढ़ा करे, अल्लाह ने चाहा तो झगड़ा लड़ाई और इख़्तिलाफ़ दूर हो जायेगा और परस्पर मुहब्बत पैदा हो जाएगी। जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा इस नाम को पढ़ेगा, अल्लाह ने चाहा तो हर बुराई से सुरक्षित रहेगा। अगर किसी ख़ास और जाइज़ मक़्सद के लिये पढ़े तो इन्शाअल्लाह वह हासिल हो जायेगा।

91) **अज़्ज़ारू-** اَلضَّارُّ नुक़सान पहुँचाने वाला = जो शख़्स जुमा की रात में 100 मर्तबा इस नाम को पढ़े तो इन्शाअल्लाह वह तमाम ज़ाहिरी और पोशीदा आफ़तों से सुरक्षित रहेगा और अल्लाह की नज़दीकी उसे हासिल होगी।

92) **अन्नाफ़िउ-** اَلنَّافِعُ लाभ पहुँचाने वाला = जो शख़्स नाव या किसी भी सवारी पर सवार होने के बाद "या नफ़िउ" पढ़ेगा तो इन्शाअल्लाह हर आफ़त से सुरक्षित रहेगा। जो

शख़्स किसी भी कार्य के आरंभ करते समय 41 मर्तबा इस नाम को पढ़ ले, इन्शाअल्लाह उस का काम उस की इच्छानुसार होगा। जो शख़्स पत्नी से संभोग के समय यह नाम पढ़ लिया करे उसे अल्लाह ने चाहा तो नेक औलाद नसीब होगी।

93) अन्नूरु- النُّوْرُ सरापा नूर और नूर बख़्शने वाला = जो शख़्स जुमा की रात में 7 मर्तबा सूरः नूर और एक हज़ार एक मर्तबा इस नाम को पढ़ा करे तो इन्शाअल्लाह उस का दिल नूर से रोशन हो जायेगा।

94) अल् हादियु- الْهَادِيُ सीधा रास्ता दिखाने वाला और उस पर चलाने वाला = जो शख़्स हाथ उठा कर आसमान की तरफ़ मुँह कर के ज़्यादा से ज़्यादा "या हादियु" को पढ़ा करे और अन्त में मुँह पर हाथ फेर ले, उस को अल्लाह ने चाहा तो मुकम्मल हिदायत नसीब होगी और वह दीनदारों में शामिल हो जायेगा।

95) अल् बदीउ- الْبَدِيْعُ अद्भुत वस्तुओं का अविष्कार करने वाला = जिस शख़्स को कोई ग़म, या मुसीबत, या कोई कठिनाई पेश आये वह 1000 मर्तबा "या बदीउस्समावाति वल् अरज़ि" पढ़े तो इन्शाअल्लाह कुशादगी नसीब होगी। जो शख़्स इस नाम को वुज़ू कर के पढ़ते हुये सो जाये तो जिस काम का इरादा हो वह इन्शाअल्लाह सपने में नज़र आयेगा। जो शख़्स इशा की नमाज़ के बाद "या बदी-अ़ल् अ़जाइबि बिल् ख़ैरि या बदीउ" 1200 मर्तबा 21 दिन तक पढ़ेगा तो जिस काम या मक़्सद के लिये पढ़ेगा, इन्शाअल्लाह वह अ़मल पूरा होने से पहले ही हासिल हो जाएगा। यह आज़माया हुआ है।

96) अल् बाक़ियु- الْبَاقِيُ हमेशा-हमेशा बाक़ी रहने

वाला = जो शख़्स इस नाम को 1000 मर्तबा जुमा की रात में पढ़े, अल्लाह तआला उस को हर प्रकार के नुक़्सान से सुरक्षित रखेंगे और अल्लाह ने चाहा तो उस के तमाम नेक कार्य क़बूल होंगे।

97) **अल् वारिसु-** اَلْوَارِثُ सब के बाद मौजूद रहने वाला = जो शख़्स सूरज के निकलते समय 100 मर्तबा "या वारिसु" पढ़ेगा, इन्शाअल्लाह वह हर रन्ज, ग़म, सख़्ती और मुसीबत से सुरक्षित रहेगा और अन्त अच्छा होगा। और जो शख़्स मग़रिब और इशा के दर्मियान 1000 मर्तबा पढ़े, हर प्रकार की हैरानी और परेशानी से इन्शाअल्लाह सुरक्षित रहेगा।

98) **अर्रशीदु-** اَلرَّشِيْدُ सच्चाई और नेकी को पसन्द करने वाला = जिस शख़्स को अपने किसी काम या मक़्सद को हल करने का तरीक़ा समझ में न आता हो वह मग़िब और इशा के दर्मियान एक हज़ार मर्तबा इस दुआ को पढ़े तो इन्शाअल्लाह तआला सपने में उस का हल निकल आयेगा, या दिल में उस का हल डाल दिया जायगा। और रोज़ाना इस नाम को पढ़ता रहे तो तमाम कठिनाइयाँ इन्शाअल्लाह दूर हो जायेंगी और कारोबार में ख़ूब तरक़्क़ी होगी।

99) **अस्सबूरु -** اَلصَّبُوْرُ बड़े सब्र और बर्दाश्त वाला = जो शख़्स सूरज निकलने से पहले 100 मर्तबा इस नाम को पढ़े वह इन्शाअल्लाह उस दिन हर मुसीबत से सुरक्षित रहेगा और दुश्मनों, हसद करने वालों की ज़बानें बन्द रहेंगी। जो शख़्स किसी भी तरह की मुसीबत में गिरफ़्तार हो वह एक हज़ार बीस (1020) मर्तबा इस नाम को पढ़े, इन्शाअल्लाह उस से नजात पायेगा और दिल को इतमिनान नसीब होगा।

★★★

इस्मे आज़म से मुतअ़ल्लिक़ बाक़ी कुछ और अहादीस का बयान

1) हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक शख़्स को यह कहते सुना -

يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

या ज़ल् जलालि वल् इक्रामि

(ऐ अज़मत व जलाल और एहसान व इकराम के मालिक)

यह सुन कर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तेरी दुआ क़बूल हो जायेगी, अब तू (जो चाहे) माँग।

2) एक हदीस में आया है

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है, जो शख़्स 3 मर्तबा "या अर्-ह-मर्राहिमीन (ऐ सब रहम करने वालों से अधिक रहम करने वाले) कहता है : वह फ़रिश्ता उस शख़्स से कहता है- बेशक सब से बड़ा रहम करने वाला तेरी तरफ़ मुतवज्जह है, अब तू जो चाहे प्रशन कर।

3) एक और हदीस में आया है कि (एक मर्तबा) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक शख़्स के पास से

गुज़रे जो -

يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

या अर्-ह-मर्राहिमी-न

कह रहा था। आप ने उस से फ़रमाया: "तू (जो चाहे) माँग, अल्लाह की मेहरबानी की नज़र तेरी तरफ़ है।

4) एक और हदीस में आया है कि-

जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से तीन मर्तबा जन्नत माँगता है तो जन्नत कहती है "ऐ अल्लाह! उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे।" और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से तीन मर्तबा जहन्नम से पनाह माँगता है तो जहन्नम कहती है "ऐ अल्लाह! तू इस शख़्स को जहन्नम की आग से पनाह दे दे।"

5) एक और हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स इन पाँच कलिमों के साथ दुआ़ करेगा वह जो भी सवाल अल्लाह से करेगा, अल्लाह तआ़ला उस को ज़रूर पूरा करेंगे। (वह पाँच कलिमे यह हैं)

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

1- लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू

(अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं है, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं है)

لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

2- लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु

(उसी का तमाम मुल्क है और उसी के लिये सब तारीफ़ है)

وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

3- वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर्

(और वही हर वस्तु पर क़ुदरत रखता है)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

4- लाइला-ह इल्लल्लाहु

(उस के अ़लावा कोई भी माबूद नहीं है)

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

5- वला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि

और कोई भी शक्ति और कोई भी कुव्वत उस (की सहायता) के बग़ैर (हासिल) नहीं है।

★★★

ग्यारहवीं फ़स्ल

दुआ के क़बूल होने पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करने का बयान

★ जब किसी की कोई भी दुआ क़बूल हो तो उस का शुक्र यह कह कर अदा करे -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِعِزَّتِهٖ وَجَلَالِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिअिज़्ज़तिही व-जलालिही त-तिम्मुस्सालिहातु

(शुक्र है उस अल्लाह का (बहुत-बहुत) जिस की इज़्ज़त और बड़ाई की बदौलत अच्छे काम पूरे होते हैं)

हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

"कौन सी चीज़ तुम में से किसी शख़्स को इस से आ़जिज़ करती है (यानी रोकती है) कि जब वह अपनी किसी दुआ के क़बूल होने का मुशाहदा करे, जैसे किसी बीमारी से शिफ़ा नसीब हो जाये, या सफ़र से (ख़ैरियत के साथ) वापस आ जाये तो कहे:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِعِزَّتِهٖ وَجَلَالِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिइज़्ज़तिही व-जलालिही ततिम्मुस्सालिहातु

तर्जुमा - (सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिस की बड़ाई और जलाल के सहारे तमाम नेक काम पूरे होते हैं)

(यानी इन कलिमों के साथ अल्लाह तआ़ला का शुक्र अवश्य अदा करना चाहिये)

पहला बाब

सुबह और शाम की दुआयें

(यह दुआयें रोज़ाना सुबह-शाम को माँगनी चाहिए)

1- तीन मर्तबा यह दुआ माँगे

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुरु मअ़स्मिही शैउन् फ़िल् अर्ज़ि वला फ़िस्समाई वहु-वस्समीअ़ुल् अ़लीमु

तर्जुमा - उस अल्लाह के नाम के साथ जिस के नाम के साथ कोई वस्तु हानि नहीं पहुँचाती, न ज़मीन में और न ही आकाश में। और वह (सब कुछ) सुनने और जानने वाला है।"

फ़ायदा -जो शख़्स सुबह-शाम 3-3 मर्तबा यह दुआ माँगेगा, अल्लाह तआ़ला हर बला और मुसीबत से उस को सुरक्षित रखेंगे। اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

सुबह को पढ़ें तो अस्-बह्ना" (हम ने सुबह की) और शाम को पढ़ें तो "अम्सैना" (हम ने शाम की) दिल में कहे।

2) तीन मर्तबा यह दुआ माँगे -

अऊ़ज़ु बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़

तर्जुमा - मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात की पनाह लेता हूँ उस की हर मख़्लूक़ की बुराई से।

फ़ायदा - जो शख़्स सुबह-शाम 3-3 मर्तबा यह दुआ माँगे गा अल्लाह तआ़ला उस को हर मख़्लूक़, विशेष कर साँप, बिच्छु वग़ैरह जैसे विषैले और दुःखदाई जानवरों की बुराई से बचाएँगे, ख़ासकर रात में। बाज़ रिवायतों में केवल शाम के समय तीन मर्तबा पढ़ने का ज़िक्र आया है।

3) तीन मर्तबा यह तअ़व्वुज़ पढ़े :

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊ़ज़ु बिल्लाहिस्समीअ़िल् अ़लीमि मि-नश्शैता निर्रजीमि

तर्जुमा - "मैं सब कुछ सुनने और जानने वाले अल्लाह की पनाह लेता हूँ धुतकारे हुये शैतान (के वस्वसों) से।"

इस के बाद सूरः हश्र की आयतें पढ़े -

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝

हु-वल्लाहुल्लज़ी लाइला-ह इल्ला हु-व आ़लिमुल् ग़ैबि वश्शहा-दति हु-वर्रह्मानुर्रहीमु+हु-वल्लाहुल्लज़ी लाइला-ह इल्ला हु-व अल्-मलिकुल् कुद्दूसुस्सलामुल् मोमिनुल् मुहैमिनुल् अ़ज़ीज़ुल्

जब्बारुल मु-त-कब्बिरू सुब्हा-नल्लाहि अ़म्मा युश्रिकू-न+ हु-वल्लाहुल् ख़ालिक़ुल् बारिउल् मु-सव्विरू लहुल् अस्माउल् हुसना यु-सब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि वहु-वल् अ़ज़ीज़ुल हकीमु+

तर्जुमा – "अल्लाह वही है जिस के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वह पोशीदा और ज़ाहिर (सब) का जानने वाला है, वह बड़ा मेहरबान और बहुत रहम करने वाला है। वही वह अल्लाह है जिस के अ़लावा कोई और पूजे जाने के योग्य नहीं, वही (समस्त संसार का) बादशाह है, बहुत पवित्र ज़ात है, बे ऐब है, अम्न देने वाला है, (सब की) देख-रेख करने वाला है, (सब पर) गालिब है, ज़बर्दस्त है, बड़ाई का मालिक है, मुशरिकों के शिर्क से पाक है। वही अल्लाह (सब का) पैदा करने वाला है, (हर वस्तु का) अविश्कार करने वाला है, (हर वस्तु को) सूरत देने वाला है, उसी के लिए (सारे) अच्छे नाम हैं, आसमानों और ज़मीनों में जो भी वस्तुऐं हैं वह उस की पवित्रता बयान करती हैं, और वही (सब पर) ग़ालिब और हिक्मत वाला है"। (उस का कोई कार्य हिक्मत से ख़ाली नहीं)

फ़ायदा – सूरः हश्र की ऊपर की तीनों आयतों को उस तअ़व्वुज़ (मज़कूर) के साथ (जिस का ऊपर बयान हुआ) पढ़ने की हदीसों में बड़ी फ़ज़ीलत आयी है, इस की पाबन्दी अवश्य करनी चाहिये।

4) या तीन मर्तबा "कुल हु-वल्लाहु अ-हद --" तीन मर्तबा "कुल अऊज़ु बि-रब्बिल् फ़-लक़ि" तीन मर्तबा "कुल अऊज़ु बि-रब्बिन्नासि" पढ़े, और इस के बाद यह आयत पढ़े :

7 فَسُبْحَانَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۞ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ

وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۞

फ़सुब्हा-नल्लाहि ही-न तुम्सू-न वही-न तुस्बिहू-न व-लहुल् हम्दु फ़िस्समावाति वल्-अर्ज़ि व-अशिय्यंव ही-न तुज़्हिरु-न युख़्रिजुल् हय्य मि-नल् मय्यिति वयुख़्रिजुल् मय्यि-त मि-नल् हय्यि वयुह्इल अर्-ज़ बा-द मौतिहा व-कज़ालि-क तुख़्-रजू-न+

तर्जुमा - "पस (तुम) पाकी बयान करो अल्लाह की जिस समय तुम रात करते हो और जिस समय तुम सुबह करते हो। और उसी के लिये हम्द व सना है आसमानों और ज़मीन में, और (उस की पाकी बयान करो) तीसरे पहर को और जिस समय तुम ज़ुहर करते हो (यानी दोपहर के समय) और जान्दार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है, और ज़मीन को उस के मरे पीछे जीवित करता है, और इसी प्रकार तुम भी (मरे पीछे ज़मीन से) निकाले जाओगे।"

फ़ायदा - तीनों क़ुल (यानी सूरः इख़्लास, फ़-लक़, नास) और इस आयत का सुबह-शाम पढ़ना भी बहुत अधिक अज्र व सवाब का सबब है।

5) या केवल आयतुल् कुर्सी पढ़े -

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۭ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ

وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَاۗءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِـيُّهُ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـــُٔـوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۞

अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल् कय्यूमु ला ताखुज़ुहू सि-न तुव्वंला नौमुन् लहू माफ़िस्समावाति वमा फ़िल् अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यश्-फ़उ अिन्-दहू इल्ला बिइज़्निही, या-लमु मा बै-न ऐदीहिम् वमा ख़ल्-फ़हुम् वला युहीतू-न बिशैइम् मिन् अिल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ कुरसिय्युहुस्समावाति वल्-अर्-ज़ वला यऊदुहू हिफ़ज़ुहुमा वहु-वल् अलिय्युल् अज़ीमु +

तर्जुमा - "अल्लाह वह (पाक ज़ात) है जिस के अलावा कोई भी पूजे जाने के लाइक़ नही, वह (हमेशा) ज़िन्दा रहने (और ज़िन्दगी देने) वाला है (ज़मीन और आकाश और समस्त संसार को) क़ायम रखने (और उन का संचालन करने) वाला है, न उस को ऊंघ आ सकती है न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, कौन है जो उस के दरबार में उस की अनुमति के बिना (किसी की) सिफ़ारिश कर सके? वह तो जो कुछ लोगों के सामने (हो रहा) है और जो कुछ उन के पीछे (मरने के बाद) होने वाला है, सब जानता है और लोग उस के ज्ञान (और मालूमात) में से किसी चीज़ पर भी पहुँच नहीं रखते मगर जितना वह खुद चाहे (उससे उस को आगाह कर दे) उस की (बादशाहत की) कुर्सी आसमान और ज़मीन सब पर फैली हुयी है, और आसमान और ज़मीन की सुरक्षा उस पर तनिक भर भी कठिन नही है और वह (सब से) ऊँचा (यानी बुलन्द और) बड़ाई वाला है।"

★ या आयतुल् कुर्सी और उस के बाद सुरः ग़ाफ़िर की यह आयत पढ़े -

حٰمٓ ۝ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ

شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ

हामीम्+तन्ज़ीलुल् किताबि मि-नल्लाहिल् अज़ीज़िल् अलीमि+ ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि वक़ाबिलित्तौबि शदीदिल् अिक़ाबि ज़ित्तौलि लाइला-ह इल्ला हु-व इलैहिल् मसीरु+

तर्जुमा - हामीम्, यह किताब उस अल्लाह की ओर से उतरी है जो (सब पर) ग़ालिब है, बहुत कुशादा ज्ञान वाला है, (अपने बन्दों के) गुनाह बख़्शने वाला है और तौबा क़बूल करने वाला है, (नाफ़रमानों को) कड़ा दन्ड देने वाला है, बड़ी ताक़त वाला है, उसको छोड़ कर कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसी की तरफ़ (सब को) लौट कर जाना है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स यह दोनों आयतें (यानी आयतुल कुर्सी और सूरः ग़ाफ़िर की यह आयत) सुबह को अगर पढ़ ले तो शाम तक समस्त बलाओं से सुरक्षित रहे, और शाम को पढ़ ले तो सुबह तक समस्त आफ़तों से बचा रहे।

6) सुबह होते ही यह दुआ पढ़े:

اَصْبَحْنَا وَاَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ
وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَیْءٍ قَدِيْرٌ رَبِّ اَسْئَلُكَ خَيْرَ مَا فِیْ هٰذَا الْيَوْمِ وَخَيْرَ مَا بَعْدَهٗ
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِیْ هٰذَا الْيَوْمِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ رَبِّ اَعُوْذُ
بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَسُوْءِ الْكِبَرِ رَبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابٍ
فِی النَّارِ وَعَذَابٍ فِی الْقَبْرِ

अस्-बह्ना व-अम्-ब-हल् मुल्कु लिल्लाहि वल्-हम्दु लिल्लाहि, लाइला-ह इल्लल्लाहु वह-दहू, ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु, वहू-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+ रब्बि अस्-अलु-क ख़ै-र मा फ़ी हा-ज़ल् यौमि वख़ै-र मा बा-दहू व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा फ़ी हा-ज़ल् यौमि व-शर्रि मा बा-दहू, रब्बि अऊज़ुबि-क मि-नल् कस्लि वसूइल्कि-बरि, रब्बि अऊज़ुबि-क मिन् अ़ज़ाबिन् फ़िन्नारि व-अ़ज़ाबिन् फ़िल् क़ब्रि+

तर्जुमा - "हम ने और समस्त मुल्क ने अल्लाह (की इबादत और इत्ताअ़त) के लिये सुबह की, और तमाम की तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिये ही है, अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वह (अपनी ज़ात और सिफ़ात में) अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी का (सारा) मुल्क है और उसी के लिये हम्द व सना है और वही हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है+ऐ मेरे रब! जो कुछ इस दिन में (पेश आने वाला) है और जो कुछ इस के बाद (पेश) आयेगा, मैं तुझ से इस की भलाई और बेहतरी माँगता हूँ+और ऐ मेरे रब! जो कुछ उस दिन में और उस के बाद बुराई में से (पेश आने वाली) है मैं उस बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ+ ऐ मेरे पर्वरदिगार! मैं काहिली से और बुरे बुढ़ापे से तेरी पनाह लेता हूँ, ऐ मेरे पालनहार् मैं जहन्नुम के दन्ड से भी और क़ब्र के दन्ड से भी तेरी पनाह लेता हूँ (तू मुझे इन सब से बचा ले)

इसके बाद यह तअ़व्वुज़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَسُوْءِ الْكِبَرِ وَ
فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْقَبْرِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् कसलि वल् ह-ज़मि वसूइल् कि-बरि वफ़ित्-नतिदुन्या व-अज़ाबिल् क़ब्रि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह लेता हूँ काहिली से, बुढ़ापे की कमज़ोरी से और बुरे बुढ़ापे से, और दुनिया के फ़ितनों से, और क़ब्र के अज़ाब से (तू मुझे इन सब से बचाले)

7) सुबह होते ही यह दुआ पढ़े -

أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ، اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ

خَيْرَ هٰذَا الْيَوْمِ وَفَتْحَهُ وَنَصْرَهُ وَنُوْرَهُ وَبَرَكَتَهُ وَهُدَاهُ

وَأَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا فِيْهِ وَشَرِّ مَا بَعْدَهُ

अस्-बह्ना व-अस्-ब-हल् मुल्कु लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमी-न, अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ख़ै-र हा-ज़ल् यौमि व-फ़त्-हहू व-नस्-रहू व नूरहू व-बर्-क-तहू व हुदाहू व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा फ़ीहि वशर्रि मा बा-दहू+

तर्जुमा - "हम ने और समस्त मुल्क ने अल्लाह सारे जहान के रब (की इत्ताअत और इबादत) के लिये सुबह की, ऐ अल्लाह! मैं तुझ से उस दिन की भलाई (और बेहतरी) फ़तह और सहायता, नूर और बर्कत और हिदायत का सवाल करता हूँ, और जो उस दिन में (पेश आने वाला) है, और जो उस के बाद पेश आयेगा उस की बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ (तू मुझे उस से बचा ले)

8) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَإِلَيْكَ النُّشُوْرُ

अल्लाहुम्म बि-क अस्-बह्ना वबि-क अम्सैना वबि-क नह्या वबि-क नमूतु वइलै-कन्नुशूरु

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! हम ने तेरी ही सहायता से सुबह की और तेरी ही सहायता से शाम की, तेरी ही (इच्छा से) हम जीवित हैं और तेरी ही इच्छा से हम मरेंगे, और तेरे ही पास (क़यामत के दिन) उठ कर जाना है।"

फ़ायदा - यह दुआ सुबह-शाम दोनों समय पढ़नी चाहिये।

9) या यह दुआ पढ़े :

أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ

अस्-बह्ना व-अस्-ब-हल् मुल्कु लिल्लाहि वल्-हम्दु लिल्लाहि ला शरी-क लहू लाइला-ह इल्ला हु-व वइलैहिन्नुशूर-

तर्जुमा -"हमने और तमाम दुनिया ने अल्लाह (की इताअ़त और इबादत) के लिये सुबह की, और उस के लिये हम्द व सना है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नही है, और उसी के पास उठ कर जाना है।"

10) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيْكَهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ وَأَنْ نَقْتَرِفَ عَلٰى أَنْفُسِنَا سُوْءًا أَوْ نَجُرَّهُ إِلٰى مُسْلِمٍ

अल्लाहुम्म फ़ाति-रस्समावाति वल्-अर्ज़ि, आ़लि-मल् ग़ैबि

वश्शहा-दति रब्ब कुल्लि शैइन् व-मली-कहू, अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्ला अन्-त, अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि नफ्सी व-शर्रिश्शैतानि वशिर्किही व-अन् नक्-तरि-फ़ अ़ला अन् फ़ुसिना सू-अन् औ नजुर्रहू इला मुस्लिमिन्

तर्जमा - "ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! हर पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले, हर चीज़ के पर्वरदिगार और मालिक, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, मैं तेरी पनाह लेता हूँ अपने नफ़्स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उस के (धोखा धड़ी के) जाल से (तू मुझे बचा ले) और इस बात से (पनाह लेता हूँ) कि हम अपने नफ़्सों पर किसी बुराई को करें या किसी मुसलमान पर कोई आरोप लगायें।"

फ़ायदा - नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० को सुबह-शाम पढ़ने के लिये बताई है। आ़म हदीसों में यह दुआ़ "व-शिरकिही" (उस के जाल से) पर ख़त्म हो जाती है, लेकिन तिर्मिज़ी में बाद का जुम्ला "इला मुस्लिमिन्" तक भी आया है।

11) और चार मर्तबा यह दुआ़ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ
وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ بِاَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-बह्तु उश्हिदु-क वउश्हिदु ह-म-ल-त अ़र्शि-क व-मलाइ-क-त-क व-जमी- अ़ ख़ल्क़ि-क बि-अन्न-क अन्-तल्लाहु लाइला-ह इल्ला अन्-त

व-अन्न मु-हम्म-दन् अ़ब्दु-क व-रसूलु-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं ने सुबह की, मैं तुझे गवाह बनाता हूँ, और तेरे अ़र्श के उठाने वालों को और समस्त फ़रिश्तों को, और तेरी तमाम मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूँ इस बात पर कि तू अल्लाह है, तेरे अ़लावा कोई इबादत के योग्य नहीं, और इस बात पर कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तेरे बन्दे हैं और तेरे (भेजे हुये) रसूल हैं।"

12) या चार मर्तबा यह दुआ़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَصْبَحْتُ أُشْهِدُكَ وَأُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتَكَ
وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ أَنَّكَ أَنْتَ اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ
وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-बहतु उश्हिदु-क वउश्हिदु ह-म-ल-त अ़र्शि-क व-मलाइ-क-त-क व-जमी-अ़ ख़ल्क़ि-क अन्न-क अन्-तल्लाहु लाइला-ह इल्ला अन्-त वह्-द-क ला शरी-क ल-क व-अन्न मु-हम्म -दन् अ़ब्-दु-क व-रसूलु-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं ने सुबह की, मैं तुझे गवाह बनाता हूँ और तेरे अ़र्श के उठाने वालों को और (तमाम) फ़रिश्तों को और तेरी तमाम मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूँ इस बात पर कि तू ही अल्लाह है, तेरे अ़लावा और कोई इबादत के लाइक़ नहीं, तू (अपनी ज़ात और सिफ़ात में) तन्हा और अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, और इस बात पर कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तेरे बन्दे हैं और तेरे (भेजे हुये)

रसूल हैं।"

13) यह दुआ सुबह-शाम पढ़ा करे -

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ وَدُنْيَایَ وَاَهْلِیْ وَمَالِیْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَتِیْ وَاٰمِنْ رَوْعَتِیْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَيْنِ يَدَیَّ وَمِنْ خَلْفِیْ وَعَنْ يَمِيْنِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ فَوْقِیْ وَاَعُوْذُ بِعَظَمَتِكَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् आ़फ़ि-य-त फ़िद्दुन्या वल् आख़ि-रति, अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् अ़फ़्-व वल्आ़फ़ि-य-त फ़ी दीनी वदुन्या-य व-अहली वमाली, अल्लाहुम्मस्तुर औ़-रती व-आमिन् रौ-अ़ती, अल्लाहुम्मह्फ़ज़्नी मिन् बैनि य-दय्य वमिन् ख़ल्फ़ी व-अ़न् यमीनी व-अ़न् शिमाली वमिन् फ़ौक़ी व-अऊ़ज़ु बि-अ़ज़्-मति-क अन्उग़्ता-ल मिन् तह्ती

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत (दोनों) में अम्न और शान्ति का सवाली हूँ, ऐ अल्लाह! मैं तुझ से क्षमा दान चाहता हूँ, और अपने दीन में और दुनिया में, अपने बाल-बच्चों और माल-दौलत में अम्न और शान्ति चाहता हूँ। ऐ अल्लाह! तू मेरे (समस्त) ऐबों को छुपा ले, और मेरे डर-ख़ौफ़ और कठिनाई को अम्न व शान्ति से बदल दे, ऐ अल्लाह! तू मेरी सुरक्षा फ़रमा, मेरे आगे से और पीछे से भी। और मेरे दायें से भी और बायें से भी और मेरे ऊपर से भी, और मैं तेरी बड़ाई और बज़ुर्गी की पनाह लेता हूँ इस से कि मैं किसी अचानक की हलाकत में डाल दिया जाऊँ नीचे की ओर से।"

14) या सुबह-शाम यह दुआ पढ़े -

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु युह्यी वयुमीतु वहु-व हय्युन् ला यमूतु वहु-वअ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा -"अल्लाह के अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उस का कोई साझीदार नहीं, उसका समस्त मुल्क है और उसी के लिये तमाम तारीफ़ हैं, वही जिलाता है, वही मारता है, और वह खुद ऐसा ज़िन्दा है जिस के लिये मरना नहीं है, और वही हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में इस दुआ के पढ़ने का बड़ा सवाब आया है। अगर सुबह को पढ़े तो रात तक शैतान से सुरक्षित रहता है, और शाम को पढ़े तो सुबह तक।

15) यह दुआ सुबह-शाम 3-3 मर्तबा अवश्य पढ़नी चाहिये।

رَضِيْنَا بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا

रज़ीना बिल्लाहि रब्बव्वंबिल् इस्लामि दी-नन् वबिमु-हम्मदिन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व-सल्ल-म नबिय्यन्

तर्जुमा -"हम ने अल्लाह को अपना रब और इस्लाम को अपना दीन और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपना नबी स्वीकार कर लिया, और हम इस पर राज़ी हो गये।"

फ़ायदा - हदीस में आया है कि जो शख़्स सुबह-शाम

तीन-तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला पर उस शख़्स का हक़ है कि वह उसे क़यामत के दिन राज़ी और खुश कर दे।

16) या तीन मर्तबा यह दुआ पढ़े -

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बव्वंबिल् इस्लामि दीनव्वं बिमु-हम्मदिन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म नबिय्यन्

तर्जुमा - "मैं ने अल्लाह को रब और इस्लाम को दीन और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नबी मान लिया और मैं इस पर राज़ी हूँ।"

फ़ायदा - दुआ के मअ़नि के लिहाज़ से यह दूसरे अल्फ़ाज़ अधिक बेहतर हैं।

17) सुबह-शाम यह दुआ भी पढ़ा करे -

اَللّٰهُمَّ مَا اَصْبَحَ لِيْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ

لَا شَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ

अल्लाहुम्म मा अस्-ब-हली मिन्ने-मअ़तिन् औ बि-अ-हदिम्मिन् ख़ल्कि-क फ़मिन्-क वह्-द-क ला शरी-क ल-क फ़-ल-कल् हम्दु व-ल-कश्शुक्रु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जो भी कोई नेमत मुझे, या तेरी किसी भी मख़्लूक़ को आज सुबह को मिली है वह तन्हा तेरी ही तरफ़ से (दी हुई) है, तू अकेला और तन्हा है, तेरा कोई साझीदार नहीं हैं, इसलिए तेरी ही (तमामतर) तारीफ़ है और तेरा ही शुक्र है।"

18) सुबह-शाम तीन-तीन मर्तबा यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी ब-दनी अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी सम्‌ई अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी- ब-सरी ला इला-ह इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुझे जिस्मानी तन्दरुस्ती और सलामती अ़ता फ़रमा, ऐ अल्लाह! तू मेरी सुनने की ताक़त में अम्न और सलामती अ़ता फ़रमा, ऐ अल्लाह! तू मेरे देखने की कुव्वत में सलामती अ़ता फ़रमा, तेरे अ़लावा कोई दूसरा माबूद नहीं।"

19) इस के बाद 3-3 मर्तबा यह तअ़व्वुज़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् कुफ़रि वल् फ़क़रि, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि लाइलाह इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं कुफ़्र और मोहताजी से तेरी पनाह लेता हूँ, ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अ़ज़ाब से तेरी पनाह लेता हूँ, तेरे अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं।"

20) या सुबह-शाम यह दुआ पढ़े -

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ، اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا.

सुब्हा–नल्लाहि वबि–हम्दिही, ला कुव्व–त इल्ला बिल्लाहि, मा शा–अल्लाहु का–न वमा लम् य–शा लम् यकुन्, आ–लमु अन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुन् व–अन्नल्ला–ह क़द् अहा–त बिकुल्लि शैइन् अ़िल्–मन्

तर्जुमा – "अल्लाह (हर प्रकार की बुराई से) पाक है और उसी के लिये हम्द व सना है और ताक़त और कुव्वत भी बस उसी की है (इसलिये) जो अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो नहीं चाहा वह नही हुआ, मैं यक़ीन रखता हूँ कि बेशक अल्लाह बड़ी क़ुदरत वाला है और बेशक उस का इल्म हर चीज़ पर अहाता किये हुये है।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जिसने सुबह को यह दुआ पढ़ ली, वह दिन भर हर बला से सुरक्षित रहेगा, और जिसने शाम को यह दुआ पढ़ ली वह सारी बलाओं से सुरक्षित रहेगा।

21) या सुबह–शाम यह दुआ पढ़ा करे –

أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ وَعَلَى دِيْنِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَى مِلَّةِ أَبِيْنَا إِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَّمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ.

अस्–बह्ना अ़ला फ़ित्–रतिल् इस्लामि व–कलि–मतिल इख़्लासि व–अ़ला दीनि नबिय्यिना मु–हम्मदिन सल्लल्लाहु अ़लैहि व–सल्ल–म व–अ़ला मिल्लति अबीना इब्राही–म हनी–फ़म्मुस्लि–मव्वंमा का–न मि–नल् मुशरिकी–न

तर्जुमा – "हम ने सुबह की इस्लामी फ़ितरत पर, कलि–मए

इख़्लास पर और अपने (महबूब) नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दीन पर और अपने (दादा हज़रत) इब्राहीम (अ़लै०) की मिल्लत पर जो एक अल्लाह को मानने वाले और मुसलमान थे और मुश्रिकों में से न थे।"

22) सुबह के समय यह दुआ भी पढ़नी चाहिये। बाज़ हदीसों में सुबह-शाम दोनों समय पढ़ना साबित है।

يَاحَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ وَ
لَاتَكِلْنِيْ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ۔

या हय्यु या क़य्यूमु बि-रह्-मति-क अस्-तग़ीसु अस्लिह् ली शानी कुल्लहू वला तकिल्नी इला नफ़्सी तर्-फ़-त ऐ़निन्

तर्जुमा - "ऐ (हमेशा-हमेशा) जीवित रहने वाले! ऐ (ज़मीन और आसमान और तमाम मख़्लूक़ को) क़ायम रखने वाले, तेरी रहमत की दुहाई है, तू मेरे तमाम काम दुरुस्त कर दे और मुझे एक क्षण भर के लिये भी तू मेरे नफ़्स के हवाले न कर।"

फ़ायदा - मुसीबत के समय सिज्दे में पड़ कर यह दुआ पढ़ना बहुत लाभदायक है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बद्र की लड़ाई के मौक़े पर सज्दे में पड़ कर यही दुआ पढी थी, चुनान्चे अल्लाह तआ़ला ने विजय दिलायी।

23) या सुबह के समय यह दुआ और तअ़व्वुज़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ
وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ

فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ

अल्लाहुम्म अन्-त रब्बी, लाइला-ह इल्ला अन्-त, ख़-लक़्-तनी व-अना अ़ब्दु-क व-अना अ़ला अ़ह्दि-क, व-वअ़्दि-क मस्-त-तातु, अबूउ ल-क बिने-मति-क अ़-लय्या, व-अबूउ बि-ज़म्बी, फग़फिर् ली फइन्नहू ला यग़फ़िरूज़्ज़ूनू-ब इल्ला अन्-त अऊज़ुबि- क मिन् शर्रि मा स-नअ़्तु

तर्जुमा - " मेरे मौला! तू ही मेरा पर्वरदिगार है, तेरे अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तू ने मुझे पैदा किया है और मैं तेरा बन्दा हूँ और मैं तेरे वादे और पैमान पर जितना समझ से बन पड़ा क़ायम हूँ, और मैं तेरी जो भी नेमत मुझ पर है उस का इक़रार करता हूँ और अपने गुनाह को भी स्वीकार करता हूँ, पस तू मेरे गुनाह बख़्श दे इसलिए कि तेरे अ़लावा और कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता, मैं अपने तमाम किये हुये कामों की बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ।" (तू मुझे बचा ले)

24) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى

عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ

بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

अल्लाहुम्म अन्-त रब्बी, लाइला-ह इल्ला अन्-त, ख़-लक़्-तनी, व-अना अ़ब्दु-क व-अना अ़ला अ़ह्दि-क व-वअ़्दि-क मस्-ततातु, अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा स-नअ़्तु, अबूउ बिने-मति-क अ़-लय्या व-अबूउ बि-ज़म्बी फग़ फ़िर्ली इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तू ने ही मुझे पैदा किया और मैं तेरा ही बन्दा हूँ, मैं जितना मुझ से हो सका तेरे वादे पर और इक़रार पर क़ायम हूँ मैं अपने किये की बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ, मुझ पर जो तेरी नेअ़मतें हैं उन का मैं इक़रार करता हूँ और अपने गुनाहों को भी स्वीकार करता हूँ, पस तू मुझे बख़्श दे, इसलिये कि बेशक तेरे सिवा और कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।"

25) यह दुआ भी पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ اَحَقُّ مَنْ ذُكِرَ، وَاَحَقُّ مَنْ عُبِدَ، وَاَنْصَرُ مَنِ ابْتُغِيَ، وَاَرْاَفُ
مَنْ مَّلَكَ، وَاَجْوَدُ مَنْ سُئِلَ، وَاَوْسَعُ مَنْ اَعْطٰى، اَنْتَ الْمَلِكُ لَا شَرِيْكَ
لَكَ، وَالْفَرْدُ لَا نِدَّ لَكَ، كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَكَ، لَنْ تُطَاعَ اِلَّا بِاِذْنِكَ،
وَلَنْ تُعْصٰى اِلَّا بِعِلْمِكَ، تُطَاعُ فَتَشْكُرُ وَتُعْصٰى فَتَغْفِرُ، اَقْرَبُ شَهِيْدٍ
وَّاَدْنٰى حَفِيْظٍ، حُلْتَ دُوْنَ النُّفُوْسِ وَاَخَذْتَ بِالنَّوَاصِيْ وَكَتَبْتَ
الْاٰثَارَ وَنَسَخْتَ الْاٰجَالَ، اَلْقُلُوْبُ لَكَ مُفْضِيَةٌ وَالسِّرُّ عِنْدَكَ
عَلَانِيَةٌ، اَلْحَلَالُ مَا اَحْلَلْتَ وَالْحَرَامُ مَا حَرَّمْتَ وَالدِّيْنُ مَا شَرَعْتَ
وَالْاَمْرُ مَا قَضَيْتَ، وَالْخَلْقُ خَلْقُكَ وَالْعَبْدُ عَبْدُكَ، وَاَنْتَ اللّٰهُ الرَّءُوْفُ
الرَّحِيْمُ، اَسْاَلُكَ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِيْ اَشْرَقَتْ لَهُ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ
وَبِكُلِّ حَقٍّ هُوَ لَكَ، وَبِحَقِّ السَّائِلِيْنَ عَلَيْكَ اَنْ تُقِيْلَنِيْ فِيْ هٰذِهِ الْغَدَاةِ اَوْ فِيْ
هٰذِهِ الْعَشِيَّةِ وَاَنْ تُجِيْرَنِيْ مِنَ النَّارِ بِقُدْرَتِكَ۔

अल्लाहुम्म अन्-त अ-हक़्क़ु मन् ज़ुकि-र, व-अ-हक़्क़ु मन उबि-द, व-अन्-सरू मनिब्तुग़ि-य, व-अर्-अफ़ु मन्

म-ल-क, व-अज्-वदु मन् सुइ-ल, वओ-सअु मन् आता, अन्-तल् मलिकु, ला शरी-क ल-क, वल् फ़र्दु, ला निद्द ल-क, कुल्लु शैइन् हालिकुन् इल्ला वज्-ह-क, लन तुता-अ इल्ला बिइज़्नि-क, व-लन तुअ्सा इल्ला बिइल्मि-क, तुताअु फ-तश्कुरू व तुअ्सा फ़-तग़्फ़िरु, अक़्-रबु शहीदिन् व अदना हफ़ीज़िन्, हुल्-त दू-नन्नुफ़ूसि, व-अ-ख़ज़्-त बिन्नवासी व-क-तब-तल आसा-र व-न-सख़-तल् आजा-ल, अल्क़ुलूबु ल-क मुफ़ज़िय्यतुन वस्सिर्रु अ़िन्-द-क अ़लानि-यतुन, अल्-हलालु मा अह्-लल्-त वल्-हरामु मा हर्रम्-त वद्दीनु मा शरअ्-त, वल्-अम्रु मा क़ज़ै-त, वल्-ख़ल्क़ु ख़ल्क़ु-क वल्-अ़ब्दु अ़ब्दु-क, व-अन्-तल्लाहुर्रऊ फ़ुर्रहीमु, अस्-अलु-क बिनूरि वज्हि-कल्लाज़ी अश्-र-क़त् लहुस्समावातु वल्-अर्ज़ु, वबिकुल्लि हक़्क़िन् हु-व ल-क, वबि-हक़्क़िस्साइलीना अ़लै-क, अन् तुक़बि-लनी फ़ी हाज़िहिल् ग़दात, औ फ़ी हाज़िहिल् अ़शिय्यति व-अन् तुजी-रनी मि-नन्नारि बिक़ुद्-रति-क+

तर्जुमा - "ऐ मेरे मौला! तू ही उन सब से अधिक (याद करने का) हक़दार है जिन की याद की जाती है, और जिन की इबादत की गयी उनमें तू ही सब से अधिक (इबादत का) हक़ रखता है, और तू ही उन सब में अधिक सहायता करने वाला है जिन से सहायता माँगी जाती है, और तूही सब मालिकों से अधिक प्यार करने वाला है, और तू ही उन सब में अधिक सख़ी है जिन से प्रश्न किया जाता है, और तू ही उन सब से अधिक कुशादगी वाला है जो अ़ता करते हैं, तू ही (सब का) बादशाह है, तेरा कोई शरीक नहीं, तू अकेला और तन्हा है, तेरे समान कोई भी नहीं, तेरी ज़ात के अ़लावा हर चीज़ मिट जाने वाली है, तेरे आदेश के बिना तेरी आज्ञा नहीं की जा सकती, और इल्म के

बग़ैर तेरी अवज्ञा नही की जा सकती, तेरी आज्ञा की जाती है, तो तू उस की क़द्र करता है और तेरी अवज्ञा की जाती है तो तू माफ़ कर देता है, तू सब से अधिक क़रीब गवाह है, और सब से अधिक नज़दीक निगहबान है, (सब की) जानें तेरे इख़्तियार में हैं और सब की पेशानियाँ तेरे क़ब्ज़े में हैं, (सब के) कर्म तू ने लिख दिये हैं और सब की मौत का समय भी तू ने लिख दिया है, (सब के) दिल तेरे सामने खुले हुये हैं और (सब) राज़ तुझ पर स्पष्ट हैं, जो तूने हलाल कर दिया वही हलाल है और जो तूने हराम कर दिया वह ही हराम है, और दीन वही है जो तू ने मुक़र्रर किया, और हुक्म वही है जो तू ने जारी किया, मख़्लूक़ सब तेरी ही मख़्लूक़ है और बन्दे सब तेरे ही बन्दे हैं, तू ही प्यार करने वाला और मेहरबानी करने वाला अल्लाह है, मैं तेरी ज़ात के उस नूर से, जिस से ज़मीन और आकाश रोशन हैं और हर उस हक़ से जो तेरे लिये हैं, और हर उस हक़ से, जो सवाल करने वालों का तुझ पर है, तुझ से सवाल करता हूँ कि तू इसी सुबह में या इसी शाम में मुझे माफ़ फ़रमा दे और तू अपनी मुकम्मल क़ुदरत से मुझे जहन्नम से पनाह देदे।"

फ़ायदा - अगर इस दुआ़ को सुबह पढ़े तो "फ़ हाज़िहिल् ग़दाति" पढ़े और अगर शाम को पढ़े तो "फ़ी हाज़िहिल् अ़शिय्यति" पढ़े।

26) रोज़ाना सुबह-शाम सात मर्तबा यह दुआ़ पढ़े -

حَسْبِیَ اللّٰهُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ، وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

हसबि-यल्लाहु, लाइला-ह इल्ला हु-व, अ़लैहि त-वक्कल्तु, वहु-व रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि+

तर्जुमा - "अल्लाह मेरे लिये काफ़ी है, उस के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसी पर मैं ने भरोसा किया है, और वह बड़े अ़र्श का मालिक है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो सुबह-शाम 7-7 मर्तबा यह दुआ पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला उस को दुनिया और आख़िरत के तमाम ग़मों से बचा लेंगे।

27) रोज़ाना सुबह-शाम कम से कम 10-10 मर्तबा यह शहादत का कलिमा ज़रूर पढ़ा करे -

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु, वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु, व-लहुल् हमदु, वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा -"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी का (सारा) मुल्क है और उसी के लिये सब तारीफ़ है, और वही हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है।"

फ़ायदा - बाज़ हदीसों में 100 मर्तबा सुबह को और 100 मर्तबा शाम को भी पढ़ने का ज़िक्र आया है अगर अधिक समय ख़ाली न हो तो 10-10 मर्तबा, वर्ना 100-100 मर्तबा सुबह-शाम ज़रूर पढ़ा करे, बड़ा सवाब है।

28) सुबह-शाम कम से कम 100 मर्तबा यह तस्बीह अवश्य पढ़नी चाहिये -

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हा-नल्लाहिल् अ़ज़ीमि वबि-हम्दिही

तर्जुमा - "पाक है बज़ुर्ग और बड़े मर्तबे वाला अल्लाह और उसी के लिये हम्द व सना है।"

फ़ायदा - सहीह बुख़ारी की हदीस में आया है कि "दो कलिमे हैं जो रहमान (यानी अल्लाह) को बहुत पसन्द हैं, लेकिन ज़बान पर बहुत हल्के हैं (आमाल के) तराजू में बहुत भारी हैं।" वह कलिमे यह हैं "सुबहा-नल्लाहि वबि-हम्दिही सुबहा-नल्लाहिल् अज़ीमि" इसलिये सुब्ह-शाम ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में पढ़ना चाहिये।

29) या 10 मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ कर 100 मर्तबा "सुब्हा-नल्लाहि" 100 मर्तबा "अल्-हम्दु लिल्लाहि" 100 मर्तबा लाइला-ह इल्लल्लाहु" और 100 मर्तबा "अल्लाहु अक्बरु" रोज़ाना सुबह-शाम पढ़ा करे।

★☆☆

क़र्ज़ के अदा होने और रन्ज–ग़म दूर होने की दुआ़

30) अगर कोई क़र्ज़ या किसी दुनियावी रन्ज और परेशानी में गिरफ़्तार हो तो सुबह–शाम यह दुआ़ पढ़ा करे –

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि–क मि–नल् हम्मि वल् हुज़्नि व–अऊज़ुबि–क मि–नल् अ़ज्ज़ि वल्–कसलि व– अऊज़ुबि–क मि–नल् जुब्नि वल्बुख़्लि व–अऊज़ुबि –क मिन् ग़–ल–बतिद्दैनि व–क़हर्रिरिजालि

तर्जुमा– "ऐ अल्लाह! मैं तेरी ही पनाह लेता हूँ हर रन्ज और ग़म से, और तेरी ही पनाह लेता हूँ सुस्ती और काहिली से, और तेरी ही पनाह लेता हूँ बुज़दिली और बख़ीली से, और तेरी ही पनाह लेता हूँ क़र्ज़ के बोझ और लोगों के ज़ुल्म और ज़्यदती से" (तू मुझे इन सब से बचा ले)

फ़ायदा – यहाँ तक जो दुआ़यें बयान हुई हैं[1] यह सुबह–शाम दोनों समय पढ़ी जायें, केवल इतना किया जाये कि जिस

---

1. यह 30 दुआ़यें याद कर लेनी चाहिये और अर्थ समझ लेना चाहियें। इन में छोटी –छोटी दुआ़यें और "तअ़व्वुज़" भी हैं और बड़ी से बड़ी भी। जितना समय हाथ आये उतना ही पढ़े। कम से कम एक ज़िक्र और तअ़व्वुज़ तो अवश्य ही पढ़ लेना चाहिये। इसी प्रकार ⊠

दुआ में "अस्-बह्तु" (मैं ने सुबह की) या "अस्-बह्ना" (हम ने सुबह की) आया है, उस में शाम के समय उस के स्थान पर "अम्सैतु" (मैं ने शाम की) या "अम्सैना" (हम ने शाम की) पढ़े। और जिस दुआ में "हा-ज़ल्यौमि" (इस दिन) आया है उस में शाम को "हाज़िहिल्लै-लति" (इस रात) पढ़े। और जिस दुआ में "वइलैहिन्नुशूरु" आया है उस में "वइलैहिल् मसीरु" पढ़े।

★★★

⊠ अपनी ज़रूरत के अनुसार कम से कम एक दूआ ज़रूर माँगनी चाहिये, ताकि अल्लाह के ज़िक्र से और दुआ माँगने के सवाब से वन्चित न रहे। इसी प्रकार भविष्य में आने वाली दुआओं और ज़िक्रों पर भी अमल होना चाहिये (हदीस)

केवल शाम की दुआयें

1) केवल शाम को यह दुआ पढ़ा करे -

أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِيْ يُمْسِكُ
السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهٖ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَأَ وَبَرَأَ

अम्सैना व-अम्-सल् मुल्कु लिल्लाहि वल्-हम्दु लिल्लाहि, अऊज़ुबिल्लाहिल्लज़ी युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ़ अ़-लल् अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निही मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़ व-ज़-र-अ व-ब-र-अ

तर्जुमा- "हमने और पूरी दुनिया ने अल्लाह (की इबादत) के लिये शाम की है, और तारीफ़ अल्लाह के लिये है। मैं उस अल्लाह की पनाह लेता हूँ जो अपनी अनुमति के बिना आकाश को भूमि पर गिरने से रोके हुये है, हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की, फैलाई और उस को जन्म दिया (वही मुझे बचायेगा)

फ़ायदा - यानी ऊपर की 30 दुआओं में से जो दुआयें शाम को पढ़े, उन के साथ इस दुआ का भी इज़ाफ़ा कर लें।

★★★

केवल सुब्ह की दुआयें

1) केवल सुबह को यह दुआ पढ़ा करे -

أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْكِبْرِيَاءُ وَالْعَظَمَةُ وَالْخَلْقُ وَالْأَمْرُ وَاللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَمَا يَضْحٰى فِيهِمَا لِلّٰهِ وَحْدَهُ، اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ أَوَّلَ هٰذَا النَّهَارِ صَلَاحًا وَأَوْسَطَهُ فَلَاحًا وَآخِرَهُ نَجَاحًا، أَسْئَلُكَ خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

अस्-बहना व-अस्-ब-हल् मुल्कु लिल्लाहि वल्किब्रियाउ वल् अ़ज़्-मतु वल्-ख़ल्क़ु वल्-अम्रु वल्लैलु वन्नहारु वमा यज़्हा फ़ीहिमा लिल्लाहि वह्-दहू +अल्लाहुम्मज्-अ़ल् अव्व-ल हा-ज़न्नहा-रि सला-हव्वंऔ-स-तहू फ़ला-हव्वआख़ि-रहू नजाहन्+ अस्-अलु-क ख़ै-रद्दुन्- या वल् आख़ि-रति या अर्-ह-मर्राहिमी-न+

तर्जुमा- "हम ने और तमाम दुनिया ने अल्लाह (की इबादत और उसी की इताअ़त) के लिये सुबह की है, और तमाम बड़ाई, बुज़ुर्गी, पैदाइश, अविष्कार और रात और दिन और जो कुछ इन दोनों में ज़ाहिर होता है वह सब तन्हा अल्लाह के लिये हैं। ऐ अल्लाह! तू आज के दिन के पहले हिस्सा को मेरे लिये बेहतरी (का ज़रिआ़) और बीच के हिस्सा को कामियाबी का और अन्तिम हिस्सा को भलाई (का ज़रिआ़) बना दे और ऐ सब से अधिक रहम करने वाले! मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत दोनों की भलाई

का प्रश्न करता हूँ (तू मेरे सवाल को पूरा कर दे)

फ़ायदा - सुबह-शाम की दुआओं के साथ ऊपर की इस दुआ का सुबह के समय विशेष रूप से इज़ाफ़ा करे।

2) या इस दुआ का इज़ाफ़ा करे -

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، وَالْخَيْرُ فِيْ يَدَيْكَ وَمِنْكَ وَإِلَيْكَ، اَللّٰهُمَّ مَا قُلْتُ مِنْ قَوْلٍ اَوْ حَلَفْتُ مِنْ حَلْفٍ اَوْ نَذَرْتُ مِنْ نَذْرٍ فَمَشِيَّتُكَ بَيْنَ يَدَيْ ذٰلِكَ كُلِّهٖ، مَا شِئْتَ كَانَ وَمَا لَمْ تَشَأْ لَا يَكُوْنُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ، اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَللّٰهُمَّ مَا صَلَّيْتُ مِنْ صَلٰوةٍ فَعَلٰى مَنْ صَلَّيْتَ وَمَا لَعَنْتُ مِنْ لَعْنٍ فَعَلٰى مَنْ لَعَنْتَ اَنْتَ وَلِيِّيْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصَّالِحِيْنَ

लब्बै-क अल्लाहुम्म लब्बै-क, लब्बै-क सअ्दै-क, वल्ख़ैरु फ़ी यदै-क, वमिन्-क वइलै-क+अल्लाहुम्म मा क़ुल्तु मिन् क़ौलिन् औ ह-लफ़्तु मिन् हल्फ़िन् औ न-ज़रतु मिन् नज़रिन् फ़-मशिय्यतु-क बइना यदै ज़ालि-क कुल्लिही, मा शे-त का-न वमा लम् तशा ला यकूनु, वला हौ-ल वला कुव्व-त इला बि-क, इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+अल्लाहुम्म मा सल्लैतु मिन् सलतिन् फ़-अ़ला मन् सल्लै-त, वमा ल-अ़न्तु मिन् लअ़निन् फ़-अ़ला मन् ल-अ़न्-त, अन्-त वलिय्यी फ़िद्दुन्या वल् आख़ि-रति, त-वफ़्फ़नी मुस्लि-मव्व-अल्हिक़्नी बिस्सालिही-न+

तर्जुमा- "हाज़िर हूँ मैं ऐ अल्लाह! (तेरे सामने) हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ और तेरी आज्ञापालन के लिये तय्यार हूँ। और भलाई (तमाम की तमाम) तेरे ही हाथ में है और तेरी ही ओर से और

तेरी तरफ़ (उस की निस्बत) है। ऐ अल्लाह! जो भी बात मैं ने कही, जो भी क़सम मैं ने खाई, या जो भी नज़्र (मन्नत) मैं ने मानी, तेरी चाहत और मर्ज़ी उस सब से पहले है। जो तू ने चाहा वही हुआ और जो तू न चाहेगा वह न होगा। और न कोई क़ुव्वत है न कोई ताक़त सिवाए तेरे (सहारे के) बेशक तू ही हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है। ऐ अल्लाह! जो भी मैंने (किसी के लिये) रहमत की दुआ माँगी वह उस पर हो जिस पर तू ने रहमत फ़रमायी है, और जो भी मैं ने (किसी पर) लानत भेजी है वह उस पर हो जिस पर तू ने लानत फ़रमायी है। तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरी बिगड़ी बनाने वाला है। तू मुझे (दुनिया से) मुसलमान उठाइयो और नेक लोगों में मुझे शामिल कीजियो।"

3) या इस दुआ का इज़ाफ़ा करें -

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَاءِ، وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ، وَلَذَّةَ
النَّظَرِ اِلٰى وَجْهِكَ، وَشَوْقًا اِلٰى لِقَآئِكَ فِیْ غَيْرِ ضَرَّآءَ مُضِرَّةٍ وَّلَا فِتْنَةٍ
مُّضِلَّةٍ، وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ، اَوْ اَعْتَدِیَ اَوْ يُعْتَدٰى عَلَیَّ
اَوْ اَكْسِبَ خَطِيْئَةً اَوْ ذَنْبًا لَّا تَغْفِرُهٗ، اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ، فَاِنِّیْ اَعْهَدُ اِلَيْكَ فِیْ هٰذِهِ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاُشْهِدُكَ، وَكَفٰى بِكَ شَهِيْدًا اَنِّیْ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ
اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، لَكَ الْمُلْكُ، وَلَكَ الْحَمْدُ، وَاَنْتَ عَلٰى
كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ، وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ، وَاَشْهَدُ اَنَّ
وَعْدَكَ حَقٌّ، وَلِقَآءَكَ حَقٌّ، وَالسَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا، وَاَنَّكَ تَبْعَثُ
مَنْ فِی الْقُبُوْرِ، وَاَنَّكَ اِنْ تَكِلْنِیْ اِلٰى نَفْسِیْ تَكِلْنِیْ اِلٰى ضُعْفٍ وَّعَوْرَةٍ وَّ
ذَنْبٍ وَّخَطِيْئَةٍ، وَاِنِّیْ لَا اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ كُلَّهَا

إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-करिज़ा बा-दल् क़ज़ाइ, व-बर् दल् ऐशि बा-दल् मौति, व-लज़्ज़-तन्न-ज़रि इला वजहि-क, वशौ-क़न् इला लिक़ाइ-क फ़ी ग़ैरि ज़र्रा-अ मुज़िर्रतिंव्वला फ़ित्-नतिम मुज़िल्लतिन्, व-अऊज़ुबि-क अन् अज़्लि-म औ उज़्-ल-म, औ आ-तदि-य औ यू-तदा अ़-लय्य, औ अक्सि-ब ख़ती-अ-तन् औ ज़म्-बन् ला तग़फ़िरुहू+अल्लहुम्म फ़ाति-रस्समावाति वल्-अर्ज़ि, आ़लि-मल् ग़ैबि वश्शहा-दति, ज़ल्-जलालि वल् इकरामि, फ़इन्नी आहदु इलै-क फ़ी हाज़िहिल् हयातिद्दुनया वउश्हिदु-क, व-कफ़ा बि-क शही-दन् अन्नी अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्ला अन्-त, वह-द-क, ला शरी-क ल-क, ल-कल् मुल्कु, व-ल-क-ल् हम्दु, व-अन्-त अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+ व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दन् अ़ब्दु-क व-रसूलु-क, व-अश्-हदु अन्न वअ़्-द-क हक़्कुन्, वलिक़ाअ-क हक़्कुन्, वस्सा-अ़-त आति-यतुल्लारै-ब फ़ीहा, व-अन्न-क तब्-असु मन् फ़िल् क़ुबूरि+व-अन्न-क इन् तकिल्नी इला नफ़्सी तकिल्नी इला ज़ोफ़िन् वऔ़-रतिन् व-ज़म्बिन् व-ख़ती-अतिन् व-अन्नी ला असिक़ु इल्ला बि-रह्-मति-क फ़ग़फ़िरली ज़ुनूबी कुल्लहा इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त वतुब् अ़-लय्य इन्न-क अन्-तत्तव्वाबुर्रहीमु+

तर्जुमा- "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से (तक़दीर के) फ़ैसला के बाद इस पर राज़ी होने का, और मरने के बाद की ज़िन्दगी के आराम से गुज़रने का, और तुझे देखने की लज़्ज़त का, और बिना किसी बदहाली और गुमराह करने वाले फ़ितने में गिरफ़्तार हुये तेरी मुलाक़ात के शौक़ का प्रश्न करता हूँ (तू इस सवाल को पूरा कर दे) और मैं तेरी पनाह लेता हूँ इस से कि मैं (किसी पर) अत्याचार करूँ या मुझ पर अत्याचार किया जाये। और इस से कि

मैं (किसी पर) ज़्यादती करूँ या मुझ पर ज़्यादती की जाये, और मैं किसी ऐसी ग़लती या पाप को कर बैठूँ जिसे तू माफ़ न फ़रमाये।

ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीनों के पैदा करने वाले! हाज़िर और ग़ायब का इल्म रखने वाले! बड़ाई और जलाल के मालिक! मैं इस दुनिया की ज़िन्दगी में तुझ से वादा करता हूँ और तुझ को गवाह बनाता हूँ- और तेरी गवाही बहुत काफ़ी है - कि मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अ़लावा कोई इबादत के लाइक़ नही, तू अकेला (माबूद) है, तेरा कोई शरीक नहीं, तेरा ही सारा मुल्क है और तेरे ही लिये सब तारीफ़ है और तू ही हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है। और इस बात की भी गवाही देता हूँ कि बेशक (दोनों जहान के सरदार) मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं, और इस बात की भी गवाही देता हूँ कि तेरा वादा सच्चा है, तुझ से मिलना (क़यामत के दिन) सच है, और क़यामत ज़रूर आने वाली है, इसमें कोई शक और शुब्हा नहीं। और यह कि तू क़ब्र वालों को ज़रूर (क़ब्रों से) उठाएगा (और पुनः जीवित करेगा) और यह कि तू अगर मुझ को मेरे नफ़्स के हवाले कर देगा तो बिला शुब्हा कमज़ोरी (शर्मनाक) ऐब, गुनाह और ख़ताकारी के सपुर्द करेगा, और इस पर कि बेशक तेरी रहमत के सिवा किसी चीज़ पर भरोसा नहीं करता, पस तू मेरे समस्त पापों को माफ़ कर दे, क्योंकि तेरे सिवा और कोई गुनाहों को माफ़ करने वाला नही हैं। और मेरी तौबा को क़बूल कर ले, बेशक तू तो बड़ा तौबा क़बूल करने और बहुत रहम करने वाला है।"

★ ★ ★

सूरज निकलने के समय की दुआ और इश्राक़ (चाश्त) की नमाज़ का बयान

1) जब सूरज निकल आये तो यह दुआ पढ़े -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَقَالَنَا یَوْمَنَا هٰذَا وَلَمْ یُهْلِكْنَا بِذُنُوْبِنَا

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अक़ा-लना यौ-मना हाज़ा व-लम् युह्लिक्ना बिज़ुनूबिना

तर्जुमा- "उस अल्लाह का (लाख-लाख) शुक्र है जिस ने हमें आज का दिन दिखाया और हमारे (कल के) गुनाहों के सबब हमें हलाक न कर डाला।"

2) या यह दुआ पढ़े और इस के बाद दो रक्अतें (चाश्त की नमाज़) पढ़े-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ وَهَبَنَا هٰذَا الْیَوْمَ وَاَقَالَنَا فِیْهِ عَثَرَاتِنَا وَلَمْ یُعَذِّبْنَا بِالنَّارِ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी व-ह-बना हा-ज़ल् यौ-म व-अक़ा-लना फ़ीहि अ-स-रातिना व-लम् यु-अ़ज़्ज़िब्ना बिन्नारि

तर्जुमा- "सब तारीफ़ है उस अल्लाह की जिस ने हमें यह

(आज का) दिन नसीब फ़रमाया और हमारी भूल-चूक को माफ़ फ़रमाया और हमें जहन्नम के अज़ाब से बचाया।"

3) जब दिन अच्छी तरह चढ़ जाये तो (यानी 10-11 बजे के दर्मियान) चार रकअ़त चाश्त की नमाज़ पढ़े। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है[1] ।

"ऐ आदम की औलाद! तू दिन के अव्वल हिस्सा में (मेरे लिये) चार रकअ़ते पढ़ ले[2] मैं दिन के आख़िर हिस्सा तक तेरे लिये किफ़ायत करूँगा (यानी तेरी सारी कठिनाइयाँ दूर कर दूँगा)

---

1. यह हदीस क़ुद्सी है। इस में अल्लाह पाक ने कितने प्यारे अन्दाज़ से बन्दे को ख़िताब किया है, इसलिये बन्दे को चाहिये कि शुक्र के तौर पर चाश्त की चार रकअ़तें ज़रूर पढ़े।

2. पहली दो रकअ़तें इश्राक़ की नमाज़ कहलाती हैं, सूरज के अच्छी तरह निकल आने के बाद पढ़ी जाती हैं। अफ़ज़ल यह है कि फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ कर वहीं मस्जिद में बैठा हुआ ज़िक्र और क़ुरआन की तिलावत करता रहे और इशराक़ की नमाज़ पढ़ कर उठे। इस दर्मियान में किसी से बात-चीत या कोई काम-धन्धा न करे। महिलायें घरों के अन्दर नमाज़ पढ़ने के स्थान पर ही बैठी ज़िक्र या तिलावत करती रहें और इशराक़ की नमाज़ पढ़ कर उठें। और यही चार रकअ़तें दिन चढ़े सूरज ढलने से पहले लगभग 10 और 11 बजे के दर्मियान पढ़ी जाती हैं, इन को "चाश्त की नमाज़" कहते हैं, इन का भी बहुत बड़ा सवाब है। (हदीस)

दिन की दुआएं

(दिन में जब भी मौक़ा हो या समय मिले, यह दुआएं पढ़े)

1) 100 मर्तबा यह दुआ पढ़े-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर

तर्जुमा- "अल्लाह के अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं है, उस का मुल्क है और उसी के लिये प्रशंसा है और वही हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है।"

फ़ायदा - एक रिवायत में 200 मर्तबा पढ़ने का ज़िक्र है। मतलब यह है कि जितना समय और मौक़ा मिले उतना ही पढ़े। अफ़ज़ल यह है कि शुरू और आख़िर में 11-11 मर्तबा दरूद शरीफ़ भी पढ़े।

2) या 100 मर्तबा यह तस्बीह पढ़े-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही

तर्जुमा- "पाक है अल्लाह, और प्रशंसा है उसकी"

3) दिन में कम से कम दस मर्तबा यह तअव्वुज़ पढ़े-

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्रजीमि

तर्जुमा- "मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह की शैतान मर्दूद से"

फ़ायदा -हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स अल्लाह तआला से दिन में 10 मर्तबा शैतान से पनाह माँगेगा अल्लाह तआला उस को शैतान से बचाने के लिए एक फ़रिश्ता मुकर्रर कर देंगे।

4) और दिन में 25 या 27 मर्तबा यह इस्तिगफ़ार पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

अल्लाहुम्मग़फ़िर्ली वलिल् मोमिनी-न वल्मोमिनाति वल् मुस्लिमी-न वल् मुस्लिमाति

तर्जुमा- "मेरे मौला! तू मेरे और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के और समस्त मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों के गुनाह बख़्श दे।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स दिन में 25 या 27 मर्तबा तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिये माफ़ी की दुआ माँगेगा वह अल्लाह तआला के नज़दीक जिन की

दुआयें क़बूल होती हैं उन में शामिल हो जायेगा और जिन की दुआओं से ज़मीन वालों को रोज़ी दी जाती है।

5) दिन में जब भी समय मिले 100 मर्तबा पढ़े -

सुब्हा-नल्लाहि

"अल्लाह की ज़ात पाक है"

फ़ायदा - हदीस शरीफ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया -

"क्या तुम में से कोई शख़्स हर रोज़ हज़ार नेकियाँ नहीं कमा सकता? जो शख़्स दिन में 100 मर्तबा "सुब्हानल्लाह" पढ़ लेता है उस के लिये हज़ार नेकियाँ लिख दी जाती हैं और 1000 बुराइयाँ मिटा दी जाती हैं।"

मग़्रिब की अज़ान के समय की दुआ

1) मग़्रिब की अज़ान के समय यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ هٰذَا اِقْبَالُ لَيْلِكَ وَاِدْبَارُ نَهَارِكَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْ لِيْ

अल्लाहुम्म हाजा इक़बालु लैलि-क वइद्बारू नहारि-क व-अस्वातु दुआइ-क फ़ग़फ़िर्ली

तर्जुमा- "ऐ अल्लाह! यह तेरी रात के आने और दिन के जाने और तेरे अज़ान देने वालों की आवाज़ों (यानी अज़ानों) का समय है, पस तू मुझे बख़्श दे।"

रात के समय ज़िक्र की दुआएं

1) सूरः ब-क़-रः की अन्तिम दो आयतें रात में किसी समय भी हो पढ़ा करे-

(١) اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ (٢) لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا
وُسْعَهَا ؕ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ
نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۫ وَاغْفِرْ لَنَا ۫
وَارْحَمْنَا ۫ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

1- आ-म-नर्रसूलु बिमा उन्ज़ि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मोमिनू-न कुल्लुन् आ-म-न बिल्लाहि व-म-लाइ-कतिही वकुतुबिही वरुसुलिही ला नु-फ़र्रिकु बै-न अ-हदिम्मिर्रुसुलिही वक़ालू समेअ्ना व-अतअ्ना गुफ़रा-न-क रब्बना व इलै-कल मसीरु

2- ला यु-कल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्-सन् इल्ला वुस्-अहा लहा

मा क-स-बत् वअ़लैहा मक्-त-स-बत् रब्बना ला तुआख़िज़ना इन्नसीना औ अख़्ताना रब्बना वला तह्मिल् अ़लैना इस्-रन् कमा ह-मल्तहू अ़-लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिना रब्बना वला तु-हम्मिल्ना मा ला ता-क़-त लना बिही वाअ़फु अ़न्ना, वग़्फ़िर् लना, वर्-हम्ना, अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अ़-लल् क़ौमिल् काफ़िरी-न+

तर्जुमा- "रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) भी उस किताब पर ईमान लाये जो उन के रब की ओर से उन पर उतारी गयी है और (तमाम) मोमिन लोग भी (उस पर ईमान लाये) सब के सब अल्लाह पर, उस के फ़रिश्तों पर, उस की (तमाम) किताबों पर, और सब सन्देष्टाओं पर ईमान लाये हैं और कहते हैं- हम अल्लाह के संदेष्टाओं के दर्मियान किसी प्रकार का फ़र्क़ नही करते, और उन का कहना है कि (ऐ हमारे रब!) हम ने (तेरा आदेश) सुन लिया और मान लिया (अब) हमारे रब! हम तेरी माफ़ी के चाहने वाले हैं और (हमें) तेरी ही तरफ़ लौटना है।

2- अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितनी उस की ताक़त है, जिसने जो (अच्छे) काम किये उन को नफ़ा भी उसी के लिये है, और जिसने जो बुरे कार्य किये उन का वबाल भी उसी पर है। ऐ हमारे पवर्रदिगार! अगर हम भूल जायें, या चूक जायें तो तू (उस भूल-चूक में) हमें न पकड़यो। और ऐ हमारे रब! तू ने हम से पहले लोगों पर जैसा सख़्त बोझ डाला था वैसा बोझ हम पर न डालियो : और ऐ हमारे रब! तू हम पर वह बोझ न डाल जिन की हम में ताक़त नहीं है। और तू हमें माफ़ कर दे और (हमरे गुनाह) बख़्श दे, और हम पर रहम फ़रमा, तू ही हमारा मौला है, पस तू काफ़िरों के मुक़ाबले पर

हमारी सहायता फ़रमा।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जिसने रात को सूरः ब-क़-रः की यह अन्तिम दो आयतें पढ़ लीं, अल्लाह तआला उस को हर बुराई से सुरक्षित रखेगा।

2) सूरः इख़्लास पढ़ा करे –

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

कुल् हु-वल्लाहु अ-हदुन्, अल्लाहुस्स-मदु, लम् यलिद् व-लम् यू-लद्, व-लम् यकुल्लहू कुफ़ु-वन् अ-हदुन्

तर्जुमा– "(ऐ नबी!) तू कह दे! वह अल्लाह एक है, (वह) अल्लाह बेनियाज़ है, न वह किसी का बाप है न वह किसी का बेटा है, और न ही कोई उस के जोड़ का है।"

फ़ायदा – सहीह बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई रात में एक तिहाई क़ुरआन नहीं पढ़ कसता? सहाबा ने कहा – ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! यह तो बहुत अधिक कठिन है। आप ने फ़रमाया : क़ुल् हु-वल्ललाहु अ-हद् एक तिहाई क़ुरआन है (क्या तुम क़ुल हु-वल्लाह नहीं पढ़ सकते?)

3) क़ुरआन करीम की कोई सी 100 आयतें रात में किसी समय पढ़ लिया करे।

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है – जिस ने रात में 100 आयतें पढ़ लीं वह अल्लाह के यहां (ख़ुदा की याद से) ग़ाफ़िल बन्दों में नहीं लिखा जायेगा।

4) नीचे दी हुई दस आयतें रात में किसी भी समय पढ़ लेनी चाहियें-

फ़ायदा - सूर: ब-क़-र: की पहली चार आयतें, आयतुल् कुर्सी, आयतुल कुर्सी के बाद की 2 आयतें, सूर: ब-क़-र: की अन्तिम तीन आयतें (कुल 10 आयतें हुयीं)

सूर: ब-क़-र: की पहली चार आयतें यह हैं -

(1) الٓمٓ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ
يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ
يُوْقِنُوْنَ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

1- अलिफ़ लाम मीम, ज़ालि-कल् किताबु लारै-ब फ़ीहि हु-दल्लिल् मुत्तक़ीन् 2- अल्लज़ी-न यूमिनू-न बिल्ग़ैबि वयुक़ीमू-नस्सला-त वमिम्मा र-ज़क़नाहुम् युन्फ़िक़ू-न 3-वल्लज़ी-न यूमिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क वमा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क वबिल् आख़ि-रति हुम् यूक़िनू- न 4-उलाइ-क अ़ला हु-दम्मिर्रब्बिहिम् वउलाइ-क हुमुल् मुफ़लिहू-न

तर्जुमा - " 1. अलिफ़ लाम मीम, यह वह पुस्तक है जिस (के अल्लाह का कलाम होने) में कोई शक-शुब्हा नही, राह दिखाने वाली है (अल्लाह से) डरने वालों के लिये 2. जो ग़ैब पर ईमान लाये हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं, और हम ने जो उन को दिया है उस में से (अल्लाह की राह में) ख़र्च करते हैं 3. और जो उस पुस्तक पर भी ईमान लाते हैं जो तुम पर उतारी गयी, और उस पर भी जो तुम से पहले उतारी गयी और आख़िरत

का भी यक़ीन रखते हैं 4. यही लोग अपने रब की हिदायत (की राह) पर हैं और यही लोग (दुनिया और आख़िरत दोनों में) नजात पाने वाले हैं।"

"आयतुल् कुर्सी" यह है :-

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ
مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ
اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا
وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ (سورۂ بقرہ)

अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल् कय्यूमु ला ताखुज़ुहू सि-न तुव्वला नौमुन्, लहू माफ़िस्समावाति वमा फ़िल् अर्ज़ि, मन ज़ल्लज़ी यश्-फ़उ अिन्-दहू इल्ला बिइज़निही, यअ़लमु मा बै-न ऐदीहिम् वमा ख़ल्-फ़हुम् वला युहीतू-न बिशैइम् मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्-अर्-ज़, वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहु-वल् अ़लिय्युल् अज़ीमु+

तर्जुमा - "अल्लाह वह (पाक ज़ात) है जिस के अ़लावा कोई भी पूजे जाने के लाइक़ नहीं, वह (हमेशा) ज़िन्दा रहने (और ज़िन्दगी देने) वाला है (ज़मीन और आकाश और समस्त संसार को) क़ायम रखने (और उन का संचालन करने) वाला है, न उस को ऊँघ आ सकती है न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, कौन है जो उस के दर्बार में उस की अनुमति के बिना (किसी की) सिफ़ारिश कर सके? वह तो जो कुछ लोगों के सामने (हो रहा) है और जो

कुछ उन के पीछे (मरने के बाद) होने वाला है, सब जानता है और लोग उस के ज्ञान (और मालूमात) में से किसी चीज़ पर भी पहुँच नहीं रखते मगर जितना वह खुद चाहे (उससे उस को आगाह कर दे) उस की (बादशाहत की) कुर्सी आसमान और ज़मीन सब पर फैली हुयी है, और आसमान और ज़मीन की सुरक्षा उस पर तनिक भर भी कठिन नहीं है और वह (सब से) ऊँचा (यानी बुलन्द और) बड़ाई वाला है।"

आयतुल् कुर्सी के बाद की दो आयतें यह हैं -

(٢) لَآ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙ قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَیُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ (٢) اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۙ یُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ؕ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِیٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَی الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ (البقرة ع ٣٤)

1- ला इक्रा-ह फ़िद्दीनि क़त्त-बय्य-नर्रुश्दु मि-नल् ग़य्यि फ़-मंय्यक्फ़ुर् बित्तग़ूति वयूमिम् बिल्लाहि फ़-क़दिस् -तम्-स-क बिल् उर-वतिल् उस्क़ा लन् फ़िसा-म लहा, वल्लाहु समीउन् अ़लीमु-न्

2- अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी-न आ-मनू युख़रिजुहुम् मि-नज़्ज़ुलुमाति इ-लन्नूरि,वल्लज़ी-न क-फ़रु औलियाउहु- मुत्ताग़ूतु युख़रिजू-नहुम् मि-नन्नूरि इ-लज़्ज़ुलुमाति, उलाइ-क असहाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदू-न+

तर्जुमा - 1. "दीन में कोई ज़ोर ज़बर्दस्ती नहीं है, बेशक हिदायत गुमराही से पूरे तौर पर (अलग और) ज़ाहिर हो चुकी है, तो जिस शख़्स ने गुमराह करने वाले शैतानों की बात न मानी और

अल्लाह पर ईमान ले आया तो बेशक उस ने ऐसा मज़बूत सहारा पकड़ लिया जो कभी टूटने वाला नहीं और अल्लाह (सब कुछ) सुनता और जानता है

2 – अल्लाह उन लोगों का साथी (और सहयोगी) है जो ईमान ले आये, उन को (कुफ़्र और गुमराही की) तारीकी (अँधियारी) से निकाल कर (ईमान की) रोशनी में लाता है, और जिन लोगों ने (हक़ से) इन्कार किया उन की सहायता गुमराह करने वाले शैतान हैं, जो उन को (ईमान की) रोशनी से निकाल कर (कुफ़्र के) अँधेरों में ढकेलते हैं, यही लोग जहन्नमी हैं, यह लोग जहन्नम में हमेशा-हमेशा रहेंगे।"

सूरः बक़रः की अन्तिम तीन आयतें यह हैं –

(٥) لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ
اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ
يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ
رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا
رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا
رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا
اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۔ (سورۃ البقرۃ)

1-लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वमा फ़िल् अर्ज़ि वइन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु, फ़-यग़फ़िरु लि-मय्यंशाउ वयु-अ़ज़्ज़िबु मय्यंशाउ वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुन्,

2- आ-म-नर्रसूलु बिमा उन्ज़ि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मोमिनू-न कुल्लुन् आ-म-न बिल्लाहि व-मलाइ- कतिही वकुतुबिही वरुसुलिही ला नु-फ़र्रिकु बै-न अ-ह-दिम्मिर्र-सुलिही, वक़ालू समेअ़ना व-अताअ़ना गुफ़्-रा-न-क रब्बना वइलै-कल् मसीरु।

3- ला यु-कल्लिफुल्लाहु नफ़्-सन् इल्ला वुस्-अ़हा लहा मा-क-स-बत् व-अ़लैहा मक्-त-स-बत् रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसी-ना औ अख़्-तअ्ना, रब्बना वला तह्मिल् अ़लैना इस्-रन् कमा ह-मल्-तहू अ़-लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिना रब्बना वला तु-हम्मिल्ना मा ला ता-क़्-त लना बिही वाअ्फ़ु अ़न्ना वग़फ़िर् लना वर्-हम्ना अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अ़-लल् क़ौमिल् काफ़िरी-न

तर्जुमा -1- "अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और ज़मीन में है, जो तुम्हारे दिलों में है जाहे तुम उस को प्रकट करो चाहे छुपाओ अल्लाह तुम सब से उस का हिसाब लेगा और फिर जिस को चाहेगा बख़्श देगा और जिस को चाहेगा दन्ड देगा, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

2- रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) भी उस किताब पर ईमान लाये जो उस के रब की ओर से उन पर उतारी गयी है और (सब) ईमान लाने वाले भी (उस पर ईमान ले आये) सब के सब अल्लाह पर, उस के फ़रिश्तों पर, उस की (तमाम)

किताबों पर, और सब रसूलों पर ईमान लाये हैं और कहते हैः हम अल्लाह के रसूलो के दर्मियान किसी प्रकार का भेद भाव नही करते, और उन का कहना है कि (ऐ हमारे रब!) हम ने (तेरा आदेश) सुन लिया और मान लिया (अब) ऐ हमारे रब! हम तेरी माफ़ी के चाहने वाले हैं और (हमें) तेरी ही ओर लौटना है।

3- अल्लाह किसी पर बोझ नही डालता मगर उसी क़दर जितनी उस की ताक़त है, जिसने जो (अच्छे) कार्य किये उन का लाभ भी उसी के लिये है और जिसने जो (बुरे) काम किये उनका वबाल भी उसी पर है। ऐ हमारे पर्वरदिगार! अगर हम भूल या चूक जायें तो तू (उस भूल-चूक पर) हमें न पकड़यो। और ऐ हमारे रब! तू ने हम से पहले लोगों पर जैसा सख़्त बोझ डाला था वैसा हम पर न डाल, और ऐ मेरे रब् तू हम पर वह बोझ भी न डाल जिन की हम में ताक़त नहीं है, और तू हमें माफ़ कर दे और (हमारे गुनाह) बख़्श दे, और हम पर रहम फ़रमा, तू हमारा मौला है, पस तू काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।"

5) सूरः यासीन रोज़ाना रात में पढ़ा करे।

दिन और रात दोनों की दुआ़एं

सय्यिदुल् इसतिग़फ़ार

(सब से बडे इस्तिग़फ़ार)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ، وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ، فَاغْفِرْ لِيْ، فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

अल्लाहुम्म अन्-त रब्बी, लाइला-ह इल्ला अन्-त, ख़-लक्-तनी व-अना अब्-दु-क, व-अना अ़ला अ़हदि-क ववअ़्दि-क मस्-त-ताअ़तु, अऊ़ज़ुबि-क मिन् शर्रि मा स-नअ़्तु अबूउ ल-क बिनेअ़्-मति-क अ़-लय्य, व-अबूउ बि-ज़म्बी, फ़ग़फ़िर्ली, फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू -ब इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "मेरे मौला! तू मेरा रब है, तेरे अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तू ने ही मुझे पैदा किया है और मैं तेरा ही बन्दा हूँ और मैं तेरे पैमान और तेरे वादे पर अपनी ताक़त भर

क़ायम हूँ, मैं तुझ से अपने किये (कामों) की बुराई से पनाह माँगता हूँ, तेरी जो नेमतें मुझ पर हैं उन को मैं तेरे सामने स्वीकार करता हूँ, और अपने पापों को भी स्वीकार करता हूँ, पस तू मेरे गुनाह बख़्श दे इसलिये कि तेरे अलावा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्श इस इस्तिग़फ़ार को एक मर्तबा दिन में या रात में पूरे यक़ीन के साथ पढ़ लेगा, अगर वह उस दिन या रात में देहान्त कर जायेगा तो वह ज़रूर जन्नती होगा।

इसलिये हदीस शरीफ़ में इस इस्तिग़फ़ार को "सय्यिदुल इसतिग़फ़ार" (सब से बड़े इस्तिग़फ़ार) के नाम से ज़िक्र फ़रमाया है।

2) जो शख़्स दिन में या रात में या (सप्ताह या) महीने में एक मर्तबा यह दुआ पढ़ लेगा अगर वह उस दिन या रात या (सप्ताह या) महीने में देहान्त कर गया तो उस के गुनाह ज़रूर बख़्शे जाएंगे :

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ
لَا شَرِيكَ لَهُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्-बर्, लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू, लाइला-ह इल्लल्लाहु ला शरी-क लहू, लाइला-ह इल्लल्लाहु लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु, लाइला-ह इल्लल्लाहु वला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि

तर्जुमा - "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह ही सब से बड़ा है, अल्लाह के अ़लावा और कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह (अपनी ज़ात और सिफ़ात में) अकेला है, अल्लाह के अ़लावा और कोई माबूद नहीं, उस का (सारा) मुल्क है और उसी की (सब) हम्द व सना है, अल्लाह के अ़लावा और कोई इबादत के लाइक़ नहीं, और कोई भी ताक़त और क़ुव्वत अल्लाह (की मदद) के बग़ैर (हासिल) नहीं।"

3) दिन या रात में जब भी समय मिले यह कलिमे ज़रूर पढ़े और अल्लाह से (अपनी ज़रूरत की) दुआ़ माँगे:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْئَلُكَ صِحَّةً فِیْۤ اِیْمَانٍ، وَاِیْمَانًا فِیْ حُسْنِ خُلُقٍ وَّ نَجَاةً تَتْبَعُهَا فَلَاحٌ، وَرَحْمَةً مِّنْكَ وَعَافِیَةً وَمَغْفِرَةً مِّنْكَ وَرِضْوَانًا

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क सिह्ह-तन् फ़ी ईमानिन्, वईमा-नन फ़ी हुस्नि ख़ुलुक़िन् वनिजा-तन् यत-बउहा फ़लाहुन् व-रह्-म-तम्मिन्-क व आ़फ़ियतन व मग़फ़ि-र तन-मिनक वरिज़्वा-नन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से स्वास्थ का ईमान के साथ, ईमान के अच्छे अख़्लाक़ के साथ, और उस नजात का जिस के साथ (दुनिया और आख़िरत की) कामियाबी हो, और तेरी रहमत का और अम्न व शान्ति का और तेरी मग़्फ़िरत और खुशनूदी का सवाल करता हूँ" (तू मुझे यह सब अ़ता कर दे)

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान फ़ारसी को बुला कर फ़रमाया: " अल्लाह तआ़ला का नबी चाहता है कि तुम्हें रहमान की ओर से दिये गये कलिमों का तोहफ़ा दे, तुम

उन्हें शौक़ के साथ दिन में या रात में पढ़ा करो और उन के साथ दुआ माँगा करो" और फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऊपर की दुआ सिखाई।

घर में दाख़िल होने और घर से निकलने के समय की दुआएं

1- जब घर में दाख़िल हो, या घर से निकलो तो यह दुआ पढ़ो और फिर (घर वालों को) सलाम करो[1] :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا

وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ख़ै-रल् मौलजी वख़ै-रल् मख़्-रजि, बिस्मिल्लाहि व-लज्ना वबिस्मिल्लाहि ख़-रज्ना, व-अ़लल्लाहि रब्बिना त-वक्कल्ना

----

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि एक शख़्स ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हो कर अपनी ग़रीबी की शिकायत की तो आप ने फ़रमाया: "जब तुम अपने घर में दाख़िल हुआ करो तो सलाम कर के दाख़िल हुआ करो, चाहे घर में कोई हो या न हो। फिर मुझ पर दरूद भेजो और इस के बाद "कुल् ह-वल्लाहु" पढ़ लिया करो।" उस शख़्स ने इस पर अ़मल करना शुरू किया तो अल्लाह तआ़ला ने उसे इतना मालामाल कर दिया कि उस ने (न केवल अपने बाल्-बच्चों की, बल्कि) अपने पड़ोसियों और संबन्धियों की भी ज़रूरत पूरी की (और दोनों जहान का सवाब हासिल किया)

इसलिये हदीस में घर में आने और जाने के समय सलाम करने की बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। कुरआन पाक का भी यही हुक्म है।

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से घर के अन्दर आने और घर से बाहर जाने की ख़ैर-बर्कत का प्रश्न करता हूँ। हम अल्लाह के नाम के साथ ही घर में आते हैं और अल्लाह के नाम के साथ ही घर से जाते हैं, और अपने रब अल्लाह पर ही हमारा भरोसा है।"

2) हदीस शरीफ़ में आया है कि :

"जब इन्सान घर आता है और घर में दाख़िल होने के समय अल्लाह का ज़िक्र कर लेता है तो शैतान अपने चेले चापड़ों से कहता है : (उस घर में) न तुम्हारे लिये रात का ठिकाना है और न खाना-पीना" (चलो यहाँ से) और जब कोई शख़्स घर में दाख़िल होते समय अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता तो शैतान (अपने चेलों-चपटों से) कहता है (आओ, आओ) रात का ठिकाना भी तुम्हें मिल गया और खाना भी (इसी घर में डेरे डाल दो)

फ़ायदा – बेहतर तो यह है कि यह दुआ पढ़े, वर्ना जो भी उचित दुआ याद हो पढ़ लिया करे।

★★

शाम के समय और रात के आदाब और दुआएं

1) हदीस शरीफ़ में आया है :

"साँझ के समय छोटे बच्चों को घर से बाहर न निकलने दो, इसलिये कि उस समय शैतान निकल पड़ते हैं और फ़ैल जाते हैं। फिर जब कुछ रात बीत जाये तो छोड़ दो (और अन्दर-बाहर

आने जाने दो) और सोते समय बिस्मिल्लाह कह कर दर्वाज़े बन्द करो और बिस्मिल्लाह कह कर चिराग़ बुझाओ और बिस्मिल्लाह कह कर ही मश्क (पानी के बर्तन) का मुँह बाँध दो और बिस्मिल्लाह कह कर ही (खुले) बर्तन ढक दो, और कुछ न हो तो कोई भी चीज़ (जैसे लकड़ी वग़ैरह) बर्तन के ऊपर रख दो (ताकि शैतान के प्रभाव से सब चीज़ें सुरक्षित रहें)

सोने के समय के आदाब और दुआएं

1) हदीस शरीफ़ में आया है कि :

"सोने के समय वुज़ू कर के बिस्तर पर आओ, वुज़ू न हो तो नमाज़ के वुज़ू की तरह पूरा वुज़ू कर लो। फिर तहबन्द के पल्लो से (या किसी भी कपड़े से) तीन मर्तबा बिस्तर को झाड़ो। फिर यह दुआ पढ़ कर बिस्तर पर लेटो :

بِاسْمِكَ رَبِّيْ وَضَعْتُ جَنْبِيْ وَبِكَ اَرْفَعُهٗ اِنْ اَمْسَكْتَ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لَهَا وَ

اِنْ اَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ۔

बिसमि-क रब्बी व-ज़अ्तु जम्बी वबि-क अर्-फ़उहू, इन् अम्-सक्-त नफ़्सी फ़ग़फ़िर लहा वइन् अर्-सल्-तहा फ़ह्-फ़ज़्हा बिमा तह्-फ़ज़ु बिही अ़िबा-द-कस्सालिही-न

तर्जुमा - "तेरे ही नाम के साथ मैं ने (बिछौने पर) अपना पहलू रखा है (और लेटा हूँ) और तेरे ही नाम से उठाऊँगा (यानी जाग कर उठूँगा) अगर तू मेरी जान को ले (और सोते में जान को निकाल ले) तो उस को माफ़ कर और अगर तू उस को छोड़े (और ज़िन्दा बेदार करे) तो उस की ऐसी ही सुरक्षा जैसे तू अपने नेक बन्दों की सुरक्षा करता है।"

2) और दाएं करवट पर लेटे और दाँएं हाथ को तकिया बनाये, यानी अपना दायाँ हाथ गाल के नीचे रखे, इस के बाद यह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ وَضَعْتُ جَنْبِيْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَاخْسَأْ شَيْطَانِيْ وَ فُكَّ رِهَانِيْ وَثَقِّلْ مِيْزَانِيْ وَاجْعَلْنِيْ فِي النَّدِيِّ الْاَعْلٰى

बिस्मिल्लाहि वज़अ़्तु जम्बी, अल्लाहुम्मग़ फ़िर्ली ज़म्बी वख़्सा शैतानी वफ़ुक्क रिहानी व-सक़्क़िल् मीज़ानी वज्-अ़ल्नी फ़िन्नदिय्यिल् आला

तर्जुमा – "अल्लाह के नाम के साथ मैं ने अपना पहलू (बिस्तर पर) रखा है (और लेटा हूँ) ऐ अल्लाह! तू मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे शैतान को (मुझ से) दूर कर दे, और तू मेरी गर्दन को (हर ज़िम्मेदारी से) आज़ाद कर दे, और मेरे आमाल के तराज़ू का पल्ला भारी कर दे, और मुझे ऊँचे दर्जे में दाख़िल कर दे।"

3) इसके बाद तीन मर्तबा यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ قِنِيْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ

अल्लाहुम्म क़िनी अ़ज़ा-ब-क यौ-म तब्-अ़सु अ़िबा-द-क

तर्जुमा –"ऐ अल्लाह! तू मुझे अपने अ़ज़ाब से बचा जिस दिन तू अपने बन्दों को (क़ब्रों से) उठाये।"

4) और यह दुआ पढ़े :

بِاسْمِكَ رَبِّيْ فَاغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ

बिस्मि-क रब्बी फ़ग़फ़िर् ली ज़म्बी

तर्जुमा - "ऐ मेरे रब! तेरे नाम के साथ (मैं लेटा हूँ) पस तू मेरे गुनाह बख़्श दे।"

5) या यह दुआ पढ़े -

بِاسْمِكَ وَضَعْتُ جَنْبِيْ فَاغْفِرْلِيْ

बिस्मि-क वज़अ्तु जम्बी फ़ग़्फ़िर्ली

तर्जुमा - "तेरे ही नाम के साथ मैं लेटा हूँ, पस तू ही मुझे माफ़ कर दे।"

6) फिर यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى

अल्लाहुम्म बिस्मि-क अमूतु व-अह्या

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तेरे नाम पर मरूँगा और (तेरे ही नाम पर) जीता हूँ।"

7) फिर 33 मर्तबा "सुब्हानल्लाह" और 33 मर्तबा "अल्हम्दु लिल्लाह" और 34 मर्तबा "अल्लाहु अक्बर" पढ़े।

फ़ायदा - यह वह सब से बड़ा तोहफा है जो दोनों दुनिया के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी चहेती बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि0 को गुलाम और लौंडी के स्थान पर दिया था और फ़रमाया था कि "यह तुम्हारे लौंडी और गुलाम हैं" - सुब्हानल्लाह!

8) सोते समय दोनों हाथ मिला ले और "कुल हु-वल्लाहु

अ-हद---" और "कुल अऊज़ु बि-रब्बिल् फ़-लक़" और "कुल अऊज़ु बि-रब्बिन्नास" पढ़ कर उन पर दम करे, फिर जहाँ तक हो सके उन को पूरे बदन पर फ़ेरे, सिर-चेहरा और बदन के सामने के हिस्से से शुरू करे। इसी प्रकार तीन मर्तबा अमल करे।

9) सोते समय बिस्तर पर लेट कर आयतुल् कुर्सी पढ़े :

फ़ायदा - जो शख़्स सोते समय बिछौने पर लेट कर आयतुल् कुर्सी पढ़ लेता है, अल्लाह तआला उस की और उस के आस-पास के घरों की सुरक्षा फ़रमाते हैं, और सुबह तक शैतान उस के पास नहीं आता।

10) और यह दुआ पढ़े -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَاٰوَانَا فَكَمْ مِّمَّنْ لَّا كَافِیَ لَهٗ وَلَا مُؤْوِیَ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्-अ-मना व-सक़ाना व-कफ़ाना व-आवाना फ़-कम् मिम्मन् ला काफ़ि-य लहू वला मूवीय

तर्जुमा - "(बहुत-बहुत) शुक्र है उस अल्लाह का जिस ने हमें खिलाया-पिलाया और हमारी ज़रूरतों को पूरा किया और हमें (रात बसर करने का) ठिकाना दिया, इसलिये कि कितने लोग हैं जिन की न कोई ज़रूरतें पूरी करने वाला है और न कोई ठिकाना देने वाला है।"

11) या यह दुआ पढ़े -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَفَانِیْ وَاٰوَانِیْ وَاَطْعَمَنِیْ وَسَقَانِیْ وَالَّذِیْ مَنَّ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَفَانِیْ وَاٰوَانِیْ ... عَلَیَّ وَاَفْضَلَ وَالَّذِیْ اَعْطَانِیْ فَاَجْزَلَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ حَالٍ اَللّٰهُمَّ رَبَّ كُلِّ شَیْءٍ وَّمَلِیْكَهٗ وَاِلٰهَ كُلِّ شَیْءٍ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ

"अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कफ़ानी वआवानी व-अत्-अ-मनी व-सक़ानी वल्लज़ी मन्न अ-लय्य व-अफ़-ज़-ल वल्लज़ी आतानी फ़-अज्-ज़-ल अल्-हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिन्+अल्लाहुम्म रब्ब कुल्लि शैइन् व-मली-कहू वइला-ह कुल्लि शैइन् अऊज़ुबि-क मि-नन्नारि

तर्जुमा - "(लाख-लाख) शुक्र है उस अल्लाह तआ़ला का जिस ने मेरी ज़रूरतों को पूरा किया और मुझे (रात बसर करने का) ठिकाना दिया और मुझे खिलाया-पिलाया, और जिसने मुझ पर एहसान किये और खूब किये, और जिसने मुझे नेमतें दीं और बहुत दीं। हर हाल में अल्लाह पाक का शुक्र है। ऐ अल्लाह! हर वस्तु की पर्वरिश करने वाले और हर चीज़ के मालिक और हर चीज़ के माबूद, मैं तुझ से (दोज़ख़ की) आग से पनाह माँगता हूँ।"

12) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ رَبُّ كُلِّ شَیْءٍ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ یَشْهَدُوْنَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الشَّیْطَانِ وَشِرْكِهٖ وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَقْتَرِفَ عَلٰی نَفْسِیْ سُوْٓءًا اَوْ اَجُرَّهٗ اِلٰی مُسْلِمٍ

अल्लाहुम्म रब्बस्समावाति वल्-अर्ज़ि, आ़लि-मल् ग़ैबि

वश्शहा-दति, अन्-त रब्बु कुल्लि शैइन्, अश-हदु अल्लाइला-ह इल्ला अन्-त वह्-द-क, ला शरी-क ल-क, व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दन् अब्-दु-क व-रसूलु-क वल् मलाइ-कतु यश्-हदू-न, व अऊ़ज़ुबि-क मि-नश्शैतानि व-श-रकिही व-अऊ़ज़ुबि-क अन् अक़्-तरि-फ़ अ़ला नफ़्सी सू-अन् औ अजुर्रहू इला मुस्लिमिन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पर्वरदिगार, पोशीदा और खुले के जानने वाले, तू ही हर चीज़ का रब है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अ़लावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, तू (अपनी ज़ात और सिफ़ात में) यकता और यगाना है, कोई तेरा शरीक नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) तेरे बन्दे और रसूल हैं, और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं। मैं तुझ से शैतान और उस के (धोका के) जाल से पनाह माँगता हूँ। और मैं तेरी पनाह लेता हूँ इस से भी कि मैं अपने नफ़्स पर कोई बुराई करूँ, या किसी मुसलमान पर बुराई का आरोप लगाऊँ (तू मुझे अपनी पनाह में ले ले)

13) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ رَبَّ كُلِّ
شَيْءٍ وَّمَلِيْكَهٗ نَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهٖ

अल्लाहुम्म फ़ाति-रस्समावाति वल्-अर्ज़ि, आ़लि-मल् ग़ैबि वश्शहा-दति रब्ब कुल्लि शैइन् व-मली-कहू, अऊ़ज़ुबि-क मिन् शर्रि नफ़्सी व-शर्रिश्शैतानि व-श-रकिही

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले, हर चीज़ के

पर्वरदिगार और मालिक व मुख़्तार, मैं अपने नफ़्स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उस के (धोखे के) जाल से तेरी पनाह लेता हूँ।" (तू मुझे बचा ले)

14) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَ نَفْسِىْ وَاَنْتَ تَوَفَّاهَا، لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا، اِنْ
اَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا وَاِنْ اَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَهَا، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ الْعَافِيَةَ

अल्लाहुम्म अन्-त ख़-लक़्-त नफ़्सी व-अन्-त त-वफ़्फ़ाहा, ल-क म-मातुहा व-मह्याहा, इन अह्यै-तहा फ़ह्-फ़ज़्हा वइन् अ-मत्तहा फ़ग़फ़िर्-लहा, अल्लाहुम्म अस्-अलु-कल् आफ़ि-य-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तूने ही मेरी जान को पैदा किया है और तू ही उस को मौत देगा, तेरे ही बस में है उसकी मौत और ज़िन्दगी, (पस) अगर तू उसको जीवित रखे तो तू ही उस की सुरक्षा भी कर और अगर तू उस को मौत दे तो उस की मग़्फ़िरत कर दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से (स्वास्थ और) अम्न-चैन का सवाल करता हूँ (तू इन सवालों को पूरा कर दे)

15) और यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِوَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَكَلِمَاتِكَ التَّآمَّةِ مِنْ شَرِّ مَا اَنْتَ
اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ تَكْشِفُ الْمَغْرَمَ وَالْمَاْثَمَ، اَللّٰهُمَّ لَا يُهْزَمُ
جُنْدُكَ وَلَا يُخْلَفُ وَعْدُكَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बि-वज्हि-कल् करीमि, व-कलिमाति-कत्तम्मति, मिन् शर्रि मा अन्-त आख़िज़ुन्

बिनासि-यतिही, अल्लाहुम्म अन्-त तक्शिफुल् मग़-र-म, वल मअ्-समा अल्लाहुम्म ला युह-ज़-मु जुन्दु-क वला युख़-लफ़ु वअ्-दु-क वला यन-फ़उ ज़ल्-जद्दि मिन्-कल् जद्दु सुब्हा-न-क वबि-हम्दि-क

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं हर उस चीज़ की बुराई से जो तेरे क़ब्ज़े में है करम करने वाली ज़ात की और तेरे मुकम्मल कलिमात की पनाह लेता हूँ (तू मुझे उन की बुराई से बचा ले) ऐ अल्लाह! तू ही (बन्दे के) क़र्ज़ और गुनाह को दूर करता (और उस से बचाता) है (तू मुझे भी बचा) तेरा लश्कर कभी नहीं पराजित होता, तेरा वादा कभी ख़िलाफ़ नहीं होता और किसी भी मालदार को उस की मालदारी तेरे ग़ज़ब और गुस्से से नहीं बचा सकती, तू पाक है और तेरी ही हम्द व सना है।"

16) और तीन मर्तबा यह इस्तिग़फ़ार पढे -

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

अस्-तग़फ़िरुल्ला-हल्लज़ी लाइला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल् क़य्यूमु व-अतूबु इलैहि

तर्जुमा -"मैं उस अल्लाह से माफ़ी माँगता हूँ जिस के अलावा और कोई माबूद नहीं, वह (हमेशा-हमेशा) ज़िन्दा रहने वाला और बाक़ी रखने वाला है और मैं उसी की तरफ़ लौटता (और तौबा करता) हूँ।"

17) या यह दुआ पढ़े -

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ

لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू लाशरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि, सुब्हा-नल्लाहि, वल्-हम्दु लिल्लाहि, वला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्-बरू

तर्जुमा -"अल्लाह के अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी का मुल्क है और उसी की सब तारीफ़ है और वही हर वस्तु पर क़ुदरत रखता है। न किसी में ताक़त है न क़ुदरत, मगर अल्लाह की (दी हुई) अल्लाह (हर ऐब और बुराई से) पाक है, और उसी के लिये ही तारीफ़ है, और अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह ही सब से बड़ा है।"

18) और बिस्तर पर लेटे-लेटे यह दुआ़ पढ़े। क़र्ज़ की अदाएगी के लिये यह दुआ़ बहुत लाभदायक है।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ وَرَبَّ الْاَرْضِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰى وَمُنْزِلَ التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْفُرْقَانِ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ اِقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَاَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ۔

अल्लाहुम्म रब्बस्समावाति व-रब्बल् अर्ज़ि व-रब्बल् अ़र्शिल अ़ज़ीमि, रब्बना व रब्बा कुल्लि शैइन फ़ालिक़ल हब्बि वन्नवा व मुनज़िलत्तौराति वल् इन्जीलि वल् फ़ुरक़ानि, अऊज़ुबि-क मिन्

शर्रि कुल्लि शैइन् अन्-त आख़िज़ुन् बिनासि-यतिही+ अल्लाहुम्म अन्-तल् अव्वलु फ़लै-स क़ब्-ल-क शैउन् व-अन्-तल् आख़िरु फ़लै-स बअ्-द-क शैउन्, व-अन्-तज़्ज़ाहिरु फ़लै-स फ़ौ-क़-क शैउन् व-अन्- तल् बातिनु फ़लै-स दू-न-क शैउन् अक़्ज़ि अन्नदै-न वग़्निना मि-नल् फ़क़्रि

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! आसमानों के पर्वरदिगार, ज़मीन के पर्वरदिगार, बड़े अर्श के पर्वरदिगार और हमारे पर्वरदिगार, और हर वस्तु के पर्वरदिगार, (ज़मीन की तह से) दाना और गुठली को फाड़ने (और उगाने) वाले, तौरात इन्जील और क़ुरआन के नाज़िल करने वाले, मैं हर उस चीज़ की बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ जो तेरे क़ब्ज़े में है। ऐ अल्लाह! तू (सब से) पहले है पस तुझ से पहले कुछ नहीं और तू ही सब से आख़िर में है, और तेरे बाद कुछ नहीं, तू ही (सब से) ज़ाहिर और बुलन्द है, पस तेरे ऊपर कुछ नहीं, और तू ही (सब की तह में) छुपा हुआ है, पस तेरे परे कुछ नहीं, तू हमारा क़र्ज़ अदा कर दे और हमें ग़रीबी से मालदारी दे दे।"

19) और यह दुआ पढ़े और इस के बाद बात बिल्कुल न करे (और सो जाये)

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْ اِلَیْكَ وَ وَجَّهْتُ وَجْهِیْ اِلَیْكَ وَ
فَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْكَ وَاَلْجَاْتُ ظَهْرِیْ اِلَیْكَ رَغْبَةً وَّرَهْبَةً
اِلَیْكَ لَا مَلْجَاَ وَلَا مَنْجَاَ مِنْكَ اِلَّا اِلَیْكَ اٰمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِیْ
اَنْزَلْتَ وَنَبِیِّكَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ

बिस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्म अस्-लम्तु नफ़्सी इलै-क, व

वज्जहतु वजूही इलै-क, व-फव्वज़तु अम्री इलै-क, व-अलजअतु ज़हरी इलै-क, रग़्-ब-तन्-व-रह्-बतन् इलै-क, ला मल्-ज-अ वला मन्-ज-अ मिन्-क इल्ला इलै-क, आ-मन्तु बिकिताबि-कल्लज़ी अन्-ज़ल्-त व-नबिय्य-कल्लज़ी अर्-सल्-त

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ (सोता हूँ) ऐ अल्लाह! मैं ने अपनी जान तेरे सपुर्द करदी, और मैंने अपना चेहरा तेरी तरफ़ कर दिया, और अपना मामला तेरे सपुर्द कर दिया, और मैंने तुझे अपना पुश्तपनाह बना लिया तेरी (रहमत की) रग़बत और तेरे (अज़ाब के) डर की वजह से, और (तेरी पकड़ से बचने का) तेरी रहमत के सिवा कोई ठिकाना और पनाह की जगह नहीं है। और जो किताब तू ने उतारी है उस पर मैं ईमान ले आया, और जो नबी तू ने भेजा है उस पर भी मैं ईमान ले आया।"

20) सूरः "कुल् या-अय्यु-हल् काफ़िरून" पढ़ कर सो जाये।

21) सोने से पहले "मु-सब्बहात" पढ़ा करे, यह छः सूरतें हैं-

1. सूरः हदीद 2. सूरः हश्र 3. सूरः सफ़्फ़ 4. सूरः जुमा 5. सूरः तग़ाबुन् 6. सूरः आला।

फ़ायदा - नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह आदत थी कि आप सोने से पहले "मु-सब्बहात" पढ़ा करते थे और फ़रमाते कि - मुसब्बहात में एक आयत ऐसी है जो हज़ार आयतों से बेहतर है।

इन छः सूरतों के शुरू में "सब्ब-ह" या "यु-सब्बिहु"

आया है, इसलिये इन सूरतों को "मु-सब्बहात" फ़रमाया है।

22) सोने से पहले यह चार सूरतें पढ़ा करे -

1. सूरः अलिफ़ लाम मीम सज्दा 2. सूरः मुल्क 3. सूरः बनी इस्राईल और सूरः ज़ु-मर।

फ़ायदा - नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब तक इन सूरतों में से किसी एक सूरत को न पढ़ लेते आराम न फ़रमाते।

23) सूरः ब-क़-रः की अन्तिम तीन आयतें - लिल्लाहि माफ़िस्समावाति वमा फ़िल् अर्ज़ि- से सूरः के अन्त तक जब तक पढ़ न ले उस वक़्त तक न सोए।

फ़ायदा - हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज-हहू फ़रमाते हैं "मैं नहीं समझता कि कोई बुद्धिमान सूरः ब-क़-रः की अन्तिम तीन आयतें पढ़े बग़ैर सो जायेगा।

24) बिस्तर पर लेट कर सूरः फ़ातिहा और क़ुल हु-वल्लाहु अ-हद पढ़े -

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है: "जब तुम ने बिस्तर पर लेट कर सूरः फ़ातिहा और सूरः क़ुल् हु-वल्लाहु अ-हद पढ़ ली तो तुम मौत के अलावा हर चीज़ से सुरक्षित हो गये।"

25) बिस्तर पर लेट कर क़ुरआन मजीद की कोई सी भी सूरत अवश्य पढ़े-

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि- "जो शख़्स बिस्तर पर लेट कर अल्लाह की किताब की कोई भी सूरत पढ़ लेता है अल्लाह तआला उस के पास एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देते हैं

जो उस के जागने तक हर नुक़्सान पहुंचाने वाली वस्तु से उस की सुरक्षा करता रहता है चाहे किसी समय भी जागे।"

26) सोने से पहले अल्लाह का ज़िक्र कर के सोए :

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जब कोई आदमी सोने के लिये बिछौने पर लेटता है तो तुरन्त एक फ़रिश्ता और एक शैतान उस की तरफ़ लपकते हैं। फ़रिश्ता कहता है: "(ऐ आदम की औलाद!) तू ख़ैर पर समापन कर" और शैतान कहता है "तू बुराई पर समापन कर" पस अगर वह अल्लाह का ज़िक्र कर के सो जाता है तो रात भर फ़रिश्ता उस की सुरक्षा करता रहता है (वर्ना शैतान उस पर सवार हो जाता है)

नोट – यह 26 अज़कार और दुआयें सोने के वक़्त के लिये हैं, इन में से कोई भी एक ज़िक्र किये और दुआ माँगे बग़ैर न सोये।

सोते में अच्छा या बुरा सपना देख कर आँख खुल जाने के वक़्त के आदाब और दुआ

1) हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर सोते में कोई अच्छा सपना देखे और आँख खुल जाये तो इस पर "अल्-हम्दु लिल्लाहि" कहे और उस को बयान भी करे, मगर उन्ही लोगों के सामने बयान करे जो उस से मुहब्बत करते हैं।" (ताकि वह अच्छी ताबीर दें)

2) और अगर कोई बुरा सपना देखे तो अपने बाएँ तरफ़ तीन मर्तबा थू-थू कर दे, या थूक दे, या फूँक मार दे, और तीन मर्तबा "अऊज़ुबिल्लाहि मि-नश्शैता निर्रजीमि" पढ़े और किसी से इस का ज़िक्र न करे तो वह सपना कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा और जिस करवट पर सो रहा था उस को बदल दे, या उठ कर (तहज्जुद की) नमाज़ पढ़े।

सोते में डर जाने, या दहशत पैदा हो जाने, या नींद उचट जाने के वक़्त की दुआयें

1) अगर सोते में डर जाये या कोई घबराहट और परेशानी महसूस हो, या नींद उचट जाये तो यह तअव्वुज़ पढ़े-

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّةِ مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَأَنْ يَّحْضُرُوْنِ

अऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन् ग़-ज़बिही वइक़ाबिही व शर्रि अिबादिही वमिन् ह-मज़ातिश्शयातीनि व-अंय्यहज़ुरुनि

तर्जुमा - "मैं अल्लाह के मुकम्मल कलिमात की पनाह लेता हूँ उस के गज़ब और गुस्सा से और उस के अज़ाब से और उस के बन्दों की बुराई से और शैतान के वसवसों से और इस से कि वह (शैतान) मेरे पास भी आयें।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० यह तावीज़ अपने समझदार बच्चों को तो मुकम्मल तौर पर याद कराया करते थे और नासमझ (छोटे) बच्चों के गले में यह तावीज़ डाल दिया करते थे।

2) या यह दुआ पढ़े -

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِيْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَفِتَنِ النَّهَارِ وَمِنْ شَرِّ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَّا رَحْمٰنُ۔

अऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्मातिल्लती ला युजाविज़ुहुन्न बर्रुन् वला फ़ाजिरुन, मिन् शर्रि मा यन्ज़िलु मि-नस्समाइ वमा यअ़रुजु फ़ीहा वमिन् शर्रि मा ज़-र-अ फ़िल् अर्ज़ि वमा यख़्रुजु मिन्हा वमिन् शर्रि फ़ि-तनिल्लैलि वफ़ि- तनिन्नहारि वमिन् शर्रि तवारि क़िल्लैलि वन्नहारि इल्ला तारि-क़न् यतरुक़ु बिख़ैरिन् या

रहमानु

तर्जुमा - "मैं अल्लाह के उन मुकम्मल कलिमों की जिन से न कोई नेक बच सकता है न बुरा, पनाह लेता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो आसमान से उतरती है और जो आसमान पर चढ़ती है, और हर उस चीज़ की बुराई से जो ज़मीन के अन्दर पैदा होती है और जो ज़मीन से (फूट कर) निकलती है, और रात-दिन के फ़ितनों की बुराई से और रात-दिन की (नागहानी) घटनाओं और वाक़िआत की बुराई से, सिवाए उस अच्छी घटना के जो ख़ैर को आये (कि वह तो सरासर रहमत है) ऐ रहमान! (बहुत रहम करने वाले)

3) अगर सोते में नींद उचट जाये तो यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوَاتِ السَّبْعِ وَمَآ اَظَلَّتْ وَرَبَّ الْاَرَضِيْنَ وَمَآ اَقَلَّتْ
وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَآ اَضَلَّتْ كُنْ لِّيْ جَارًا مِّنْ شَرِّ خَلْقِكَ اَجْمَعِيْنَ
اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيَّ اَحَدٌ مِّنْهُمْ وَاَنْ يَّطْغٰى عَزَّ جَارُكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ .

अल्लाहुम्म रब्बस्समावाति+स्सब्-इ़ वमा अ-ज़ल्लत्, व-रब्बल् अरज़ी-न वमा अ-क़ल्लत्, व-रब्बश्शयातीनि वमा अ-ज़ल्लत्, कुन् ली जा-रन् मिन् शर्रि ख़ल्क़ि-क अज-मई़-न अय्यफ़्रु-त अ-लय्य अ-हदुम्मिन्हुम् व-अय्यत्ग़ा अ़ज़्ज़ जारु-क व-तबा-र-क स्मु-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! सातों आसमानों और हर उस मख़्लूक़ के पर्वरदिगार, जिस पर वह सात आसमान साया किये हुये हैं और (सातों) ज़मीनों और हर उस मख़्लूक़ के पर्वरदिगार, जिस पर वह ज़मीनें उठाये हुये हैं, और तमाम शैतानों और लोगों के पर्वरदिगार, जिन को उन शयातीन ने गुमराह किया है, तू

अपनी तमाम मख़्लूक़ की बुराइयों से मेरी सुरक्षा करने वाला और पनाह देने वाला बन जा, कि (ऐसा न हो कि) उन में से कोई मख़्लूक़ मुझ पर अत्याचार करे या ज़ुल्म और ज़्यादती करे। तेरा पनाह दिया हुआ (शख़्स) ही ग़ालिब और सुरक्षित रहता है, और तेरा नाम ही बर्कत (और बड़ाई) वाला है।"

4) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُوْمُ وَهَدَأَتِ الْعُيُوْنُ وَاَنْتَ حَيٌّ قَيُّوْمٌ لَا تَاْخُذُكَ

سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ اَهْدِئْ لَيْلِيْ وَاَنِمْ عَيْنِيْ۔

अल्लाहुम्म ग़ा-रतिन्नुजूमु व-ह-द-अतिल् ओयूनु व-अन्-त हय्युन् क़य्यूमुन् ला ताख़ुज़ु-क सि-नतुव्वंला नौमुन् या हय्यु या क़य्यूमु अहदिउ लैली व-अनिम् औनी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! (आकाश पर) नक्षत्र भी छुप गये और (ज़मीन पर) आँखें भी (नींद में) डूब गयीं, और तू ही (हमेशा) ज़िन्दा रहने वाला और (सब को) क़ायम रखने वाला निगहबान है। तुझे न ऊँघ आता है और न नींद। ऐ हय्य और क़य्यूम! (पर्वरदिगार) तू मेरी रात को भी शान्ति वाली बना दे और मेरी आँखों को भी नींद दे दे।"

सोकर उठने के वक़्त के आदाब और दुआएं

1) जब सो कर उठे तो यह दुआ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ رَدَّ اِلَيَّ نَفْسِيْ وَلَمْ يُمِتْهَا فِيْ مَنَامِهَا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

الَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ، وَلَئِنْ زَالَتَآ
اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ، اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
الَّذِىْ يُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ، اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी रद्द इ-लय्य नफ़्सी व-लम् युमित्हा फ़ी मनामिहा, अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी युम्सिकुस्समावाति वल्-अर्-ज अन् तज़ूला, व-लइन् ज़ा-लता इन् अम्-स-कहुमा मिन् अ-हदिन् मिम् बअ्दिही, इन्नहू का-न हली-मन् ग़फ़ूरा, अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ अ-लल् अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निही, इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफुर्रहीमुन्

तर्जुमा - "उस अल्लाह तआ़ला का (बहुत-बहुत) शुक्र है जिस ने मेरी जान मुझ को वापस लौटा दी और उसको सोने में न मारा, उस अल्लाह पाक का (लाख-लाख) एहसान है जिसने आसमानों और ज़मीन को अपने-अपने स्थान से हटने से रोक रखा है, और अल्लाह की क़सम! वह (अल्लाह के हुक्म से) हट जायें तो उस के (हुक्म) के बाद उन को हटने से कोई नहीं रोक सकता, बेशक अल्लाह तआ़ला बहुत ही नर्म और माफ़ करने वाला है। और (बहुत-बहुत) शुक्र है उस अल्लाह तआ़ला का जिसने आकाश को अपनी अनुमति के बिना ज़मीन पर गिरने से रोक रखा है, बेशक वह अल्लाह तआ़ला बड़ा ही मेहरबान और रहम करने वाला है।"

2) और यह दुआ़ करे -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یُحْیِ الْمَوْتٰی وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۔

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी युहयिल् मौता वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर

तर्जुमा - "उस अल्लाह पाक का (बहुत-बहुत) शुक्र है जो ज़िन्दों को मुर्दा करेगा और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।"

3) या यह दुआ पढ़े -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अह्याना बअ़्-द मा अमा-तना वइलैहिन्नुशूर

तर्जुमा - "उस अल्लाह तआ़ला का (बहुत-बहुत) शुक्र है जिसने हमें मारने के बाद जीवित कर दिया और उस की ओर मर कर जाना है।"

4) या यह दुआ पढ़े -

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ لَا شَرِیْكَ لَكَ سُبْحَانَكَ اللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْتَغْفِرُكَ لِذَنْبِیْ وَاَسْأَلُكَ رَحْمَتَكَ اللّٰھُمَّ زِدْنِیْ عِلْمًا وَّلَا تُزِغْ قَلْبِیْ بَعْدَ اِذْ ھَدَیْتَنِیْ وَھَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَھَّابُ ۔

लाइला-ह इल्ला अन्-त ला शरी-क ल-क सुब्हा-न-क, अल्लाहुम्म इन्नी अस्-तग़फ़िरु-क लि-ज़म्बी व-अस्-अलु-क रह्-म-त-क, अल्लाहुम्म ज़िद्नी इ़ल् मव्वला तुज़िग़ क़ल्बी बअ़्-द इज़ हदै-तनी व-हब् ली मिल्लदुन्-क रह्-म-तन् इन्न-क अन्-तल् वह्हाबु

तर्जुमा – "तेरे अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, न तेरा कोई शरीक है, तू (हर बुराई से) पाक है। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने गुनाह की माफ़ी माँगता हूँ और मैं तेरी रहमत का चाहने वाला हूँ। ऐ अल्लाह! तू मेरे इल्म में ज़्यादती अता फ़रमा, और तू मुझे हिदायत दे देने के बाद मेरे दिल को गुमराह मत कर, और मुझे अपनी तरफ़ से (ख़ास) रहमत अता फ़रमा, बेशक तू बहुत बड़ा अता फ़रमाने वाला है।"

5. यह दुआ पढ़े –

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ

लाइला–ह इल्लल्लाहुल् वाहिदुल् क़ह्हार, रब्बुस्समावाति वल् अर्ज़ि वमा बै–नहुमल् अज़ीज़ुल् गफ़्फ़ार

तर्जुमा – "एक अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं जो (सब से) ज़बर्दस्त है, आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ आसमान और ज़मीन के दर्मियान है (सब) का पर्वरदिगार है वह (सब पर) ग़ालिब है, बहुत बख़्शने वाला है।"

6) बेदार होते ही यह दुआ पढ़े –

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ وَلَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ.

लाइला–ह इल्लल्लाहु, वह्–दहू ला शरी–क लहू, लहुल् मुल्कु व–लहुल् हम्दु, वहु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर + अल–हम्दु लिल्लाहि वसुब्हा–नल्लाहि वला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्–बर, वला हौ–ल वला क़ुव्व–त इल्ला बिल्लाहि

तर्जुमा – "अल्लाह के अलावा और कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, कोई उस का शरीक नहीं, उसी का मुल्क है और उसी के लिये (सब) तारीफ़ है, वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है और अल्लाह (हर बुराई से) पाक है और अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह ही सब से बड़ा है और हर ताक़त और कुव्वत केवल अल्लाह की तरफ़ से है।"

इसके बाद मग़्फ़िरत की दुआ करे और कहे : "अल्लाहुम्मग़ फ़िर ली", या कोई और दुआ माँगे, अल्लाह तआला क़बूल फ़रमायेंगे। इस के बाद वुज़ू कर के दो रकअत नमाज़ पढ़े :

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि–

"जो शख़्स रात को जागते ही ऊपर की दुआयें पढ़ कर मग़्फ़िरत की दुआ करेगा, या और कोई दुआ माँगेगा, उस की दुआ क़बूल होगी। और वुज़ू कर के दो रकअत (तहिय्यतुल वुज़ू) पढ़ेगा तो उस की नमाज़ क़बूल होगी।"

रात को कर्वट लेने या बिस्तर से उठ कर दोबारा बिस्तर पर लेटने के वक़्त की दुआएं और आदाब

1) रात में कर्वट बदलते समय –

"दस मर्तबा "बिस्मिल्लाह" (अल्लाह के नाम के साथ) और दस मर्तबा "सुब्हा-नल्लाह" (अल्लाह पाक है) और दस मर्तबा "आ-मन्तु बिल्लाहि व-क-फ़रतु बित्तागूति" (मैं अल्लाह

पर ईमान लाया और मैंने बातिल खुदाओं का इन्कार कर दिया) पढ़े।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि- जिस शख़्स ने रात में सोते हुये करवट बदलते समय ऊपर की दुआओं को पढ़ लिया वह हर उस वस्तु से सुरक्षित रहेगा जिस से वह डरता है, और कोई गुनाह न करेगा इसी जैसे कलिमात (पढ़ते रहने) तक।

2) रात को (किसी ज़रूरत से) बिस्तर से उठ कर दोबारा जब बिस्तर पर लेटे तो अपने तहबन्द के कनारे (या किसी और कपड़े) से बिस्तर को तीन मर्तबा झाड़ ले और यह दुआ पढ़ कर लेटे -

بِاسْمِكَ اللّٰهُمَّ وَضَعْتُ جَنْبِيْ وَبِكَ أَرْفَعُهُ إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِيْ
فَارْحَمْهَا وَإِنْ رَدَدْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ أَحَدًا مِّنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ

बिस्मि-क अल्लाहुम्म व-ज़अ्तु जम्बी वबि-क अर्-फ़उहू, इन् अम्-सक्-त नफ़्सी फ़र-हम्हा वइन् र-दत्तहा फ़ह्-फ़ज़्हा बिमा तह्-फ़ज़ु बिही अ-ह-दन् मिन् अिबादि-कस्सालिही-न

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तेरा ही नाम लेकर मैं (बिस्तर पर) लेटा था और तेरा ही नाम लेकर मैं (बिस्तर से) उठा हूँ (और अब फिर लेटा हूँ) अगर तू मेरी जान रोक ले (यानी जान निकाल ले) तो उस पर रहम फ़रमाइयो, और अगर तू उसको लौटाए तो उसकी ऐसी ही सुरक्षा कीजियो जैसे तू अपने नेक बन्दों में से किसी की सुरक्षा करता है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स रात को सोते-सोते (किसी ज़रूरत से) बिस्तर से उठ कर दोबारा लेटे तो ऊपर बताये गये तरीके की तरह बिस्तर को झाड़ ले, ताकि कहीं ऐसा न हो

कि इस के पीछे बिस्तर पर कोई नुक़्सान पहुँने वाली चीज़ आ गयी हो। और ऊपर बताये गये तरीके के अनुसार दुआ पढ़े-

तहज्जुद के समय उठने और पाख़ाने (शौचालय) में जाने और आने के समय की दुआएं और आदाब

1) जब रात के अन्तिम पहर में तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के लिये उठे तो अगर शौचालय में जाये तो "बिस्मिल्लाह" पढ़े और इस के बाद यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् ख़ुबुसि वल् ख़बाइसि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ तक्लीफ पहुँचाने वाले नर और मादा शैतानों (और जिन्नों) से।"

2) और जब फ़ारिग़ हो कर निकले तो यह दुआ पढ़े -

ग़ुफ़रा-न-क غُفْرَانَكَ

(ऐ अल्लाह!) मैं तुझ से मग़्फ़िरत चाहता हूँ।"

3) इस के बाद यह दुआ पढ़े -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्-ह-ब अ़न्निल् अज़ा वआ़फ़ानी

तर्जुमा - "उस अल्लाह का (लाख-लाख) शुक्र है जिसने मेरी तक्लीफ़ दूर की और मुझे आफ़ियत बख़्शी।"

★

वुज़ू करने और वुज़ू से फ़ारिग़ होने के समय की दुआ़

1) जब वुज़ू करने बैठे तो प्रथम "बिस्मिल्लाह" कहे, इस के बाद यह दुआ़ माँगे –

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ وَوَسِّعْ لِيْ فِيْ دَارِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ رِزْقِيْ

अल्लाहुम्मग़फ़िर्ली ज़म्बी व–वस्सिअ़ ली फ़ी दारी वबारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे घर (बार) में कुशादगी दे और मेरी रोज़ी में बर्कत अ़ता फ़रमा।"

2) और वुज़ू से फ़ारिग़ हो कर आसमान की तरफ़ नज़र उठा कर तीन मर्तबा यह दुआ़ पढ़े–

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्–हदु अन् लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू ला शरी–क लहू व–अश्–हदु अन्न मु–हम्म–दन् अ़ब्दुहू व–र–सूलुहू

तर्जुमा – "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है कोई उस का शरीक नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उस के बन्दे और उस के रसूल हैं।"

3) इसके बाद यह दुआ़ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

अल्लाहुम्मज्-अ़ल्नी मि-नत्तव्वाबी-न वज्-अ़ल्नी मि-नल् मु-त-तह्हिरी-न

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुझे अधिक तौबा करने वालों में शामिल कर ले और मुझे ख़ूब पाक-साफ़ रहने वालों में दाख़िल फ़रमा दे।"

4) या यह दुआ़ पढ़े -

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ

اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्म वबि-हम्दि-क अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्ला अन्-त अस्-तग़फ़िरु-क व-अतूबु इलै-क

तर्जुमा - "पाक है तू ऐ अल्लाह! और तेरी ही प्रशंसा है, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तुझ से माफ़ी माँगता हूँ और (अपने पापों से) तौबा करता हूँ।"

5) या यह दुआ़ पढ़े -

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्म वबि-हम्दि-क अस्-तग़फ़िरु-क व-अतूबु इलै-क

तर्जुमा - "पाक है तू ऐ अल्लाह! और तेरे ही लिये हम्द व सना है। मैं तुझ से माफ़ी तलब करता हूँ।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स वुज़ू करते समय ऊपर की दुआ़एँ पढ़ता है उस के लिये (माफ़ी का) एक पर्चा लिख कर और फिर उस पर मुहर लगा कर रख दिया

जाता है, कयामत के दिन तक उस की मुहर न तोड़ी जायगी (और वह हुक्म बाकी रहेगा)

तहज्जुद की नमाज़ के लिये उठने और उसे पढ़ने के समय की दुआएं और आदाब

1) जब रात के अन्तिम पहर में तहज्जुद की नमाज़ के लिये उठे तो यह दुआ पढ़े -

(۱) اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ
وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ
اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ
وَوَعْدُكَ الْحَقُّ وَلِقَاءُكَ حَقٌّ وَّقَوْلُكَ حَقٌّ وَّالْجَنَّةُ حَقٌّ وَّالنَّارُ
حَقٌّ وَّالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ وَّمُحَمَّدٌ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ
وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْكَ اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَاِلَيْكَ حَاكَمْتُ
(۲) اَنْتَ رَبُّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ فَاغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا
اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ (۳) وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ
الْمُؤَخِّرُ (۴) اَنْتَ اِلٰهِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ (۵) لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۔

1) अल्लाहुम्म ल-कल्-हम्दु, अन्-त कय्यिमुस्समावाति वल्-अर्ज़ि व-मन् फ़ीहिन्न, व-ल-कल् हम्दु, अन्-त मलिकुस्समावाति वल्-अर्ज़ि व-मन् फ़ीहिन्न, व-ल-कल् हम्दु, अन्-त नूरुस्समावाति वल्-अर्ज़ि व-मन् फ़ीहिन्न, व-ल-कल

हम्दु, अन-तल् हक्कु, व-वअ्-दु कल् हक्कु, वालिकाउ-क हक्कुन् वकौलु-क हक्कुन्, वल्-जन्नतु हक्कुन् वन्नारु हक्कुन् वन्नबिय्यू-न हक्कुन् वमु-हम्मदुन् हक्कुन् वस्सा-अतु हक्कुन+अल्लाहुम्म ल-क अस्-लम्तु वबि-क आ-मन्तु व-अलै-क त-वक्कल्लतु व इलै-क अ-नब्तु वबि-क खा-समतु वइलै-क हा-कम्तु।

2) अन्-त रब्बुना वइलै-कल मसीरु फग़्फिर् ली मा कद्दम्तु वमा अख़्ख़र्तु वमा अस्-रर्तु वमा अअ्-लन्तु+

3) वमा अन्-त अअ्-लमु बिही मिन्नी, अन्-तल् मु-कद्दिमु व-अन्-तल् मु-अख़्ख़िरु+

4) अन्-त इलाही, लाइला-ह इल्ला अन्-त+

5) ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि

तर्जुमा - 1. "ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये (सब) तारीफ़ है (इसलिये कि) तू ही आसमानों को और उन की तमाम मख़्लूक़ को क़ायम रखने (और संभालने) वाला है, और तेरे ही लिये हम्द व सना है (इसलिये कि) तू ही आसमानों का और ज़मीन का और उन की तमाम मख़्लूक़ का बादशाह है और तेरे ही लिये (सब) तारीफ़ है (इसलिये कि) तू ही आसमानों का, ज़मीन का और उन की तमाम मख़्लूक़ का नूर है, और तेरे ही लिये (सब) तारीफ़ है (इसलिये) तू ही सच्चा है और तेरा बन्दा भी सच्चा है और (क़यामत के दिन) तुझ से मिलना भी सच है, और जन्नत भी सच है और जहन्नम भी सच है और तमाम रसूल भी सच्चे हैं और मुहम्मद भी सच्चे हैं, क़यामत भी सच है। ऐ अल्लाह! तेरे ही सामने मैंने सर झुकाया है और तुझ पर ही ईमान लाया हूँ और

तेरे ही तरफ़ मैंने रुजू किया है, और तेरी मदद से मैंने (इन्कारियों से) झगड़ा किया है और तेरे ही दरबार में शिकायत लाया हूँ।

2. तू ही हमारा रब है और (मरने के बाद) तेरे ही पास हमें लौट कर आना है। पस तू बख़्श दे जो कुछ (गुनाह) मैं ने (अब से) पहले किये और जो इस के बाद करूँ और जो (गुनाह) मैं ने छुप कर किये और जो खुल्लम-खुल्ला किये।

3. और वह गुनाह जिन को तू मुझ से अधिक जानता है, तू ही आगे करने वाला है।

4. तू ही मेरा माबूद है, तेरे अ़लावा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं।

5. और न कोई ताक़त है न कुव्वत, मगर अल्लाह ही (की तरफ़) से।

2) और यह दुआ पढ़े. -

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

समि-अ़ल्लाहु लिमन् हमि-दहू, अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न

तर्जुमा - "अल्लाह तआ़ला ने उस शख़्स की (हम्द व सना) क़बूल फ़रमायी जिसने उसकी तारीफ़ फ़रमायी। (हर प्रकार

नोट - यह एक ही दुआ़ के पाँच हिस्से हदीस की अलग-अलग किताबों में आये हैं, हम ने उन को और उन के तर्जुमे को इकट्ठा कर दिया है, पढ़ने वाला अगर पूरी दुआ़ पढ़े तो बहुत ही अच्छा है, लेकिन अगर ज़्यादा समय न हो तो केवल पहले हिस्से को पढ़े या और जितना हिस्सा हो सके मिला ले, मगर तरतीब यही रखे। (इदरीस)

की) तारीफ़ अल्लाह ही के लिये है जो तमाम जहानों का पर्वरदिगार है।"

3) या यह दुआ पढ़े -

سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हा-नल्लाहि रब्बिल् आ-लमी-न, सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही

तर्जुमा - "पाक है अल्लाह (हर ऐब और बुराई से) तमाम जहानों का पर्वरदिगार। अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ और उस की प्रशंसा करता हूँ।"

4) रात के अन्तिम हिस्से में उठ कर बैठे तो सूरः आले अिम्रान की यह दस अन्तिम आयतें अवश्य पढ़े -

इन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्-अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि लआयाति लिऊलिल अलबाबि [1] ---अन्तिम सूरः तक

तर्जुमा - "बेशक आसमानों और ज़मीन को पैदा करने में, रात-दिन के यके बाद दीगरे आने-जाने में, बुद्धिमानों के लिये (अल्लाह की बड़ाई और क़ुदरत की अन्गिनत) निशानियाँ हैं

----

1. इस हदीस के बाज़ तरीक़ों (रिवायतों) में केवल "लिउलिल् अल्बाब" तक ही पढ़ने का ज़िक्र आया है और बाज़ रिवायतों में पूरी दस आयतों का ज़िक्र है। पढ़ने वाले को अगर पूरी दस आयतें याद न हों, या समय न हो तो केवल "उलिल् अल्बाब" तक अवश्य पढ़ ले। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह मुस्तक़िल तौर पर मामूल था। (इदरीस)

---- ----अन्तिम सूरः तक

नोट - सूरः आले इम्रान की यह दस आयतें और इन का तर्जुमा, तर्जुमा वाले कुरआन मजीद से याद कर लेना चाहिये।

तहज्जुद की नमाज़ का समय, आदाब और रक्अ़तों की संख्या और तरीक़ा

फ़ायदा -हदीस शरीफ़ में आया है -

1) फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सब से अफ़्ज़ल नमाज़ अन्तिम रात में तहज्जुद की नमाज़ है।

2) फ़र्ज़ नमाज़ के अ़लावा बाक़ी नमाज़ों को अपने घर में पढ़ना अफ़्ज़ल है (इसलिये तहज्जुद की नमाज़ घर ही में पढ़नी अफ़्ज़ल है)

3) रात की नमाज़ दो-दो रक्अ़तें हैं (इसलिये तहज्जुद की भी दो-दो रक्अ़तें पढ़नी चाहिये) बाज़ रिवायतों में दिन का भी ज़िक्र है (मगर सहीह यही है कि यह रात की नफ़्लों से मुतअ़ल्लिक़ है)

4) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब रात को तहज्जुद के लिये उठते तो ऊपर की दुआओं में से न0 1 और न0 2 और न0 3 दुआयें पढ़ा करते थे, और जब उठ कर बैठते तो न0 4 यानी सूरः आले इम्रान की एक आयत या पूरी अन्तिम दस आयतें पढ़ते थे।

5) फिर खड़े हो कर वुज़ू फ़रमाते, मिस्वाक करते और इस के बाद ग्यारह रक्अतें पढ़ते। फिर जब बिलाल रज़ि0 फ़ज्र की

अज़ान दे देते तो दो रकअतें फ़ज्र की सुन्नत की पढ़ते, इसके बाद घर से निकलते और मस्जिद में जाकर सुबह की नमाज़ पढ़ते (यह तो आम मामूल था)

6) और रात में 13 रक्अतें भी (कभी) पढ़ते, उन में से (8 रक्अतें तो दो-दो हमेशा की तरह पढ़ते और) पाँच रक्अतें वित्र पढ़ते (इन में दो नफ्ल होतीं और तीन वित्र, और सलाम फेरने के लिए) केवल अन्तिम रकअत में बैठते)

7) (कभी) रात में 11 रक्अतें (इस प्रकार) पढ़ते कि (अन्तिम दो रक्अतों के साथ) एक रक्अत (मिला कर) वित्र बना देते [1]।

तहज्जुद की नमाज़ शुरू करने के वक़्त की दुआएं

1)जब तहज्जुद की नमाज के लिए खड़े हो तो -

दस मर्तबा "अल्लाहु अक्बर", दस मर्तबा "अल्हम्दु लिल्लाह", दस मर्तबा "सुब्हानल्लाह" और दस मर्तबा "अस्तग़्फ़िरुल्लाह" कहे।

---

1. यह सभी मुख्तलिफ़ हदीसें हैं। हम ने इन सबको "फ़ायदा" की सुची में इकट्ठा कर दिया है ताकि पूरा बयान पढ़ने वाले के सामने आ जाये। और न0 शुमार से उन के अलग-अलग होने को ज़ाहिर कर दिया है। यह अवश्य ही याद रखना चाहिये कि हदीस शरीफ़ में पूरी तहज्जुद की नमाज़ को भी "वित्र" कहा गया है और अन्तिम तीन रक्अतों को भी वित्र कहा गया है, जैसा कि हदीसों के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करने से स्पष्ट है। यही अर्थ अन्तिम दो रक्अतों के साथ एक रकअत मिला कर वित्र बना देने का है।(इदरीस)

2) और दस मर्तबा यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ وَعَافِنِیْ

अल्लाहुम्मग़फ़िर ली वह्दिनी वर्ज़ुक़नी वआफ़िनी

तर्जुमा - ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ कर दे, तू मुझे हिदायत दे दे, तू मुझे रोज़ी दे दे और तू मुझे अम्न और चैन दे दे।"

3) और दस मर्तबा यह तअव्वुज़ पढ़े -

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ ضِيْقِ الْمَقَامِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिन् ज़ीक़िल् मुक़ामि यौ-मल् क़िया-मति

तर्जुमा - "अल्लाह की पनाह माँगता हूँ क़यामत के दिन की सख़्ती से" -

4) और जब रात की नमाज़ (यानी तहज्जुद) शुरू करने लगे तो यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ

عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ

يَخْتَلِفُوْنَ اِهْدِنِیْ لِمَا اخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِكَ اِنَّكَ تَهْدِیْ

مَنْ تَشَاءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

अल्लाहुम्म रब्बाजिब्राईला वमीकाई-ल वइस्राफ़ी-ल फ़ातिर-रस्समावाति वल् अर्ज़ि आलि-मल् ग़ैबि वश्शहा-दति, अन्-त तह्कुमु बै-न अिबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्-तलिफू-न + इह्दिनी लिमख़्तुलि-फ़ फ़ीहि मि-नल् हक़्क़ि बिइज़्नि-क इन्न-क तह्दी मन् तशाउ इला सिरातिम्मुस्-तक़ीम।

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! ऐ जिब्रील, मीकाईल और इस्राईल के पर्वरदिगार, आसमानों और ज़मीन को ईजाद करने वाले, छुपे और खुले का ज्ञान रखने वाले, जिन बातों में यह (तेरे बन्दे) इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं तू ही उन का फ़ैसला करेगा और हक़ के बारे में जो इख़्तिलाफ़ (दुनिया में) हो रहा है उस में अपने फ़ज़्ल से मेरी रहनुमाई फ़रमा। बेशक तू ही जिस को चाहता है सीधे रास्ते पर चलाता है।"

वित्र की नमाज़ का बयान

जब (तहज्जुद के बाद) वित्र का तीन रक्अ़तें पढ़े तो

1) पहली रक्अ़त में सूरः "सब्बिहिस्-म रब्बि-कल्आला" पढ़े।

दूसरी रक्अ़त में सूरः "कुल या अय्यु-हल् काफ़िरू-न" पढ़े।

तीसरी रक्अ़त में सूरः "कुल् हु-वल्लाहु अ-हद" पढ़े। और (अगर समय हो तो) सूरः "फ़-ल-क़" और सूरः नास" भी पढ़े।

तहज्जुद और वित्र की रक्अ़तों की संख्या का बयान

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि-

1) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वित्र की तीन रक्अ़तों में ऊपर की तीन सूरतें पढ़ा करते थे।

2) आप नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (तहज्जुद की अन्तिम) दो रक्अतों और वित्र के दर्मियान (इतनी बुलन्द आवाज़ से) "अस्सलामु अलैकुम् व-र-ह-मतुल्लाह" के ज़रीआ फ़स्ल (जुदा) फ़रमाया करते थे जो सुनी जाये।

3) या (बुलन्द आवाज़ से) "सलाम" केवल अन्तिम रक्अत में किया करते थे

4) (कभी तहज्जुद की दो रक्अतों को) एक रक्अत से ही वित्र बना देते थे (जिस में आठ रक्अत तहज्जुद की और तीन वित्र होते थे)

5) (कभी तहज्जुद की छः रक्अत को) पाँच रक्अतों से मिला कर वित्र बना देते थे (जिन में दो रक्अत तहज्जुद की और तीन वित्र की होती थीं)

6) या (तहज्जुद की चार रक्अतों को) सात रक्अतों से मिला कर वित्र बना देते थे (जिन में चार रक्अतें तहज्जुद की और तीन वित्र की होती थीं)

7) या नौ रक्अत से मिला कर वित्र बनाते (जिन में छः तहज्जुद और तीन वित्र होतीं)

8) या 11 रक्अत से.(जिन में 10 तहज्जुद की और एक वित्र की)

9) या इस से ज़्यादा से (मतलब यह है कि आम हालात में आठ रक्अत तहज्जुद और तीन वित्र, यानी कुल 11 रक्अतें पढ़ते। और कभी-कभी दस रक्अत तहज्जुद और तीन तीन वित्र,

यानी कुल 13 रक्अतें पढ़ते थे) [1]

वित्र की दुआएं

1) वित्रों की अन्तिम रक्अत में यह दुआ पढ़े :

---

1. यह भी वित्र और तहज्जुद से सम्बन्धित अक्सर रिवायतें हैं जैसा कि न0 शुमार से स्पष्ट है। इन में भी वित्र बना देने का वही अर्थ है जो ऊपर बयान हुआ। पढ़ने वालों को चाहिये कि कम से कम चार रक्अ़तें (दो-दो करे) तहज्जुद की पढ़े और इस के बाद तीन रक्अत वित्र पढ़े और अधिक से अधिक 12 रक्अ़त तहज्जुद और 3 रक्अ़त वित्र पढ़े, उस से कम साबित नहीं और इस से अधिक भी साबित नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आम तौर पर 8 रक्अ़त तहज्जुद और 3 रक्अत वित्र यानी कुल 11 रक्अतें पढ़ा करते थे। वित्र की तीन रक्अतों में मामूली सा इख़्तिलाफ़ है। इमाम शाफ़ई रह0 के निकट यह तीन रक्अ़तें दो सलाम के साथ पढ़नी अफ़ज़ल हैं। यानी दो रक्अत पर भी सलाम फ़ेरें और तीसरी पर भी। अबू हनीफ़ा रह0 के नज़दीक यह तीन रक्अ़तें एक सलाम से पढ़े, यानी दो रक्अत पढ़ कर उठ जाये और तीसरी रक्अ़त पढ़ कर सलाम फेरे। इन हदीसों में हदीस न0 2 इमाम शाफ़ऊ़ी रह0 की हदीस है और हदीस न0 3 इमाम अबू हनीफ़ा रह0 की। बहरहाल वित्र सब के नज़दीक तीन हैं, चाहे दो सलाम के साथ, चाहे एक सलाम के साथ। दोनों सूरते जाइज़ हैं, इख़्तिलाफ़ केवल बेहतर में है।

बेहतर तो यह है कि तहज्जुद पढ़ने वाला वित्र को तहज्जुद के बाद पढ़े, लेकिन अगर रात के अन्तिम पहर में जागने का भरोसा न हो तो वित्र रात के पहले पहर में इशा की सुन्नतों के बाद पढ़ ले ताकि वित्र के क़ज़ा होने का डर न रहे। (इदरीस)

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ فِیْمَنْ هَدَیْتَ وَعَافِنِیْ فِیْمَنْ عَافَیْتَ وَتَوَلَّنِیْ فِیْمَنْ
تَوَلَّیْتَ وَبَارِكْ لِیْ فِیْمَآ اَعْطَیْتَ وَقِنِیْ شَرَّ مَا قَضَیْتَ اِنَّكَ تَقْضِیْ
وَلَا یُقْضٰی عَلَیْكَ وَاِنَّهٗ لَا یَذِلُّ مَنْ وَّالَیْتَ وَلَا یَعِزُّ مَنْ عَادَیْتَ تَبَارَكْتَ
رَبَّنَا وَتَعَالَیْتَ نَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَیْكَ وَصَلَّی اللّٰهُ عَلَی النَّبِیِّ

अल्लाहुम्मह् दिनी फ़ी मन् हदे-त, वआफ़िनी फ़ी-मन् आफ़े-त, व-त-वल्लनी फ़ी-मन् त-वल्ले-त, वबारिक् ली फ़ीमा अअ़तेत, वक़िनी शर्र मा क़ज़े-त, इन्न-क तक़्ज़ी वला युक़्ज़ा अ़ले-क, वइन्नाहू ला यज़िल्लु मव्वाले-त, वला यअ़िज़्ज़ु मन आदे-त, तबा-रक्-त रब्बना व-तआ़ले-त, नस्-तग़फ़िरू-क व-नतूबु इले-क, व-सल्लल्लाहु अ़-लन्नबिय्यि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जिन लोगों को तूने हिदायत दी है उन (की सफ़) में तू मुझे भी हिदायत दे, और मुझे भी उन लोगों (की सफ़) में (दुनिया और आख़िरत की) अम्न-चैन दे जिन को तू ने आफ़ियत दी है, और जिन लोगों का तू वली बना है उन (की सफ़) में तू मेरा भी वली बन जा, और जो कुछ तू ने मुझे दिया है उस में बर्कत दे, और जो तू ने मेरे भाग्य में लिख दिया है उस की बुराई से बचा, इसलिए बेशक तेरा हुक्म (सब पर) चलता है और तेरे ऊपर किसी का हुक्म नहीं चलता, जिस का तू वली (सहायक) बन गया वह कभी ज़लील नही होता और जिस को तू ने अपना दुश्मन क़रार दे दिया वह कभी इज़्ज़त नहीं पाता, तू ही बर्कत वाला है ऐ हमारे पर्वरदिगार! और तू ही (सब से) बुलन्द और ऊँचा है, हम तुझ से (अपने पापों की) माफ़ी माँगते हैं और तेरे सामने तौबा करते हैं, और अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमाये (हमारे) सन्देष्टा पर।"

2) या यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

وَاَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِهِمْ وَانْصُرْهُمْ عَلٰى عَدُوِّكَ

وَعَدُوِّهِمْ اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ وَيُكَذِّبُوْنَ

رُسُلَكَ وَيُقَاتِلُوْنَ اَوْلِيَاءَكَ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ

وَاَنْزِلْ بِهِمْ بَاْسَكَ الَّذِيْ لَا تَرُدُّهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ۔

अल्लाहुम्मग् फ़िर् लना वलिल् मोमिनी-न वल्मोमिनाति वल् मुस्लिमी-न वल्मुस्लिमाति, व-अल्लिफ़ बै-न क़ुलूबिहिम्, व-अस्लिह ज़ा-त बैनिहिम्, वन्सुर्हुम् अ़ला अ़दुव्वि-क व-अ़दुव्विहिम्, अल्लाहुम्मल्-अ़निल् क-फ़-र-तल्लज़ी-न यसुद्दू-न अ़न् सबीलि-क वयु-कज़्ज़िबू-न रुसु-ल-क वयुक़ातिलू-न औलिया-अ-क+अल्लाहुम्म ख़ालिफ़ बै-न कलि-मतिहिम् व-ज़ल्ज़िल् अक़्दा-महुम् व-अन्ज़िल् बिहिम् बा-स-कल्लज़ी ला तरूद्दुहू अ़निल् क़ौमिल् मुजरिमी-न

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू हमें और तमाम मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को और समस्त मुसलमान मर्दों और औ़रतों को मआ़फ़ फ़रमा दे, और उन के दिलों में परस्पर प्रेम भावना पैदा कर दे, और उन के परस्पर संबन्धों को सुधार दे, और अपने और उन के दुश्मनों पर उन की सहायता फ़रमा+ऐ अल्लाह! उन काफ़िरों पर जो तेरे रास्ते से (दीन के लोगों को) रोकते हैं और तेरे रसूलों को झुठलाते हैं, और तेरे दोस्तों (यानी मुसलमानों) से लड़ते हैं उन पर तू लअ़नत कर+ऐ अल्लाह! तू उन के दर्मियान फूट डाल दे, और उन के क़दमों को डगमगा दे, और उन पर तू

अपना वह अज़ाब नाज़िल कर जिसे तू मुजरिम क़ौमों से रद्द करता ही नहीं।"

दुआ-ए-क़ुनूत

3) और यह दुआ-ए-क़ुनूत पढ़े -

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ (وَنَتُوْبُ اِلَيْكَ) وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ

(وَنَشْكُرُكَ) وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ

وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ (الْجِدَّ)

وَنَرْجُوْ رَحْمَتَكَ اِنَّ عَذَابَكَ (الْجِدَّ) بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ـ

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम + अल्लाहुम्म इन्ना नस्-तईनु-क व-नस्-तग़्फ़िरु-क (व-नतूबु इलै-क) वनुस्नी अलै-कल् ख़ै-र (व-नश्कुरू-क) वला नक्फ़ुरु-क व-नख़्-लउ व-नत्रुकु मय्यंफ़्जुरु-क + अल्लाहुम्म इय्या-क नअ़बुदु व-ल-क नु-सल्ली व-नस्जुदु वइलै-क नसआ व-नह्फ़िदु, व-नख़्शा अ़ज़ा-ब-क (अल् जिद्द) व-नर्जू रह्-म-त-क इन्न अ़ज़ा-ब-क (अल् जिद्द) बिल् कुफ़्फ़ारि मुल्हिकुन् +

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! बेशक हम तुझी से सहायता माँगते हैं और तुझी से माफ़ी तलब करते हैं, और तेरे ही सामने तौबा करते हैं और तेरी बेहतरीन तारीफ़ करते हैं और तेरा शुक्र अदा करते हैं और नाशुक्री नहीं करते, और जो नाफ़रमानी करे उस से संबन्ध तोड़ लेते हैं और उसको छोड़ देते हें। ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं, तेरे लिये ही नमाज़ पढ़ते हैं, तुझी को सज्दा करते हैं और

तेरी तरफ़ ही दौड़ते और लपकते हैं और तेरे (यक़ीनी) अज़ाब से डरते हैं और तेरी रहमत के आशवासन हैं, बेशक तेरा यक़ीनी अज़ाब काफ़िरों को अवश्य पहुँचने वाला है[1]।"

4. वित्र की नमाज़ का सलाम फैरने के बाद यह कलिमें तीन मर्तबा कहे और तीसरी मर्तबा "सुब्हा-नल् मलिकिल् कुद्दूस" को लम्बा और ऊँची आवाज़ के साथ कहे।

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ، سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ، سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ

सुबहा-नल् मलिकिल् कुद्दूसि, सुबहा-नल् मलिकिल् कुद्दूसि, सुबहा-नल् मलिकिल् कुद्दूसि, + रब्बुल् मलाइ-कति वर्रूहि

तर्जुमा - "पाक है (दुनिया का) पाक बादशाह, पाक है (दुनिया का) बेऐब बादशाह पाक है (तमाम मख़्लूक़ का) बज़ुर्ग बादशाह फ़रिश्तों और रूह का पर्वरदिगार

- - - - - - - - - - - - - -

1. यही दुआए क़ुनूत हम हनफ़ी मुसलमान वित्रों की अन्तिम रकअतों में रुकूअ में जाने से पहले दोनों हाथों को कानों तक उठाने के बाद पढ़ते हैं। इस दुआए क़ुनूत में दो जुम्ले पुस्तक "*हिस्ने हसीन*" में नहीं हैं, उन्हें हम ने ब्रेकिट में लिख दिया है। इसी तरह "अल् जिद्दि" का शब्द दोनों जगह हमारी दुआए कुनूत में नहीं, लेकिन अगर पढ़े तो कोई हर्ज नहीं। हदीस की दूसरी पुस्तकों में इन का ज़िक्र मौजूद है। दुआ न0 1 और दुआ न0 2 अगर पढ़े तो कुछ हर्ज नहीं, मगर उन को रुकूअ से उठने के बाद पढ़े, ख़ास कर अगम मुसीबत और विपदाओं के काल में। हनफ़ी उलमा इस को क़ुनूत नाज़िला" (अचानक आने वाली मुसीबत की दुआए क़ुनूत) कहते हैं (इदरीस)

नोट - बाज़ रिवायतों में "रब्बुल् मलाइ-कति वर्रूहि का इज़ाफ़ा है और बाज़ में नहीं (इदरीस)

5. इसके बाद यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُ بِكَ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ لَآ اُحْصِیْ ثَنَآءً عَلَيْكَ (اَنْتَ) كَمَآ اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क बिरिज़ा-क मिन् स-ख़ति-क वबिमुआफ़ाति-क मिन् ओक़ू-बति-क व-अऊज़ुबि-क मिन्-क ला उहसी सना-अन् अ़लै-क (अन्-त) कमा अस्नै-त अ़ला नफ़्सि-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह बेशक मैं पनाह लेता हूँ तेरी नाराज़गी से और तेरी बख़्शिश और मेहरबानी से तेरी सज़ा से, और मैं पनाह लेता हूँ तेरे (अ़ज़ाब) से तेरी ही (रहमत की) मैं तो तेरी तारीफ़ का हक़ नहीं अदा कर सकता बस तू ऐसा ही है जैसी तू ने अपनी प्रशंसा की है।"

नोट - पुस्तक "हिस्ने हसीन" में "अन्-त" का शब्द नही है, मगर हदीस की पुस्तकों में मौजूद है, इसलिए हम ने ब्रेकिट के दर्मियान लिख दिया है, और "अन्-त" होना चाहिये - (इदरीस)

फ़ज्र की सुन्नतों का बयान

1) इसके बाद फ़ज्र की दो सुन्नतें पढ़े। पहली रक्अ़त में सूरः "काफ़िरून" और दूसरी में सूरः "इख़्लास" पढ़े। या पहली रक्अ़त में -

قُولُوٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ
مِنْ رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝

क़ूलू आ-मन्ना बिल्लाहि वमा उन्ज़ि-ल इलैना वमा उनज़ि-ल इला इब्राही-म वइस्माई-ल वइस्हा-क़ यअ़्क़ू-ब वल्-अस्बाति वमा ऊति-य मूसा वअ़ीसा वमा ऊति-यन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नु-फ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम्मिन्हुम् व-नह्नु लहू मुस्लिमू-न (सूरः ब-क़रः 136)

तर्जुमा - "(ऐ मुसलमानो!) तुम कह दो, हम तो अल्लाह पर ईमान ले आये और इस "किताब (यानी क़ुरआन) पर जो हमारे लिये उतारा गया, और उन (किताबों) पर जो इब्राहीम पर, इस्माअ़ील पर, इस्हाक़ पर, याक़ूब पर और उन की औलाद पर उतारे गये, और उस (किताब यानी तौरैत) पर जो मूसा पर और उस (किताब इन्जील) पर जो ईसा पर उतारी गयी, और जो दूसरे सन्देष्टाओं को उन के रब की ओर से (शरीअ़तें) दी गयीं (सब पर ईमान ले आये) हम उन नबियों में से किसी एक में फ़र्क़ नहीं करते, और हम तो उसी (एक अल्लाह) के फ़रमाबर्दार हैं" (जिस ने तमाम सन्देष्टाओं को पैग़म्बर बना कर भेजा)

★ और दूसरी रक्अ़त में यह पढ़े -

قُلْ يَآاَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا اِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ

وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْئًا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاِنْ

تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ۔

क़ुल् या अह्-लल्किताबि तआ़लौ इला कलि-मतिन् सवाइम् बै-नना वबै-नकुम् अल्ला नाअ़्बु-द इल्लल्ला-ह वला नुश्रि-क बिही शै-अन् वला यत्तख़ि-ज़ बअ़्ज़ुना बा-ज़न् अर्बा-बम्मिन् दूनिल्लाहि फ़इन् त-वल्लौ फ़क़ूलुश्-हदू बि-अन्ना मुस्लिमू-न

तर्जुमा - "(ऐ सन्देष्टा!) तुम कह दो! ऐ अहले किताब (यहूद और नसारा) आओ ऐसी बात को हम-तुम इख़्तियार कर लें जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान एक समान (मानी हुयी) है, कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें, और अल्लाह के साथ किसी भी चीज़ को शरीक न ठहरायें, और अल्लाह के सिवा हम में से कोई किसी को अपना रब न बनाये, फिर अगर वह उस से मुँह मोड़ें तो तुम उन से कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मुसलमान (यानी अल्लाह के अज्ञा कारी) हैं।" (सुरः आले अ़िम्रान, आयत 64)

★ और फ़ज्र की सुन्नतों से फ़ारिग़ होकर वहीं बैठे-बैठे तीन मर्तबा यह पढ़े -

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَئِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ وَمُحَمَّدِ النَّبِيِّ (صَلَّى اللّٰهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) اَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ۔

अल्लाहुम्म रब्बा जिब्री-ल वमीकाई-ल वइस्राफ़ी-ल वमु-हम्मदि निन्नबिय्यि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व-सल्ल-म)

अऊज़ुबि-क मि-नन्नारि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जिब्रील, मीकाईल, इस्राफ़ील और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रब् मैं जहन्नुम से तेरी पनाह लेता हूँ (तू मुझे बचा ले)

★ फिर (अगर समय हो तो) उसी स्थान पर दाहिनी कर्वट पर (थोड़ी देर के लिये) लेट जाये (ताकि थकान दूर हो जाये और फ़ज्र की नमाज़ पूरे इतमिनान से पढ़ सके)

फ़ज्र की नमाज़ के लिए घर से निकलने का बयान

1) फिर जब (फ़ज्र की नमाज़ के लिये) घर से बाहर निकले तो यह कहे -

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि त-वक्कल्तु अ़-लल्लाहि

अल्लाह के नाम के साथ, मैं ने अल्लाह पर भरोसा किया है।"

2) और यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نَزِلَّ اَوْنُزِلَّ اَوْنَضِلَّ اَوْنَظْلِمَ اَوْيُظْلَمَ عَلَيْنَا اَوْنَجْهَلَ اَوْيُجْهَلَ عَلَيْنَا.

अल्लाहुम्म इन्ना नऊज़ुबि-क मिन् अन् नज़िल्ल औ नुज़िल्ल औ नुज़िल्ल औ नज़्लि-म औ युज़्लि-म अ़लैना औ नज्-ह-ला औ युज़्-ह-ल अ़लैना+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह लेते हैं इससे कि हमारे क़दम (तेरे रास्ते पर) खुद डगमगायें, या हम किसी और के क़दम डगमगायें। और इस से कि हम किसी को गुमराह करें। और इस से कि हम (किसी पर) अत्याचार करें। या हम पर अत्याचार किया जाये, या हम (किसी के साथ) नादानी (बदतमीज़ी-भद्र व्यवहार) करें, या हम पर दुर्व्यवहार किया जाये।"

3) या यह दुआ पढ़े -

بِسْمِ اللّٰهِ، لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، اَلتُّكْلَانُ عَلَى اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि, ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि, अत्तकलानु अ़लल्लाहि

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ, अल्लाह (की तौफ़ीक़) के बिना कोई ताक़त और क़ुव्वत (हासिल) नहीं, भरोसा तो अल्लाह पर ही है।"

4) या यह दुआ पढ़े -

بِسْمِ اللّٰهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ، لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि, त-वक्कल्तु अ़-लल्लाहि, ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ, मैंने तो अल्लाह पर भरोसा किया है, अल्लाह (की सहायता) के बिना कोई ताक़त (हासिल) है और न कुव्वत।"

5) जब घर से निकले तो आकाश की ओर नज़र उठाकर यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْٓ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اَزِلَّ اَوْ اُزَلَّ اَوْ اَظْلِمَ

اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَىَّ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क अन् अ-ज़िल्ल औ उ-ज़ल्ल, औ अ-ज़िल्ल औ उ-ज़ल्ल, औ अज़लि-म औ उज़्-ल-म, औ अज्-ह-ल औ युज्-ह-ल अ़-लय्य

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ इस से कि मैं स्वयँ गुमराह किया जाऊँ या मैं (सीधी राह से) स्वयँ फिसल जाऊँ, या मैं (किसी पर) अत्याचार करूँ या मुझ पर किया जाये, या मैं स्वयँ (किसी के साथ) जहालत करूँ, या मेरे साथ जहालत (दुर्व्यवहार) का सुलूक किया जाये।"

फ़ायदा - हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 से रिवायत है कि जब भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे मकान से बाहर निकलते तो आकाश की ओर नज़र उठा कर ऊपर की दुआ़ पढ़ा करते थे।

6) नमाज़ के लिये घर से निकले तो रास्ते में यह दुआ़ पढ़े-

(١) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِىْ قَلْبِىْ نُوْرًا وَّفِىْ بَصَرِىْ نُوْرًا وَّفِىْ سَمْعِىْ نُوْرًا وَّعَنْ يَّمِيْنِىْ

نُوْرًا وَّعَنْ شِمَالِىْ نُوْرًا وَّخَلْفِىْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّىْ نُوْرًا (٢) وَّفِىْ عَصَبِىْ

نُوْرًا وَّفِىْ لَحْمِىْ نُوْرًا وَّفِىْ دَمِىْ نُوْرًا وَّفِىْ شَعْرِىْ نُوْرًا وَّفِىْ بَشَرِىْ نُوْرًا

(٣) وَّفِىْ لِسَانِىْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِىْ نَفْسِىْ نُوْرًا وَّاَعْظِمْ لِىْ نُوْرًا (٤) وَّاجْعَلْنِىْ نُوْرًا۔ [1]

1- अल्लाहुम्मज्-अ़ल् फ़ी क़ल्बी नू-रंव वफ़ी ब-सरी नू-रंव, वफ़ी समअ़ी नू-रंव, व-अ़न् यमीनी नू-रंव, व-अ़न्

शिमाली नू-रंव, व-ख़ल्फ़ी नू-रंव, वज-अ़ल्ली नू-रन, 2-वफ़ी अ़-सबी नू-रंव, वफ़ी लह्मी नू-रंव, वफ़ी दमी नू-रंव, वफ़ी शअ़री नू-रंव वफ़ी ब-शरी नू-रंव 3-वफ़ी लिसानी नू-रंव, वज-अ़ल फ़ी नफ़्सी नू-रंव, वआअ़ज़िम ली नू-रन् 4- वज्-अ़ल्नी नू-रन्+

तर्जुमा - 1- "ऐ अल्लाह! तू मेरे दिल में नूर कर दे, और मेरी आँखों में नूर, और मेरे कानों में नूर पैदा फ़रमा दे, और मेरी दायीं ओर भी नूर और बाँयीं ओर भी नूर, और मेरे पीछे भी नूर और आगे भी नूर (ग़रज़) मुझे सरापा नूर बना दे। 2- और मेरे पट्ठों में नूर और मेरे गोश्त-पोस्त में नूर और मेरे ख़ून में नूर, बालों में नूर और खाल में नूर (भर दे) 3- और मेरी ज़बान में नूर (अ़ता कर दे) और मेरी जान में नूर (पैदा कर दे) और तू मुझे बहुत बड़ा नूर (अ़ता फ़रमा दे) 4-और सरापा नूर बना दे।"

7) या यह दुआ़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَّفِیْ لِسَانِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِیْ سَمْعِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ خَلْفِیْ نُوْرًا وَّمِنْ اَمَامِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ فَوْقِیْ نُوْرًا وَّمِنْ تَحْتِیْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ نُوْرًا۔

अल्लाहुम्मज्-अ़ल् फ़ी क़ल्बी नू-रव वफ़ी लिसानी नू-रंव वज्-अ़ल् फ़ी सम्‌ई- नू-रंव वज्-अ़ल् फ़ी ब-सरी नू-रंव वज्-अ़ल् मिन ख़ल्फ़ी नू-रंव वमिन् अमामी नू-रंव वज्-अ़ल् मिन् फ़ौक़ी नू-रंव वमिन् तहती नू-रन् अल्लाहुम्म अअ्‌तिनी नू-रन्+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे दिल में नूर और मेरी ज़बान में नूर पैदा कर दे और मेरे कानों में नूर और निगाह में नूर

अ़ता फ़रमा दे, और तू मेरे पीछे भी नूर, मेरे आगे भी नूर और मेरे ऊपर भी नूर और नीचे भी नूर (अर्थात हर तरफ़ नूर ही नूर) कर दे। ऐ अल्लाह! तू मुझे नूर (ही नूर) अ़ता कर दे।"

★★★

नोट - यह ऊपर की भी एक दुआ़ है जिस के चार हिस्से हैं, जो अलग-अलग हदीस की किताबों में ज़िक्र हैं, हम ने नम्बर दे कर उन सब को इकट्ठा कर दिया है, इसलिये जितना हिस्सा हो सके पढ़ ले। (इदरीस)

मस्जिद में दाख़िल होने के समय का बयान

1) मस्जिद में दाख़िल होने के समय यह दुआ पढ़े -

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाहिल् अज़ीमि वबि-वज्हिहिल् करीमि वसुल्तानिहिल् क़दीमि मि-नश्शैतानिर्रजीमि

तर्जुमा - "मैं बड़ाई और बुज़ुर्गी के मालिक अल्लाह और उस की करीम ज़ात और उस की अथाह बादशाहत की पनाह लेता हूँ मर्दूद शैतान से।"

2) मस्जिद के अन्दर पहुँच कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद पढ़े और इस के बाद -

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

अल्लाहुम्मफ़् तह्ली अब्वा-ब रह्-मति-क

(ऐ अल्लाह! तू अपनी रहमत के दर्वाज़े मेरे लिये खोल दे)

3) या यह पढ़े -

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لَنَا اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَسَهِّلْ عَلَيْنَا اَبْوَابَ رِزْقِكَ

अल्लाहुम्मफ़्-तह् लना अब्वा-ब रह्-मति-क व-सहिहल् अलैना अब्वा-ब रिज़्क़ि-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू अपनी रहमतों के दर्वाज़े मेरे लिये खोल दे और अपनी रोज़ी के दर्वाज़े (यानी उस के साधन और रास्ते) आसान कर दे।"

4) या यह कहे -

بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि

"अल्लाह तआ़ला के नाम के साथ (मैं मस्जिद में पाँव रखता हूँ) और अल्लाह के सन्देष्टा (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर सलाम हो।"

5) या यह कहे -

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى سُنَّتِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व-अ़ला सुन्नति रसूलिल्लाहि

(मैं) अल्लाह के नाम के साथ और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर अ़ता करने के उद्देश्य से दाख़िल हुआ हूँ।)

6) और यह दरूद पढ़ें -

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिन व-आ़ला आलि मु-हम्मदिन

7) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

"अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली ज़ुनूबी वफ़्-तह् ली अब्वा-ब रह्-मति-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ कर दे और अपनी रहमतों के दरवाज़े मेरे लिये खोल दे।"

7) और अन्दर पहुँच जाने के बाद यह कहे -

اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ

अस्सलामु अ़लैना व-अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिही-न

"सलामती हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर"

मस्जिद के आदाब का बयान

1) मस्जिद में बैठने से पहले दो रक्अ़त तहिय्यतुल् मस्जिद पढ़े और इस के बाद बैठे -

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर किसी शख़्स को मस्जिद के अन्दर अपनी खोई हुयी वस्तु को लोगों से मालूम करता और खोजता देखो तो कहो -

لَا رَدَّهَا اللّٰهُ عَلَيْكَ

ला रद्द-हल्लाहु अ़लै-क

"अल्लाह तुझे वह वापस करे ही नहीं (अल्लाह करे तुझे मिले ही नहीं)

और इस के बाद उसे समझा दे कि मस्जिदें इस (प्रकार के दुनियावी कामों) के लिये नहीं बनी हैं।

एक दूसरी हदीस में आया है कि अगर किसी को मस्जिद में मोल-भाव करता हुआ देखे तो कहे -

لَا اَرْ بَحَ اللّٰهُ تِجَارَتَكَ

ला अर्-ब-हल्लाहु तिजा-र-त-क

"अल्लाह तेरी तिजारत में लाभ न दे"

नमाज़ पढ़ कर मस्जिद से निकलते समय की दुआओं का बयान

1) जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर मस्जिद से बाहर निकलने लगे तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दुरूद भेजे और कहे -

اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِىْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अल्लाहुम्म अअ़सिमनी मि-नश्शैता निर्रजीमि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुझे मर्दूद शैतान से बचा"

2) और यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क

नोट - अगर फ़र्ज़ नमाज़ से पहले की सुन्नतें पढ़नी हों और समय कम हो तो उन सुन्नतों में ही तहिय्यतु मस्जिद की नीय्यत करे, जैसे, ज़ोहोर-अ़स्र के समय और अगर समय हो तो पहले दो रक्अ़त तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े, फिर सुन्नतें पढ़े। फ़र्ज़ के वक़्त के अ़लावा, कि सुबह की फ़र्ज़ नमाज़ से पहले केवल दो सुन्नतें साबित हैं, इसलिये अगर सुन्नतें मस्जिद में पढ़े तो उन में तहिय्यतुल् मस्जिद की निय्यत कर ले। और अगर घर से पढ़ कर मस्जिद में आये तो बैठ जाये और तहिय्यतुल् मस्जिद न पढ़े। (इद्रीस)

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरा फ़ज़्ल (इनाम) माँगता हूँ।"

3) या यह दुआ पढ़े -

بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाहि

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ (निकलता हूँ) अल्लाह के रसूल पर सलाम हो।"

4) और यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिन् व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद पर और मुहम्मद की आल पर रहमत फ़रमा"

5) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ

अल्लाहुम्मग़ फ़िर् ली ज़ुनूबी वफ़-तह् ली अबवा-ब फ़ज़्लि-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे गुनाह बख़्श दे और अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े मेरे लिये खोल दे।"

अज़ान के समय और बाद के ज़िक्र और दुआओं का बयान

1) हदीस शरीफ़ में आया है कि 1- अज़ान के 19 कलिमे हैं[1] जिनको सब ही जानते पहचानते हैं। 2- सुबह की अज़ान में "अस्सलातु ख़ैरुम्मि-नन्नौमि" (नमाज़ सोने से बेहतर है) दो मर्तबा ज़्यादा किया जाता है।

2- जब मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुने तो जो कलिमात वह कहता जाये स्वँय भी वही अज़ान के कलिमात कहता जाये।

3) और "हय्या अ़-लस्सलाति" और "हय्या अ़-लल् फ़लाहि" के स्थान पर "लाहौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" कहे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स दिल से अज़ान का उत्तर देगा जन्नत में दाख़िल होगा।

4) या "अश्-हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु" के उत्तर में दुआ़ पढ़े-

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ، لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ

وَرَسُوْلُهٗ، رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِمُحَمَّدٍ رَّسُوْلًا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا۔

- - - - - - - - - - - - -

1. अज़ान के कलिमे अहनाफ़ के निकट 15 और शाफ़ई के निकट 19 हैं। वह अव्वल दोनों शहादत के चार कलिमे पस्त आवाज़ से कहते हैं, इस के बाद दोबारा वही चारों कलिमे बुलन्द आवाज़ से कहते हैं। इन्ही दोनों शहादत के कलिमों को दोबारा कहने को "तर्जीअ़" कहते हैं। संपादक इमाम जज़री रह० शाफ़ई मसलक के हैं इसलिये उन्होंने अज़ान के कलिमों को 19 बतलाया है।

अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू, ला शरी-क लहू, व-अन्न मु-हम्म-दन् अब्दुहू व-रसूलुहू, रज़ीतु बिल्लाहि रब्बवं वबिमु-हम्मदिन् रसू-लवं वबिल् इस्लामि दी-नन्

तर्जुमा -"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल (सन्देष्टा) हैं। मैं ने अल्लाह को अपना रब और मुहम्मद को अपना सन्देष्टा और इस्लाम को अपना दीन पसन्द कर लिया।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि

1- जो शख़्स कलिमए-तौहीद का उत्तर ऊपर की दुआ से देगा उस के गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

2- जो शख़्स मुअज़्ज़िन की जगह ही अज़ान के कलिमे कहेगा, उस के लिये जन्नत है।

3- और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (कभी-कभार) शहादत के दोनों कलिमों के उत्तर में केवल "व-अना, व-अना" (यानी और मैं भी, और मैं भी) फ़रमा दिया करते थे।

5) अज़ान ख़त्म होने के बाद अव्वल दरूद शरीफ़ पढ़े, फिर नीचे की दुआए वसीला[1] पढ़े-

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَ

اِلْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ اِلَّذِیْ وَعَدْتَّهٗ

اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

- - - - - - - - - - - -

1. "वसीला" और "मुक़ामे महमूद" से मुराद क़यामत के दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुक़ामे शफ़ाअत है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दो शफ़ाअतें फ़रमायेंगे- बाक़ी अगले पृष्ठ पर

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दअ्-वतित्ताम्मति वस्सलातिल् क़ाइ-मति आति मु-हम्म-द निल् वसी-ल-त वल् फ़ज़ी-ल-त वब्-अ़सहु मक़ा-मम्महमू-द निल्लज़ी व-अ़त्तहू इन्न-क ला तुख़्लिफुल् मी-आ-द

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! ऐ इस मुकम्मल दावत और खड़ी होने वाली नमाज़ के मालिक तू मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को वसीला और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा दे और उनको मुक़ामे महमूद पर पहुँचा दे जिस का तू ने वादा फ़रमाया है, बेशक तू अपने वादा के ख़िलाफ़ नहीं करता।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि-

'वसीले' जन्नत का एक विशेष स्थान है और एक ख़ास ही बन्दे को अल्लाह पाक देंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - मुझे आशा है कि वह ख़ास बन्दा मैं ही

------------ **पिछले पृष्ठ का शेष भाग**

1. शफ़ाअ़ते कुबरा-यह आ़म लोगों को क़यामत के दिन अल्लाह के ग़ज़ब से बचाने के लिये होगी। इस शफ़ाअ़त के बाद अल्लाह का गुस्सा ठन्डा और हिसाब-किताब आरंभ हो जायेगा। "मुक़ामे महमूद" से मुराद (जिस को देने का वादा अल्लाह तआ़ला ने सूर: बनी इस्राईल की आयत न0-79 में फ़रमाया है) यह मुक़ामे शफ़ाअ़त है।

2- दूसरी शफ़ाअ़त "शफ़ाअ़ते सुग़रा" है। यह अपनी उम्मत के गुनाह गारों को बख़्शवाने या जहन्नम के अ़ज़ाब से नजात दिलाने के लिये होगी। विस्तार से मालूमात के लिये हदीस की पुस्तकों का मुताला कीजिये।

"दुआ़ए वसीला" का पाबन्दी के साथ पढ़ना एक मुसलमान को शफ़ाअ़त का हक़दार बना देता है, इसलिये इस दुआ़ को अवश्य पढ़ना चाहिये, ताकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शफ़ाअ़त नसीब हो (इदरीस)

हूँगा, तुम भी मेरे लिये इस ख़ास स्थान की दुआ़ किया करो। जो कोई मेरे लिये वसीला की दुआ़ माँगेगा वह मेरी शफ़ाअ़त का अवश्य हक़्दार होगा।"

6) या अज़ान के ऊपर बयान किये तरीक़े के अनुसार उत्तर देने के बाद यह दुआ़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اَعْطِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَاجْعَلْهُ فِى الْاَعْلَيْنَ

دَرَجَتَهٗ وَفِى الْمُصْطَفَيْنَ مَحَبَّتَهٗ وَفِى الْمُقَرَّبِيْنَ ذِكْرَهٗ۔

अल्लाहुम्म अअ़्ति मु-हम्म-द निल् वसी-ल-त वल् फ़ज़ी-ल-त वज्-अ़लहु फ़िल् अअ़्लै-न द-र-ज-तहू वफ़िल् मुस्-तफ़ै-न म-हब्ब-तहू वफ़िल् मु-क़र्रबी-न ज़िक्-रहू

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को वसीला और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा और उन को बुलन्द मर्तबा वालों में शामिल फ़रमा, और उन की मुहब्बत चुने हुये लोगों (के दिलों) में पैदा फ़रमा, और उन का ज़िक्र अल्लाह के क़रीबी लोगों (की सभा) में फ़रमा।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स मुअ़ज़्ज़िन के साथ-साथ अज़ान का उत्तर देने के बाद ऊपर की दुआ़ए वसीला पढ़ा करेगा, क़ियामत के दिन उस के लिये शफ़ाअ़त वाजिब हो जायेगी।

7) या अज़ान के बाद यह दुआ़ करे -

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ الْقَائِمَةِ وَالصَّلٰوةِ النَّافِعَةِ صَلِّ عَلٰى

مُحَمَّدٍ وَّارْضَ عَنِّىْ رِضًا لَّا تَسْخَطُ بَعْدَهٗ۔

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दअ़्-वतिल् क़ाइ-मति वस्सलातिन्नाफ़ि

-अ़ति सल्लि अ़ला मु-हम्मदिन् वर्-ज़ अ़न्नी रि-ज़न् ला तस-ख़तु बअ़-दहू

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! ऐ इस पाएदार दावत (अज़ान) और लाभ देने वाली नमाज़ के मालिक, तू मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर रहमत नाज़िल फ़रमा और तू मुझ से इस प्रकार खुश हो जो कि इस के बाद तू कभी नाराज़ न हो।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स अज़ान के बाद (सच्चे दिल से) ऊपर की दुआ़एँ माँगेगा, अल्लाह तआ़ला उस की दुआ़ अवश्य क़बूल फ़रमायेगें।

8) या अज़ान के उत्तर के बाद नीचे की दुआ़ करे -

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ الصَّادِقَةِ الْمُسْتَجَابِ لَهَا دَعْوَةِ الْحَقِّ وَكَلِمَةِ التَّقْوٰى اَحْيِنَا عَلَيْهَا وَاَمِتْنَا عَلَيْهَا وَابْعَثْنَا عَلَيْهَا وَاجْعَلْنَا مِنْ خِيَارِ اَهْلِهَا اَحْيَاءً وَّ اَمْوَاتًا۔

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दअ़-वतिस्सादि-क़तिल् मुस्-तजाबि लहा दअ़-वतिल् हक़्क़ि व-कलि-मतित्तक़्वा अह़्यिना अ़लैहा व-अमित्ना अ़लैहा वब्-अ़स्ना अ़लैहा वज्-अ़ल्ना मिन् ख़ि-यारि अहलिहा अह्या-अंव्व-अम्वा-तन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! ऐ इस सच्ची और मक़बूल दावते हक़ (अज़ान) और तक़्वा के कलिमे (कलिमए शहादत) के मालिक, तू हम को इसी पर जीवित रख और इसी पर हमें मौत दे, और इसी पर (उठाये जाने के दिन) उठा, और हमें ज़िन्दगी और मौत दोनों हालतों में बेहतरीन तौहीद वालों में शामिल कर दे।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स किसी मुसीबत या विवाद में गिरफ़्तार हो, उसे चाहिये कि अज़ान के समय का इन्तिज़ार करे और उस का उत्तर देने के बाद ऊपर की दुआ पढ़े और इस के बाद अपनी आवश्यकता की दुआ करे, उस की दुआ अवश्य क़बूल होगी।

अज़ान और इक़ामत के दर्मियान दुआ का बयान

1) हदीस शरीफ़ में आया है कि इक़ामत (यानी तक्बीर) के[1] 11 कलिमे हैं दूसरी हदीस में आया है कि इक़ामत, अज़ान ही की तरह है, फ़र्क़ केवल यह है कि इक़ामत में तर्जीअ़ नहीं है और दो मर्तबा "क़द क़ा-मतिस्सलाति" का इज़ाफ़ा है।

----

1. इक़ामत के मामले में भी अज़ान के कलिमों की तरह इमामों के दर्मियान इख़्तिलाफ़ है। इस पुस्तक के संपादक अ़ल्लामा जज़री रह० ने इस सिलसिला में दो हदीसें बयान की हैं 1- एक हदीस में इक़ामत के 11 कलिमे हैं, वह इस प्रकार कि "अल्लाहु अकबर" दो मर्तबा, शहादत के दोनों कलिमे एक-एक मर्तबा, "हय्या अ़-लस्सलाति" और "हय्या अ़-लल् फ़लाहि" एक-एक मर्तबा, और "क़द क़ा-मतिस्सलातु" दो मर्तबा, "अल्लाहु अकबर" दो मर्तबा, और "लाइला-ह इल्लल्लाहु" एक मर्तबा।

2- दूसरी हदीस में इक़ामत के कलिमे बिल्कुल अज़ान के समान (बराबर) हैं, केवल इतना अन्तर है कि इक़ामत में दो मर्तबा "क़द क़ा-मतिस्सलाति" का इज़ाफ़ा है और तर्जीअ़(यानी दोनों शहादतों को दोहराना) नहीं। इस लिहाज़ से इक़ामत के कलिमात 15 हुये। यही अहनाफ़ का मज़हब है। (इदरीस)

2) अज़ान और इक़ामत(तक्बीर) के दर्मियान यह दुआ माँगे-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् अफ़्-व वल् आफ़ि-य-
-त वल् मुआफ़ा-त फ़िद्दुन्या वल् आख़ि-रति

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से (हर गुनाह और ग़लती से) माफ़ी और (हर दुःख और बीमारी से) स्वास्थ और तन्दुरुस्ती और दुनिया और आख़िरत में (हर बला और अज़ाब से) हिफ़ाज़त का प्रश्न करता हूँ।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि अज़ान और इक़ामत के दर्मियान दुआ ज़रूर क़बूल होती है, इसलिये उस समय दुआ किया करो, और अल्लाह तआला से दुनिया और आख़िरत में अम्न-शन्ति माँगा करो।

नमाज़ की दुआओं का बयान

1. जब फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने के लिये खड़ा हो तो यह दुआ पढ़े [1] -

---

1. यह "दुआए तौजीह" कहलाती है। बाज़ हदीस की किताबों में तक्बीरे तहरीमा के बाद उस के पढ़ने का ज़िक्र आया है, लेकिन अक्सर पुस्तकों में यह मौजूद नही है। अहनाफ़ के निकट यह दुआ और इसके बाद आने वाली दुआयें तक्बीरे तहरीमा से पहले पढ़नी चाहिये, लेकिन अगर अकेला ही नमाज़ पढ़ने वाला बाद में भी पढ़ले तो कुछ हर्ज नहीं। जमाअत में तक्बीरे तहरीमा (यानी अल्लाहु अक्बर) के बाद केवल "सुब्हा-न-कल लाहुम्म---" पढ़े, इसलिए कि इतनी गुन्जाइश ही नही होती कि इमाम के क़िरात शुरू करने से पहले यह दुआ पढ़ी जा सके, वर्ना क़ुरआन सुनने में रुकावट पैदा होगी और वह फ़र्ज़ है। (इदरीस)

وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَّمَا أَنَا

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ، إِنَّ صَلَوٰتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

لَا شَرِيْكَ لَهٗ، وَبِذٰلِكَ أُمِرْتُ، وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ، اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الْمَلِكُ،

لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ، أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ، ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ بِذَنْبِي

فَاغْفِرْ لِي ذُنُوْبِي جَمِيعًا، إِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا أَنْتَ، وَاهْدِنِي لِأَحْسَنِ

الْأَخْلَاقِ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا، لَا يَصْرِفُ

عَنِّي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ، لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي يَدَيْكَ وَ

الشَّرُّ لَيْسَ إِلَيْكَ، أَنَا بِكَ وَإِلَيْكَ، تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوْبُ إِلَيْكَ،

वज्जहतु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाति वल् अर्-ज़ हनी-फ़म्मुस्लि-मंव वमा अना मि-नल् मुश्रिकी- न, इन्न सलाती वनुसुकी व-मह्या-य व-ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमी-न, ला शरी-क लहू, वबिज़ालि- क उमिर्तु, व-अना मि-नल् मुस्लिमी-न+अल्लहुम्म अन्- तल् मलि-कु, लाइला-ह इल्ला अन्-त, अन्-त रब्बी व-अना अ़ब्दु-क, ज़-लम्तु नफ़्सी वअ़-त-रफ़्तु बि-ज़म्बी फ़ग़फ़िर् ली ज़ुनूबी जमी-अ़न्, इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त,

वह्दिनी लि-अह्-सनिल् अख़्लाक़ि ला यह्दी लि-अह्-सनिहा इल्ला अन्-त, वस्रिफ़ अ़न्नी सय्यि-अहा, ला यस्रिफ़ु अ़न्नी सय्यि-अहा इल्ला अन्-त, लब्बै-क वसअ़दै-क वल् ख़ैरु कुल्लुहू फ़ी यदै-क वश्शरु लै-स इलै-क, अना बि-क वइलै-क, तबा-रक्-त व-त-आ़लै-त अस्-तग़्फ़िरु-क व-अतूबु इलै-क

तर्जुमा – "मैं ने अपना चेहरा उस (पर्वरदिगार) की तरफ़ कर दिया जिस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है (सब से) मुँह मोड़ कर (उसी का) फ़र्माबरदार बन कर, और मेरा मुश्रिकों से कोई संबन्ध नहीं। बेशक मेरी नमाज़, मेरी इबादत, मेरी ज़िन्दगी, मेरी मौत (सब) सारे जहान के रब के लिये (वक़्फ़) हैं, जिस का कोई शरीक नहीं, इसी का मुझे हुक्म दिया गया है, और मैं तो आज्ञाकारों में से हूँ।

ऐ अल्लाह! तू (तमाम संसार का) मालिक है, तेरे अ़लावा और कोई इबादत के लाइक़ नहीं, मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूँ, मैंने अपने ऊपर (बहुत कुछ) अत्याचार किया है, और मैं अपने पापों को स्वीकार करता हूँ, पस तू मेरे सब के सब गुनाह बख़्श दे, इसलिए कि तेरे अ़लावा और कोई नहीं बख़्श सकता, और मुझे बेहतरीन अख़्लाक़ (और आमाल) की राह पर चला दे (इसलिए कि) बेहतर अख़्लाक़ (व आमाल) की राह पर तेरे अ़लावा कोई नहीं चला सकता, और बुरे अख़्लाक़ (और आमाल) को मुझ से दूर रख (इसलिए कि) बुरे अख़्लाक़ (और आमाल) को तेरे अ़लावा और कोई मुझ से दूर नहीं रख सकता+मैं हाज़िर हूँ और आज्ञा का पालन करने के लिये तैयार हूँ, और तमाम भलाई और अच्छाइयां तेरे ही हाथों में हैं। और बुराई तो तेरी तरफ़ (मन्सूब) है ही नही। मैं तेरे ही सहारे (ज़िन्दा) हूँ और तेरी ही तरफ़ (मुतवज्जह) हूँ, तू बहुत ख़ैर–बर्कत वाला है और बहुत ही बुलन्द और ऊँचा है। मैं तुझ से माफ़ी माँगता हूँ और तेरी ही जानिब रुजू करता हूँ।"

2) और यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ

وَالْمَغْرِبِ اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ

अल्लाहुम्म बाअिद बैनी वबै-न ख़ताया-य कमा बा-अत्त बै-नल मशरिक़ि वल् मग़रिबि, अल्लाहुम्मग़सिल् ख़ता-या-य बिल्माई वस्सलजि वल्-ब-रदि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह तू मेरे और मेरी ग़लतियों के दर्मियान इतनी दूरी (और फ़ासिला) कर दे जितनी दूरी तू ने पूरब और पश्चिम के दर्मियान रखी है। और ऐ अल्लाह! तू मेरी ख़ताओं को पानी, बर्फ़ और ओलों से धो डाल(ताकि मेरा दिल ठन्डा हो जाये)

3) फिर (तक्बीर (के बाद) यह दुआ पढ़े -

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हा-न-कल्लाहुम्म वबि-हम्दि-क व-तबा-र-कस्मु-क व-तआला जद्दु-क वला इला-ह ग़ैरु-क

तर्जुमा - "मैं पाकी बयान करता हूँ तेरी ऐ अल्लाह! तेरी ही हम्द और सना के साथ। तेरा नाम बहुत बर्कत वाला है, और तेरी शान बहुत बुलन्द और ऊँची है, और तेरे अ़लावा कोई और इबादत के लायक़ नहीं।"

4) या तक्बीर के बाद (नफ़्ली नमाज़ों में, विशेष कर तहज्जुद की नमाज़ में) यह कहें -

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا

अल्लाहु अक्-बरु कबी-रन् वल्-हम्दु लिल्लाहि कसी-रंव वसुब्हा-नल्लाहि बुक्-र-तंव्व-असी-ल-न्

तर्जुमा - "अल्लाह सब से बड़ा है बहुत बड़ा, और सब

तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं बहुत-बहुत, और अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) सुबह भी और शाम भी।"

5) या यह कहे -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ

अल्-हम्दु लिल्लाहि हम्-दन् कसी-रन् तय्यि-बन् मुबा-र-कन् फ़ीहि+

तर्जुमा - " सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है, ऐसी तारीफ़ जो बहुत ज़्यादा है, पाक है, बर्कत वाली है।"

6) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ ذُنُوْبِيْ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
وَنَقِّنِيْ مِنْ خَطِيْئَتِيْ كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ مِنَ الدَّنَسِ۔

अल्लाहुम्म बाअ़िद् बैनी वबै-न ज़ुमूबी कमा बा-अ़त्त बै-नल् मशरिक़ि वल् मग़रिबि व-नक़्क़िनी मिन् ख़ती-अती कमा नक़्क़ै-तस्सौ-ब मि-नद्द-नसि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे गुनाहों के दर्मियान इतनी दूरी कर दे जितनी दूरी तूने पूरब और पश्चिम के दर्मियान रखी है, और मुझ को तू मेरी ख़ताओं से ऐसा पाक कर दे जैसा तू कपड़े को मैल-कुचैल से पाक साफ़ करता है।"

7) और कलिमे भी पढ़े। विशेष कर (रात की) नफ़्ली नमाज़ों में -

अल्लाहु अक्-बरु कबी-रन्

(अल्लाह सब से बड़ा बहुत बड़ा है) तीन मर्तबा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا

अल् हम्दु लिल्लाहि हम्-दन् कसी-रन्

(सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है बहुत-बहुत तारीफ़) तीन मर्तबा।

سُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا

सुब्हा-नल्लाहि बुक्-र-तंव्व-असी-लन् (पाकी बयान करता हूँ अल्लाह की सुबह और शाम) तीन मर्तबा।

इसके बाद यह दुआ पढ़े -

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ مِنْ نَفْخِهٖ وَنَفْثِهٖ وَهَمْزِهٖ

अऊज़ु बिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्रजीमि मिन्नफ़्ख़िही व-नफ़्सिही व-हम्ज़िही

तर्जुमा - "मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ मर्दूद शैतान से, यानी उस के (पैदा किये हुये) तकब्बुर से और उस के फूँके हुये बिखरे और बेहूदा ख़्यालात से और उस के कचोकों (वस्वसों) से।"

8) और यह कलिमे पढ़े -

سُبْحَانَ ذِى الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ وَالْجَبَرُوْتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ

सुब्हा-न ज़िल् म-लकूति वल् ज-बरुति वल् किब्रियाइ वल् अज़्-मति

तर्जुमा - "अल्लाह है कुशादा बादशाहत, बड़े सत्ता और बड़ाई-बजुर्गी का मालिक (पर्वरदिगार)"

9) और जब इमाम - - - - "व-लज़्ज़ाल्लीन" कहे तो "आमीन"[1] (यानी तू क़बूल फ़रमा) कहे, और कभी-कभी "रब्बिग़्फ़िर्ली आमीन" (ऐ मेरे मौला! तू मुझे बख़्शदे, या दुआ क़बूल कर) भी कहा करे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि -.

1) जब इमाम - - - - व-लज़्ज़ाल्लीन कहे तो मुक़्तदी आमीन कहे, अल्लाह तआला उस की दुआ क़बूल फ़रमायेंगे।

2) जब इमाम आमीन कहे तो मुक़्तदी भी आमीन कहे (फ़रिश्ते भी आमीन कहते हैं) जिस की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ होगी, अल्लाह तआला उस के पहले किये हुये गुनांह माफ़ फ़रमा देंगे।

3) एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इतनी लम्बी आवाज़ से आमीन कहते कि पहली सफ़ के जो लोग आप के बिल्कुल क़रीब होते वह सुन लेते, तो (इसी तरह सब की) आमीन मस्जिद में महसूस होने लगती।

4) एक और हदीस में आया है कि (कभी-कभी) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम (लोगों को सुनाने के लिये) तीन मर्तबा भी आमीन कहते।

- - - - - - - - - - - - -

1. अगर अकेला हो तब भी - - - - व-लज़्ज़ाल्लीन् के बाद "आमीन" कहे। अह्नाफ़ के नज़दीक भी इतनी बुलन्द आवाज़ से आमीन कहनी चाहिये कि स्वँय तो ज़रूर अपनी आवाज़ सुन ले। (इदरीस)

रुकूअ़ की दुआ़एं

1) जब रुकूअ़ में जाये तो कम से कम तीन मर्तबा यह तस्बीह कहे –

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

सुब्हा–न रब्बि–यल् अ़ज़ीमि
(पाक है मेरा बड़ा रब)

2) और (कभी नफ़्लों में) यह तस्बीह पढ़े –

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ

सुब्हा–न–क अल्लाहुम्म रब्बना वबि–हम्‌ दि–क, अल्लाहुम्मग़फ़िर्ली

तर्जुमा – " पाक है तू ऐ अल्लाह! हमारे पर्वरदिगार, और तेरी ही हम्द व सना है। इलाही! तू मुझे बख़्श दे।"

3) और (कभी नफ़्लों में) यह तस्बीह कहा करे –

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हा–नल्लाहि वबि–हम्दिही

"पाक है अल्लाह और उसी की हम्द व सना है"

4) और रुकूअ़ में यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ لَكَ رَكَعْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ خَشَعَ لَكَ
سَمْعِيْ وَبَصَرِيْ وَمُخِّيْ وَعَظْمِيْ وَعَصَبِيْ -

अल्लाहुम्म ल-क रकअ़्तु वबि-क आ-मन्तु व-ल-क अस्-लम्तु ख़-श-अ़ ल-क सम्अ़ी व-ब-सरी वमुख़्ख़ी व-अ़ज़्मी व-अ़-सबी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये मैं ने रुकूअ़ किया। और तुझी पर ईमान लाया और तेरी ही आज्ञा पालन की। और तेरे ही सामने मेरे कान, मेरी आँखें, मेरी हड्डियाँ और उस का गूदा और पट्ठे सब झुके हुये हैं।"

5) और यह कहे -

سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ

सुब्बूहुन् कुद्दूसुन् रब्बुल् मलाइ-इ-कति वर्रुहि

"तू निहायत पाक है, पाकीज़ा है, फ़रिश्तों और जिब्रील का रब है।"

6) और यह दुआ़ पढ़े -

رَكَعَ لَكَ سَوَادِىْ وَخَيَالِىْ وَاٰمَنَ بِكَ فُؤَادِىْ، اَبُوْءُ بِنِعْمَتِكَ عَلَىَّ هٰذِهٖ يَدَاىَ وَمَا جَنَيْتُ عَلٰى نَفْسِىْ۔

र-क-अ़ ल-क सवादी व-ख़्याली वआ-म-न बि-क फ़ुवादी, अबूउ बिनेअ़-मति-क अ़-लय्य हाज़िही यदा-य वमा जनैतु अ़ला नफ़्सी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मेरा बदन भी तेरे दरबार में झुका

नोट - "सुब्हा-न रब्बि-यल् अ़ज़ीमि" के अ़लावा बाक़ी दुआ़यें नफ़्ली नमाज़ों में पढ़नी चाहिये, या जब अकेला नमाज़ पढ़े, चाहे सुन्नतें हों या फ़र्ज़।

हुआ है और मेरा ख़्याल भी, और मेरा दिल तुझ पर ईमान लाया है, और मैं अपने और तेरी इस नेमत का यानी अपने दोनों हाथों का (जिन से मैं रुकूअ़ कर रहा हूँ) स्वीकार करता हूँ और (इन्ही हाथों से) जो मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म (गुनाह) किये हैं (उन को भी स्वीकार करता हूँ तू उन को माफ़ कर दे।")

7) या यह पढ़े -

سُبْحَانَ ذِی الْجَبَرُوْتِ وَالْمَلَكُوْتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ

सुब्हा-न ज़िल् जब्रुति वल् म-लकूति वल् किब्रियाइ वल् अ़ज़्-मति

"पाक है बड़ी ताक़त, बादशाहत, बड़ाई और बुज़ुर्गी का मालिक"

रुकूअ़ से उठने के बाद के क़ियाम का बयान

1) जब रुकूअ़ से खड़ा हो तो -

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समि-अ़ल्लाहु लि-मन् हमि-दहू

"अल्लाह ने उस शख़्स की (तारीफ़) सुन ली (और क़बू कर ली) जिसने उस की प्रशंसा की।"

2) इस के बाद कहे -

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

अल्लाहुम्म रब्बना ल-क-ल् हम्दु

"ऐ अल्लाह! हमारे पर्वरदिगार, तेरे ही लिये सब तारीफ़ है।"

3) या यह कहे -

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ

रब्बना व-ल-कल् हम्दु

"ऐ हमारे रब! (हम तेरी ही प्रशंसा करते हैं) और तेरे ही लिये सब तारीफ़ है।"

4) या यह कहे -

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

रब्बना ल-कल् हम्दु

"ऐ हमारे रब! तेरे ही लिये सब तारीफ़ है।"

5) और (सुन्नतों और नफ़्लों में) यह भी कहे -

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيهِ

रब्बना व-ल-कल् हम्दु हम्-दन् कसी-रन् तय्यि-बन् मुबा-र-कन् फ़ीहि

तर्जुमा - "ऐ हमारे पर्वरदिगार! (मैं तेरी तारीफ़ करता हूँ) और तेरे ही लिये पाकीज़ा, बर्कत वाली तारीफ़ें हैं।"

6) या यह कहे-

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمٰوَاتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ

مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ. اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِيْ بِالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَالْمَاءِ الْبَارِدِ اَللّٰهُمَّ طَهِّرْنِيْ مِنَ الذُّنُوْبِ وَالْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْوَسَخِ

अल्लाहुम्म ल-कल् हम्दु मिल्-अस्समावाति वमिल्-अल अर्ज़ि वमिल्-अ मा शे-त मिन् शैइम् बअ्दु, अल्लाहुम्म तहहिरनी बिस्सल्जि वल् ब-रदि वल्माइल् बारिदि+ अल्लाहुम्म तहहिरनी मि-नज़्ज़ुनूबि वल्-ख़ताया कमा यु-नक़्क़स्सौबुल् अब्-यज़ु मि-नल् व-सख़ि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये तारीफ़ है आसमानों को भर देने की मात्रा (मिक़दार) में और ज़मीन के भर देने की मात्रा में, और इन के बाद हर उस चीज़ को भर देने की मात्रा में जिस को तू (भरना) चाहे। ऐ अल्लाह! तू मुझे बर्फ़ से, ओलों से और ठन्डे पानी से पाक-साफ़ कर दे। ऐ अल्लाह! तू मुझे गुनाहों और ख़ताओं से इस प्रकार सुथरा कर दे जैसे सफ़ेद कपड़ा मैल-कुचैल से साफ़ किया जाता है।"

7) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمٰوَاتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ، اَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ اَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُلُّنَا لَكَ عَبْدٌ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ۔

अल्लाहुम्म रब्बना ल-कल् हम्दु मिल्-अस्समावाति वमिल्-अल् अर्ज़ि वमिल्-अ मा बै-नहुमा वमिल्-अ मा शि-त मिन् शैइम् बअ्दु, अह्लु स्सनाइ वल्-मज्दि अ-हक़्क़ु मा क़ा-लल् अब्दु वकुल्लुना ल-क अब्दुन् ला मानि-अ लिमा अअ्तै-त वला

मअ़ति-य लिमा मनअ्-त वला यन्-फ़ओ ज़ल् जद्दि मिन्-कल् जद्दु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! हमारे रब! तेरे ही लिये है तारीफ़ आसमानों की मात्रा में, ज़मीन की मात्रा में, और जो इन दोनों के दर्मियान (फ़ज़ा) है उस की मात्रा में, और इस के बाद हर उस चीज़ की मात्रा में जो तू चाहे। ऐ हम्द व सना और बर्जुगी व बड़ाई के मालिक! जो किसी बन्दे ने (तेरी शान में) कहा उस से अधिक के हक़दार) और हम सब तो तेरे ही बन्दे हैं। जो तू दे उस को कोई रोकने वाला नहीं, और जो तू न दे उस को कोई देने वाला नहीं, और तेरे (गुस्सा और ग़ज़ब) से किसी मालदार को उस का माल बचा नहीं सकता।"

8) या यह दुआ पढ़े-

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمٰوَاتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا بَيْنَهُمَا وَمِلْءَ مَا شِئْتَ بَعْدُ اَهْلُ الثَّنَاءِ وَاَهْلُ الْكِبْرِيَاءِ وَالْمَجْدِ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

अल्लाहुम्म रब्बना ल-कल् हम्दु मिल्-अस्समावाति वमिल्-अल् अर्ज़ि वमिल्-अ मा बै-नहुमा वमिल्-अ मा शि-त बअ़्दु अह्लुस्सनाइ व-अह्लुल् किब्रियाइ वल्-मज्दि ला मानि-अ़ लिमा अअ़्तै-त वला यन्-फ़ओ ज़ल्-जद्दि मिन-कल् जद्दु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! तेरे ही लिये तारीफ़ है आसमानों की मिक़दार में और ज़मीन की मिक़दार में और जो उन के दर्मियान है उस की मिक़दार में, और इस के बाद हर उस चीज़ की मिक़दार में जो तू चाहे। तू ही तारीफ़ के योग्य है और

तू ही बड़ाई और बज़ुर्गी का मालिक है। जो कुछ तू (किसी को) देना चाहे उसे कोई रोक नहीं सकता। और किसी माल वाले को उस का माल तुझ से नहीं बचा सकता।"

★★★

सज्दा करने के समय की दुआओं का बयान

1) सज्दा में कम से कम तीन मर्तबा कहे-

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى

सुब्हा-न रब्बि-यल् अअ़्ला

"पाक है मेरा रब जो सब से बुलन्द और बाला है।"

फिर यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْكَ لَا اُحْصِيْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिरिज़ा-क मिन् स-ख़ति-क वबिमुआ़फ़ाति-क मिन् ओ़कू-बति-क, व-अऊज़ुबि-क मिन्-क ला उह्सी सना-अन् अ़लै-क, अन्-त कमा अस्नै-त अ़ला नफ़्सि-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! बेशक मैं पनाह लेता हूँ तेरी रज़ा की तेरे गुस्से और नाराज़गी से, और तेरी माफ़ी की तेरी रज़ा (और अज़ाब) से और मैं तेरी ही पनाह लेता हूँ तेरे (गुस्सा और नाराज़गी) से। मैं तेरी तारीफ़ का हक़ अदा नहीं कर सकता, (बस) तू वैसा ही है जैसे तू ने स्वयँ अपनी प्रशंसा की है (और हमें बतलाया है)

2) या यह कहे -

اَللّٰهُمَّ لَكَ سَجَدْتُّ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِيْ
لِلَّذِيْ خَلَقَهٗ وَصَوَّرَهٗ فَاَحْسَنَ صُوَرَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ ۔
تَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ۔

अल्लाहुम्म ल-क स-जत्तु वबि-क आमन्तु व-ल-क अस्-लम्तु, स-ज-द वजहि लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व-सव्व-रहू फ़अहसना सुवरहू व-शक़्क़ सम्-अ़हू व- ब-स-रहू -तबा-र-कल्लाहु अह्-सनुल् ख़ालिक़ी-न

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैंने तेरे ही लिये सज्दा किया है, और तेरे ही ऊपर मैं ईमान लाया हूँ, और तेरा ही मैं आज्ञा कार हूँ। मेरी पेशानी ने उस (पर्वदिगार) को सज्दा किया है जिस ने उस को पैदा किया, और सूरत दी तो बड़ी अच्छी सूरत दी, (सुनने के लिये) कान बनाए (देखने के लिये) आँखें बनायीं, बड़ा ही बर्कत वाला है अल्लाह जो बेहतरीन पैदा करने वाला है।"

3) या यह दुआ पढ़े -

خَشَعَ سَمْعِيْ وَبَصَرِيْ وَدَمِيْ وَلَحْمِيْ وَعَظْمِيْ وَعَصَبِيْ وَ
مَا اسْتَقَلَّتْ بِهٖ قَدَمِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

ख़-श-अ़ समूई- व-ब-सरी व-दमी व-लह़्मी व-अ़ज़्मी व-अ़-सबी व मस्-त-क़ल्लत् बिही क़-दमी लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न

तर्जुमा - "मेरे कान और मेरी आँखें, और मेरा रक्त और मेरा गोश्त-पोस्त, और मेरी हड्डियाँ और मेरे रग-पट्ठे और जो भी (मेरा वजूद) मेरे क़दम उठाए हुए हैं, सब पूरे संसार के अल्लाह के सामने सज्दा में हैं।"

4) और यह दुआ़ पढ़े -

سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ

सुब्बूहुन् क़ुद्दूसुन् रब्बुल् मलाइ-कति वर्रूहि

"ऐ अल्लाह! तू) बहुत पाक है, बहुत पाकीज़ा है, फ़रिश्तों और जिब्रील का पर्वरदिगार है।"

5) और यह कहे -

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ

सुब्हा-नकल्लाहुम्म रब्बना वबि-हम्दि-क

"ऐ अल्लाह! ऐ हमारे पर्वरदिगार! हम तेरी पाकी (बयान करते हैं) और तेरी ही तारीफ़।"

6) और यह दुआ़ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ كُلَّهٗ دِقَّهٗ وَجِلَّهٗ وَاَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ وَعَلَانِيَتَهٗ وَسِرَّهٗ

अल्लाहुम्मग़फ़िर्ली ज़म्बी कुल्लहू दिक़्क़हू वजिल्लहू व-अव्व-लहू वआख़ि-रहू व-अ़लानि-य-तहू वसिर्रहू

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! बेशक मैं पनाह लेता हूँ तेरी रज़ा की तेरे गुस्से और नाराज़गी से, और तेरी माफ़ी की तेरी रज़ा (और अज़ाब) से और मैं तेरी ही पनाह लेता हूँ तेरे (गुस्सा और नाराज़गी) से। मैं तेरी तारीफ़ का हक़ अदा नहीं कर सकता, (बस) तू वैसा ही है जैसे तू ने स्वयँ अपनी प्रशंसा की है (और हमें बतलाया है)

2) या यह कहे -

اَللّٰهُمَّ لَكَ سَجَدْتُّ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَلَكَ اَسْلَمْتُ، سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ خَلَقَهٗ وَصَوَّرَهٗ فَاَحْسَنَ صُوَرَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ ۔ تَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ۔

अल्लाहुम्म ल-क स-जत्तु वबि-क आमन्तु व-ल-क अस्-लम्तु, स-ज-द वजहि लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व-सव्व-रहू फ़अहसना सुवरहू व-शक़्क़ सम्-अ़हू व- ब-स-रहू -तबा-र-कल्लाहु अह्-सनुल् ख़ालिक़ी-न

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैंने तेरे ही लिये सज्दा किया है, और तेरे ही ऊपर मैं ईमान लाया हूँ, और तेरा ही मैं आज्ञा कार हूँ। मेरी पेशानी ने उस (पर्वदिगार) को सज्दा किया है जिस ने उस को पैदा किया, और सूरत दी तो बड़ी अच्छी सूरत दी, (सुनने के लिये) कान बनाए (देखने के लिये) आँखें बनायीं, बड़ा ही बर्कत वाला है अल्लाह जो बेहतरीन पैदा करने वाला है।"

3) या यह दुआ पढ़े -

خَشَعَ سَمْعِيْ وَبَصَرِيْ وَدَمِيْ وَلَحْمِيْ وَعَظْمِيْ وَعَصَبِيْ وَ مَا اسْتَقَلَّتْ بِهٖ قَدَمِيْ، لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

ख़-श-अ़ सम्ई- व-ब-सरी व-दमी व-लह्मी व-अज़्मी व-अ़-सबी व मस्-त-क़ल्लत् बिही क़-दमी लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न

तर्जुमा - "मेरे कान और मेरी आँखें, और मेरा रक्त और मेरा गोश्त-पोस्त, और मेरी हड्डियाँ और मेरे रग-पट्ठे और जो भी (मेरा वजूद) मेरे क़दम उठाए हुए हैं, सब पूरे संसार के अल्लाह के सामने सज्दा में हैं।"

4) और यह दुआ़ पढ़े -

سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ

सुब्बूहुन् क़ुद्दूसुन् रब्बुल् मलाइ-कति वर्रुहि

"ऐ अल्लाह! तू) बहुत पाक है, बहुत पाकीज़ा है, फ़रिश्तों और जिब्रील का पर्वरदिगार है।"

5) और यह कहे -

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ

सुब्हा-नकल्लाहुम्म रब्बना वबि-हम्दि-क

"ऐ अल्लाह! ऐ हमारे पर्वरदिगार! हम तेरी पाकी (बयान करते हैं) और तेरी ही तारीफ़।"

6) और यह दुआ़ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ ذَنْبِيْ كُلَّهٗ دِقَّهٗ وَجِلَّهٗ وَاَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ وَعَلَانِيَتَهٗ وَسِرَّهٗ

अल्लाहुम्मग़फ़िर्ली ज़म्बी कुल्लहू दिक़्क़हू वजिल्लहू व-अव्व-लहू वआख़ि-रहू व-अ़लानि-य-तहू वसिर्रहू

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे समस्त गुनाह, छोटे-बड़े, अगले-पिछले, ज़ाहिर-पोशीदा (सब) माफ़ कर दे।"

7) और यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ سَجَدَ لَكَ سَوَادِيْ وَخَيَالِيْ وَبِكَ اٰمَنَ فُؤَادِيْ اَبُوْءُ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَهٰذَا مَا جَنَيْتُ عَلٰى نَفْسِيْ يَا عَظِيْمُ يَا عَظِيْمُ اغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ الْعَظِيْمَةَ اِلَّا الرَّبُّ الْعَظِيْمُ۔

अल्लाहुम्म स-ज-द ल-क सवादी व-ख़याली वबि-क आ-म-न फ़ुआदी अबूउ बिनेअ्-मति-क अ़लय्य वहाज़ा मा जनैतु अ़ला नफ़्सी या अ़ज़ीमु-या अ़ज़ीमुग़फ़िर्ली, फ़इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-बल् अ़ज़ी-म-त इल्लर्रब्बुल् अ़ज़ीमु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मेरा बदन भी तेरे सामने सज्दा कर रहा है, और मेरा ख़्याल भी तेरे सामने सज्दा में है, और तेरे ही ऊपर मेरा दिल ईमान लाया है। मैं स्वीकार करता हूँ अपने ऊपर तेरी नेमतों का भी। यह जो मैंने अपने ऊपर अत्याचार किया है इस का भी इक़रार करता हूँ) ऐ बड़ी रहमत वाले, ऐ बड़ी मग़्फ़िरत वाले! तू मुझे माफ़ कर दे, इसलिये कि बड़े-बड़े गुनाहों को बड़ा और बुज़ुर्ग रब ही माफ़ किया करता है।"

8) और यह दुआ पढ़े -

سُبْحَانَ ذِي الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوْتِ
سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ اَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَاَعُوْذُ
بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ جَلَّ وَجْهُكَ

सुब्हा-न ज़िल् मुल्कि वल्-म-लकूति, सुब्हा-न ज़िल्

अिज़्ज़ति वल् ज-बरूति, सुब्हा-नल् हय्यिल्लज़ी ला यमूतु अऊज़ु बि-अफ़्वि-क मिन् अिक़ाबि-क व-अऊज़ु बिरिज़ा-क मिन् स-ख़्ति-क व-अऊज़ुबि-क मिन्-क जल्ल वज्हु-क

तर्जुमा - "पाकी बयान करता हूँ मुल्क और बादशाहत के मालिक की, पाकी बयान करता हूँ इज़्ज़त और इक्तिदार के मालिक की, पाकी बयान करता हूँ उस की जो (हमेशा हमेशा ऐसा) ज़िन्दा रहने वाला है जिस के लिये (कभी) मरना नहीं है, मैं पनाह लेता हूँ तेरी मग़्फ़िरत की तेरे अज़ाब से, और तेरी रज़ा की तेरी नाराज़गी से। मैं तेरे रहम-करम की पनाह लेता हूँ तेरे ग़ज़ब और गुस्से से, (तू मुझे अपने अज़ाब और ग़ज़ब व गुस्से से महफ़ूज़ कर ले) बहुत बड़ी और बजुर्ग है तेरी ज़ात।"।

९) या यह दुआ पढ़े -

رَبِّ اَعْطِ نَفْسِیْ تَقْوٰھَا وَزَکِّھَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَکّٰھَا اَنْتَ وَلِیُّھَا وَمَوْلٰھَا اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ۔

रब्बि अअ्-त नफ़्सी तक्वाहा वज़क्किहा अन्-त ख़ैरु मन् ज़क्काहा अन्-त वलिय्युहा वमौलाहा अल्लाहुम्मग़ फ़िर्ली मा अस्-रर्तु वमा अअ्-लन्तु

तर्जुमा - "ऐ मेरे पर्वरदिगार! तू मेरे नफ़्स को उस की प्रहेज़गारी अता फ़रमा दे और उस को (तमाम बुराइयों से) पाक फ़रमा दें, तू ही उस को सब से बेहतर पाक करने वाला है, तू ही उस की बिगड़ी बनाने वाला है और उसका मौला है। ऐ अल्लाह! तू बख़्श दे जो कुछ मैंने छुप कर किया हो और जो सब के सामने किया हो।"

10) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ اَمَامِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ خَلْفِيْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ تَحْتِيْ نُوْرًا وَّاَعْظِمْ لِيْ نُوْرًا۔

अल्लाहुम्मज्-अ़ल् फ़ी क़ल्बी नू-रव वज्-अ़ल् फ़ी समई नू-रंव वज्-अल फ़ी ब-सरी नू-रव वज्-अ़ल् अमामी नू-रंव वज्-अ़ल् ख़ल्फ़ी नू-रव वज्-अ़ल् मिन् तह्ती नू-रव अअ्ज़िम ली नू-रन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे दिल में भी नूर भर दे और मेरे कानों में भी नूर भर दे, और मेरी निगाह में भी नूर भर दे और मेरे आगे भी नूर कर दे और मेरे पीछे भी नूर कर दे, और मेरे नीचे भी नूर कर दे (और मेरे ऊपर भी) और मुझे अ़ज़ीम नूर अ़ता फ़रमा।"

★

★★

सजदए-तिलावत

तिलावत के सज्दे की दुआ़ का बयान

1) तिलावत के सज्दे में कम से कम तीन मर्तबा "सुब्हा-न रब्बियल् आला" कहने के बाद बार-बार यह कलिमे पढ़े -

سَجَدَ وَجْهِيْ لِلَّذِيْ خَلَقَهٗ وَصَوَّرَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ
بِحَوْلِهٖ وَقُوَّتِهٖ فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ -

स-ज-द वज्ही-य लिल्लज़ी ख़-ल-क़हू व-सव्व-रहू व-शक्क़ सम्-अ़हू व-ब-स-रहू बिहौलिही वक़ुव्वतिही, फ़-तबा-रकल्लाहु अह्-सनुल् ख़ालिक़ी-न

तर्जुमा - "मेरे चेहरा ने उस (रब) के लिये सज्दा किया है जिस ने उस को पैदा किया और उस की (बेहतरीन इन्सानी) सूरत बनाई और अपनी ताक़त और कुव्वत से उस के कान और आँखें खोलीं। पस बड़ा ही बर्कत वाला है वह बेहतरीन पैदा करने वाला।"

2) या यह दुआ़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اكْتُبْ لِيْ عِنْدَكَ بِهَا اَجْرًا وَّضَعْ عَنِّيْ بِهَا وِزْرًا وَّاجْعَلْهَا
لِيْ عِنْدَكَ ذُخْرًا وَّتَقَبَّلْهَا مِنِّيْ كَمَا تَقَبَّلْتَهَا مِنْ عَبْدِكَ دَاؤُدَ

(عَلَيْهِ وَعَلٰى نَبِيِّنَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ)

अल्लाहुम्मक्तुब्ली अिन्द-क बिहा अज्-रव व-जअ् अन्नी बिहा विज्-रन् वज्-अल्हा ली अिन्द-क ज़ुख़्-रव व-त-क़ब्बल्हा मिन्नी कमा त-क़ब्बल्-तहा मिन् अब्दि-क दाऊ-द (अलैहि व-अला नबिय्यिनस्सलातु वस्सलामु)

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू (इस सज्दा को क़बूल फ़रमा और) इस का सवाब अपने यहाँ लिख दे और इसके सबब से तू (गुनाहों का) बोझ मुझ से दूर कर दे, और इस (सज्दा) को तू मेरे लिये अपने पास ज़ख़ीरा बना दे और तू इस (तिलावत के सज्दे) को मेरी तरफ़ से ऐसे ही क़बूल फ़रमा ले जैसे तूने अपने बन्दे से क़बूल फ़रमाया है (उन पर और हमारे नबी पर दरूद और सलाम हो)

3) जो भी सज्दा करे, नमाज़ में या नमाज़ से बाहर, तो उस में -"सुब्हा-न रब्बियल् आला" के बाद तीन मर्तबा यह दुआ माँगे

या रब्बि इग़्फ़िर् ली

يَا رَبِّ اغْفِرْلِيْ

"ऐ मेरे मौला! तू मुझ को माफ़ फ़रमा दे"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स अपनी पेशानी को सज्दा में रख कर "या रब्बि इग़्फ़िर्ली" कहता है, सर उठाने से पूर्व उस की मग़्फ़िरत हो जाती है।

★★

दोनों सज्दों के दर्मियान बैठने के समय की दुआ़ का बयान

1) जब दोनों सज्दों के दर्मियान बैठे तो यह दुआ़ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَارْحَمْنِیْ وَعَافِنِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ وَاجْبُرْنِیْ وَارْفَعْنِیْ

अल्लाहुम्मग़् फिर् ली वर्-हम्नी वआ़फ़िनी वह्दिनी वर्ज़ुक़नी वज्बुर्नी वर्-फ़ अ़नी

"ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ कर दे और मुझ पर रहम कर और मुझे अम्न और शन्ति दे और मुझे हिदायत दे और मुझे रोज़ी दे और मेरी बिगड़ी बना दे और मुझे बुलन्दी अ़ता फ़रमा।"

क़ुनूत-नाज़िला (यानी किसी आ़म मुसीबत नाज़िल होने के समय की दुआ़) का बयान

1) किसी आ़म मुसीबत जैसे, सूखा काल, वबा, दुश्मनों के आक्रमण वग़ैरह के समय यह क़ुनूति नाज़िला फ़ज्र की नमाज़ में या और जेहरी नमाज़ों में भी, आख़िरी रक्अ़त में रुकूअ़ के बाद पढ़े। अगर इमाम पढ़े तो मुक़्तदी हर जुम्ले पर आमीन कहे।

नोट -यह पूरी दुआ़ या इस का पहला हिस्सा "अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली वर्-हम्नी" अवश्य ही पढ़ना चाहिये, ताकि इस के वसीले से दो सज्दों के दर्मियान बैठने का मौक़ा लगे। आ़म तौर पर लोग दो सज्दों के दर्मियान नहीं बैठते, हालाँकि यह बैठना फ़र्ज़ है। (इदरीस)

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ فِيْمَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِيْ فِيْمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِيْ فِيْمَنْ تَوَلَّيْتَ وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا اَعْطَيْتَ وَقِنِيْ شَرَّ مَا قَضَيْتَ فَاِنَّكَ تَقْضِيْ وَلَا يُقْضٰى عَلَيْكَ وَاِنَّهٗ لَا يَذِلُّ مَنْ وَّالَيْتَ وَلَا يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ نَسْتَغْفِرُكَ وَنَتُوْبُ اِلَيْكَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ

अल्लाहुम्मह दिनी फ़ी-मन् हदै-त, वआ़फ़िनी फ़ी-मन् आ़फ़ै-त, व-त-वल्लनी फ़ी-मन् त-वल्लै-त, वबारिक् ली फ़ीमा आतै-त, वक़िनी शर्र मा क़ज़ै-त, फ़इन्न-क तक़ज़ी वला युक़ज़ा अ़लै-क, वइन्नहू ला यज़िल्लु मव्वालै-त, वला यअ़िज़्ज़ु मन् आ़दै-त, तबा-रक्-त रब्बना व-तआ़लै-त, नस्-तग़्फ़िरु-क व-न-तूबु इलै-क, व-सल्लल्लाहु अ़-लन्नबिय्यि+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुझे उन लोगों की राह दिखा जिन को तू ने राह दिखवाई है, और मुझ को आ़फ़ियत दी है, और मुझे मित्र बना ले उन लोगों में जिन को तू ने मित्र बना लिया है, और बर्कत दे मुझे उस चीज़ में जो तू ने मुझे दी है, और मुझे उस बुराई से बचा ले जो तू ने लिख दी है, क्योंकि तू ही हुक्म करता है और तेरे ऊपर हुक्म नहीं किया जा सकता, तेरा दोस्त ज़लील नहीं हो सकता और तेरा दुश्मन प्यारा नहीं हो सकता। ऐ हमारे रब तू बर्कत वाला और बुलन्द है, तुझ से ही क्षमादान माँगते हैं और तेरी ही ओर लौटते हैं, और दरूद व सलाम हो सन्देष्टा (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर।"

2) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

وَاَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِهِمْ وَانْصُرْهُمْ عَلٰى عَدُوِّكَ

وَعَدُوِّهِمْ اَللّٰهُمَّ الْعَنِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ
وَيُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيُقَاتِلُوْنَ اَوْلِيَاءَكَ اَللّٰهُمَّ خَالِفْ بَيْنَ
كَلِمَتِهِمْ وَزَلْزِلْ اَقْدَامَهُمْ وَاَنْزِلْ بِهِمْ بَأْسَكَ الَّذِيْ
لَا تَرُدُّهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ۔

अल्लाहुम्मग़् फ़िर् लना वलिल्मोमिनी-न वल् मोमिनाति, वल् मुस्लिमी-न वल् मुस्लिमाति, व-अल्लिफ़्-बै-न कुलूबिहिम्, व-अस्लिह् ज़ा-त बैनिहिम्, वन्सुरहुम् अ़ला अ़दुव्वि-क व-अ़दुव्विहिम्+अल्लाहुम्मल्-अ़निल्- क-फ़-र-तल्लज़ी-न यसुद्दू-न अ़न् सबीलि-क वयु-कज़्ज़िबू-न रुसु-ल-क वयुक़ातिलू-न औलिया-अ-क+अल्लाहुम्म ख़ालिफ़् बै-न कलि-मतिहिम् व-ज़ल्ज़िल् अक़्दा-महुम् व-अन्ज़िल् बिहिम् बा-स-कल्लज़ी ला तरुद्दुहू अ़निल् क़ौमिल् मुज्रिमी-न

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू हम को बख़्श दे और मोमिन मर्दों और मोमिन महिलाओं को बख़्श दे, और मुसलमान मर्दों और मुसलमान महिलाओं को बख़्श दे, और उन के दिलों में मुहब्बत डाल दे, और उन के कामों को सुधार दे, और अपने और उन के दुश्मनों पर उन की सहायता फ़रमा। ऐ अल्लाह! तू उन काफ़िरों पर लानत भेज जो तेरे रास्ता से लोगों को रोकते हैं और तेरे सन्देष्टाओं को झुठलाते हैं, और तेरे दोस्तों से लड़ते हैं। ऐ अल्लाह! तू उन की बातों में इख़्तिलाफ़ और फूट डाल दे और उन के क़दमों को डगमगा दे और उन की हालत को परेशान कर दे और उन के गुट को तितर-बितर कर दे और उन पर ऐसा अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमा जो मुजरिमों से तू नहीं लौटाता।"

नोट - यह दोनों दुआयें और इसके तर्जुमे वित्र की दुआओं के संदर्भ में भी गुज़र चुके हैं।

क़ादा में पढ़ने की दुआ "अत्तहिय्यात" का बयान

1) दो रक्अ़तों के बाद जब क़ादा में बैठे तो यह अत्तिहियात पढ़े –

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ
وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स–लवातु वत्तय्यिबातु, अस्सलामु अ़लै–क अय्यु–हन्नबिय्यु व–रह्–मतुल्लाहि व–ब–र– कातुहू, अस्सलामु अ़लैना व–अ़ला अ़िबादिल्ला– हिस्सालिही–न, अश्–हदु अल्लाइला–ह इल्लल्लाहु व–अश्–हदु अन्न मु–हम्म–दन् अ़ब्दुहू व–रसूलुहू

तर्जुमा – "तमाम क़ौली (पढ़ी जाने वाली) इबादतें अल्लाह के लिये हैं और तमाम अ़मली (अ़मल की जाने वाली) इबादतें और माली इबादतें (भी अल्लाह ही के लिये हैं) सलाम हो आप पर ऐ (अल्लाह के) नबी, और अल्लाह की रहमतें और बर्कतें भी (आप पर हों) और सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं है और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के बन्दे और उसके सन्देष्टा हैं।"

2) इस हदीस के बाज़ तरीक़ों में शुरू में "बिस्मिल्लाहि" आया है, इसलिये चाहे तो इस अत्तहिय्यात के शुरू में बिस्मिल्लाहि

(यानी अल्लाह के नाम के साथ और अल्लाह की सहायता के साथ) का इज़ाफ़ा करे।

3) या यह अत्तहिय्यात पढ़े -

اَلتَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ لِلّٰهِ السَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ.

अत्तहिय्यातुल् मुबा-रकातुस्स-लवातुत्तय्यिबातु लिल्लाहि अस्सलामु अ़लै-क अय्यु-हन्नबिय्यु व-रह्-मतुल्लाहि व-ब-रकातुहू अस्सलामु अ़लैना व-अ़ला अ़िबादिल्ला- हिस्सालिही-न अशहदु अंल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दर्रसूलुल्लाहि

तर्जुमा - "बर्कत वाली ज़बानी इबादतें, पाकीज़ा बदनी इबादतें सब अल्लाह के लिये हैं। ऐ नबी! सलामती हो आप पर और अल्लाह की रहमतें और बर्कतें (भी आप पर हों) सलामती हो हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और गवाही देता हूँ इस पर कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।"

4) चाहे यह अत्तहियात पढ़े -

اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ (وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ) وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ.

अत्तहिय्यातुत्तय्यिबातुस्सल–वातु लिल्लाहि अस्सलामु अलै–के अय्यु–हन्नबिय्यु व–रह्–मतुल्लाहि व–ब–रकातुहू अस्सलामु अलैना–व–अला अिबादिल्लाहिस्सालिही–न अश्–हदु अंल्लाइला–ह इल्लल्लाहु (वह्–दहू ला शरी–क लहू) व–अश्–हदु अन्न मु–हम्म–दन् अब्दुहू व–रसूलुहू+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! पाकीज़ा ज़बानी इबादतें, बदनी इबादतें सब अल्लाह के लिये हैं। ऐ नबी! सलाम हो आप पर और अल्लाह की बर्कतें, रहमतें और सलामती हों हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूँ इस पर कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं। वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, और गवाही देता हूँ इस पर कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।"

फ़ायदा – इस हदीस के बाज़ तरीक़ों (रिवायतों) में "वह्–दहू ला शरी–क लहू" नही है, इसलिये हम ने उस को ब्रेकिट में लिखा है। बाज़ रिवायतों में "वस्सलातु वल् मुल्कु" आया है। इस तरह भी पढ़ सकते हैं।

5) चाहे यह अत्तहिय्यात पढ़े –

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ الزَّاكِيَاتُ لِلّٰهِ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत्तहिय्यतु लिल्लाहिज़्ज़ाकियातु ल्लिाहित्तय्यिाबातु स–ल–वातु लिल्लाहि, अस्सलामु अलै–क अय्यु–हन्नबिय्यु व– रह्–मतुल्लाहि व–ब–रकातुहू, अस्सलामु अलैना व– अला अिबादिल्लाहिस्सालिही–न,

अश्–हदु अल्लाइला–ह इल्लल्लाहु व–अश्–हदु अन्न मु–हम्म–दन् अ़ब्दुहू व–रसूलुहू

तर्जुमा – "तमाम ज़बानी इबादतें अल्लाह के लिये हैं, तमाम पाकीज़ा आमाल भी अल्लाह के लिये ही हैं, तमाम माली और बदनी इबादतें भी अल्लाह के लिये ही हैं। ऐ नबी! आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमतें और बर्कतें। हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर भी सलामती हो। मैं गवाही देता हूँ इस पर कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही हैं और गवाही देता हूँ इस पर कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।"

6) चाहे यह अत्तहिय्यात पढ़े[1] –

بِسْمِ اللهِ وَبِاللهِ خَيْرِ الْاَسْمَآءِ، اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ،
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهٗ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ
لَّا رَيْبَ فِيْهَا اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ
اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللهِ الصّٰلِحِيْنَ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَاهْدِنِيْ

बिस्मिल्लहि वबिल्लाहि ख़ैरिल् अस्माइ, अत्तहिय्यातुत्तय्यिबातु स्स–ल–वातु लिल्लाहि, अश्–हदु अल्लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू

---

1. हदीस शरीफ़ में थोड़े–थोड़े फ़र्क़ के साथ छ: प्रकार पर अत्तहिय्यात पढ़ने का तरीक़ा आया है। इन में सब से मशहूर पहला तरीक़ा है, और आम तौर पर लोगों को याद भी है, इसी तरीक़े से नमाज़ों में पढ़ते हैं। इसका तर्जुमा ज़रूर याद कर लेना चाहिये और बाक़ी तरीक़ों और उन के तर्जुमों को भी याद करना चाहिये और कभी–कभी उन को पढ़ना भी चाहिये, ताकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक ज़बान से निकले हुए हर तरीक़े पर अ़मल हो जाये (इदरीस)

ला शरी-क लहू व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दन् अब्दुहू व-रसूलुहू, अर्-स-लहू बिल्-हक़्क़ि बशी-रंव्व-नज़ी-रन व-अन्नस्सा-अ-त आति-यतुल्लारै- ब फ़ीहा, अस्सलामु अ़लै-क अय्यु-हन्नबिय्यु व-रह्- मतुल्लाहि व-ब-रकातुहू अस्सलामु अ़लैना व-अ़ला अ़िबादिल्लाहिस्सालिही-न, अल्लाहुम्मग़ फ़िर् ली वह्दिनी+

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम से (शुरू करता हूँ) और (शब्द) अल्लाह से, जो बेहतरीन नाम है। ज़बानी, बदनी, माली इबादतें (सब) अल्लाह के लिये ही हैं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नही और मैं गवाही देता हूँ इस पर कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं, अल्लाह ने उन को सच्चा दीन देकर भेजा है (मानने वालों को) शुभ सूचना देने (न मानने वालों को) ख़बरदार करने के लिये, और यह कि क़यामत अवश्य आने वाली है, उस (के आने) में कोई शक नहीं। ऐ नबी! आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत और बर्कतें, और मुझ पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर भी सलामती हो। ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ कर दे और मुझे हिदायत दे।"

सलात (दरूद) का बयान

1) अन्तिम "क़ादा" में अत्तहिय्यात के बाद यह दरूद पढ़े-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ
وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिंव्-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लैल-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मु-हम्मदिंव्-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म वअ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिस प्रकार तू ने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर रहमत नाज़िल फ़रमाई है, बेशक तू ही हम्द-सना के लायक़, बड़ाई और बज़ुर्गी का मालिक है+ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आल पर बर्कतें नाज़िल फ़रमा, जिस प्रकार तू ने इब्राहीम और आले इब्राहीम पर बर्कतें नाज़िल फ़रमायी हैं, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़, बड़ाई और बज़ुर्गी का मालिक है।"

2) यह सब से कामिल और प्रसिद्ध दरूद है। चाहे यह

दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिंव्व-अ़ला आले मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मुहम्मदिंव्व-अ़ला आले मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उन के आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिस प्रकार तू ने इब्राहीम पर रहमत नाज़िल फ़रमायी। बेशक तू ही हम्द व सना के लायक़, बड़ाई बज़ुर्गी का मालिक् है। ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और उन के आल पर बर्कतें नाज़िल फ़रमा जैसे तू ने इब्राहीम पर बर्कत नाज़िल फ़रमायी हैं। बेशक तू ही तारीफ़ और बड़ाई-बज़ुर्गी का मालिक है।"

3) चाहे यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اٰلِ
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ
مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिंव्व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+अ़ल्लाहुम्म बारिक् अ़ला आसे मु-हम्मदिंव्व -अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद और आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर रहमत नाज़िल फ़रमा जिस प्रकार तू ने आले इब्राहीम पर नाज़िल की, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ और बुजुर्गी-बड़ाई वाला है+ ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर बर्कत नाज़िल फ़रमा जिस प्रकार तू ने इब्राहीम पर बर्कत नाज़िल फ़रमायी, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़, बड़ाई बुजुर्गी वाला है।"

4) या यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिंव्व-अ़ला अज़्वाजिही वज़ुर्रिय्यति हि कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म, वबारिक् अ़ला मु-हम्मदिंव्व-अ़ला अज़्वाजिही वज़ुर्रिय्यतिही कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) और आप की पत्नियों और आल-औलाद पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने इब्राहीम पर रहमत नाज़िल फ़रमाई है। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर और उन की पत्नियों और आल-औलाद पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने इब्राहीम पर बर्कत नाज़िल फ़रमाई है, बेशक तू ही तारीफ़ के

नोट - इस दरूद में पहले जुम्ले में "अ़ला इब्राही-म" और दूसरे जुम्ले में "अ़ला आले इब्राही-म" नहीं है।

लायक़ और बड़ाई वाला है।"

5) या यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى
اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى
اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिन् अ़ब्दि-क व-रसूलि-क कमा सल्लै-त अ़ला आले इब्राही-म वबारिक् अ़ला मु-हम्मदिंव्व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू अपने बन्दे और सन्देष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने इब्राहीम की औलाद पर रहमत नाज़िल फ़रमायी, और मुहम्मद और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की औलाद पर बर्कत नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने इब्राहीम की औलाद पर बर्कत नाज़िल फ़रमायी।"

6) चाहे यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म वबारिक् अ़ला मु-हम्मदिंव्वआलि मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आले इब्राही-म

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जैसे तू ने इब्राहीम पर नाज़िल फ़रमाई है, और बर्कत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर, जैसे तू ने इब्राहीम की आल पर बर्कत नाज़िल फ़रमायी है।"

7) चाहे यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
فِى الْعٰلَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मु-हम्मदिव्व अला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त अला आलि इब्राही-म वबारिक् अला मु-हम्मदिव्व-अला आलि मु-हम्मदिन् कमा-बा- रक्-त अला आलि इब्राही-म फ़िल् आ-लमी-न इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जिस प्रकार तू ने रहमत नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम पर, और बर्कत नाज़िल फ़रमा, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जिस तरह बर्कत नाज़िल फ़रमायी तू ने इब्राहीम की आल पर तमाम जहानों में, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ और बड़ाई और बुज़ुर्गी वाला है।"

8) चाहे यह दुरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِالنَّبِىِّ الْاُمِّىِّ وَعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدِ نِالنَّبِىِّ الْاُمِّىِّ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى

إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अलामुहम्मदिनिन्नबीइल उम्मीयि[1] वअ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राहीमा वबारिक अ़ला मुहम्मदिन्नीन्नबीय्यिल उम्मीयि कमा बारक्-त अ़ला इब्रा-ही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू उम्मी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लेहि व सल्लम और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर रहमत नाज़िल फ़रमा जैसे तू ने इब्राहीम पर रहमत नाज़िल फ़रमायी, और उम्मी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ऐसे ही बर्कत नाज़िल फ़रमा जैसे तू ने इब्राहीम पर बर्कत नाज़िल फ़रमायी, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ और बजुर्गी बड़ाई वाला है।"

९) चाहे यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
صَلَّيْتَ وَبَارَكْتَ عَلٰى إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिंव वबारिक् अ़ला मु-हम्मदिंव-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त व बारक-त

---

1. 'उम्मी' का अर्थ है "बे पढ़ा-लिखा" अर्थात जिस ने किसी से लिखना-पढ़ना न सीखा हो। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लक़ब "नबी उम्मी" तौरात और इन्जील में भी बयान है। आप ने अपने पूरे जीवन में अगलों और पिछलों के ज्ञान का मालिक होने के बावजूद किसी मनुष्य या किसी और से पढ़ना-लिखना नहीं सीखा। आप को समस्त ज्ञान अल्लाह की तरफ़ से दिये गये थे। (इदरीस)

अ़ला इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मुहम्मद और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की औलाद पर बर्कत नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने इब्राहीम पर रहमत और बर्कत नाज़िल फ़रमायी, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़, बज़ुर्गी-बड़ाई वाला है।"

10) या यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ وَبَارَكْتَ عَلٰٓى
إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ۔

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिंव्व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त वबा-रक्-त अ़ला इब्राही-म, इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने इब्राहीम पर रहमत और बर्कत नाज़िल फ़रमायी, बेशक तू बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़, बज़ुर्गी और बुड़ाई वाला है।"

11) चाहे यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰٓى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰٓى إِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ إِبْرَاهِيْمَ إِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिनिन्नबिय्यिल् उम्मीयि वअ़ला

आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आलि इब्राही-म, वबारिक् अ़ला मु- हम्मदिनिन्नबीयिल् उम्मीयि व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि एक आदमी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और आपके सामने घुटनों के बल बैठ गया और कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर सलाम भेजने का तरीक़ा तो हमें (अत्तहिय्यात) में मालूम हो गया। जब हम आप पर नमाज़ में दरूद भेजना चाहें तो किस प्रकार भेजें? अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चुप रहे (और देर तक चुप बैठे रहे) यहाँ तक कि हमारा जी चाहने लगा कि अच्छा होता कि यह शख़्स आप से प्रश्न न करता। फिर आप ने फ़रमाया: जब तुम दरूद भेजो तो यह कहा करो, और ऊपर की दुआ़ बताई।

12) चाहे यह दरूद पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِىِّ الْاُمِّيِّ وَاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदि निन्नबीइल उम्मीयि व-अज़्वाजिही उम्महातिल् मोमिनी-न व ज़ुर्रिय्यतिही व-अह्लि बैतिही कमा सल्लै-त अ़ला इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू उम्मी नबी मुहम्मद पर, उन की पत्नियों पर जो मोमिनों की माएँ हैं और उन की औलाद पर और अहले बैत पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने आले इब्राहीम पर रहमत नाज़िल फ़रमायी, बेशक तू ही हम्द व सना के लायक़ और

बड़ाई व बुज़ुर्गी वाला है।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया– जो शख़्स यह पसन्द करे कि हम पर यानी अहले बैत पर जब दुरूद भेजे तो (इस के सवाब का) पूरा पैमाना भर कर ले, तो यह दरूद भेजे (और दरूद न० 12 को बताया)

13) कोई सा भी दुरूद पढ़े ' अन्त में इस दुआ का इज़ाफ़ा कर दे-

اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

अल्लाहुम्मअनज़िलहुल् मक़्-अ़-दल् मु-क़र्-ब ज़िन्द-क यौ-मल् क़ियामति

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू इन को क़यामत के दिन अपने पास तक़र्रुब का ख़ास स्थान अता कर दीजिये।"

★★★

---

1. अहादीस में अत्तहिय्यात की तरह दरूद शरीफ़ की भी बहुत सी सूरतें आयीं हैं। जो मशहूर और जाना-पहचाना दरूद है, उस का तर्जुमा ज़रूर याद कर लेना चाहिये और समझ कर दरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। बाक़ी 12 तरीक़े और उन के तर्जुमे भी याद कर लेने चाहिये और कभी-कभी उन को भी पढ़ना चाहिये, ख़ास कर नफ़्लों में, ताकि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुबारक ज़बान से निकले हुये हर दरूद को पढ़ लेने का गर्व प्राप्त हो जाये। (इदरीस)

दरूद शरीफ़ के बाद पढ़ने की दुआओं का बयान

1) दरूद शरीफ़ के बाद सलाम फेरने से पहले जो दिल चाहे दुआ माँगे (वेहतर यह है कि) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से साबित दुआयें या कुरआनी दुआओं में से जो दुआ हाल (स्तिथि) के मुवाफ़िक़ हो वह माँगे और इस के वाद यह तअ़व्वुज़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अ़ज़ाबि ज-हन्न-म, वमिन् अ़ज़ाबिल् क़ब्रि, वमिन् फ़ित्-नतिल् महया वल् म-माति, वमिन् शर्रि फ़ित्-नतिल् मसीहिद्दज्जालि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ जहन्नुम के अ़ज़ाब से और क़ब्र के अ़ज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत के फ़ितनों से और काने दज्जाल के फ़ितनों से (तू मुझे इन सब से बचा ले)

2) या यह तअ़व्वुज़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ

الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ

اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْمَاْثَمِ وَالْمَغْرَمِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि, व-अऊज़ुबि-क मिन् फ़ित्-नतिल् मसीहिद्दज्जालि, व-अऊज़ुबि-क मिन् फ़ित्-नतिल् मह्या वल् ममाति, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् मासिमि वल्-मग़-रमि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं पनाह लेता हूँ क़ब्र के अज़ाब से और तेरी पनाह लेता हूँ काने दज्जाल के फ़ितने से, और तेरी पनाह लेता हूँ ज़िन्दगी और मौत के (और समस्त) फ़ितनों से। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ हर गुनाह और क़र्ज़ से (तू मुझे इन से बचाले)

3) या यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ.

अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली मा क़द्दम्तु वमा अख़्ख़र्तु वमा असरर्तु वमा अअ्-लन्तु वमा अस्-रफ़्तु, वमा अन्-त अअ्-लमु बिही मिन्नी, अन्-तल् मु-क़द्दिमु व-अन्-तल् मु-अख़्ख़िरु लाइला-ह इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू बख़्श दे मेरे वह पाप भी जो मैंने पहले किये और जो पीछे किये और वह भी जो मैंने छुपा कर किये और जो खुले तौर पर किये, और वह फ़ुज़ूल ख़र्चियाँ भी जो मैंने की हैं, और वह पाप भी जिनको तू मुझ से अधिक जानता है। तू ही आगे बढ़ाने वाला है और तू ही पीछे रखने

वाला है, तेरे अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं।"

4) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम्म इन्नी ज़-लम्तु नफ़्सी ज़ुल्-मन् कसी-रंव वला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त फ़ग़्फ़िर्ली मग़्फ़ि-र-तम्मिन् अ़िनदि-क वर्-हम्नी इन्न-क अन्-तल् ग़फ़ूरुर्रहीमु+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! बेशक मैंने अपनी जान पर बहुत-बहुत अत्याचार (गुनाह) किये हैं और तेरे सिवा कोई गुनाह बख़्श नहीं सकता, पस तू अपनी ख़ास मग़फ़िरत से मेरे तमाम गुनाह बख़्श दे और मुझ पर रहम फ़रमा। बेशक तू ही बहुत माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।"

5) या यह दुआ माँगे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِيْ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ اَنْ تَغْفِرَ لِيْ ذُنُوْبِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क या अल्लाहुल् अ-हदुस्स-मदुल्लज़ी लम् यलिद् वलम् यू-लद् व-लम् यकुल्लहू कु-फु-वन् अ-हदुन् अन् तग़फ़ि-र ली ज़ुनूबी, इन्न-क अन्-तल् ग़फ़ूरुर्रहीमु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ ही से सवाल करता हूँ, ऐ अकेले और बेनियाज़ अल्लाह! जिस की न कोई औलाद है और न वह किसी से पैदा हुआ, और न कोई उस का हमसर है, तू मेरे सब गुनाह बख़्श दे,

बेशक तू ही बहुत बख़्शने वाला और बहुत रहम करने वाला है।"

6) और यह दुआ माँगे –

اَللّٰهُمَّ حَاسِبْنِيْ حِسَابًا يَّسِيْرًا

अल्लाहुम्म हासिब्नी हिसा-बय्यसी-रन्

"ऐ अल्लाह! मेरा हिसाब आसानी से लीजियो"

7) या यह दुआ माँगे –

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अज़ाबि ज-हन्न-म व-अऊज़ुबि-क मिन् अज़ाबिल् कब्रि व-अऊज़ुबि-क मिन् फ़ित्-नतिल् मसीहिद्दज्जालि व-अऊज़ुबि-क मिन्-फ़ितनतिल् मह्या वल् ममाति+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह लेता हूँ जहन्नुम के अज़ाब से, और मैं तेरी पनाह लेता हूँ क़ब्र के अज़ाब से, और मैं तेरी पनाह लेता हूँ काने दज्जाल के फ़ितने से, और मैं तेरी पनाह लेता हूँ ज़िन्दगी और मौत के (और तमाम) फ़ितनों से।"

8) और यह दुआ माँगे –

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَئَلَكَ بِهٖ عِبَادُكَ الصَّالِحُوْنَ وَاَعُوْذُبِكَ

مِنْ شَرِّ مَا عَاذَ مِنْهُ عِبَادُكَ الصَّالِحُوْنَ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ رَبَّنَا اِنَّنَا اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا
تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क मि–नल् ख़ैरि कुल्लिही म अलिमतु मिन्हू वमा लम् अअ्–लम्, अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क मिन् ख़ैरि– मा स–अ–ल–क बिही अ़िबादु–कस्सालिहू–न, व–अऊज़ुबि–क मिन् शर्रि मा आ–ज़ मिन्हु अ़िबादु–कस्सालिहू–न +रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह–स–न–तव्व फ़िल् आख़ि–रति ह–स–न–तव्वक़िना अ़ज़ा–बन्नारि+रब्बना इन्नना आ–मन्ना फ़ग़फ़िर् लना ज़ुनू–बना वक़िना अ़ज़ा–बन्नारि+रब्बना वआति–ना मा व–अ़त्तना अ़ला रुसुलि–क वला तुख़्ज़िना यौ–मल् क़िया–मति इन्न–क ला तुख़्लिफ़ुल् मीआ़–द+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हर प्रकार की ख़ैर और भलाई माँगता हूँ जो मैं जानता हूँ वह भी और जो नही जानता वह भी। और ऐ अल्लाह! तुझ से हर वह ख़ैर और भलाई माँगता हूँ जो तेरे नेक बन्दों ने तुझ से माँगी हो। और मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जिस की बुराई से पनाह माँगा हो तेरे नेक बन्दों ने। ऐ हमारे रब! तू हमें दुनिया में भी अच्छाई (और भलाई और नेकी) अ़ता फ़रमा, और आख़िरत में भी हर अच्छाई (और ख़ूबी) अ़ता फ़रमा, और हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाइयो। ऐ हमारे पर्वरदिगार! बेशक हम ईमान ले आये पस तू बख़्श दे और जिन (नेमतों) के वादे तू ने अपने रसूलों के ज़रीए किये हैं वह सब पूरे फ़रमा और क़यामत के दिन

हमें रुस्वा न करना, बेशक तू (कभी) वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।"

9) यह इस्तिगफ़ार जिस का नाम "सय्यिदुल् इस्तिगफ़ार" है ज़रूर पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ

अल्लाहुम्म अन्-त रब्बी ला इला-ह इल्ला अन्-त ख़-लक्-तनी व-अना अ़ब्दु-क व-अना अ़ला अ़ह्दि-क ववअ़्दि-क मस-त-तअ़्तु, अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा सनअ़्तु अबूउ ल-क बिनेअ़्-मति-क अ़-लय्य व-अबूउ बि-ज़म्बी, फ़ग़्फ़िर् ली, इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ही मेरा पर्वरदिगार है, तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तू ने ही मुझे पैदा किया है और मैं तेरा ही बन्दा हूँ, और मैं भरसक (तेरी इबादत और इताअ़त के) वादे पर क़ायम हूँ। जो मैं ने (बुरे कर्म) किये हैं उन की बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ (तू माफ़ कर दे) और तेरी जो नेमतें मुझ पर हैं उन का भी इक़रार करता हूँ और अपने गुनाहों को भी स्वीकार करता हूँ, पस तू मुझे बख़्श दे, इसलिये कि तेरे सिवा कोई भी गुनाहों को नहीं बख़्श सकता।"

★★★

सलाम फेरने के बाद पढ़ने की दुआओं का बयान

1) जब सलाम फेरे तो यह कलिमए तौहीद पढ़े -

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اَللّٰهُمَّ لَا مَانِعَ لِمَآ اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ-

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु, युह्यी वयुमीतु, बि-यदिहिल् ख़ैरु व-हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर + अल्लाहुम्म ला मानि-अ़ लिमा अअ़तैता वला मोअ़्ति-य लिमा म-मनअ़्-त वला यन्-फ़ओ ज़ल् जद्दि मिन्-कल् जद्दु+

तर्जुमा - "अल्लाह के अ़लावा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं है, वह अकेला है, कोई उस का साझी नहीं, उसी का (सारा) मुल्क है और उसी के लिये (सब) तारीफ़ है, वही जिलाता और मारता है, उसी के हाथ में (हर प्रकार की) ख़ैर (और भलाई) है, और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है+ ऐ अल्लाह! जो तू दे उस को कोई मना करने वाला नहीं और जो तू न दे उसे कोई देने वाला नहीं, और किसी माल वाले को उस का माल (तेरी पकड़ से) नहीं बचा सकता।"

2) या यह कलिमा तीन मर्तबा और कम से कम एक बार ज़रूर पढ़े -

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा - " अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई साझी नहीं, उस का (यह तमाम) मुल्क है और उसी के लिये (तमाम तारीफ़ है और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।"

3) और उस के बाद यह पढ़े -

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَانَعْبُدُ اِلَّآ اِيَّاهُ، لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ، لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْكَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ۔

लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि, लाइला-ह इल्लल्लाहु वला नअ़्बुदु इल्ला इय्याहु लहुन्निअ़्-मतु व-लहुल् फ़ज़्लु व-लहुस्सनाउल् ह-सनु, लाइला-ह इल्लल्लाहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न वलौ करि-हल् काफ़िरू-न

तर्जुमा - "(किसी क़ौम की भी) ताक़त व क़ुव्वत अल्लाह (की सहायता) के बिना (प्राप्त) नहीं हो सकती, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और हम उस के अ़लावा किसी और की इबादत (व इताअ़त) नहीं करते, उसी की (दी हुयी

सब) नेमतें हैं और उसी का (हम पर) फ़ज़्ल और एहसान है और उसी की (सब) अच्छी तारीफ़ें हैं, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (हम तो) पूरे इख़्लास के साथ केवल उसी के दीन के मानने वाले हैं अगर्चे काफ़िरों को बुरा लगे।"

4) या तीन मर्तबा पढ़े -

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

अस्-तग़्फ़िरुल्ला-ह

"मैं अल्लाह से माफ़ी माँगता हूँ"

और इस के बाद यह पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ، وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

अल्लाहुम्म अन्-तस्सलामु वमिन्-कस्सलामु तबा-रक्-त या ज़ल् जलालि वल् इक्रामि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ही सलामती (देने) वाला है और तेरी ही ओर से ये सलामती (प्राप्त होती) है, बड़ा बर्कत वाला है तू ऐ बड़ाई और जलाल के मालिक और इकराम और एहसान (करने) वाले।"

5) इस के बाद 33 मर्तबा "सुब्हा-नल्लाहि", 33 मर्तबा "वल्-हम्दु लिल्लाहि", 33 मर्तबा "वल्लाहु अक्-बरु" (कुल 99 मर्तबा) और एक मर्तबा "लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु" पढ़े।

6) या 11 मर्तबा "सुब्हा-नल्लाहि", 11 मर्तबा "वल् हम्दु लिल्लाहि", 11 मर्तबा "वल्लाहु अक्-बरु", कुल 33 मर्तबा कहे।

7) या दस-दस मर्तबा तीनों कलिमे कहे।

फ़ायदा - जिस शख़्स ने 33 मर्तबा सुब्हा-नल्लाहि, 33 मर्तबा वल् हम्दु लिल्लाहि, 33 मर्तबा वल्लाहु अक्-बरू और एक मर्तबा लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुन् (हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद) पढ़ लिया उस के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे अगर्चे वह समुद्र के झागों की तरह (बेशुमार) हों।

8) या 33 मर्तबा सुब्हा-नल्लाहि, 33 मर्तबा अल्-हम्दु लिल्लाहि, और 34 मर्तबा अल्लाहु अक्-बरु पढ़े।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नमाज़ के बाद पढ़े जाने वाले चन्द कलिमात हैं जिन का हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ने वाला कभी नामुराद (और वन्चित) नहीं होता, वह कलिमात यह हैं : 33 मर्तबा तस्बीह, 33 मर्तबा तह्मीद, और 34 मर्तबा तक्बीर (यानी ऊपर के 100 कलिमे)

9) हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद 100 मर्तबा "सुब्हा-नल्लाहि", 100 मर्तबा "अल्लाहु-अक्-बरु", 100 मर्तबा "लाइला-ह इल्लल्लाहु" और 100 मर्तबा "अल्-हम्दु लिल्लाहि" पढ़ा करे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस शख़्स ने 100 मर्तबा तस्बीह के कलिमे, 100 मतबा तक्बीर के, 100 मर्तबा तहलील के और 100 मर्तबा तहमीद के कलिमे कह लिये, उस के तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे अगर्चे वह समुद्र के झाग के बराबर हों।

10) (अगर ज़्यादा न पढ़ सके तो) 25-25 मर्तबा चारों कलिमों को पढ़ लिया करे (यानी कुल 100 मर्तबा)

11) या 33 मर्तबा "सुब्हा-नल्लाहि" 33 मर्तबा "अल्हम्दु लिल्लाहि", 34 मर्तबा "अल्लाहुअक्-बरु" और 10 मर्तबा "लाइला-ह इल्लल्लाहु" (यानी कुल 110 मर्तबा) पढ़े।

12) या "अल्लाहु अक्-बरु" भी 33 मर्तबा ही पढ़े।

13) या 100 मर्तबा "तस्बीह" 100 मर्तबा "तह्मीद" 100 मर्तबा "तक्बीर" और इस के बाद (एक मर्तबा) "ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला-बिल्लाहि" पढ़े।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर समुद्र के झाग के बराबर भी गुनाह होंगे तब भी यह कलिमात उन को मिटा देंगे [1]

14) हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल् कुर्सी ज़रूर पढ़े-

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِی
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ
یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ
اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ

अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल् क़य्यूमु ला ताखुज़ुहू

---

1. इन् कलिमाति तय्यिबात की संख्या में इख़्तिलाफ़ इसी मक़सद को ज़ाहिर करता है कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद इन को जितना भी पढ़ना संभव हो पढ़ना ज़रूर चाहिये। कम से कम दस मर्तबा तो ज़रूर ही पढ़ना चाहिये, क्योंकि इस में 2-3 मिनट से अधिक नहीं लगते। बड़े अभाग्य हैं वह लोग जो इस से महरूम (वन्चित) रहते हैं (इदरीस)

शि-न तुव्वला नौमुन् लहू माफ़िस्समावाति वमा फ़िल् अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यश्-फ़ओ ओ़िन्-दहू इल्ला बिइज़निही, यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् वमा ख़ल्-फ़हुम् वला युहीतू-न बिशैइम् मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्-अर्-ज़ वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहु-वल् अ़लिय्युल् अ़ज़ीमु+

तर्जुमा - "अल्लाह वह (पाक ज़ात) है जिस के अ़लावा कोई भी पूजे जाने के लायक़ नहीं, वह (हमेशा) ज़िन्दा रहने (और जिन्दगी देने) वाला है (ज़मीन और आकाश और समस्त संसार को) क़ायम रखने (और उन का संचालन करने) वाला है, न उस को ऊँघ आ सकती है न नींद, उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, कौन है जो उस के दरबार में उस की अनुमति के बिना (किसी की) शिफ़ारिश कर सके? वह तो जो कुछ लोगों के सामने (हो रहा) है और जो कुछ उन के पीछे (मरने के बाद) होने वाला है, सब जानता है और लोग उस के ज्ञान (और मालूमात) में से किसी चीज़ पर भी पहुँच नहीं रखते मगर जितना वह खुद चाहे (उससे उस को आगाह कर दे) उस की (बादशाहत की) कुर्सी आसमान और ज़मीन सब पर फैली हुयी है, और आसमान और ज़मीन की सुरक्षा उस पर तनिक भर भी कठिन नही है और वह (सब से) ऊँचा (यानी बुलन्द और) बड़ाई वाला है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल् कुर्सी पढ़ लेता है उस के जन्नत में दाख़िल होने से इस के सिवा और कोई चीज़ रुकावट नहीं कि वह अभी ज़िन्दा है मरा नहीं (और मरते ही जन्नत में जायेगा)

दूसरी रिवायत में है कि वह शख़्स दूसरी नमाज़ तक

अल्लाह पाक की हिफ़ाज़त में रहता है – सुब्हानल्लाह!

15) और हर नमाज़ के बाद सूरः फ़–लक़ और सूरः नास भी अवश्य पढ़ा करे।

16) और अन्त में यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ اَنْ اُرَدَّ اِلٰٓی اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْیَا وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि–क मि–नल् जुब्नि व–अऊज़ुबि–क मिन् अन् उरद्दा इला अर्–ज़लिल् उमुरि व–अऊज़ुबि–क मिन् फ़ित्–नतिद्दुन्या व–अऊज़ुबि–क मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ बुज़दिली (और बेग़ैरती) से, और मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ इससे कि निकम्मी और रज़ील (नाकारा) आयु को पहुंचूँ, और मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ दुनिया के फ़ितनों से, और मैं पनाह माँगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से।"

17) और यह दुआ पढ़े –

رَبِّ قِنِیْ عَذَابَکَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَکَ یَا تَجْمَعُ عِبَادَکَ

रब्बि क़िनी अज़ा–ब–क यौ–म तब्–अ़सु अ़िबा–द–क या तज्–मअ़ु अ़िबा–द–क (यानी "तब्–अ़सु" के स्थान पर "तज़्–मअ़ु" कहे)

तर्जुमा – "ऐ मेरे पर्वरदिगार! तू मुझे अपने दन्ड से बचाइयो जिस दिन तू अपने बन्दों को (क़ब्र से) उठाये, या तू अपने बन्दों को (हश्र के मैदान में) इकट्ठा करे।"

18) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ

अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली वर्-हम्नी वह्दिनी वर्ज़ुक़्नी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ फ़रमा दे और मेरे ऊपर रहम फ़रमा और मुझे हिदायत दे और मुझे (हलाल) रोज़ी दे।"

19) और यह पढ़े -

اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَئِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ اَعِذْنِيْ مِنْ حَرِّ النَّارِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

अल्लाहुम्म रब्ब जिब्राई-ल वमीकाई-ल वइस्राफ़ी-ल अइ़ज़्नी मिन् हर्रिन्नारि व-अ़ज़ाबिल् क़ब्रि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील के रब! तू मुझे जहन्नुम की शिद्दत से और क़ब्र के दन्ड से पनाह दे।"

20) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَسْرَفْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली मा क़द्दम्तु वमा अख़्ख़र्तु वमा अस्-रर्तु वमा अअ़्-लन्तु वमा अस्-रफ़्तु वमा अन्-त अअ़्-लमु बिही मिन्नी, अन्-तल् मु-क़द्दिमु व-अन्-तल् मु-अख़्ख़िरु, लाइला-ह इल्ला अन्-त

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू मेरे अगले और पिछले किये

हुये, और छुपा कर किये हुये, और खुले आम किये हुये, (तमाम गुनाह) और जो मैंने लापरवाहियाँ की हैं और वह (गुनाह और लापरवाहियाँ) जिन को तू मुझ से अधिक जानता है, सब माफ़ फ़रमा दे, तू ही आगे बढ़ाने वाला है और तू ही पीछे हटाने वाला है, कोई माबूद नहीं तेरे सिवा।"

21) और यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

अल्लाहुम्म अअिन्नी अला ज़िक्रि-क वशुक्रि-क वहुस्नि अिबा-दति-क

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह तू अपना ज़िक्र करने पर और शुक्र अदा करने पर और अपनी बेहतरीन इबादत करने पर मेरी सहायता फ़रमा।"

22) और यह दुआ माँगे :

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ اَنَا شَهِيْدٌ اَنَّكَ الرَّبُّ وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ
لَكَ، اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ اَنَا شَهِيْدٌ اَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ، اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ اَنَا شَهِيْدٌ اَنَّ
الْعِبَادَ كُلَّهُمْ اِخْوَةٌ، اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ اِجْعَلْنِيْ مُخْلِصًا
لَّكَ وَاَهْلِيْ فِيْ كُلِّ سَاعَةٍ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ
اِسْمَعْ وَاسْتَجِبْ اَللّٰهُ الْاَكْبَرُ الْاَكْبَرُ حَسْبِيَ اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ الْاَكْبَرُ

अल्लाहुम्म रब्बना व-रब्ब कुल्लि शैइन् अना शहीदुन अन्न-करब्बु वह्-द-क, ला शरी-क ल-क, अल्लाहुम्म रब्बना

व-रब्ब कुल्लि शैइन् अना शहीदुन् अन्न मु-हम्मदन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व-सल्ल-म अ़ब्दु-क व-रसूलु-क, अल्लाहुम्म रब्बना व-रब्ब कुल्लि शैइन् अना शहीदुन् अन्नल् अ़िबाद कुल्लुहुम् इख़्-वतुन् + अल्लाहुम्म रब्बना व-रब्ब कुल्लि शैइन् इज्-अ़ल्नी मुख़्लि-स ल्ल-क व-अह्ली फ़ी कुल्लि सा-अ़तिन् फ़िद्दुन्या वल् आख़ि-रति ज़ल्- जलालि वल् इक्रामि, इस्मअ़् वस्-तजिब्, अल्लाहुल् अक्-बरुल् अक्-बरु, हसबि-यल्लाहु वनिअ़्-मल् वकीलु, अल्लाहु अक्-बरुल् अक्-बरु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! ऐ हमारे पर्वरदिगार और हर चीज़ के पर्वरदिगार! मैं इस बात का गवाह हूँ कि तू ही अकेला (समस्त संसार का) रब है, तेरा कोई शरीक नहीं। ऐ अल्लाह! हमारे और हर वस्तु की परवरिश करने वाले, मैं (इस का भी) गवाह हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तेरे बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह! हमारे और हर चीज़ के पालने वाले! मैं गवाह हूँ इसका कि तमाम बन्दे परस्पर भाइ-भाई हैं। ऐ अल्लाह! ऐ हमारे और हर चीज़ के पर्वरदिगार! तू मुझे और मेरे बाल-बच्चों को हर समय अपना मुख़्लिस (बन्दा) बनाये रख, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। ऐ बड़ाई और जलाल और इनाम के मालिक! तू (मेरी प्रार्थना) सुन ले और क़बूल फ़रमाले। अल्लाह सब से बड़ा है सब से बड़ा, अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है और वह बड़ी अच्छी बिगड़ी बनाने वाला है, अल्लाह सब से बड़ा है, सब से बड़ा।"

23) या यह दुआ माँगे -

اللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् कुफ़्रि वल् फ़क़्रि

व-अज़ाबिल् क़ब्रि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं पनाह माँगता हूँ कुफ़्र से, तन्गदस्ती से और क़ब्र के अज़ाब से।"

24) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ جَعَلْتَهٗ عِصْمَةَ اَمْرِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ الَّتِیْ جَعَلْتَ فِیْهَا مَعَاشِیْ، اَللّٰهُمَّ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَاَعُوْذُ بِعَفْوِكَ مِنْ نِقْمَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ، لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ (وَلَا رَادَّ لِمَا قَضَیْتَ) وَلَا یَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

अल्लाहुम्म अस्लिह् ली दीनि-यल्लज़ी ज-अ़ल्-तहू अ़िस-म-त अम्री व-अस्लिह् ली दुन्या-यल्लती ज-अ़ल्-त फ़ीहा मआशी, अल्लाहुम्म अऊज़ु बिरिज़ा-क मिन् स-ख़ति-क व-अऊज़ु बि-अ़फ़्वि-क मिन् निक़्-मति-क व-अऊज़ु बि-क मिन्-क, ला मानि-अ़ लिमा अअ़्तै-त वला मौअ़ति-य लिमा म-मनअ़-त (वला राद्द लिमा क़ज़ै-त) वला यन्-फ़अ़ु ज़ल् जद्दि मिन्-कल् जद्दु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे दीन की इस्लाह करदे जिस को तू ने मेरे (हर दीनी-दुन्यावी) काम की सुरक्षा का ज़रीया बनाया है, और मेरी दुनिया को भी सुधार दे जिस में तू ने मेरी रोज़ी मुक़र्रर की है। ऐ अल्लाह! मैं तेरी रज़ा की पनाह लेता हूँ तेरी नाराज़गी से, और तेरी माफ़ी की पनाह लेता हूँ तेरी सज़ा से, और तेरी ही पनाह लेता हूँ तेरी (नाराज़गी से) जो तू अ़ता फ़रमाये, उस को कोई रोक नहीं सकता और जो तू मना कर दे (यानी न दे) उस को कोई दे नहीं सकता। और तेरे फ़ैसला को

कोई रद्द नहीं कर सकता, और किसी माल वाले को उस का माल तुझ से नही बचा सकता।"

25) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ خَطِئِيْ وَعَمَدِيْ اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَالْاَخْلَاقِ لَا يَهْدِيْ لِصَالِحِهَا وَلَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ

अल्लाहुम्मग़ फ़िर् ली ख़-तई व-अ़-मदी, अल्लाहुम्मह्‌दिनी लिसालिहिल् अअ़्मालि वल् अख़्लाक़ि ला यह्दी लिसालिहिहा वला यस्‌रिफ़ु सय्यिअहा इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरी नादानी से और जान बूझ कर किये हुये (बुरे कामों) को माफ़ कर दे, और ऐ अल्लाह! तू मुझे नेक आमाल और (अच्छे) आचारण की हिदायत दे (इसलिए कि) अच्छे कामों और अच्छे अख़्लाक़ की हिदायत तेरे सिवा और कोई नहीं दे सकता, और बुरे कामों और बुरे अख़्लाक़ से तेरे सिवा और कोई नहीं रोक सकता।"

26) या यह दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अ़ज़ाबिन्नारि व-अ़ज़ाबिल क़ब्रि वमिन् फ़ित्-नतिल् मह्या वल्-ममाति वमिन् शर्रिल् मसीहि द्दज्जालि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ जहन्नुम के अ़ज़ाब से और क़ब्र के अ़ज़ाब से और ज़िन्दगी और

मौत के फ़ितनों से और काने दज्जाल की बुराई से।"

27) और यह दुआ माँगे-

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ خَطَايَايَ وَذُنُوْبِيْ كُلَّهَا، اَللّٰهُمَّ انْعَشْنِيْ وَاَحْيِنِيْ وَارْزُقْنِيْ وَاهْدِنِيْ لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَالْاَخْلَاقِ اِنَّهٗ لَا يَهْدِيْ لِصَالِحِهَا وَلَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ۔

अल्लाहुम्मग़ फ़िर् ली ख़ताया-य वज़ुनूबी कुल्लहा, अल्लाहुम्मन् अ़श्नी व-अह्यिनी वर्ज़ुक़्नी वह्दिनी लिसालिहिल् अ अ़्मालि वल् अख़लाक़ि इन्नहू ला यह्दी लिसालिहिहा वला यस्रिफ़ु सय्यि-अहा इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरी तमाम ख़तायें और गुनाह बख़्श दे। ऐ अल्लाह! तू मुझे बुलन्दी अ़ता फ़रमा और (अच्छी) ज़िन्दगी दे और (हलाल) रोज़ी दे और अच्छे अख़्लाक़ और आमाल की हिदायत दे। बेशक अच्छे आमाल और अख़्लाक़ की हिदायत भी तेरे सिवा कोई नहीं दे सकता, और बुरे आमाल और अख़्लाक़ से भी तेरे सिवा कोई नही बचा सकता।"

28) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِيْ دِيْنِيْ وَوَسِّعْ لِيْ فِيْ دَارِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ رِزْقِيْ

अल्लाहुम्म अस्लिह् ली दीनी व-वस्से ली फ़ी दारी वबारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे दीन की इस्लाह कर दे और मेरे घर में कुशादगी अ़ता फ़रमा दे और मेरी रोज़ी में बर्कत दे।"

29) और अन्त में यह दुआ पढ़े -

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلَامٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल् अिज़्ज़ति अम्मा यसिफू-न व-सलामुन् अ़-लल् मुर्-सली-न वल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमी-न

तर्जुमा - "तेरा रब, इज़्ज़त और बड़ाई का मालिक रब, इन तमाम (बुरी) बातों से पाक-साफ़ है जो लोग उस की शान में बयान करते हैं। और (दरूद व सलाम हो तमाम रसूलों पर और हर प्रकार की तारीफ़ें तमाम संसार के पर्वरदिगार अल्लाह के लिये (ख़ास) हैं।"

30) जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो सीधा हाथ सर पर फेर कर यह दुआ पढ़े[1]-

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ، اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ
عَنِّى الْهَمَّ وَالْحُزْنَ.

बिस् मिल्लाहिल्लज़ी लाइला-ह इल्ला हु-वर्रह्मानुर्रहीमु, अल्लाहुम्म अज़्हिब् अ़न्निल् हम्म वल् हुज़्-न

----

1. फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह 30 दुआयें और ज़िक्र हदीसों में आये हैं। बेहतर तो यह है कि इन सब को याद कर ले और किसी दिन कोई, किसी दिन कोई पढ़ा करें ताकि सब पर अ़मल हो जाये और सब के सवाब और दुनिया-आख़िरत की बर्कतें हासिल हों, वर्ना अपने समय और हालात के मुनासिब जितना संभव हो याद कर ले और पाबन्दी से पढ़ा करे, इसलिये कि दुआ की क़बूलियत का बेहतरीन समय फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के बाद है। (इदरीस)

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम से (आरंभ करता हूँ) जिस के अलावा और कोई इबादत के लायक़ नही, वह बड़ा मेहरबान और बहुत रहम करने वाला है। ऐ अल्लाह! तू हर ग़म और परेशानी को मुझ से दूर फ़रमा दे।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब भी नमाज़ पढ़ते और फ़ारिग़ होते तो दायाँ हाथ सर पर फेर कर ऊपर की दुआ को पढ़ा करते।

ख़ास सुबह की नमाज़ के बाद पढ़ने की दुआयें

1) सुबह की नमाज़ के बाद (जिस प्रकार नमाज़ में बैठते हैं, उसी प्रकार) दोनों घुटनों के बल बैठे हुये बात करने से पहले 10 मर्तबा, या 100 मर्तबा यह कलिमए-तौहीद पढ़े-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ
وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु युह्यी वयुमीतु बि-यदिहिल्ख़ैरु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा - "अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, और उसी की सब तारीफ़ है, वही जिलाता और मारता है, उसी के हाथ में (हर प्रकार का) ख़ैर और भलाई है, और हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है।"

2) और यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْئَلُكَ رِزْقًا طَيِّبًا وَّعِلْمًا نَّافِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क रिज़्-क़न् तय्यि-बन् वअ़िल्-मन् नाफ़ि-अ़न् व-अ़-म-लन् मु-त- क़ब्ब-लन्+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हलाल रोज़ी और नफ़ा

देने वाला इल्म और मक़बूल अमल का प्रश्न करता हूँ (तू मुझे यह तीनों नेमतें अता फ़रमा दे।"

ख़ास मग़रिब और फ़ज्र की नमाज़ के बाद पढ़ने की दुआएं

1) मग़रिब और फ़ज्र दोनों नमाज़ों के बाद दस मर्तबा यह पढ़े ।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू लाशरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु युह्यी वयुमीतु बि-यदिहिल् ख़ैरु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

2) और उसी स्थान पर उसी प्रकार (जैसे नमाज़ में बैठते हैं) बैठे-बैठे बात करने से पहले सात मर्तबा पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म अजिर्नी मि-नन्नारि

"ऐ अल्लाह! मुझे जहन्नम की आग से बचाइयो"

चाश्त की नमाज़ के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ بِكَ اُحَاوِلُ وَبِكَ اُصَاوِلُ وَبِكَ اُقَاتِلُ

1) अल्लाहुम्म बि-क उहाविलु वबि-क उसाविलु वबि-क उक़ातिलु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तेरी ही सहायता से (हर अच्छे काम का) इरादा करता हूँ, तेरी ही सहायता से (दुश्मन पर) आक्रमण करता हूँ, और तेरी ही सहायता से (जिहाद के मैदान में दुश्मनों से) जंग करता हूँ।"

खाने की दावत ख़ास कर दावते वलीमा के वक़्त की दुआ और आदाब

1) जब किसी के यहाँ खाने-पीने की दावत ख़ास कर वलीमा की दावत हो तो ज़रूर जाये (और अगर कोई रुकावट न हो तो खाने में भी शरीक हो) और अगर रोज़े से हो तो मजबूरी बयान कर दे (और घर के किसी कोने में दो रक्अ़त) नमाज़ पढ़े और घर वाले के लिये बर्कत की दुआ माँगे और कहे-

بَارَكَ اللّٰهُ لَكُمْ

बा-र-कल्लाहु लकुम्

"अल्लाह तुम्हें बर्कत अ़ता फ़रमायें"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि

1) जब कोई भी मुसलमान भाई खाने की दावत करे (और कोई मजबूरी न हो तो) उस को क़बूल करे।

2) ख़ास कर वलीमे की दावत को ज़रूर क़बूल करना चाहिये।

3) अगर रोज़ा (या कोई और मजबूरी) हो तो दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े और घर वालों के लिये बर्कत की दुआ करे।

रोज़ा इफ़्तार के समय की दुआएं

1) जब रोज़ा खोले तो यह दुआ करे -

ذَهَبَ الظَّمَأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوْقُ وَثَبَتَ الْأَجْرُ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

ज़-ह-बज़्ज़मउओ वब्-तल्लतिल् ओ़रूक़ु व-स-ब-तल् अजरु इन् शा-अल्लाहु

तर्जुमा - "प्यास जाती रही, और रगें सैराब होगयीं और इन् शाअल्लाह (रोज़ा का) सवाब यक़ीनी हो गया।"

2) इस के बाद दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ بِرَحْمَتِكَ الَّتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ اَنْ تَغْفِرَ لِيْ ذُنُوْبِيْ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क बि-रह्-मति-कल्लती वसि-अ़त् कुल्ल शैइन् अन् तग़्फ़ि-र ली ज़ुनूबी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तेरी उस रहमत से जो हर चीज़ को घेरे हुये है तुझ से प्रश्न करता हूँ कि तू मेरे (तमाम) गुनाह बख़्श दे। "

3) अगर किसी और (दोस्त या रिश्तेदार) के यहां रोज़ा खोले तो यह दुआ करे -

اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّآئِمُوْنَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ

अफ़्-त-र अ़िन-दकुमुस्साइ मू-न व-अ-क-ल तआ़-मकुमुल् अब्रारु व-सल्लत् अ़लैकुमुल् मलाइ-कतु

तर्जुमा - "अल्लाह करे (इसी प्रकार) तुम्हारे यहाँ रोज़ादार लोग रोज़ा खोलें और नेक लोग तुम्हारा खाना खायें और फ़रिश्ते

तुम्हारे लिये रहमत की दुआ करें।"

खाना सामने आने, खाना, खाने से फ़ारिग़ होने के आदाब और दुआएं

1) जब खाना सामने आ जाये तो -

بِسْمِ اللهِ

बिस्मिल्लाहि (अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ)

कहे और दायें हाथ से, अपने सामने से खायें, खाना अकेले-अकेले न खायें, बल्कि साथ बैठ कर खायें।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि :

1) जिस खाने पर बिस्मिल्लाह न पढ़ी जाये, शैतान उस पर क़ब्ज़ा कर लेता है।

2) एक और हदीस में आया है कि सहाबा रज़ि0 ने पूछा - ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! हम खाना तो खाते हैं मगर पेट नहीं भरता। आप ने फ़रमाया - तो शायद तुम अलग-अलग बैठ कर खाते होगें। सहाबा ने कहा - जी हाँ (यही बात है) आप ने फ़रमाया : तुम एक साथ बैठ कर खाना खाया करो और "बिस्मिल्लाह" पढ़ लिया करो तो अल्लाह पाक बर्कत अ़ता फ़रमायेंगे।

3) एक और हदीस में आया है कि - एक यहूदी महिला ने जो ज़हर (विष) मिला हुआ बकरी का गोश्त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को हदिया में पेश किया था (आप ने सहाबा के साथ बैठ कर उस का गोश्त खाया था उस समय)

सहाबा को हुक्म दिया कि "बिस्मिल्लाह" पढ़ कर खाओ। चुनान्चे जिन सहाबा ने (उस का गोशत) खाया, उन में से किसी को भी नुक़्सान नहीं पहुँचा।

2) अगर किसी दावत में मज़ेदार (स्वादिष्ट) खाना खाये तो खाना खाने से पहले

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व-अ़ला ब-र-कतिल्लाहि

"अल्लाह के नाम के साथ और अल्लाह की दी हुयी बर्कत पर (हम यह खाना खाते हैं)

कहे और पेट भर जाने के बाद यह दुआ पढ़े-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ هُوَ اَشْبَعَنَا وَاَرْوَانَا وَاَنْعَمَ عَلَيْنَا وَاَفْضَلَ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हु-व अश्-ब-अ़-ना वअर्वा-ना व-अन्-अ़-म अ़लैना व-अफ़्-ज़-ल

तर्जुमा - "उस अल्लाह तआ़ला का (लाख-लाख) शुक्र है जिसने हमें आसूदा किया और पेट भरा और हम पर यह इनाम फ़रमाया।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में एक घटना (हादसे) का ज़िक्र आया है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि० अबुल् है-सम नाम के एक सहाबी के घर दावत खाने गये और वहाँ पहुँचकर (पहले) ताज़ी खजूरें खायीं, इस के बाद (भुना हुआ) गोश्त खाया और ठन्डा पानी पिया तो इस पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया -

"यही हैं वह नेमतें जिन के बारे में क़यामत के दिन तुम से सवाल किया जायेगा।"

यह बात सहाबा को बहुत भारी लगी तो आप ने फ़रमाया- जब तुम्हें ऐसी चीज़ें (खाने को) मिला करें तो

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى بَرَكَةِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व-अ़ला ब-र-कतिल्लाहि

पढ़ लिया करो और पेट भर जाने के बाद ऊपर की दुआ़ के साथ शुक्र अदा कर लिया करो तो (तुम्हारी) यह (शुक्र गुज़ारी) उस नेमत का बदल हो जायेगी (और नेमतों का हक़ अदा हो जायेगा)

3) अगर खाना शुरू करते समय "बिस्मिल्लाहि" पढ़ना याद न रहे तो जिस समय याद आये कहे :

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ

बिस्मिल्लाहि अव्व-लहू वआख़ि-रहू

"अल्लाह के नाम के साथ अव्वल में भी, आख़िर में भी"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - अगर खाना शुरू करते समय "बिस्मिल्लाहि" पढ़ना भूल जाये तो जब याद आये "बिस्मिल्लाहि अव्व-लहू व-आख़ि-रहू" कह ले।

★★★

किसी कोढ़ी (या छूत वाली बीमारी के मरीज़) के साथ खाना खाने के समय की दुआ

1) अगर किसी कोढ़ी या छूत की बीमारी वाले शख़्स के साथ खाना खाना पड़े तो यह दुआ पढ़ ले-

بِسْمِ اللّٰهِ ثِقَةً بِاللّٰهِ وَتَوَكُّلًا عَلَيْهِ

बिस्मिल्लाहि सि-क़-तम् बिल्लाहि व-त-वक्कु-लन् अ़लैहि

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम से और अल्लाह पर ही भरोसा और सहारा कर के (तेरे साथ खाना शुरू करता हूँ)

आ़म तौर पर खाना खाने के लिए बैठने के समय की दुआ़एं

1) जब खाना खाने के लिये बैठे तो यह दुआ़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَاَطْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ

अल्लाहुम्म बारिक् लना फ़ीहि व-अत्अ़िम्ना ख़ै-रम्मिन्हु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू इस खाने में बर्कत नाज़िल फ़रमा और इस से भी बेहतर खाना खिला -

2) अगर दूध हो तो यह दुआ़ करे -

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

अल्लाहुम्म बारिक् लना फ़ीहि वज़िद्ना मिन्हु

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू इस दूध में बर्कत अता फ़रमा और इस से ज़्यादा अता कर।"

3) कोई भी चीज़ खाए या पिये तो इस पर –

अल–हम्दुलिल्लाहि (अल्लाह का शुक्र है) कहे।

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला उस बन्दे से खुश होते हैं जो कुछ खाये तो "अल्–हम्दु लिल्लाहि" कहे और पिये तो "अल्–हम्दु लिल्लाहि" कहे।

खाना खाने से फ़ारिग़ होने के बाद की दुआएं

1) जब खाना खा चुके तो यह दुआ पढ़े –

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مُوَدَّعٍ
وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا

अल्–हम्दु लिल्लाहि हम्–दन् कसी–रन् तय्यि–बन् मुबा–र–कन् फ़ीहि ग़ै–र मक्फ़िय्यिन् वला मुवद्दइन वला मुस्–तग़–नन् अन्हु रब्बना

तर्जुमा – "अल्लाह तआला का शुक्र है बहुत–बहुत और पाकीज़ा और बर्कत वाला शुक्र, न इस (खाने) से किफ़ायत की जा सकती है और न इस को छोड़ा ही जा सकता है, न इस से बेनियाज़ हुआ जा सकता है। ऐ हमारे पर्वरदिगार! (तू इस शुक्र को कबूल फ़रमा ले)

2) या यह दुआ पढ़े –

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَفَانَا وَاَرْوَانَا غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَّلَا مَكْفُوْرٍ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कफ़ाना व-अरवाना ग़ै-र मक्फ़िय्यिन वला मक्फ़ूरिन्

तर्जुमा - "शुक्र है अल्लाह तआला का जिस ने हमें किफ़ायत की (यानी ख़ूब अधिक खाने को दिया) और सैराब किया। न इस (खाने) को छोड़ा जा सकता है (कि ज़रूरत न रहे) और न ही नाशुक्री की जासकती है।"

3) या यह दुआ पढ़े-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्-अ़-मना व-सक़ाना व-ज-अ़ल्ना मि-नल् मुस्लिमी-न

तर्जुमा - "शुक्र है अल्लाह तआला का जिस ने हमें खिलाया-पिलाया और हमें मुसलमान बनाया।"

4) या यह दुआ पढ़े -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَ وَسَقٰى وَسَوَّغَهٗ وَجَعَلَ لَهٗ مَخْرَجًا

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्-अ़-म व-सक़ा वसव्व-ग़हू व-ज-अ़-ल लहू मख़-र-जन्

तर्जुमा - "शुक्र है अल्लाह तआला का जिस ने खिलाया-पिलाया और उसको पचने वाला बनाया और उसके निकलने का रास्ता बनाया (कि वह आसानी से शौच की राह से निकल जाता है)

5) या यह दुआ पढ़े -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ هٰذَا الطَّعَامَ وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्-अ़-मनी हा-ज़त्तआ़-म व-र-ज़-क़नीहि मिन् ग़ैरि हौलिम्मिन्नी वला क़ुव्वतिन्

तर्जुमा – "शुक्र है अल्लाह तआ़ला का जिसने मुझे यह खाना खिलाया, और मेरी ताक़त और क़ुव्वत के बिना मुझे यह अ़ता फ़रमाया –

6) और जब हाथ धोए तो यह दुआ़ माँगे –

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یُطْعِمُ وَلَا یُطْعَمُ مَنَّ عَلَیْنَا فَهَدَانَا وَاَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكُلَّ بَلَاءٍ حَسَنٍ اَبْلَانَا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ غَیْرَ مُوَدَّعٍ وَّلَا مُكَافَاٍ وَّلَا مَكْفُوْرٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَ مِنَ الطَّعَامِ وَسَقٰى مِنَ الشَّرَابِ وَكَسٰى مِنَ الْعُرْیِ وَهَدٰی مِنَ الضَّلَالَةِ وَبَصَّرَ مِنَ الْعَمٰى وَفَضَّلَ عَلٰى كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ۔

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी युतअ़िमु वला युत्-अ़मु, मन्न अ़लैना फ़-हदाना व-अत्-अ़-मना व-सक़ाना वकुल्ल बलाइन् ह-सनिन् अब्लाना, अल्-हम्दु लिल्लाहि ग़ै-र मु-वद्दइन् वला मुकाफ़ाइन् वला मक्फ़ूरिन् वला मुस्-तग़- नन् अ़न्हु+अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्-अ़-म मि-नत्तआ़मि व-सक़ा मि-नश्शराबि व-कसा मि-नल् उ़रयि व-हदा मि-नज़्ज़ला-लति व-बस्स-र मि-नल् उ़मयि व-फ़ज़्ज़-ल अ़ला कसीरिन् मिम्मन् ख़-ल-क़ तफ़ज़ी-लन्+ अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न

तर्जुमा – "शुक्र है अल्लाह पाक का जो (अपने बन्दों

को तो) खिलाता है स्वँय नहीं खाता, उस ने हम पर एहसान फ़रमाया कि हमें (सच्चे दीन की) हिदायत दी और खिलाया-पिलाया और हर अच्छी नेमत से हमें नवाज़ा। सब तारीफ़ अल्लाह के लिये हैं जिस को कभी छोड़ा नहीं जा सकता, न उस का बदला दिया जा सकता है, न नाशुक्री की जा सकती है और न बेतवज्जुही की जा सकती है। शुक्र है अल्लाह तआ़ला का जिस ने (पेट भर कर) खाना खिलाया (जी भर कर) पानी पिलाया, और बदन छुपाने के लिये कपड़े दिये, गुमराही से (बचा कर) हिदायत दी, (कुफ़्र के) अन्धेपन से (बचा कर ईमान की) आँख अ़ता फ़रमायी और बहुत सी मख़्लूक़ पर (हमें) स्पष्ट फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमायी। तमाम शुक्र (और तारीफ़) सारे जहान के रब के लिये ही है।"

7) यह दुआ़ माँगे -

اللّٰهُمَّ أَشْبَعْتَ وَأَرْوَيْتَ فَهَنِّئْنَا وَرَزَقْتَنَا فَأَكْثَرْتَ وَأَطَبْتَ فَزِدْنَا

अल्लाहुम्म अशबअ़-त व-अर्वै-त फ़-हन्नेना व-र-ज़क़्-तना फ़-अक्-सर्-त व-अ-तब्-त फ़ज़िद्ना

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ने ही पेट भरा और तू ने ही सैराब किया, पस तू ही हमारे लिये (इस को) स्वादिष्ट बना दे, और तू ने ही हमें रोज़ी दी और बहुत दिया और बहुत उम्दा दिया, पस तू ही और अधिक अ़ता फ़रमा।"

खाना खिलाने वालों के लिये दुआ़एँ

1) खाना खिलाने वालों और खाने वालों के लिये यह दुआ़ करे -

اللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ فَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ

अल्लाहुम्म बारिक् लहुम् फ़ीमा र-ज़क्-तहुम फ़गफ़िर् लहुम व-रहमहुम

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ने जो रोज़ी उन को दी है उस में और बर्कत दे, और फिर उन को माफ़ कर दे और उन पर रहम कर।"

2) यह दुआ करे -

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ

अल्लाहुम्म अत्‌इम् मन् अत्-अ-मनी वस्‌कि मन् सक़ानी

तर्जुमा - "इलाही! जिस ने मुझे खिलाया तू उस को खिला और जिसने मुझे पिलाया तू उसे पिला।"

कोई वस्तु पहनने के समय की दुआ

1) जब कोई चीज़ भी पहने तो यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِهٖ وَخَیْرِ مَا هُوَ لَهٗ وَ
اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا هُوَ لَهٗ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन् ख़ैरिही व ख़ैरि मा हु-व लहू व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिही व-शर्रि मा हु-व लहू

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से उस की भलाई का और जिस उद्देश्य के लिये यह है, उस की भलाई का प्रश्न करता हूँ, और उस की बुराई से जिस उद्देश्य के लिये यह है, पनाह माँगता हूँ।"

नया कपड़ा पहनने के समय की दुआ

1) अगर नया कपड़ा पहने तो कपड़े का नाम जैसे, पगड़ी, कमीज़ वगैरह ले कर यह दुआ माँगे-

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ اَسْئَلُكَ خَيْرَهٗ وَخَيْرَ مَا صُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهٗ.

अल्लाहुम्म ल-कल् हम्दु, अन्-त कसौ-तनीहि, अस्-अलु-क ख़ै-रहू वख़ै-र मा सुनि-अ़लहू, व- अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिही व-शर्रि मा सुनि-अ़ लहू

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तेरा (बहुत-बहुत) शुक्र है, तू ने ही मुझे यह ----पहनाया है। मैं तुझ ही से इस की भलाई का और जिस मक्सद के लिये बनाया गया है उस की भलाई का प्रश्न करता हूँ, और उस की बुराई से जिस मक्सद के लिये बनाई गयी है पनाह माँगता हूँ।"

2) या यह दुआ माँगे -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ كَسَانِيْ مَا اُوَارِيْ بِهٖ عَوْرَتِيْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِيْ حَيَاتِيْ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औरती व-अ-त-जम्मलु बिही फ़ी हयाती

तर्जुमा - "शुक्र है अल्लाह पाक का जिसने मुझे वह कपड़े पहनाए जिस से मैं अपनी शर्मगाह ढाँकता हूँ और अपनी ज़िन्दगी में उन से ज़ीनत (सुन्दरता) प्राप्त करता हूँ।"

3) या यह दुआ माँगे -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी हाज़ा व-र-ज़-क़नीहि मिन् ग़ैरि हौलिम्मिन्नी वला क़ुव्वतिन्

तर्जुमा - "शुक्र है अल्लाह पाक का जिसने मुझे यह पहनाया और बिना मेरी कुव्वत और ताक़त के यह मुझ को अ़ता फ़रमाया।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस शख़्स ने यह दुआ़ माँग कर नया कपड़ा पहना, उस के अगले-पिछले सब गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे।

दूसरे शख़्स को नया कपड़ा पहने हुए देख कर दुआ़ करे

1) अपने किसी मित्र और संबन्धी वग़ैरह को नया कपड़ा पहने हुये देख कर यह दुआ़ दे -

تُبْلِیْ وَیُخْلِفُ اللّٰهُ

तुब्ली वयुख़्लिफ़ुल्लाहु

"पहनो और फाड़ो, अल्लाह तुम्हें और दे"

2) या यह दुआ़ पढ़े -

اَبْلِ وَاَخْلِقْ ثُمَّ اَبْلِ وَاَخْلِقْ ثُمَّ اَبْلِ وَاَخْلِقْ

अब्लि वख़्लिक़् सुम्म ब्लि वख़्लिक़् सुम्म ब्लि वख़्लिक़्

"पहनो और फाड़ो, फिर और पहनो और फाड़ो फिर और

पहनों और फाड़ो।"

कपड़े उतारने के समय की दुआ

1) जब कपड़े उतारे तो "बिस्मिल्लाहि" कहे -

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - "बिस्मिल्लाह" जिन्नात (और शैतानों) की आँखों और इन्सान के दर्मियान पर्दा है (यानी जिन्नात नन्गे न देख सकेंगे)

★★★

इस्तिख़ारा की दुआएं

1) जब किसी अहम और गंभीर काम के करने का इरादा हो तो दो रक्अत नफ़्ल नमाज़ पढ़े और उस के बाद यह दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ، وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ
مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ، فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَاۤ اَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلَاۤ اَعْلَمُ،
وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ، اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ
لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ - اَوْ عَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِهٖ
فَاقْدِرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ، وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا
الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ - اَوْ عَاجِلِ اَمْرِیْ وَ
اٰجِلِهٖ - فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ، وَاقْدِرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ كَانَ
ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ -

अल्लाहुम्म इन्नी अस्‌-तख़ीरु-क बिअ़िल्मि-क, व-अस्‌-तक़्दिरु-क बिक़ुद्‌-रति-क, व-अस्‌-अलु-क मिन्‌ फ़ज़्लि-कल्‌ अ़ज़ीमि, फ़इन्न-क तक़्दिरु वला अक़्दिरु, व तअ्‌-लमु वला अअ्‌-लमु, व-अन्‌-त अ़ल्लामुल्‌ ग़ुयूबि+ अल्लाहुम्म इन्‌ कुन्‌-त तअ्‌-लमु अन्न हा-ज़ल्‌ अम्‌-र ख़ैरुन्‌ ली फ़ी दीनी व-मआ़शी व-आ़क़ि-बति अम्‌री, औ आ़जिलि अम्‌री वआजिलिही फ़क़्दिर्हु ली व-यस्सिर्हु ली सुम्म बारिक्‌ ली फ़ीहि+वइन्‌ कुन्‌-त ता-लमु अन्न हा-ज़ल्‌ अम्‌-र शर्रुल्ली फ़ी दीनी व-मआ़शी वआ़क़ि-बाति अम्‌री, औ आ़जिलि अम्‌री व आजिलिही, फ़स्‌रिफ़्हु अ़न्नी वस्‌रिफ़्नी

अनहु, वक़्दिर् लि-यल् ख़ै-र हैसु का-न सुम्मर्ज़िनी बिही।

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तेरे इल्म के ज़रीए तुझ से बेहतरी तलब करता हूँ, और तेरी क़ुदरत के ज़रीए क़ुदरत तलब करता हूँ, और तेरे फ़ज़्ल और इनाम का तुझ से प्रश्न करता हूँ, इसलिये कि तू तो (हर काम की) क़ुदरत रखता है और मैं (किसी काम की भी) क़ुदरत नहीं रखता, और तू तो (सब कुछ) जानता है और मैं (कुछ) नहीं जानता, और तू ही पोशीदा (बातों) को भली-भाँति जानता है। ऐ अल्लाह! अगर तुझे मालूम है कि यह काम मेरे हक़ में मेरे दीन के एतबार से, दुनिया के एतबार से और अन्त के एतबार से, या मेरी दुनियावी ज़िन्दगी के एतबार से, और आख़िरत की ज़िन्दगी के एतबार से, मेरे हक़ में बेहतर है, तो तू उस को मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और सरल कर दे, फिर उस में मेरे लिये बर्कत भी दे दे। और तुझे मालूम है कि यह काम मेरे दीन के एतबार से, दुनिया के एतबार से और अन्त के एतबार से, या मेरी दुनियावी ज़िन्दगी के एतबार से, और आख़िरत की ज़िन्दगी के एतबार से, मेरे हक़ में बेहतर नहीं है तो इस काम को मुझ से दूर कर दे और मुझे इस काम से दूर कर दे और जहाँ भी (जिस काम में भी) मेरे लिये बेहतरी हो उस को मुझे अता फ़रमा दे और फिर मुझे उस से राज़ी कर दे।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि दोनों जगह "हा-ज़ल् अम्-र" के स्थान पर अपनी ज़रूरत का नाम ले (जिस के लिये इस्तिख़ारा करता है)

और बाज़ हदीस में दोनों जगह "अन्न हा-ज़ल् अम्-र" की जगह "इन् का-न हाज़ल् अम्रु" (यानी अगर यह काम) आया है। अर्थ दोनों के एक ही हैं। इसी प्रकार अन्त में "सुम्म

अर्ज़िनी बिही" के स्थान पर "व-रज़्ज़िनी बिही" आया है, अर्थ दोनों के एक ही हैं, जिस प्रकार चाहे पढ़ ले। इसी प्रकार दोनों जगह "फ़ीदीनी" के बाद "व-मआ़दी" भी आया है।

2) या "अन्न हा-ज़ल् अम्-र" के बाद यह अल्फ़ाज़ पढ़े-

خَيْرًا لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَخَيْرًا لِّيْ فِيْ مَعِيْشَتِيْ وَخَيْرًا لِّيْ فِيْ عَاقِبَةِ اَمْرِيْ فَاقْدُرْهُ لِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَاِنْ كَانَ غَيْرُ ذٰلِكَ خَيْرًا لِّيْ فَاقْدُرْ لِيَ الْخَيْرَ حَيْثُمَا كَانَ وَرَضِّنِيْ بِقَدَرِكَ۔

ख़ै-रल्ली फ़ी दीनी वख़ै-रल्ली फ़ी मओ़-शती वख़ै-रल्ली फ़ी आ़क़ि-बति अम्री फ़क़दिरहु ली वबारिक् ली फ़ीहि, वइन् का-न ग़ै-रू ज़ालि-क ख़ै-रल्ली फ़क़दिर् लि-यल् ख़ै-र हैसुमा का-न व-रज़्ज़िनी बि-क़-दरि-क

तर्जुमा - "अगर यह काम मेरे हक़ में मेरे दीन के एतबार से बेहतर हो और मेरी दुनियावी ज़िन्दगी के एतबार से बेहतर हो, और मेरे अन्जाम के एतबार से बेहतर हो तो तू उस को मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और उस में बर्कत दे, और अगर इस के सिवा और कुछ मेरे लिये बेहतर हो तो मेरी बेहतरी जहाँ भी हो (और जिस काम में हो) मुक़द्दर फ़रमा दे और मुझे अपनी तजवीज़ (पसन्द) पर राज़ी फ़रमा दे।"

3) या इसी के साथ आख़िर में "वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" का इज़ाफ़ा कर दे।

4) या "अस्-तक़्दिरु-क बिक़ुद्-रति-क" के बाद यह भी कहे -

وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ فَإِنَّهُمَا بِيَدِكَ لَا يَمْلِكُهُمَا أَحَدٌ سِوَاكَ

व-अस्-अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क व-रह्-मति-क फ़इन्नहुमा बि-यदि-क ला यम्लिकुहुमा अ-हदुन् सिवा-क

तर्जुमा - "और मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल और रहमत का प्रश्न करता हूँ इसलिये कि यह दोनों केवल तेरे हाथ में हैं, तेरे सिवा और कोई इन का मालिक नहीं है।"

5) अन्त में ("आक़ि-बतु अम्री" के बाद) यह कहे -

فَوَفِّقْهُ وَسَهِّلْهُ وَإِنْ كَانَ غَيْرُ ذٰلِكَ خَيْرًا لِّي

فَوَفِّقْنِي لِلْخَيْرِ حَيْثُ كَانَ

फ़-वफ़्फ़िक़नी लिल्-ख़ैरि हैसु का-न

"पस इस की तौफ़ीक़ दे दे और सरल कर दे, और इस के अ़लावा और कुछ मेरे लिये बेहतर हो तो तू ख़ैर की जहाँ भी हो मुझे तौफ़ीक़ देदे।"

शादी के लिए इसतिख़ारा की दुआ़

1) अगर किसी (बालिका या महिला) से विवाह करने का इरादा हो तो (प्रथम तो) संदेश या मँगनी का किसी से बयान न करे, फिर खूब अच्छी तरह वुज़ू कर के जितनी नफ़्लें हो सके पढ़े, फिर ख़ूब अल्लाह तआ़ला की प्रशंसा और उस की बज़ुर्गी और बड़ाई को बयान करे और इसके बाद यह दुआ़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ

فَإِنْ رَأَيْتَ أَنَّ فِيْ فُلَانَةٍ وَيُسَمِّيْهَا بِاسْمِهَا خَيْرًا لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَ

دُنْيَایَ وَاٰخِرَتِیْ فَاقْدِرْهَا لِیْ وَاِنْ کَانَ غَیْرُهَا خَیْرًا مِّنْهَا فِیْ دِیْنِیْ وَاٰخِرَتِیْ فَاقْدِرْهَا لِیْ۔

अल्लाहुम्म इन्न-क तक़दिरु वला अक़दिरु, व तअ्-लमु वला अअ्-लमु व-अन्-त अ़ल्लामुल् ग़ुयूबि, फ़इन् रऐ-त अन्न फ़ी फ़ला-नतिन्-युसम्मीहा बिइस्मिहा ख़ैरल्ली फ़ी दीनी वदुन्या-य वआख़ि-रती फ़क़दिर्हा ली वइन् का-न ग़ैरुहा ख़ैरम्मिन्हा फ़ी दीनी वआख़ि-रती फ़क़्दिर्हा ली

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ही (हर चीज़ पर) क़ुदरत रखने वाला है, और मैं तो (किसी चीज़ पर भी) क़ुदरत नही रखता हूँ, और तू (सब कुछ) जानता है और मैं (कुछ) नहीं जानता, बेशक तू ही ग़ैब की बातों को खूब जानता है कि फ़लाँ (लड़की या महिला और इस स्थान पर उस का नाम ले) में मेरे लिये मेरे दीन के एतबार से, दुनिया के एतबार से, और आख़िरत के एतबार से बेहतरी हो, तो उस को मेरे लिये मुक़द्दर फ़रमा दे, और अगर उस के अ़लावा और कोई (लड़की या महिला) मेरे हक़ में, मेरे दीन के, और आख़िरत के एतबार से उस से बेहतर हो तो उस को मेरे लिये मुक़द्दर फ़रमा दे।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह से इस्तिख़ारा करना आदम की औलाद के लिये सौभाग्य की बात है और अल्लाह से इस्तिख़ारा न करना उस के दुर्भाग्य की बात है।

★★★

निकाह का खुत्बा

1) और अगर किसी का ख़ुत्बा पढाये तो निम्न (नीचे लिखा) खुत्बा पढ़े-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ
اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَ
مَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ
لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ يَا اَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ
الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ
بَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ
تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ
اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ يَا اَيُّهَا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَ
يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا

अल्-हम्दु लिल्लाहि नह्-मदुहू व-नस्-तअ़ीनुहू व-नस्-तग़फ़िरुहू व-नऊज़ु बिल्लाहि मिन् शुरूरि अन्फ़ुसिना वमिन् सय्यिआति अअ़्मालिना मय्यह्दिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्ल लहू व-मय्युज़्लिल्हु फ़ला हादि-य लहू, व-अश्-हदु अंल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू व-अश्-हदु अन्न

मु-हम्म-दन् अ़ब्दुहू व-रसूलुहू+

या-अय्यु-हन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम मिन्नफ़्सिंव्वाहि-दतिंव् व-ख़-ल-क़ मिन्हा ज़ौ-जहा व-बस्स मिन्हुमा रिजा-लन् कसी-रव्वंनिसा-अन्, वत्तक़ुल्ला-हल्लज़ी तसा-अलू-न बिही वल्-अर्हा-म, इन्नल्ला-ह का-न अ़लैकुम् रक़ीबा+

या अय्यु-हल्लज़ी-न आ-मनुत्तक़ुल्ला-ह हक़्क़ तुक़ातिही वला तमूतुन्न इल्ला व-अन्तुम्मुस्लिमू-न+

या अय्यु-हल्लज़ी-न आ-मनुत्तक़ुल्ला-ह वक़ूलू क़ौ-लन सदी-दन् युस्लिह् लकुम् अअ़्मा-लकुम व-यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम् व-मंय्युतिअ़िल्ला-ह व-रसू-लहू फ़-क़द् फ़ा-ज़ फ़ौ-ज़न् अ़ज़ीमा+

तर्जुमा - " सारी तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये हैं, हम उसी की प्रशंसा करते हैं और उसी से मदद माँगते हैं और उसी से माफ़ी चाहते हैं। और अपने नफ़्सों की शरारतों से और अपने बुरे कर्मों से अल्लाह की पनाह माँगते हैं। जिस को अल्लाह ने हिदायत दी उस को कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिस को उसने गुमराह क़रार दे दिया उस को कोई हिदायत नही दे सकता। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नही, वह अकेला है उस का कोई साझी नहीं। और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं।

ऐ लोगो! तुम अपने रब (की अवज्ञा) से डरो जिसने तुम सब को एक ही जान से पैदा किया और उस का जोड़ा (यानी

पत्नी को) भी उसी से पैदा किया, और उन दोनों (पति-पत्नी) से बहुत से मर्द और महिलायें (दुनिया में पैदा किये और) फैलाये, और उस अल्लाह (के अ़ज़ाब) से डरो जिस का वास्ता दे कर तुम एक दूसरे का काम निकालते हो। और रिश्तेदारी (की हक़ तल्फ़ी) से बचो (और याद रखो!) बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर निरीक्षक है। (पारः 5, सूरः निसा, पहली आयत)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह (के अ़ज़ाब) से डरो जैसा उस से डरने का हक़ है और (याद रखो!) तुम्हें मौत इस्लाम पर ही आये। (पारः 3, आले ईम्रान, आयत 12)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और (ज़बान से) दुरुस्त बात ही कहा करो, तो अल्लाह तुम्हारे आमाल को (भी) दुरुस्त कर देगा, और तुम्हारे गुनाहों को भी माफ़ कर देगा। और जिसने अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा की, बेशक उस ने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।"

(पारः 22, सूरः अहज़ाब, आयत 70,71)

2) चाहे तो "व-रसूलुहू" के बाद यह बढ़ा ले -

أَرْسَلَهُ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ، مَنْ يُّطِعِ اللهَ وَرَسُوْلَهُ فَقَدْ رَشَدَ وَمَنْ يَّعْصِهِمَا فَإِنَّهُ لَا يَضُرُّ إِلَّا نَفْسَهُ وَلَا يَضُرُّ اللهَ شَيْئًا

अर्-स-लहु बिल्-हक़्क़ि बशी-रव्व-नज़ी-रम बै-न य-दयिस्सा-अ़ति, मय्युति-अ़िल्ला-ह व-रसू-लहू फ़-क़द र-श-द, वमैंयअ़्सिहिमा फ़इन्नहू ला यज़ुर्रु इल्ला नफ़्-सहू वला युज़ुर्रुल्ला-ह शै-अन्

तर्जुमा – "(अल्लाह ने) उस (रसूल) को हक़ (दीन) के साथ भेजा है, क़यामत (आने) से पहले (मोमिनों को) शुभ सूचना देने के लिये और (इन्कार करने वालों को) आगाह करने के लिये, जिस श़ख्स ने अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा की वह हिदायत पा गया और जिसने उन की अवज्ञा की वह अपने आप को ही हानि पहुँचाएगा, अल्लाह का कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

3) और यह दुआ़ भी माँगे –

وَنَسْئَلُ اللّٰهَ اَنْ يَّجْعَلَنَا مِمَّنْ يُّطِيْعُهٗ وَيُطِيْعُ رَسُوْلَهٗ وَيَتَّبِعُ رِضْوَانَهٗ وَيَجْتَنِبُ سَخَطَهٗ فَاِنَّمَا نَحْنُ بِهٖ وَلَهٗ۔

व-नस्-अलुल्ला-ह अंय्यज्-अ़-लना मिम्मंय्युतीउहू वयुतीउ रसू-लहू व-यत्तबिउ रिज़वा-नहू व-यज्-तनिबु स-ख़-तहू फ़इन्नमा नह्नु बिही व-लहू+

तर्जुमा – "और हम अल्लाह से दुआ़ करते हैं कि वह हमें उन लोगों में से कर दे जो उस की और उसके रसूल की आज्ञा करते हैं और उस की इच्छा की पैरवी करते हैं और उस की नाराज़गी से बचते हैं, इसलिये कि हम तो केवल उसी पर ईमान लाये हैं और उसी की आज्ञा करते हैं।"

दुल्हा और दुल्हन के लिए दुआ़

1) जिस श़ख्स की शादी हुयी हो उस को यह दुआ़ दे

بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ وَبَارَكَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِىْ خَيْرٍ

बा-र-कल्लाहु ल-क वबा-र-कल्लाहु अ़लै-क व-ज-म-अ़ बै-नकुमा फ़ी ख़ैरिन्

तर्जुमा - "अल्लाह शुभ करे और तुम पर बर्कतें नाज़िल फ़रमाए और भलाई के साथ तुम्हें रहना-सहना नसीब करे।"

2) या केवल इतना कहे :

فَبَارَكَ اللّٰهُ عَلَيْكَ

फ़बा-र-कल्लाहु अ़-लै-क

"अल्लाह तुम पर बर्कतें नाज़िल फ़रमाए"

अपनी बेटी की शादी करने के बाद बेटी-दामाद के लिये दुआ़

1) अगर अपनी बेटी की शादी करे तो बिदाई के समय बेटी को अपने निकट बुलाए, एक प्याला पानी मँगाए और उस पर दम कर के यह दुआ़ दे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अल्लहुम्म इन्नी उअ़ीज़ुहा बि-क वज़ुर्रिय्य-तहा मि-नश्शैता निर्रजीम

"ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह में देता हूँ इस (लड़की) को और इस की औलाद को, मर्दूद शैतान से।"

और लड़की को सामने खड़ा कर के पानी के छींटे सीना और सर पर मारे और उस की पीठ पर। इसी प्रकार दामाद को बुलाए और यही दुआ़ दम करे और इसी प्रकार उस के सर-सीना और पीठ पर छींटे दे, और इस के बाद बिदा करे।

नोट- दामाद के लिये "उअ़ीज़ुहू" और "ज़ुर्रिय्य-तहू" कहे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा (रज़ि0) की रुख़सती का बयान

★ जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि0 का निकाह हज़रत फ़ातिमा से कर दिया तो आप उन के घर तशरीफ़ ले गये और हज़रत फ़ातिमा से कहा-थोड़ा सा पानी लाओ। चुनान्चे वह एक लकड़ी के प्याले में पानी ले कर हाज़िर हुयीं। आपने पानी का प्याला उन से ले लिया और एक घूँट पानी मुँह में ले कर प्याले में डाल दिया और फ़रमाया - आगे आओ। वह सामने आ कर खड़ी हो गयीं तो आप ने उन के सीने और सर पर वह पानी छिड़का और फ़रमाया-

अल्लाहुम्म इन्नी उओ़ज़ुहा बि-क वजुर्रिय्य-तहा मि-नश्शैतानिर्रजीमि और इसके बाद फ़रमाया - मेरी ओर पीठ करो। चुनान्चे वह पीठ कर के खड़ी हो गयीं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाक़ी पानी भी यही दुआ पढ़ कर पीठ पर छिड़क दिया।

इसके बाद आप ने (हज़रत अली रज़ि0 की तरफ़ मुँह कर के) फ़रमाया - पानी लाओ। हज़रत अली रज़ि0 कहते हैं कि मैं समझ गया जो आप चाहते हैं। चुनान्चे मैं ने भी प्याला पानी का भर कर पेश कर दिया। आप ने फ़रमाया - आगे आओ! मैं आगे आ गया। आपने वही कलिमे पढ़ कर और प्याले में कुल्ली कर के मेरे सर और सीना पर पानी के छींटे दिये फिर फ़रमाया - पीठ फेरो। मैं पीठ फेर कर खड़ा हो गया । आप ने फिर वही

कलिमे पढ़ कर और प्याला में कुल्ली करके मेरे मोढ़ों के दर्मियान पानी के छींटे दिये, इसके बाद फ़रमाया अब अपनी दुल्हन के पास जाओ।

सुहाग रात (पहली रात) की दुआ

1) जब कोई शख़्स पहली मर्तबा अपनी पत्नी के पास जाये, या गुलाम ख़रीदे (या नौकर रखे) तो उस की पेशानी के बाल पकड़ कर यह दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهَا وَخَيْرِ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَاَعُوْذُبِكَ

مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन् ख़ैरिहा वख़ैरि मा-ज-बल्-तहा अ़लैहि व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिहा व शर्रि मा ज-बल्-तहा अ़लैहि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से उस की ख़ैर और बर्कत का और उस की पैदाइशी आ़दत की ख़ैर-बर्कत का जिस पर तू ने उस को पैदा किया है तलबगार हूँ और उस की बुराई से और उस की पैदाइशी आ़दत की बुराई से जिस पर तू ने उस को पैदा किया है, पनाह माँगता हूँ।"

★

नयी सवारी की दुआ

1) जब कोई नयी सवारी खरीदे तो उस की पेशानी पर, अगर ऊँट हो तो उस की कोहान पर हाथ रख कर यही दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِهَا وَخَیْرِ مَا جَبَلْتَهَا عَلَیْهِ وَ
اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَیْهِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन् खैरिहा वखैरि मा जबल्-तहा अलैहि व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिहा व-शर्रि मा ज-बल्-तहा अलैहि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इस की और इस की आदत की खैर-बर्कत का प्रश्न करता हूँ, और उस के और उस की आदत की बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ।"

नये गुलाम (या नौकर) की दुआ

1) जब कोई गुलाम खरीदे (या नौकर रखे) तो यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاجْعَلْهُ طَوِیْلَ الْعُمْرِ كَثِیْرَ الرِّزْقِ

अल्लाहुम्म बारिक् ली फीहि वज्-अलहु तवी-लल् उम्रि कसीर-रिज़्कि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू इस में मेरे लिये बर्कत अता फरमा और इसकी आयु लंबी कर दे और रोज़ी बढ़ा दे।"

संभोग के समय की दुआ

1) जब संभोग (हम बिस्तरी) का इरादा करे तो यह पढ़े-

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

बिसमिल्लाहि अल्लाहुम्म जन्निब-नश्शैता-न वजन्निबिश्शैता-न मा रज़क्-तना

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह! तू हमें (दोनों) को शैतान से बचा और जो औलाद तू हम को दे उस को भी शैतान से बचाइयो।"

इन्ज़ाल (Discharge) के समय की दुआ[1]

1) जब इन्ज़ाल (यानी वीर्य के निकलने) का समय हो तो यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْ لِلشَّيْطَانِ فِيْمَا رَزَقْتَنِيْ نَصِيْبًا

अल्लाहुम्म ला तज्-अल् लिश्शैतानि फ़ीमा र-ज़क्-तनी नसी-बन्

- - - - - - - - - - - - - - -

1. संभोग और वीर्य के गिरते समय इन दुआओं को पढ़ने का उद्देश्य यह है कि इन जैसी ख़ालिस फ़ितरी और जिन्सी इच्छा को पूरी करते समय अगर इन्सान अल्लाह को याद रखे तो यही ईबादत बन जाती हैं। अगले पृष्ठ पर

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जो औलाद तू मुझे अता फ़रमाए उस में शैतान का कोई हिस्सा (यानी अमल-दख़ल और प्रभाव) न रखियो।"

★★★

------------------पिछले पृष्ठ का शेष

और यह कि संभोग और इन्ज़ाल का उद्देश्य केवल स्वाद लेना नहीं होना चाहिये, बल्कि इस का उद्देश्य नेक औलाद को पैदा करना है। इसी उद्देश्य के लिये इस ख़ालिस हैवानी (पाशव) काम को अल्लाह तआला ने जाइज़ और हलाल क़रार दिया है। (इदरीस)

बच्चा पैदा होने के बाद उस के लिए दुआ और अज़ान व अक़ीक़ा का बयान आदि

1) जब बच्चा पैदा हो जाये, या किसी और का बच्चा लाया जाये तो उस के पैदा होने के बाद ही उस के कान में अज़ान कहे, और अपनी गोद में लेकर खजूर वग़ैरह कोई भी मीठी चीज़ अपने मुँह में चबा कर या घुला कर उगंली से उस के मुँह में तालू से लगा दे (कि वह चाट ले) इस के बाद उस के लिये ख़ैर-बर्कत की दुआ़ करे और (सोच-विचार और परामर्श के बाद) सात्वें दिन बच्चा का (अच्छा सा नाम) रख दे, और सरके बाल उतार कर अ़क़ीक़ा करे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बच्चा के कान में अज़ान कहने, तहनीक (मीठी चीज़ चटाने और) सात्वें दिन नाम रखने, बाल उतरवाने और अ़क़ीक़ा करने का निर्देश दिया है।

बच्चे के लिये तावीज़

1) बच्चे (को बुरी नज़र से और हर बला, दुःख और बीमारी से सुरक्षित रखने) के लिये यह तावीज़ लिख कर गले में डाल दे-

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّةِ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَآمَّةٍ وَّمِنْ

شَرِّ كُلِّ عَيْنٍ لَّآمَّةٍ۔

अऊज़ुबि - कलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन् शर्रि कुल्लि शैतानिन् वहाम्मतिन् वमिन् शर्रि कुल्लि अैनिन् लाम्मतिन

तर्जुमा - " मैं अल्लाह तआला के मुकम्मल कलिमे की पनाह लेता हूँ हर शैतान और दुःख देने वाली बला की बुराई से और हर लगने वाली नज़र की बुराई से।"

बच्चे को सब से पहले क्या सिखलाए?

1) जब बच्चा बोलना शुरू कर दे तो उस को सब से पहले कलिमए-तौहीद "लाइला-ह इल्लल्लाहु" सिखाए।

2) इस के बाद यह आयत याद कराए -

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ
وَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِیْرًا۔

वक़ुलिल् हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-ल-दव्व-लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल् मुल्कि व-लम् यकुल्लहू वलिय्युम्मि-नज़्ज़ुल्लि व-कब्बिर्हु तक्बीरा

तर्जुमा - "और कह दो! सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है, जिस ने न (किसी को अपना) बेटा बनाया, न ही (दोनों जहान की) बादशाहत में कोई उस का शरीक है, और न ही वह कमज़ोर है कि उस का कोई सहायक हो, और उस की ख़ूब-ख़ूब बड़ाई बयान किया करो।"

फ़ायदा -हदीस शरीफ़ में आया है कि अ़ब्दुल् मुत्तलिब के (यानी आप के) गोत्र का कोई बच्चा भी बोलना आरंभ करता तो

आप उस को ऊपर की आयत याद कराते।

बच्चे को नमाज़ पढ़वाने, अलग सुलाने और विवाह कर देने की आयु सीमा और हिदायत

1) सात साल की उम्र में बच्चा से नमाज़ पढ़वाए और नमाज़ (न पढ़ने) पर सज़ा दे, और नौ साल की उम्र में उस का बिस्तर अलग कर दे, और 17 साल की उम्र में उसकी शादी कर दे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर मुसलमान को बच्चों के बारे में ऊपर की हिदायत दी है और निर्देश दिया है।

जवान हो जाने और विवाह कर देने के बाद

1) जब औलाद नमाज़-रोज़ा की पाबन्द, जवान और अपने घर-बार की हो जाये तो उस को सामने बिठा कर कहे -

لَاجَعَلَكَ اللّٰهُ عَلَيَّ فِتْنَةً

ला ज-अ-ल-कल्लाहु अ-लय्य फ़ित्-न-तन्

"अल्लाह मुझे (दुनिया और आख़िरत में) मेरे लिये आज़माइश न बनाए।"

यात्रा पर जाने वाले (मुसाफ़िर) और विदा करने वाले (मुक़ीम) के लिये दुआएँ

1) जब कोई सफ़र पर जा रहा हो तो रुख़्सत करने वाला मुक़ीम उस से मुसाफ़ा करे और यह दुआ दे -

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ عَمَلِكَ

असतौदिउल्ला-ह दी-न-क व-अमा-न-त-क व-ख़वाती-म अ़-मलि-क

तर्जुमा -" मैं अल्लाह के हवाले करता हूँ तुम्हारे दीन को, अमानत (और दियानत) को और तुम्हारे अ़मल के ख़ातिमा को (सफ़र) के अन्जाम को (वही सब की हिफ़ाज़त करने वाला है)

अन्त में "अस्सलामु अ़लै-क" कहे (और विदा कर दे) अगर चन्द आदमी हों तो "अस्सलामु अ़लैकुम्" कहे।

2) विदा होने वाला मुसाफ़िर यह दुआ पढ़े -

اَسْتَوْدِعُكَ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا تَخِيْبُ وَدَائِعُهٗ يالَا تَضِيْعُ وَدَائِعُهٗ

असतौदिउ-कल्ला-हल्लज़ी ला तख़ीबु वदाइउहू (या) ला तज़ीउ वदाइउहू

तर्जुमा -" मैं भी तुम्हें अल्लाह के हवाले करता हूँ जिस के हवाले की हुयी अमानतें नामुराद नहीं होतीं (या) बर्बाद नहीं होतीं।"

3) अगर कोई तुम से कहे कि मैं यात्रा पर जा रहा हूँ

मुझे नसीहतें फ़रमा दीजिये तो उत्तर में कहो -

عَلَيْكَ بِتَقْوَى اللهِ وَالتَّكْبِيْرِ عَلٰى كُلِّ شَرَفٍ

अ़ले-क बि-तक़्-वल्लाहि वत्तक्बीरि अ़ला कुल्लि श-र्फ़िन

तर्जुमा -" तुम अल्लाह से डरने को अपने ऊपर ज़रूरी कर लो (यानी हर समय अल्लाह से डरते रहना, कभी ग़ाफ़िल न होना) और हर ऊँचाई पर चढ़ते समय "अल्लाहु अक्-बर" पाबन्दी से कहना।"

4) और जब वह चला जाये तो उस के लिये यह दुआ करे-

اَللّٰهُمَّ اَطْوِلَهُ الْبُعْدَ وَهَوِّنْ عَلَيْهِ السَّفَرَ

अल्लाहुम्मअत वि लहुल् बोअ़दा वा हव्विन अ़लैहिस्स-फ़-र

"ऐ अल्लाह! (अम्न और सलामती के साथ) उस की यात्रा पूरी करा दे और यात्रा को उस के लिये सरल बना दे।"

5) या यह दुआ दे -

زَوَّدَكَ اللهُ التَّقْوٰى وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَيَسَّرَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُ مَا كُنْتَ

ज़व्व-द-कल्लाहुत्तक़्वा व-ग़-फ़र ज़म्-ब-क व-यस्स-र ल-कल् ख़ै-र हैसु मा कुन्-त

तर्जुमा -"अल्लाह पाक तक़्वा (और प्रहेज़गारी) को तेरे सफ़र का सफ़र ख़र्च बनाए, तेरे गुनाह माफ़ कर दे और जहाँ भी तू रहे ख़ैर-बर्कत तेरे लिये आसान कर दे।"

6) या यह दुआ दे

جَعَلَ اللهُ التَّقْوٰى زَادَكَ وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَوَجَّهَ لَكَ الْخَيْرَ حَيْثُمَا تَوَجَّهْتَ

ज़-अ-लल्लाहुत्तक़्वा ज़ा-द-क व-ग़-फ़-र ज़म्-ब-क व-वज्ज-ह ल-कल् ख़ै-र हैसुमा त-वज्जह्-त

तर्जुमा -"अल्लाह तआला परहेज़गार को तेरे लिए ज़ोरदार बना दे और तेरे गुनाह बख़्शदे और जहाँ भी तू जाये ख़ैर-ख़ूबी तेरे सामने लाये।"

काफ़िरों से जंग करने के लिये लश्कर या फ़ौजी कुमक भेजने के समय के आदाब और दुआएँ

1) जब किसी (सरदार) को किसी लश्कर या फ़ौजी कुमक का अमीर (कमान्डर) बनाये (या मौजूदा हुकूमत ने बनाया हो) तो (अव्वल) उस को खुद अल्लाह तआला से डरते रहने की और (फिर) अपने मातहत मुसलमान (सिपाहियों) के साथ भलाई (और नेक बर्तताव के साथ) से पेश आने की वसिय्यत करे, फिर कहे-

اُغْزُوْا بِسْمِ اللّٰهِ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ. قَاتِلُوْا مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ، اُغْزُوْا وَلَا تَغُلُّوْا وَلَا تَغْدِرُوْا وَلَا تَمْثُلُوْا وَلَا تَقْتُلُوْا وَلِیْدًا۔

उग़ज़ू बिस्मिल्लाहि फ़ी सबीलिल्लाहि, क़ातिलू मन् क-फ़-र बिल्लाहि, उग़ज़ू वला तग़ुल्लू वला तग़्दुरू वला तम्सिलू वला तक़्तुलू वलीदा+

तर्जुमा -" अल्लाह का नाम लेकर अल्लाह की राह में जंग करो, जो भी अल्लाह (के माबूद होने) का इन्कार करे उस से जिहाद करो, और (माले ग़नीमत में) ख़्यानत मत करो.

(किसी से) मुआहिदा मत तोड़ो, किसी के नाक-कान मत काटो (और सूरत न बिगाड़ो) और किसी बच्चे को क़त्ल मत करो।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी सहाबी को किसी लश्कर या फ़ौजी दस्ते का अमीर (कमान्डर) बना कर भेजते तो इसी प्रकार वसिय्यत और दुआ फ़रमाते और यही हिदायत दिया करते थे।

2) या यह कहे -

اِنْطَلِقُوْا بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا تَقْتُلُوْا شَيْخًا فَانِيًا وَّلَا طِفْلًا وَّلَا صَغِيْرًا وَّلَا امْرَاَةً وَّلَا تَغُلُّوْا وَضُمُّوْا غَنَائِمَكُمْ وَاَصْلِحُوْا وَاَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ.

इन्-तलिक़ू बिस्मिल्लाहि वबिल्लाहि व-अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि वला तक़्तुलू शै-ख़न् फ़ानि-यन् वला तिफ़्-लन् वला सग़ी-रन् वला इम्रा-तन् वला तग़ुल्लू वज़ुम्मू ग़नाइ-मकुम् व-अस्लिहू व-अह्सिनू इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुह्सिनी-न

तर्जुमा -" जाओ अल्लाह का नाम लेकर, और अल्लाह की मदद के साथ, और अल्लाह के रसूल के दीन पर (क़ायम रहो) किसी बूढ़े, नाकारा खूसट आदमी को क़त्ल न करो, और दूध पीता बच्चा, कम आयु लड़के और महिला को भी क़त्ल न करो। माले ग़नीमत (यानी लूट के माल में) ख़ियानत न करो (बल्कि) लूट का तमाम माल एक स्थान पर जमा कर दो (और तक़्सीम के बाद अपना-अपना हिस्सा लो) अपने परस्पर मामलात दुरुस्त रखो और (एक-दूसरे के साथ) अच्छा बर्ताव करो। बेशक अल्लाह तआ़ला अच्छा बर्ताव करने वालों को दोस्त रखता है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम किसी को लश्कर का कमान्डर बनाते और फ़ौज को रवाना करते तो यही वसिय्यत करते और दुआ़एं देते।

3) रवाना होते समय जब (भेजने के लिए कुछ दूर) उन के साथ जाये तो यह दुआ़ दे -

اِنْطَلِقُوْا عَلٰى اسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ اَعِنْهُمْ

इन्-तलिक़ू अ़ला इस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्म अ़िनहुम्

तर्जुमा - "जाओ अल्लाह के नाम पर (काफ़िरो से जंग करो) ऐ अल्लाह तू इन की सहायता फ़रमा।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुजाहिदों के लश्कर को रवाना करते तो कुछ दूर उन के साथ जाते और ऊपर की दुआ़एँ देते।

अमीरे लश्कर (कमान्डर) या यात्री के लिए दुआ़एँ

4) लश्कर का कमान्डर या कोई भी यात्री सफ़र पर रवाना होते समय कहे -

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَسِيْرُ

अल्लाहुम्म बिका असूलु वबि-क अहूलु वबि-क असीरु

"ऐ अल्लाह! मैं तेरी ही सहायता से आक्रमण करूँगा, तेरी ही सहायता से तदबीर करूँगा और तेरी ही सहायता से सफ़र

करूँगा।"

5) अगर किसी मौके पर दुश्मन वगैरह से (अचानक नुक्सान पहुँचने का) खौफ़ हो तो सूरः "लिईलाफ़ि" पढ़े-

لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ إِيلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَٰذَا الْبَيْتِ الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّن جُوعٍ وَآمَنَهُم مِّنْ خَوْفٍ۔

लिईलाफ़ि कुरैशिन् ईलाफ़िहिम् रिह्-ल-तश्शिताइ वस्सैफ़ि, फ़ल् यअ़बुदू रब्ब हा-जल् बैतिल्लज़ी अत्-अ़-महुम् मिन् जूअिंव्व आ-म-नहुम्मिन् खौफ़िन्

तर्जुमा -" कुरैश को मानूस रखने के लिये, जाड़े और गर्मी के सफ़रों से उन को मानूस रखने के लिये। पस चाहिये कि वह इस घर (काबा) के रब की इबादत करें जिस ने उन को भूख (प्यास) में खाने (पीने) को दिया, और डर-खौफ़ में अम्न और अमान बख़्शा।"

फ़ायदा - हज़रत अबुल् हसन क़ज़वीनी फ़रमाते हैं कि सूरः लिईलाफ़ि कुरैश हर नुक्सान (और तक्लीफ़) से बचाने वाली है। यह आज़माया हुआ अ़मल है।

मुसाफ़िर के लिए सफ़र में जाने और वापस आने के समय पढ़ने की दुआएं

1) मुसाफ़िर जब सफ़र के लिये सवारी की रकाब पर पावँ रखे, या सवार होने लगे तो कहे - "बिस्मिल्लाहि" और जब उस की पीठ पर बैठ जाये या सवार हो जाये तो कहे - "अल्-हम्दु लिल्लाहि" और फिर यह दुआ पढ़े -

سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

सुब् हा-नल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनी-न वइन्ना इला रब्बिना लमुन्-क़लिबू-न

तर्जुमा -"पाक है वह ज़ात जिस ने इस (सवारी) को हमारे क़ाबू में कर दिया, हम तो इस को क़ाबू में नहीं ला सकते थे, और हम तो अपने रब के पास ही लौट कर जाएंगे।"

2) तीन मर्तबा "अल्-हम्दु लिल्लाहि" तीन मर्तबा "अल्लाहु अक्-बरु" और एक मर्तबा "लाइला-ह इल्लल्लाहु" पढ़े।

3) और यह इस्तिग़फ़ार पढ़े -

سُبْحَانَكَ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْ لِىْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

सुब्हा-न-क इन्नी ज़-लम्तु नफ़सी फ़ग़्फ़िर् ली इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "पाक है तू, बेशक मैं ने अपने ऊपर (बहुत) अत्याचार किया है (कि तेरी नाफ़र्मानी कर रहा हूँ) पस तू मुझे बख़्श दे, बेशक तेरे सिवा और कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।"

4) या जब इतमिनान से सवारी पर बैठ जाये तो तीन मर्तबा "अल्लाहु अक्-बर" कहे और यह आयत पढ़े -

سُبْحَانَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ

सुब्हा-नल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनी-न वइन्ना इला रब्बिना लमुन्-क़लिबू-न

तर्जुमा -"पाक है वह अल्लाह जिस ने इस (सवारी) को हमारे क़ाबू में कर दिया (वर्ना) हम इसको अपने क़ाबू में नहीं

ला सकते थे, और बेशक हम (मरने के बाद) अपने पर्वरदिगार के पास अवश्य लौट कर जायेंगे।"

5) और इस के बाद यह दुआ माँगे -

اللهم إنا نسألك في سفرنا هذا البر والتقوى ومن العمل ما ترضى اللهم هون علينا سفرنا هذا واطو عنا بعده، اللهم أنت الصاحب في السفر والخليفة في الأهل اللهم إني أعوذ بك من وعثاء السفر وكآبة المنظر وسوء المنقلب في المال والأهل والولد.

अल्लाहुम्म इन्ना नस्-अलु-क फ़ी स-फ़रिना हाज़ल् बिर्र वत्तक़्वा वमि-नल् अ़-मलि मा तर्ज़ा+अल्लाहुम्म हव्विन् अ़लैना स-फ़-रना हाज़ा, वत्वि अ़न्ना बोअ्-दहू, अल्लाहुम्म अन्-तस्साहिबु फ़िस्स-फ़रि वल्-ख़ली-फ़तु फ़िल् अह्लि+ अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिंव्वअ़साइस्स-फ़रि व-कआ-बतिल् मन्-ज़रि वसूइल् मुन्-क़-लबि फ़िल् मालि वल्-अह्लि वल्-व-लदि

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! हम तुझ से इस सफ़र में नेकी और प्रहेज़गारी की और जो अ़मल तुझे पसन्द हो उस की प्रार्थना करते हैं। ऐ अल्लाह! तू हमारा यह सफ़र (हम पर सरल कर दे और इसकी दूरी को समेट दे) ऐ अल्लाह! तू ही यात्रा में (हमारा) साथी और घर-बार में (हमारा) नाइब है (तू हमारी और हमारे घर-बार की सुरक्षा फ़रमा) ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सफ़र की सख़्तियों से और (सफ़र में किसी) तक्लीफ़ देने वाली घटना से और बीवी-बच्चों और धन-माल में तक्लीफ़ के साथ वापसी से पनाह माँगता हूँ।"

6) और जब यात्रा से वापस हो तब भी दुआ माँगे और इन

कलिमात का इज़ाफ़ा करे -आइबू-न ताइबू-न आबिदू-न लि-रब्बिना हामिदू-न

"हम (अब सफ़र से) लौट रहे हैं (अपने गुनाहों से) तौबा करते हैं (हर हाल में अल्लाह की) इबादत करते हैं, अपने रब की हम्द व सना बयान करते हैं।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि सफ़र में जाने और वापस आने के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यही तरीक़ा था जो ऊपर बयान हुआ।

7) इसी प्रकार जब सवार हो तो (शहादत की) उँगली (आकाश की तरफ़) उठाये और कहे -

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِیْفَةُ فِی الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ اصْحَبْنَا
بِنُصْحِكَ وَاقْلِبْنَا بِذِمَّةٍ اَللّٰهُمَّ ازْوِ لَنَا الْاَرْضَ وَهَوِّنْ عَلَیْنَا
السَّفَرَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ.

अल्लाहुम्म अन्-तस्साहिबु फ़िस्सफ़रि वल्ख़ली-फ़तुफ़िल् अह्लि+ अल्लाहुम्म अस्-हबना बिनुस्हि-क वक़्लिबना बिज़िम्मतिन्+ अल्लाहुम्म अज़्वि-ल-नल् अर्-ज़ व-हव्विन् अ़ले-नस्स-फ़-र+अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिंव्वअ़साइस्स-फ़रि व-कआ-बातिल् मुन्-क़-लबि

तर्जुमा -"अल्लाह! तू ही सफ़र में (हमारा) रफ़ीक़ (साथी) है और तू ही घर-बार में (हमारा) जानशीन (और रखवाला) है। ऐ अल्लाह! तू अपनी भलाई को (इस सफ़र में) हमारे साथ रख और अपनी सुरक्षा में हमें वापस ला। ऐ अल्लाह! तू ज़मीन (के रास्ते) को हमारे लिये समेट दे और सफ़र को हम पर सरल कर

दे। ऐ अल्लाह! मैं सफ़र की सख़्तियों से और तक्लीफ़ के साथ (नाकाम) वापसी से पनाह माँगता हूँ।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि हर ऊँट के कोहान में (इसी प्रकार हर सवारी में) एक शैतान उपस्थित होता है, इसलिए जब तुम उस पर सवार हो तो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है अल्लाह का नाम लो, फिर उस से काम लो (यानी इच्छानुसार सावार हो और सफ़र करो) इसलिये कि अल्लाह ही (इन सवारियों पर तुम को) सवार करता है।

सफ़र के दौरान पढ़ने की दुआएँ

1) सफ़र के दौरान नीचे की दुआओं को पढ़ते रहो-

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَالْحَوْرِ
بَعْدَ الْكَوْرِ وَدَعْوَةِ الْمَظْلُوْمِ وَسُوْٓءِ الْمَنْظَرِ فِي الْاَهْلِ وَالْمَالِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिंव्वअ्साइस्स-फ़रि व-कआ-बतिल् मुन्-क़-लबि वल्हौरि बअ्-दल् कौरि वदअ्-वतिल् मज़्लूमि वसूइल् मन्-ज़रि फ़िल् अहलि वल् मालि

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं पनाह माँगता हूँ सफ़र की सख़्ती से और (सफ़र से) वापसी (में नाकामी) की तक्लीफ़ से और तरक्क़ी के बाद नीचा होने से और मज़्लूम की (बद) दुआ से और (वापसी पर) बाल-बच्चों में किसी तक्लीफ़ की बात से।"

2) और यह दुआ माँगे –

اَللّٰهُمَّ بَلَاغًا يَّبْلُغُ خَيْرًا وَّمَغْفِرَةً مِّنْكَ وَرِضْوَانًا بِيَدِكَ الْخَيْرُ

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا السَّفَرَ وَاطْوِلَنَا الْاَرْضَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ۔

अल्लाहुम्म बला-गय्यु-बल्लिगु खै-रन् व-मग़फि-र-तम् मिन्-क वरिज़ुवा-नन्, बि-यदि-कल् खैरु इन्न-क अला कुल्लि शैइन् क़दीर+अल्लाहुहुम्म अन्-तस्साहिबु फ़िस्स-फ़रि वल ख़ली-फ़तु फ़िल्- अहलि+अल्लाहुम्म हव्विन् अ़ले- नस्स-फ़-र वत्वि ल-नल् अर्-ज़, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिंव्वअ़साइस्स-फ़रि व-कआबतिल मुन्-क़ -लबि+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! (मैं तुझ से) ऐसी कामियाबी (चाहता हूँ) जो ख़ैर व ख़ूबी को पहुँचा दे (यानी उस का अन्त भला हो) और तेरी (ख़ास) मग़्फ़िरत और रज़ा (चाहता हूँ) तेरे ही हाथ में (हर प्रकार की) ख़ैर और बर्कत है, बेशक तू हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। ऐ अल्लाह! तू ही (हमारा) सफ़र में साथी है और तूही घर-बार में (हमारा) क़ायम-मुक़ाम (और सुरक्षा गार्ड) है। ऐ अल्लाह! तू (इस) सफ़र को सरल बना दे और ज़मीन (की दूरी) को हमारे लिये समेट दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ सफ़र की सख़्ती से और (सफ़र से) वापसी के कष्ट से।"

3) या यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِي الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اصْحَبْنَا فِيْ سَفَرِنَا وَاخْلُفْنَا فِيْ اَهْلِنَا۔

अल्लाहुम्म अन्-तस्साहिबु फ़िस्स-फ़रि वल् ख़ली-फ़तु फिल

अहलि, अल्लाहुम्म अस्-हबना फ़ी-स-फ़रिना वख़्लुफ़ना फ़ी अहलिना

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र का साथी है और तू ही बाल-बच्चों में (हमारा) क़ायम मुक़ाम है। ऐ अल्लाह! तू हमारे सफ़र में हमारा साथी बन जा और हमारे बाल-बच्चों में हमारा क़ायम मुक़ाम (और हिफ़ाज़त करने वाला) बन जा।"

4) 1. जब किसी ऊँचाई (पहाड़ी वग़ैरह) पर चढ़े तो "अल्लाहु अक्-बर" कहे और उस से उतरे तो "सुब्हा-नल्लाह" कहे।

2. और जब किसी वादी (खुले मैदान) में पहुँचे तो "लाइला-ह इल्लल्लाहु" और "अल्लाहु अक्-बरु" कहे।

3. और अगर सवारी के जानवर को ठोकर लगे तो तुरन्त "बिस्मिल्लाहि" कहना चाहिये।

फ़ायदा - यह चारों हिदायतें अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अहादीस में नक़्ल हैं।

समुद्री यात्रा की दुआएं

1) समुद्री यात्रा में डूबने से सुरिक्षत रहने का केवल एक साधन यह है कि सवार होते समय नीचे की आयतों को पढ़ ले-

(۱) بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (۲) وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ۔

बिस्मिल्लाहि मजरेहा व मुरसाहा इन्न रब्बी लग़फ़ूर्रहीमुन्+ वमा क़-दरुल्ला-ह हक़्क़ क़द्रिही वल्-अर्ज़ु जमी-अन् क़ब्-ज़तुहू यो-मल् क़िया-मति वस्समावातु मत्विय्यातुम् बि-य मीनिही, सुब्हा-नहू व-तआला अम्मा युशरिकू-न

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम से ही इस का लंगर उठाना है (और उसी के नाम से) इस का लंगर डालना है+और (इन काफ़िरों और मुश्रिकों ने) अल्लाह की क़द्र करने का जैसा हक़ था वैसी क़द्र नहीं की, हालाँकि क़यामत के दिन सारी ज़मीन उस की मुट्ठी (में) होगी और (तमाम) आसमान उस के दाएँ हाथ में लिपटे हुये होंगे। (वास्तव में) अल्लाह, पाक और बुलन्द-बाला है उन मुश्रिकों के शिर्क से।"

सफ़र में ज़रूरत के समय सहायता माँगने के लिए दुआ और आज़माया हुआ अ़मल

1) अगर सफ़र में सवारी का ज़ानवर छूट कर भाग जाये तो बुलन्द आवाज़ से कहे -

أَعِينُوا يَا عِبَادَ اللهِ رَحِمَكُمُ اللهُ

अईनू या अिबादल्लाहि रहि-मकुमुल्लाहु

"मदद करो ऐ अल्लाह के बन्दो, और अल्लाह तुम पर रहमत फ़रमाये।"

2) अगर किसी मददगार को बुलाना हो तो बुलन्द आवाज़ से कहे-

يَاعِبَادَاللهِ اَعِيْنُوْنِيْ، يَاعِبَادَاللهِ اَعِيْنُوْنِيْ، يَاعِبَادَاللهِ اَعِيْنُوْنِيْ

या अिबादल्लाहि अऔनूनी, या अिबादल्लाहि अऔनूनी, या अिबादल्लाहि अऔनूनी

फ़ायदा – संपादक रह0 फ़रमाते हैं कि यह आज़माया हुआ अमल है।

3) जब किसी ऊँचे स्थान पर पहँचे तो यह कहे –

اَللّٰهُمَّ لَكَ الشَّرَفُ عَلٰى كُلِّ شَرَفٍ وَّ لَكَ الْحَمْدُ عَلٰى كُلِّ حَالٍ

अल्लाहुम्म ल–कश्श–रफ़ु अ़ला कुल्लि श–रफ़िन् व–ल–कल् हम्दु अ़ला कुल्ले हालिन्

"ऐ अल्लाह तेरे ही लिए शर्फ़ और बेंतरी है हर बुलन्द (से बुलन्द चीज़) पर और तेरे ही लिये तारीफ़ है हर हाल में।"

4) और जब उस नगर को देखे जिस में दाख़िल होना चाहता है तो उस को देखते ही कहे –

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَا اَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْاَرْضِيْنَ السَّبْعِ وَمَا اَقْلَلْنَ وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَا اَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَاحِ وَمَا ذَرَيْنَ فَاِنَّا نَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ وَخَيْرَ اَهْلِهَا وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ اَهْلِهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا

अल्लाहुम्म रब्बस्समावातिस्सबअि वमा अज़्–लल्–न व–रब्बल अरज़ी–नस्सबअि वमा अक़्–लल्–न, व–रब्बश्शयातीनि वमा अज़्–लल्–न, व–रब्बर्रियाहि वमा ज़रै–न, फ़इन्ना नस्–अलु–क ख़ै–र हाज़िहिल्–कर–य–ति वख़ै–र अह्लिहा, व–नऊज़ुबि–क मिन् शर्रिहा व–शर्रि अह्लिहा व–शर्रि मा फ़ीहा

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! सातों आकाश के और उन तमाम

मख़्लूक़ के रब जिस पर यह साया किये हुये है, और सातों ज़मीनों के उन तमाम मख़्लूक़ के पर्वरदिगार, जिस को यह उठाये हुये हैं, और तमाम शैतान के और उन तमाम मख़्लूक़ के रब जिन को उन्होंने गुमराह किया है, और तमाम हवाओं के और उन चीज़ों के रब जिन को हवाओं ने बिखेर रखा है, पस हम तुझ ही से इस बस्ती की और इस बस्ती वालों की ख़ैर-बर्कत की दुआ माँगते हैं, और तुझ से ही इस बस्ती के और जो कुछ भी इस बस्ती में है उस की बुराई से पनाह माँगते हैं।"

फ़ायदा - एक रिवायत में इस दुआ के साथ नीचे के कलिमे का भी इज़ाफ़ा है -

أَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَأَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا

अस्-अलु-क ख़ै-रहा वख़ै-र मा फ़ीहा व-अऊज़ुबि-क मिन शर्रिहा व-शर्रि मा फ़ीहा

"मैं तुझ से इस बस्ती की, और जो इस में है उस की ख़ैर-बर्कत का प्रश्न करता हूँ और बस्ती के, और जो इस में है, उस की बुराई से पनाह माँगता हूँ।"

5) और जब उस बस्ती में दाख़िल होने लगे तो तीन मर्तबा यह कहे -

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا

अल्लाहुम्म बारिक् लना फ़ीहा

"ऐ अल्लाह! तू हमें इस बस्ती में ख़ैर-बर्कत अता फ़रमा"

और फिर यह दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَحَبِّبْنَا اِلٰى اَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِيْ اَهْلِهَا اِلَيْنَا

अल्लाहुम्मर् ज़ुक़ना जनाहा व-हब्बिब्ना इला अहलिहा व-हब्बिब् सालिही अहलिहा इलैना

"ए अल्लाह! तू हम को इस बस्ती के फल (लाभ) अता फ़रमा और इस बस्ती वालों को हमारी मुहब्बत दे, और इसके नेक लोगों की मुहब्बत हम को नसीब फ़रमा।"

6) और जब किसी ठहरने के स्थान पर ठहरे तो यह पढ़े-

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

अऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़

"मैं अल्लाह तआला के मुकम्मल कलिमात की पनाह लेता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि किसी स्थान पर ठहरते समय ऊपर की दुआ को पढ़ लेगा तो उस स्थान से कूच करने तक उस को वहाँ कोई चीज़ नुक़्सान न पहुँचा सकेगी।

7) और अगर सफ़र के दौरान किसी स्थान पर शाम हो जाए और रात आ जाए (और रात को वहाँ ठहरना पड़े) तो (उस ज़मीन से) कहे -

يَا اَرْضُ رَبِّيْ وَرَبُّكِ اللّٰهُ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّكِ وَشَرِّ مَا خَلَقَ فِيْكِ
وَشَرِّ مَا يَدِبُّ عَلَيْكِ وَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ اَسَدٍ وَّاَسْوَدَ وَمِنَ الْحَيَّةِ
وَالْعَقْرَبِ وَمِنْ شَرِّ سَاكِنِي الْبَلَدِ وَمِنْ وَّالِدٍ وَّمَا وَلَدَ-

या अर्ज़ु रब्बी व-रब्बुकिल्लाहु, अऊज़ु बिल्लाहि मिन् शर्रिकि व-शर्रि मा ख़-ल-क़ फ़ीकि व-शर्रि मा यदिब्बु अलैकि व-अऊज़ुबिल्लाहि मिन् अ-सदिन् व-अस्-व-द, वमि-नल् हय्यति वल् अक्-रबि वमिन् शर्रि साकिनिल् ब-लदि वमिन् वालिदिन् वमा व-ल-द

तर्जुमा -"ऐ ज़मीन! मेरा भी रब अल्लाह है और तेरा भी रब अल्लाह है। मैं उसी (अल्लाह) की पनाह पकड़ता हूँ तेरी बुराई से और जो कुछ तेरे अन्दर पैदा किया है उस की बुराई से, और जो जानवर तेरे ऊपर चलते हैं उन की बुराई से। और मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह के (जंगल के) शेर से और काले नाग से और हर साँप-बिच्छू से और नगर में रहने वालों की बुराइयों से और हर बाप और बेटे की बुराई से।"

8) और पिछले पहर के समय तीन मर्तबा बुलन्द आवाज़ से कहे -

سَمِعَ سَامِعٌ بِحَمْدِ اللّٰهِ وَنِعْمَتِهٖ وَحُسْنِ بَلَائِهٖ عَلَيْنَا، رَبَّنَا صَاحِبْنَا وَاَفْضِلْ عَلَيْنَا عَائِذًا بِاللّٰهِ مِنَ النَّارِ۔

समि-अ़ सामिउन् बि-हम्दिल्लाहि व नेअ़्मतिही वहुसनि बलाइही अ़लैना, रब्बना साहिब्ना व-अफ़्ज़िल् अ़लैना आ़इ-ज़न् बिल्लाहि मि-नन्नारि

तर्जुमा -"सुन लिया हर सुनने वाले ने (यानी सब गवाह हैं) अल्लाह की हम्द व सना को और उस के फ़ज़्ल व इनाम को और हम पर उस के एहसान की ख़ूबी को। ऐ पर्वरदिगार! तू (पूरे सफ़र में) हमारा साथी रह और हम पर फ़ज़्ल और इनाम फ़रमा, दोज़ख़ की आग से अल्लाह की पनाह लेते हुये (यह कह

रहा हूँ)

9) और (जब तक सफ़र में रहे, समय-समय पर) पाँच सूरतें पढ़ लिया करे।

1. सूरः काफ़िरून 2. सूरः नस्र 3. सूरः इख़्लास 4. सूरः फ़-लक़ 5. सूरः नास। हर सूरत को "बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम" से आरंभ करे और उसी पर समाप्त करे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (हज़रत जुबैर बिन मुतइम रज़ि0 से) फ़रमाया- ऐ जुबैर! क्या तुम पसन्द करते हो कि जब सफ़र में जाओ तो अपने साथियों से सूरत और हालत में बेहतर और सफ़र ख़र्च में बढ़ कर रहो? जुबैर कहते हैं - मैंने कहा जी हाँ। ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान। आपने फ़रमाया तुम यह पाँच सूरतें पढ़ लिया करो और हर सूरत को बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम से शुरू किया करो और इसी पर ख़त्म करो।

हज़रत जुबैर रज़ि0 कहते हैं - मैं काफ़ी मालदार और धनवान था, मगर सफ़र में जाता तो सब से अधिक बुरे हाल में और सफ़र ख़र्च में सब से कमज़ोर हो जाता था (यानी सफ़र के अनुरूप नहीं होता था) जब से मुझे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सूरतें (पढ़ने के लिये) बतलायीं और मैंने उन को पढ़ना शुरू किया तो मैं पूरे सफ़र में वापसी तक अपने साथियों में सब से अधिक अच्छे हाल में और सफ़र ख़र्च में कुशादा रहने लगा।

10) सफ़र में एकेले में अल्लाह की तरफ़ ध्यान रहे और

अधिक से अधिक अल्लाह के ज़िक्र में लगा रहे, और बुरे ख्यालात को पास न आने दे।

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जो भी मुसाफ़िर अपने सफ़र में तन्हाई के समय अल्लाह का ध्यान और उस की याद में लगा रहे तो अल्लाह तआला एक फ़रिश्ता उस के साथ कर देते हैं, और जो लोग गाने-बजाने और वाहियात कामों में लगे रहते हैं अल्लाह तआला उन के पीछे एक शैतान लगा देते हैं।

★ ★ ☾

हज्ज के सफ़र की दुआएँ

नोट - किताब के संपादक रह0 ने यहाँ केवल हज्ज की दुआओं और ज़िक्रों को बयान किया है। हज्ज करने का पूरा तरीक़ा किसी और हज्ज की किताब से मालूम कीजिये।

1) अगर हज्ज का सफ़र हो तो बैदा (या किसी भी एहराम बाँधने के स्थान) पर सवारी ठहरे (और पहुँचे) तो यह कहे-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्-हम्दु लिल्लाहि+सुब्-हा-नल्लाहि+अल्लाहु अक्-बरु

"सब तारीफ़ अल्लाह के लिये हैं, अल्लाह पाक है, अल्लाह सब से बड़ा है।"

तल्बिया का बयान

2) और जब एहराम बाँधे तो इस प्रकार तलबिया कहे -

لَبَّيْكَ اللّٰهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ، اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيْكَ لَكَ۔

लब्बै-क, अल्लाहुम्म लब्बै-क, लब्बै-क ला शरी-क ल-क लब्बै-क, इन्नल् हम्-द वन्नेअ़म-त ल-क वल् मुल्-क ला शरी-क ल-क

तर्जुमा - "हाज़िर हूँ मैं, ऐ अल्लाह हाज़िर हूँ मैं, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूँ, बेशक तमाम

तारीफ़ और इनाम (व एहसान) तेरा ही है और बादशाहत भी तेरी ही है, तेरा कोई शरीक नहीं है।"

3) कभी इस तरह कहे -

لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ بِيَدَيْكَ لَبَّيْكَ وَالرَّغْبَاءُ إِلَيْكَ وَالْعَمَلُ، لَبَّيْكَ -

लब्बै-क, लब्बै-क वसअ़दै-क वल् ख़ैरु बि-यदि-क, लब्बै-क वर्रग़बाउ इलै-क वल्-अ़-मलु, लब्बै-क

तर्जुमा - "हाज़िर हूँ मैं हाज़िर हूँ, और तेरी फ़र्माबरदारी के लिये तय्यार हूँ और हर भलाई और ख़ूबी तेरे ही हाथ में है, मैं हाज़िर हूँ और तेरी ही तरफ़ (मेरा) ध्यान है और (मेरा) अ़मल भी (तेरे लिये ही है) मैं हाज़िर हूँ।"

4) कभी इस प्रकार भी कहें -

لَبَّيْكَ إِلٰهَ الْحَقِّ لَبَّيْكَ

लब्बै-क इला-हल् हक़्क़ि लब्बै-क

"मैं हाज़िर हूँ ऐ सच्चे माबूद, मैं हाज़िर हूँ।"

तल्बिया के बाद की दुआ़

1) जब तल्बिया पढ़ चुके तो यह दुआ़ माँगे -

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ غُفْرَانَكَ وَرِضْوَانَكَ اَللّٰهُمَّ أَعْتِقْنِيْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ग़ुफ़रा-न-क वरिज़्वा-न-क, अल्लाहुम्म अअ़्तिक़्नी मि-नन्नारि

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ तेरी मग़्फ़िरत का और तेरी रिज़ा का, ऐ अल्लाह! तू मुझे जहन्नम की आग से स्वतन्त्र कर दे।"

तवाफ़ करने के समय की दुआएँ

1) जब बैतुल्लाह का तवाफ़ करे तो जब भी रुक्न (हजरे अस्वद) पर पहुँचे "अल्लाहु अकबर" कहे

नोट - बैतुल्लाह का वह कोना जहाँ हजरे अस्वद लगा है उसे रुक्न कहते हैं। (इदरीस)

2) दोनों रुकनों (रुक्न हजरे अस्वद और रुक्ने यमानी) के दर्मियान यह आयत पढ़े-

رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तव्व फ़िल् आख़ि-रति ह-स-न-तव्वाक़िना अज़ा-बन्नारि

तर्जुमा -"ए हमारे रब! तू हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे, और हमें जहन्नुम की आग से बचा ले।"

3) यही आयत रुक्न हजरे-अस्वद और हतीम के दर्मियान में और पूरे तवाफ़ के दर्मियान पढ़ता रहे। और यही आयत रुक्न हजरे अस्वद और मुक़ामे इब्राहीम के दर्मियान पढ़े।

नोट - काबा शरीफ़ का वह हिस्सा जिस पर छत नहीं है, यह हिस्सा बैतुल्लाह के उत्तर तरफ़ है, केवल चारदीवारी बनी हुई है। और वह स्थान जिस पर खड़े हो कर हज़रत इब्राहीम अलै० ने काबा शरीफ़ का निर्माण किया था "मुक़ामे इब्राहीम" कहलाता है। यह एक बड़ा पत्थर है जो काबा के सामने पूरब की तरफ़ रखा हुआ है।

तवाफ़ के बाद की दुआ

1) और तवाफ़ में या रुक्न (यानी हजरे अस्वद) और मुक़ामे इब्राहीम के दर्मियान यह दुआ माँगे

اللّٰهُمَّ قَنِّعْنِىْ بِمَا رَزَقْتَنِىْ وَبَارِكْ لِىْ فِيْهِ وَاخْلُفْ عَلٰى كُلِّ غَائِبَةٍ لِّىْ بِخَيْرٍ

अल्लहुम्म क़न्निअ़नी बिमा र-ज़क़्-तनी वबारिक़ ली फ़ीहि वख़्लुफ़ अ़ला कुल्लि ग़ाइ-बतिन् ली बिख़ैरिन्

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! जो तू ने मुझे रोज़ी दी है उस पर तू मुझे सब्र दे और उस में मेरे लिये बर्कत भी दे और जो मेरी आँखों से ओझल हैं (यानी बाल-बच्चे) उन पर तू ख़ैर-बर्कत के साथ मेरी सुरक्षा करने वाला बन जा (और मेरे पीछे उन की सुरक्षा कर)

2) और यह पढ़े -

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहु ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु, वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा – "अल्लाह के अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं, उसी का सब मुल्क है और उसी की सब तारीफ़ है और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।"

तवाफ़ से फ़ारिग़ होने के बाद

★ जब तवाफ़ से फ़ारिग़ हो जाये तो मुक़ामे इब्राहीम के

पास आ कर यह आयत पढ़े-

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهِيْمَ مُصَلًّى

वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राही-म मु-सल्ला

"और मुक़ामे इब्राहीम को नमाज़ का स्थान बना लो (और नामज़ पढ़ो)

★ और मक़ामे इब्राहीम को अपने और बैतुल्लाह के दर्मियान कर के (यानी इस प्रकार कि दोनों सामने हों) दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े और पहली रक्अ़त में (सूरः फ़ातिहा के बाद) सूरः काफ़िरून पढ़े और दूसरी रक्अ़त में सूरः इख़्लास पढ़े (यह नमाज़ तवाफ़ से फ़ारिग़ होने के बाद पढ़े) फिर रुक्न (यानी हजरे अस्वद) की तरफ़ वापस आए और उसे चूमे।

सओ़ी बै-नस्सफ़ा वल् मर-व (सफ़ा और मर्वा के दर्मियान दौड़ने) का बयान

★ फिर (मस्जिदे हराम के) दर्वाज़े (बाबुस्सफ़ा) से सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ रवाना हो। जब उस के निकट पहुँचे तो यह आयत पढ़े-

اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ

1) इन्नस्सफ़ा वल् मर-व-त मिन् शआ़इरिल्लाहि

"बेशक सफ़ा और मर्वा, अल्लाह के पाक स्थानों में से हैं।"

2) और इस के बाद कहे -

اَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ

अब्-दउ बिमा ब-द-अल्लाहु अज़्ज़ व जल्ल

तर्जुमा – "मैं उसी से (यानी सफ़ा से) आरंभ करता हूँ जिस से अल्लाह ग़ालिब और सब से बड़े ने आरंभ किया है।"

★ यह कह कर सफ़ा (पहाड़ी) पर चढ़े, यहाँ तक कि बैतुल्लाह नज़र आ जाये और क़िब्ला की तरफ़ मुँह करके तीन मर्तबा कहे –

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ

3) लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्-बर

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और अल्लाह ही सब से बड़ा है।"

4) और यह पढ़े –

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ
اَنْجَزَ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ۔

लाइला-ह इल्लल्लाहु, वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु युह्यी व युमीतु, वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+ लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू अन्-ज-ज़ वअ्-दहू व-न-स-र अब्-दहू व-ह-ज़-मल् अह्ज़ा-ब वह्-दहू

तर्जुमा –"अल्लाह के अ़लावा कोई इबादत के लायक नहीं है, वह अकेला है, उस का कोई साझी नहीं है, उसी का तमाम मुल्क है और उसी की सब तारीफ़ है, वही जिलाता है और

वही मारता है, वही हर वस्तु पर कुदरत रखने वाला है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला और तन्हा है, उस ने अपने वादे (मक्का की विजय) को पूरा कर दिया और अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की सहायता फ़रमायी, और अकेले ही काफ़िरों के लश्करों को पराजित किया।"

★ इसके बाद जो दिल चाहे दुआ माँगता रहे।

फिर उन्ही (ऊपर की दुआओं) को तीन मर्तबा पढ़ कर (सफ़ा से) मर्वा की तरफ़ उतरे। जब (उतराई समाप्त हो कर) वादी में सीधा खड़ा हो जाये तो वादी के अन्दर दौड़े, यहाँ तक कि (जब मर्वा की तरफ़) ऊपर चढ़ने लगे तो (दौड़ना छोड़ दे) आहिस्ता चले, यहाँ तक कि मर्वा पर्वत के ऊपर पहुँच जाये तो मर्वा पर भी वही अ़मल करे जो सफ़ा पर किया था फिर जब सफ़ा पर चढ़े तो तीन मर्तबा "अल्लाहु अक्-बरु" कहे और यह दुआ पढ़े -

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा -"अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नही, उसी का तमाम मुल्क है, उसी की सब तारीफ़ है, और वही हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।"

★ इसी प्रकार सात मर्तबा सफ़ा और मर्वा पर चढ़े और उतरे और वादी के दर्मियान दौड़ लगाये, "तक्बीर और तहलील" कहे। चुनान्चे कुल 21 मर्तबा "अल्लाहु अक्-बरु" और सात मर्तबा "लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू- - - - - - -अन्त तक पढ़े।

और बीच में जो चाहे दुआएं करे और अल्लाह से मुरादें माँगे।

6) और सफ़ा पर यह भी दुआ पढ़े -

اللهم إنك قلت ادعوني أستجب لكم وإنك لا تخلف الميعاد و
إني أسألك كما هديتني للإسلام أن لا تنزعه مني حتى
تتوفاني وأنا مسلم

अल्लाहुम्म इन्न-क क़ुल्-त - उद्ऊनी अस्-तजिब लकुम् वइन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल् मीआ-द+वइन्नी अस्-अलु-क कमा हदै-तनी लिल्इस्लामि अल्ला तन्ज़ि-अहू मिन्नी हत्ता त-त वफ़्फ़ानी व-अना मुसलिमुन्

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! बेशक तू ने फ़रमाया है - मुझ से दुआ माँगो मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा। और बेशक तू वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। और मैं तुझ से सवाल करता हूँ कि जैसे तू ने मुझे इस्लाम (और ईमान की दौलत) से माला माल किया है, इसी तरह मुझे उस से वन्चित भी न कर, यहाँ तक कि तू मुझे इस्लाम पर ही उठा ले।"

7) और सफ़ा मर्वा के दर्मियान यह दुआ भी माँगे -

رب اغفر وارحم إنك أنت الأعز الأكرم

रब्बिग़् फ़िर् वर्-हम् इन्न-क अन्-तल् अ-अज़्ज़ुल् अक्-रमु

"ऐ मेरे मौला! तू मुझे बख़्श दे और रहम फ़रमा, बेशक तू ही सब पर ग़ालिब और सब से अधिक करम वाला है।"

फ़ायदा - यह तमाम दुआएं और ज़िक्र और तर्तीब इसी

प्रकार अहादीस में आयी हैं और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित हैं।

अ़-रफ़ात की तरफ़ रवानगी के समय

1) जब अ़-रफ़ात के मैदान की तरफ़ रवाना हो तो (रास्ते में बराबर) तल्बिया और तक्बीर कहता रहे।

2) अ-रफ़ात के दिन बेहतरीन दुआ़ यह है -

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु, वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु, वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर्+

तर्जुमा - "अल्लाह के सिवा कोई भी माबूद नहीं है, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं है, उसी का तमाम मुल्क है, और उसी की सब तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- अ़रफ़: के दिन की बेहतरीन दुआ़, मैं ने और मुझ से पहले रसूलों ने जो (अल्लाह की हम्द व सना में) बेहतरीन कहे हैं, वह यही (ऊपर के) कलमे हैं।

एक और हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - मैं ने और मुझ से पहले के रसूलों ने जो अ़रफ़: (के दिन) सब से अधिक दुआ़ की है वह यही कलमए-तौहीद है, और यही (ऊपर की) दुआ़ है।

3) ऊपर की तौहीद के कलमों के बाद यह दुआ़ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِيْ قَلْبِيْ نُوْرًا وَّفِيْ سَمْعِيْ نُوْرًا وَّفِيْ بَصَرِيْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ
اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَيَسِّرْ لِيْ اَمْرِيْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَسَاوِسِ الصَّدْرِ
وَشَتَاتِ الْاَمْرِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا يَلِجُ
فِي اللَّيْلِ وَشَرِّ مَا يَلِجُ فِي النَّهَارِ وَشَرِّ مَا تَهُبُّ بِهِ الرِّيَاحُ

अल्लाहुम्मज्-अल् फ़ीक़ल्बी नू-रन् वफ़ी समृ़ओ़ी नू-रन् वफ़ी ब-सरी नू-रन्+अल्लाहुम्मश् रह् ली सद्री व-यस्सिर् ली अमृरी, व-अऊ़ज़ुबि-क मिन् वसाविस्सद्रि वशतातिल् अमृरि वफ़ित-नतिल् क़ब्रि+ अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिन् शर्रि मा यलिजु फ़िल्लैलि वशर्रि मा यलिजु फ़िन्नहारि व-शर्रि मा तहुब्बु बिहिर्रियाहु+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे दिल में नूर पैदा कर दे, मेरे कानों में भी नूर भर, आँखों में भी नूर, (पैदा कर दे) ऐ अल्लाह! तू मेरा सीना खोल दे और मेरी (दुनिया और आख़िरत का) हर काम मेरे लिये आसान कर दे। मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ (ज़िन्दगी में) दिल के वस्वसों से, और काम की ख़राबी और कठिनाई से, और (मरने के बाद) क़ब्र के फ़ितने से। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो रात में दाख़िल हो (पेश आये) और हर उस चीज़ की बुराई से जो दिन में दाख़िल हो (पेश आये) और हर उस चीज़ की बुराई से जो हवाएँ अपने साथ लाती हैं।"

अ़-रफ़ात के मैदान में

1) (नौ तारीख़ को) जब अ़-रफ़ात के मैदान में जा कर ठहरे तो (अधिक से अधिक) तल्बिया पढ़े-

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि अ़रफ़ात में तल्बिया पढ़ना सुन्नत (मुअक्कदा) है।

2) अ़रफ़ात में तल्बिया पढ़ने के बाद कहे -

इन्न-मल् ख़ैर ख़ैरूल आख़ि-रति

اِنَّمَا الْخَيْرُ خَيْرُ الْاٰخِرَةِ

"इस के सिवा नहीं कि ख़ैर-ख़ूबी तो बस आख़िरत ही की ख़ैर-ख़ूबी है।"

अ़रफ़ात में क़याम (पड़ाव)

1) जब (ज़ुहर के समय ही ज़ुहर के साथ मिला कर) अस्र की नमाज़ पढ़ चुके तो अ़रफ़ात में ही ठहर जाये और हाथ उठा कर यह कलमात कहे -

اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ بِالْهُدٰى وَنَقِّنِيْ بِالتَّقْوٰى وَاغْفِرْ لِيْ فِي الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى

अल्लाहु अक्-बरु, वलिल्लाहिल् हम्दु, अल्लाहु अक्-बरु वलिल्लाहिल् हम्दु, अल्लाहु अक्-बरु वलिल्लाहिल् हम्दु, ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल् मुल्कु व-लहुल् हम्दु+अल्लाहुम्म इह्दिनी बिल्हुदा व-नक्किनी बित्तक्वा वग़्फ़िर् ली फ़िल् आख़ि-रति वल्ऊला+

तर्जुमा - "अल्लाह सब से बड़ा है, और अल्लाह ही की सब तारीफ़ है। और सब से बड़ा है और अल्लाह ही के लिये सब तारीफ़ है। अल्लाह सब से बड़ा है और अल्लाह ही की सब तारीफ़

है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं है, उसी का तमाम मुल्क है और उसी की सब तारीफ़ है। ऐ अल्लाह! तू हिदायत से मुझे हिदायत देदे और परहेज़गारी से मुझे पाक-साफ़ कर दे और दुनिया-आख़िरत में मेरी मग़फ़िरत कर दे।"

2) इस के बाद हाथ नीचे कर ले और उतनी देर तक चुप रहे जितनी देर में इन्सान सूरः फ़ातिमह पढ़ता है। फिर दोबारा हाथ उठा कर उसी तरह अ़मल करे जैसे पहले किया था।

मश्-अ़रे' हराम (मुज़दलफ़ा) में पड़ाव

1) जब अ़रफ़ात से (सूरज डूबते समय) वापस लौटे और मुज़दलफ़ा में पहुँचे (और मग़रिब-इशा की नमाज़ एक साथ पढ़े और आराम कर चुके) तो (सुबह सादिक़ निकलने के बाद) क़िब्ला की तरफ़ मुँह कर के खड़ा हो और दुआ, तक्बीर, तह्लील, तौहीद में लगा रहे (यानी जो दुआएँ अ़रफ़ात के मैदान में पढ़ी थीं वही यहाँ भी पढ़ता रहे) यहाँ तक कि दिन की रोशनी अच्छी तरह फैल जाये (तो मिना में वापस आये)

2) मुज़दलफ़ा में क़याम के समय भी बराबर तलबिया पढ़ता रहे यहाँ तक कि जमुरए-अक़बा पर कंकरियाँ मारे (पहले दिन यानी 10 तारीख़ जिस को नहर का दिन कहते हैं और केवल इसी दिन जमुरए अक़्बा पर कंकरियाँ मारी जाती हैं)

1-मश-अ़रे हराम या मुज़दलफ़ा, उस स्थान का नाम है जहाँ हाजी नौ तारीख़ को मग़रिब और इशा की नमाज़ एक साथ पढ़ते और सुबह होने तक आराम करते हैं।

रमी जिमार (टीलों पर कंकरियाँ मारने) के समय

1) और जब मिना में नह (कुरबानी) के अगले दिन यानी 11 तारीख़ को) जमुरों (यानी टीलों) पर कंकरियाँ मारने का इरादा करे तो जब मिना के सब से निकट वाले टीला पर आये तो सात कंकरियाँ मारे और हर कंकरी मारने के बाद या साथ ही "अल्लाहु अकबर" कहे।

2) फिर थोड़ा आगे बढ़े और बराबर ज़मीन में आ कर देर तक क़िब्ले की तरफ़ मुँह कर के खड़ा हो और हाथ उठा कर दुआ़ करता रहे।

3) फिर बीच के जमूरे पर इसी प्रकार (सात कंकरियाँ अल्लाहु अकबर कह कर मारे, फिर उत्तर की तरफ़ आगे बढ़ कर क़िब्ला की तरफ़ खड़ा हो और देर तक हाथ उठा कर दुआ़ माँगता रहे)।

4) फिर जम्रए अक़बा पर वादी के अन्दर से ही इसी तरह (सात कंकरियाँ मारे और अल्लाहु अकबर कहे) मगर जम्रए अक़्बा के पास न ठहरे।

5) जमरए अ़क़बा पर कंकरियाँ मारने के लिए वादी के अन्दर दाख़िल हो (और वहाँ से कंकरियाँ मारे) और जम्रए अ़क़बा के पास कंकरियाँ मारने के बाद न ठहरे।

6) रमी (यानी कंकरियां मारने) के बाद (बिना रुके हुये) यह दुआ़ माँगे–

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا

अल्लाहुम्मज्-अ़ल्हु हज्जन् मबरू-रन् व-ज़म्-बन् मग़फ़ू-रन्

"ऐ अल्लाह! तू इस हज्ज को हज्जे मबरूर (यानी पाक-साफ़ और मक़बूल हज्ज) बना दे और हर गुनाह को बख़्शा हुआ बना दे।"

7) तमाम जम्रों यानी टीलों के पास (जमरए अक़बा को छोड़ कर) ठहर कर दुआ़ माँगे, मगर कोई ख़ास दुआ़ न माँगे, बल्कि जो दिल में आये उसे माँगे।

मिना में क़ुरबानी करने के समय

1) और जब (मिना में) क़ुरबानी करे तो

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्-बर

कहे, फिर जानवर के कल्ले पर पाँव रख कर छुरी फेरे

2) और यह नियत करे

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّيْ وَمِنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

अल्लाहुम्म त-क़ब्बल् मिन्नी वमिन् उम्मति मु-हम्मदिन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

"ऐ अल्लाह! तू मेरी तरफ़ से और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत की तरफ़ से क़बूल फ़रमा।"

3) और यह दुआ़ पढ़े और फिर ज़ब्ह करे -

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ عَلٰى مِلَّةِ
إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَّمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي
وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذٰلِكَ
أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

इन्नी वज्जहतु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-त-रस्समावाति वल्-अर्-ज़ अ़ला मिल्लति इब्राही-म हनीफ़ंव, वमा अना मिनल् मुश्रिकीन्+ इन्न सलाती वनुसुकी व-मह्या-य व-म-माती लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमीन्+ लाशरी-क लहू वबिज़ालि-क उमिर्तु व-अना अव्वलुल् मुस्लिमीन+अल्लाहुम्म मिन्-क व-ल-क बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अक्-बरु

तर्जुमा - "बेशक मैंने अपना मुँह उस अल्लाह की तरफ़ कर दिया जिसने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया है इब्राहीम के दीन पर सब से मुँह मोड़ कर (क़ायम हूँ) और मैं मुश्रिकों में से हर्गिज़ नहीं हूँ+ बेशक मेरी तो नमाज़ भी, क़ुर्बानी भी, और जीना भी, मरना भी सारे संसार के रब के लिये है+ (मैं गवाही देता हूँ उस का कोई शरीक नहीं, इसी का मुझे हुक्म दिया गया है, और मैं तो (सर ता पैर) आज्ञाकारों में से हूँ+ ऐ अल्लाह! यह क़ुर्बानी तेरी ही तरफ़ से है और तेरे ही लिये है। अल्लाह के नाम पर (ज़िब्ह करता हूँ) और अल्लाह ही सब से बड़ा है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 से फ़रमाया - उठो, अपनी क़ुर्बानी के पास जाओ और उस को ज़िब्ह होता देखो। इसलिये कि उस के ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही जितने गुनाह तुम ने किये होंगे, सब बख़्श दिये जायेंगे। और आयत- "इन्न

सलाती व-नुसुकी व-महया-य व-ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमीन+ ला शरी-क लहू वबिज़ालि-क उमिरतु व-अना अव्वलुल् मुस्लिमी-न पढ़ो।" इस पर इमरान बिन हुसैन रज़ि0 हदीस के रावी हैं ने कहा - ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या यह सवाब आप के और आप के घर वालों के लिये मख़्सूस है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया-नहीं, बल्कि आम मुसलमानों के लिये भी यही सवाब है।

4) और अगर ऊँटनी हो तो (ज़मीन पर लिटाने के बजाए, पाँव बाँध कर) खड़ा करे, फिर कहे -

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ

अल्लाहु अक्-बरु अल्लाहु अक्-बरु अल्लाहु अक्-बरु, अल्लाहुम्म मिन्-क व-ल-क

फिर "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्-बरु" कह कर नह्र करे (यानी नेज़ा या भाला से लम्बाई में गला काटे)

अक़ीक़ा का जानवर ज़िब्ह करने के समय

1) अगर अक़ीका का जानवर हो तो क़ुर्बानी के जानवर की तरह अमल करे केवल "बिस्मिल्लाहि अक़ी - क-त फुलानिन्-और, फ़लाँ के स्थान पर बच्चे या बच्ची का नाम ले।

★

काबा शरीफ़ में दाख़िल होने के समय

★ जब (मक्का में आ कर ज़ियारत का तवाफ़ कर चुके और) काबा के अन्दर हो तो उस के हर कोना में "अल्लाहु अकबर" कहे और दुआएँ माँगे। जब बाहर निकल आये तो काबा के सामने खड़े होकर दो रकअत नमाज़ पढ़े।

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (अन्तिम हज्ज के मौक़ा पर) काबा के अन्दर दाख़िल हुये। उसामा बिन ज़ैद, उस्मान बिन तल्हा (काबा के दर्वाज़े की चाबी के मालिक) और बिलाल रज़ि0 भी आप के साथ थे। काबा का दर्वाजा बन्द कर दिया और काफ़ी समय तक अन्दर रहे (हदीस के रावी इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं) जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाये तो मैं ने बिलाल से पूछा – नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्दर क्या किया था? बिलाल ने कहा – एक (यानी अगले) सुतून को अपने दायें तरफ़ और दो को अपने बाएँ तरफ़ और तीन (यानी पिछले) सुतूनों को अपने पीछे कर के नमाज़ पढ़ी थी। काबा उस ज़माना में छः सुतूनों पर बना हुआ था।

एक दूसरी हदीस में हज़रत उसामा रज़ि0 से रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल्लाह के अन्दर दाख़िल हुये तो बिलाल को आदेश दिया और उन्होंने दर्वाज़ा बन्द कर दिया। बैतुल्लाह के उस ज़माना में छः सुतून थे। फिर आप आगे बढ़े यहाँ तक कि जब इन दो सुतूनों के दर्मियान पहुँचे जो काबा (बन्द) दर्वाज़े के क़रीब हैं, तो आप बैठ गये और अल्लाह की हम्द व सना की, दुआ माँगी और माफ़ी माँगी, फिर खड़े हुए

यहाँ तक कि उस स्थान पर पहुँचे जो काबा के पिछले हिस्से के सामने है तो अपना चेहरा और गाल उस पर रखा और अल्लाह की हम्द-सना की दुआ माँगी और माफ़ी माँगी, फिर काबा के हर-हर कोना में गये और उस की तरफ़ मुहँ करके तक्बीर, तहलील, तस्बीह और हम्द-सना की और दुआ माँगी और माफ़ी तलब की फिर बाहर निकल आये और काबा के दर्वाज़े के सामने खड़े हो कर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी, फिर वापस तश्रीफ़ ले आये।

ज़म्ज़म् का पानी पीने का समय

1) और जब (तवाफ़ की दो रक्अ़तों से फ़ारिग़ हो कर ज़मज़म कुएँ पर आये और) ज़म्ज़म् का पानी पिये तो काबा की तरफ़ मुँह कर के और "बिस्मिल्लाह" पढ़ कर तीन साँस में ख़ूब पेट भर कर पिये, और जब पी चुके तो "अल्-हम्दु लिल्लाहि" कहे।

फ़ायदा - नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - बेशक हम मुसलमानों और मुनाफ़िक़ों के दर्मियान निशानी (और फ़र्क़) ही यह है कि मुनाफ़िक़ ज़मज़म का पानी पेट भर कर नहीं पीता (और हम ख़ूब पेट भर कर पीते हैं)

दूसरी हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - ज़म्ज़म् का पानी जिस उद्देश्य से पिया जाये उसी मक़्सद के लिये (लाभदायक) होता है। अगर तुम उस को (दु:ख-बीमारी से) शिफ़ा के लिये पियोगे तो अल्लाह तआ़ला

नोट - बाज़ हदीसों से साबित है कि आप ने काबा के अन्दर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी है और यही राजेह है। संपादक रह0 ने हर दो हदीसें इसी लिए नकल की हैं - (इदरीस)

तुम को शिफ़ा देदेंगे, और अगर तुम अपनी प्यास बुझाने के लिये पियोगे तो अल्लाह तुम्हारी प्यास बुझा देंगे।

2) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि0 जब ज़मज़म का पानी पीते तो कहते-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَآءً مِّنْ كُلِّ دَآءٍ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क अ़िल्-मन् नाफ़ि-अ़न् वरिज़्-क़न् वासि-अ़न् वशिफ़ा-अम मिन् कुल्लि दाइन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से लाभ पहुँचाने वाले इल्म, कुशादा रोज़ी और हर बीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हूँ।"

★ किताब के संपादक मुहम्मद बिन मुहम्मद जज़री रह0 फ़रमाते हैं कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 ज़मज़म् कुएँ के पास आये और पीने को माँगा और हाथ में प्याला लेकर क़िब्ला की तरफ़ मुँह किया और कहा -

"ऐ अल्लाह! बेशक इब्ने अबुल् मवाल ने हम से हदीस बयान किया मुहम्मद बिन मन्किदिर से, उन्होंने रिवायत किया जाबिर से कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- ज़मज़म् का पानी जिस मक़सद के लिये पिया जाये उसी के लिये (लाभदायक) होता है। और मैं यह पानी क़यामत के दिन की प्यास बुझाने के लिए पीता हूँ । इसके बाद उन्होंने ज़मज़म् का पानी पी लिया।"

(संपादक रह0 फ़रमाते हैं) मैं कहता हूँ कि (इस हदीस की) यह सनद सहीह है, क्योंकि हदीस के हाफ़िज़ अ़ब्दुल्लाह

बिन मुबारक से इस हदीस को रिवायत करने वाले सुवैद बिन सईद भरोसे मन्द रावी हैं। इमाम मुस्लिम रह0 ने सहीह मुस्लिम में इन की हदीस रिवायत की है, और (इब्ने मुबारक के शैख़) इब्ने अबी मवाल भी भरोसे मन्द हैं। इमाम बुख़ारी रह0 ने सहीह बुख़ारी में इन से हदीस रिवायत की है, इसलिए अल्लाह के फ़ज़्ल से यह हदीस बिल्कुल सही है।

नोट –संपादक रह0 का इस हदीस के नक़्ल करने और हदीस साबित करने का मक़सद यह है कि हर शख़्स को इसी नियत से और यही कह कर ज़म्ज़म् का पानी पीना चाहिये जो इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने फ़रमाया था।

जिहाद के सफ़र और दुश्मन से मुक़ाबला के वक़्त की दुआयें

1) अगर (काफ़िरों से) जिहाद करने के लिए सफ़र करे, या दुश्मन से मुठभेड़ हो जाये तो यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عَضُدِیْ وَنَصِیْرِیْ بِكَ اَحُوْلُ وَبِكَ اَصُوْلُ وَبِكَ اُقَاتِلُ

अल्लाहुम्म अन्–त अज़ुदी व–नसीरी बि–क अहूलु वबि–क उसूलु वबि–क उक़ातिलु

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू ही मेरा बाज़ू है और (तू ही) मेरा सहायक है, मैं तेरी ही सहायता से (जंग की) तदबीर करता हूँ और तेरी ही सहायता से आक्रमण करता हूँ और तेरी ही सहायता से लड़ता हूँ।"

2) या यह दुआ पढ़े –

رَبِّ بِكَ اُقَاتِلُ وَبِكَ اُصَاوِلُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ

रब्बि बि–क उक़ातिलु वबि–क उसाविलु, वला हौ–ल वला क़ुव्व–त इल्ला बि–क

तर्जुमा – "ऐ मेरे मौला! तेरी ही मदद से मैं जंग करता हूँ और तेरी ही सहायता से हम्ला करता हूँ और कोई ताक़त–क़ुव्वत नहीं मगर तेरी मदद के बग़ैर।"

3) या यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ عَضُدِیْ وَاَنْتَ نَاصِرِیْ وَبِكَ اُقَاتِلُ

अल्लाहुम्म अन्-त अज़ुदी, व-अन्-त नासिरी, वबि-क उक़ातिलु

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ही मेरा (हाथ और) बाज़ू है और तू ही मेरा मददगार है, और तेरे ही भरोसे पर में जंग करता हू

जंग के महाज़ का ख़ुत्बा और दुआ़

★ जब मुजाहिद, दुश्मन से लड़ने के लिए तैयार हो जाए तो इमाम (कमान्डर) सूरज ढलने का इन्तिज़ार करे, यहाँ तक कि जब ज़वाल हो जाये तो खड़े हो कर यह ख़ुत्बा दे -

يَا اَيُّهَا النَّاسُ لَا تَتَمَنَّوْا لِقَاءَ الْعَدُوِّ وَسَلُوا اللّٰهَ الْعَافِيَةَ فَاِذَا لَقِيْتُمُوْهُمْ فَاصْبِرُوْا وَاعْلَمُوْا اَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوْفِ

या अय्यु-हन्नासु ला त-त-मन्नौ लिक़ा-अल् अ़दुव्वि व-सलुल्ला-हल् आ़फ़ि-य-त, फ़इज़ा लक़ीतुमूहुम् फ़सबिरु वअ्-लमू अन्नल्-जन्न-त तह्-त ज़िलालिस्सुयूफ़ि

तर्जुमा - "ऐ मुजाहिदो! दुश्मनो से मुक़ाबला की इच्छा न करो (बल्कि) अल्लाह से ख़ैर-आ़फ़ियत माँगो, फिर जब उन से मुक़ाबला हो ही जाये तो क़दम जमाए रखो और विश्वास रखो कि जन्नत तल्वारों की छाँव के नीचे है।"

1) इस के बाद यह दुआ़ माँगे -

اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ وَمُجْرِيَ السَّحَابِ وَهَازِمَ الْاَحْزَابِ اهْزِمْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ

अल्लाहुम्म मुनज़ि-लल् किताबि व मुज्रियस्सहाबि वहाज़िमल्

अह्ज़ाबि, अहज़िम्हुम् वन्सुर्ना अलेहिम्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! (आसमान से) किताब (कुरआन) उतारने वाले, बादलों को चलाने वाले और (शैतानी) लश्करों को पराजित कर देने वाले इन (दुश्मनों) को पराजित कर दे और इन (के मुक़ाबला) पर हमारी सहायता कर।"

2) या यह दुआ माँगे -

اللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيْعَ الْحِسَابِ اَهْزِمِ الْاَحْزَابَ اللّٰهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ

अल्लाहुम्म मुन्ज़ि-लल् किताबि, सरी-अल् हिसाबि, अहज़िमिल् अह्ज़ा-ब, अल्लाहुम्म अहज़िम्हुम् व-ज़ल्ज़िल्हुम्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! किताब (क़ुरआन) को उतारने वाले, बहुत जल्द हिसाब कर देने वाले, इन (दुश्मनों की) फ़ौजों को शिकस्त देदे। ऐ अल्लाह! तू इन को पसपा कर दे और इन में हलचल डाल दे।"

दुश्मनों के नगर पर उतरते समय

★ जब (मुसलमानों की सेना) दुश्मन के नगर (या आबादी) के निकट पहुँचे तो (कमान्डर) यह कहे -

اَللّٰهُ اَكْبَرُ خَرِبَتْ ....

अल्लाहु अक्-बरु ख़रि-बत्----

"अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह करे तबाह हो जाये--।"

यहाँ डाट लगे हुये स्थान पर उस नगर का नाम ले जिस में दाख़िल होना चाहता है। इसके बाद तीन मर्तबा यह पढ़े -

إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ

इन्ना इज़ा न-ज़ल्ना बिसा-हति क़ौमिन् फ़-सा-अ सबाहुल् मुन्ज़री-न

"बेशक हम जब किसी (दुश्मन) क़ौम के मैदान (इलाक़ा) में उतरें तो डराए हुये लोगों की सुबह (अल्लाह करे) बुरी हो।"

किसी क़ौम से डर-ख़ौफ़ के समय

1) अगर दुश्मन मुसलमानों को घेर लें तो यह दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِنَا وَاٰمِنْ رَّوْعَاتِنَا

अल्लाहुम्मस् तुर् औरा-तना वआमिन् रौआतिना

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू हमारी कमज़ोरियों को छुपाले और हमारे डर और दहशत को अम्न-अमान देदे।"

दुश्मन की फ़ौजों के पसपा हो कर चले जाने के समय की दुआ

1) जब (अल्लाह तआला की सहायता और सहयोग से) दुश्मनों की सेना पस्पा हो जाये तो इमाम (कमान्डर) अपनी फ़ौजों की सफ़ें बाँध कर अपने पीछे खड़ा करे, फिर अल्लाह का शुक्र अदा करे और दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهُ، لَا قَابِضَ لِمَا بَسَطْتَ، وَلَا بَاسِطَ لِمَا قَبَضْتَ، وَلَا هَادِيَ لِمَنْ اَضْلَلْتَ، وَلَا مُضِلَّ لِمَنْ

هَدَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا
مُقَرِّبَ لِمَا بَاعَدْتَ وَلَا مُبَاعِدَ لِمَا قَرَّبْتَ اَللّٰهُمَّ ابْسُطْ
عَلَيْنَا مِنْ بَرَكَاتِكَ وَرَحْمَتِكَ وَفَضْلِكَ وَرِزْقِكَ اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ
أَسْأَلُكَ النَّعِيْمَ الْمُقِيْمَ الَّذِيْ لَا يَحُوْلُ وَلَا يَزُوْلُ، اَللّٰهُمَّ
إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الْأَمْنَ يَوْمَ الْخَوْفِ. اَللّٰهُمَّ عَائِذٌ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا
أَعْطَيْتَنَا، وَمِنْ شَرِّ مَا مَنَعْتَنَا، اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْإِيْمَانَ وَزَيِّنْهُ فِيْ
قُلُوْبِنَا، وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ، وَاجْعَلْنَا مِنَ
الرَّاشِدِيْنَ، اَللّٰهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ وَأَلْحِقْنَا بِالصَّالِحِيْنَ
غَيْرَ خَزَايَا وَلَا مَفْتُوْنِيْنَ، اَللّٰهُمَّ قَاتِلِ الْكَفَرَةَ الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ
رُسُلَكَ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ، وَاجْعَلْ عَلَيْهِمْ رِجْزَكَ
وَعَذَابَكَ، إِلٰهَ الْحَقِّ آمِيْنَ۔

अल्लाहुम्म ल-कल् हम्दु कुल्लुहू, ला क़ाबि-ज़ लिमा ब-सत्त, वला बासि-त लिमा क़-बज़्-त, वला हादि-य लि-मन् अज़्-लल्-त, वला मुज़िल्ल लि-मन् हदै-त, वला मोअ्ति-य लिमा म-नअ्-त, वला मानि-अ़ लिमा अअ्तै-त, वला मु-क़र्रि-ब लिमा बा-अ़त्त, वला मुबाअ़ि-द लिमा क़र्रब्-त +अल्लाहुम्म उब्सुत अलैना मिन् ब-रकाति-क व-रह्-मति-क व-फ़ज़्लि-क वरिज़्क़ि-क, अल्लाहुम्मा इन्नी अस्-अलु- कन्नअ़ी-मल् मुक़ी-मल्लज़ी ला यहूलु वला यज़ूलु +अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् अम्-न यौ-मल् ख़ौफ़ि+अल्लाहुम्म आइज़ुम बि-क मिन् शर्रि मा अअ्तै-तना वमिन् शर्रि मा म-नअ्-तना+ अल्लाहुम्म हब्बि इलै-नल् ईमा-न व-ज़य्यिन्हु फ़ी क़ुलूबिना. व-कर्रिह् इलै-नल् कुफ़्-र वल् फ़ुसू-क़ वल् अ़िस्या-न,

वज़्-अ़ल्ना मि-नर्राशिदी-न+ अल्लाहुम्म त-वफ़्फ़ना मुस्लिमी-न व-अल्हिक़्ना बिस्सालिही-न ग़ै-र ख़ज़ाया वला मफ़्तूनी-न, अल्लाहुम्म क़ातिलिल् क-फ़-र-तल्लज़ी-न यु-कज़्ज़िबू-न रुसु-ल-क व-यसुद्दू-न अ़न् सबीलि-क, वज्-अ़ल् अ़लैहिम् रिज्-ज़-क व-अ़ज़ा-ब- क, इला-हल् हक़्क़ि-आमी-न

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तमाम तारीफ़ तेरे ही लिये हैं, जिस को तू कुशादगी अ़ता फ़रमाए उस पर कोई तन्गी करने वाला नहीं, और जिस पर तू तन्गी फ़रमाये उस को कोई कुशादा करने वाला नहीं, और जिसे तू गुमराह घोषित कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं, और जिसे तू हिदायत दे दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं, और जो चीज़ तू रोक दे (यानी न दे) उस का कोई देने वाला नहीं, और जो तू दे उसे कोई नष्ट करने वाला नहीं, और जो तू निकट कर दे उसे कोई दूर करने वाला नहीं। ऐ अल्लाह! तू हमारे ऊपर अपनी बर्कतें, अपनी रहमत, अपना फ़ज़्ल और इनाम, और अपनी कुशादा रोज़ी दे दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से वह हमेशा की नेमत माँगता हूँ जो न कभी बदले और उनको ज़वाल हो। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से ख़ौफ़ और डर के दिन अमन चाहता हूँ। ऐ अल्लाह! तू ने जो हमें दिया उस की भी बुराई से, और जो नहीं दिया उस की भी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ। ऐ अल्लाह! तू ईमान को हमारा महबूब बना दे और हमारे दिलों में उस को डाल दे, और कुफ़्र को, बदकारी को, नाफ़र्मानी को मकरूह बना दे और हमारे दिलों को उससे फेर दे) और हमें हिदायत पाए हुये लोगों में शामिल कर दे। ऐ अल्लाह! तू हमें इस्लाम पर उठा और (अपने) नेक बन्दों में शामिल कर ले। न हम (अपने बुरे कर्मों के नाते) ज़लील हों और न हम फ़ितनों में गिरफ़्तार हों। ऐ अल्लाह! तू उन काफ़िरों को हलाक

कर दे जो तेरे रसूलों को झुठलाते हैं और तेरी राह से (मख़्लूक़ को) रोकते हैं, और तू उन पर अपनी नाराज़गी और अज़ाब नाज़िल फ़रमा। ऐ सच्चे माबूद! तू तौबा कबूल फ़रमा।" आमीन

नव मुस्लिमों के लिए दुआ

1) और जो ग़ैर मुस्लिम (इस जिहाद के सफ़र में) इस्लाम कबूल कर लें उन को यह दुआ सिखलाए -

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ

अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली वर्-हम्नी वह्दिनी वर्ज़ुक़्नी

"ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ कर दे, मुझ पर रहम फ़रमा, मुझे रोज़ी दे और मुझे हिदायत दे।"

जिहाद के सफ़र से वापसी पर

1) जिहाद के सफ़र से जब वापस हो तो जिस बुलन्द स्थान पर पहुँचे तो तीन मर्तबा "अल्लाहु अकबर" (नारए तक्बीर) कहे, और इस के बाद यह दुआ पढ़े -

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ،
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ، سَاجِدُوْنَ
سَآئِحُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ، صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ
وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ۔

लाइला-ह इल्लल्लाहु, वह्-दहू, ला शरी-क लहू, लहुल मुल्कु व-लहुल् हम्दु, व-हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

आइबू-न ताइबू-न आबिदू-न साजिदू-न साइहुना लि-रब्बिना, हामिदू-न, स-द-क़ल्लाहु वा दहू वअू-न-स-र अब्-दहू व-ह-ज़-मल् अह्ज़ा-ब वह्-दहू+

तर्जुमा- "अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं है, उसी का (तमाम) मुल्क है और उसी के लिये हर प्रकार की तारीफ़ है और वही हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है। (हम जिहाद के) सफ़र से वापस आने वाले हैं, (अपनी कोताहियों से) तौबा करने वाले हैं, (अपने रब की) इबादत करने वाले हैं, (उसको) सज्दा करने वाले हैं, (उसी की राह में) सफ़र करने वाले हैं, अपने पर्वरदिगार की हम्द-सना करने वाले हैं। अल्लाह ने अपना वादा सच्चा कर दिया और अपने बन्दे की सहायता फ़रमायी, और अकेले ही (दुश्मनों की) सेना को पराजित कर दिया।"

जब अपने नगर के निकट पहुँचे

1) जब अपने नगर के निकट पहुँचे तो नगर में दाख़िल होने तक इन कलिमात को बराबर पढ़ता रहे -

آئِبُوْنَ تَائِبُوْنَ، عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

आइबू-न, ताइबू-न, आबिदूना, रि-रब्बिना हामिदू-न

तर्जुमा - "हम (जिहाद के सफ़र से) लौटने वाले हैं, (अपनी कोताहियों से) तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, और अपने रब की प्रशंसा करने वाले हैं।"

घर में दाख़िल होने के समय

1) जब घर में दाख़िल हो तो कहे -

اَوْبًا اَوْبًا لِرَبِّنَا تَوْبًا لَا يُغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا

औ-बन, औ-बन लि-रब्बिना तौ-बन, ला युग़ादिरु अ़लैना हौ-बन

तर्जुमा - "(हम अपने मौला के सामने) तौबा करते हैं तौबा, अपने रब के लिये ही (हम लौट कर) आये हैं। वह हमारे किसी गुनाह को भी बाक़ी न छोड़े (और सब को माफ़ कर दे)

किसी भी ग़म, घबराहट और कठिनाई आ जाने के समय की दुआ़

1) जो किसी भी रन्ज, ग़म, घबराहट और परेशानी में फँस जाये, या किसी कठिनाई में गिरफ़्तार हो जाये, उस को यह पढ़ना चाहिये -

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْعَظِيْمُ الْحَلِيْمُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ

लाइला-ह इल्लल्लाहुल् अ़ज़ीमुल् हलीमु, लाइला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल् अ़रशिल् अ़ज़ीमि, लाइला-ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति वल्-अर्ज़ि व-रब्बुल् अ़रशिल् करीमि+

तर्जुमा - "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो बहुत ही बड़ाई वाला और बड़ा ही बुर्दबार है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़े अ़र्श का रब है, अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं जो आसमानों और ज़मीन का परवर्दिगार है. और करीम अ़र्श का मालिक है।"

2) या यह पढ़े -

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ
الْعَظِيْمِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ وَرَبُّ
الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ۔

लाइला-ह इल्लल्लाहुल् हलीमुल् करीमु, लाइला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि, लाइला-ह इल्लल्लाहु रब्बुस्समावाति व-रब्बुल् अर्ज़ि व-रब्बुल् अ़र्शिल् करीमु+

तर्जुमा - "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़ा हलीम, बहुत करम करने वाला है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो बड़े अ़र्श का रब है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, जो आसमानों का रब है, ज़मीन का पर्वरदिगार है, बड़ी कृपा करने वाला अर्श का मालिक है।"

3) या यह पढ़े -

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْعَظِيْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

लाइला-ह इल्लल्लाहुल् हलीमुल् अ़ज़ीमु, लाइला-ह इल्लल्लाहु रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि+

तर्जुमा - "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़ा ही हलीम, बहुत ही बुज़ुर्ग है, अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, जो बड़े अ़र्श का मालिक है।"

★ इस के बाद जो रन्ज-ग़म परेशानी-कठिनाई हो उस के दूर होने के लिये दुआ़ माँगे।

4) या यह दुआ़ पढ़े-

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَتَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ [91]

लाइला-ह इल्लल्लाहुल् हलीमुल् करीमु, सुब्हा-नल्लाहि, व-तबा-र-कल्लाहु रब्बुल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि, वल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न

तर्जुमा - "अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं जो बड़ा बुर्दबार और बहुत करम करने वाला है। पाक है अल्लाह, और बहुत बर्कत वाला अल्लाह जो बड़े अर्श का रब है। और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिये है जो समस्त संसार का रब है।"

5) या यह दुआ पढ़े -

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. [92]
اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ عِبَادِكَ.

लाइला-ह इल्लल्लाहुल् हलीमुल् करीमु, सुब्हा-नल्लाहि रब्बिस्समावातिस्सब्अ़ि व-रब्बिल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि, अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न+अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि अ़िबादि-क

तर्जुमा - "अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं जो बड़ा ही हलीम और बहुत करम करने वाला है। पाक है अल्लाह जो सात आसमानों का रब है और बड़े अ़र्श का मालिक है। सब तारीफ़ अल्लाह के लिये (मख़्सूस) है जो तमाम जहानों का रब है। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ तेरे बन्दों की बुराई से।"

फ़ायदा - संपादक रह० फ़रमाते हैं- "इस दुआ़ की सनद सही है। इब्ने अबू आसिम ने अपनी "किताबुद्दुआ़" में बयान किया है।

6) और यह दुआ़ भी (ज़्यादा से ज़्यादा) पढ़ा करे -

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ

हस्बु-नल्लाहु व नेअ्-मल् वकीलु (या)

حَسْبِيَ اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ

हस्बि-यल्लाहु व नेअ्-मल् वकीलु

"हमें अल्लाह काफ़ी है और वह बेहतरीन बिगड़ी बनाने वाला है" या

मुझे अल्लाह काफ़ी है और वह बेहतरीन बिगड़ी बनाने वाला है"

7) यह दुआ़ भी कम से कम तीन मर्तबा पढ़ा करे -

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّيْ لَآ اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

اَللّٰهُ رَبِّيْ لَآ اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उशरिकु बिही शै-अन् (या)

अल्लाहु रब्बी ला उशरिकु बिही शै-अन्

तर्जुमा - "अल्लाह, अल्लाह मेरा रब है, मैं उस के साथ किसी को भी शरीक नहीं करता।"

(या) अल्लाह मेरा रब है, मैं उस के साथ किसी को भी शरीक नहीं करता।"

8) या इस प्रकार पढ़े -

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّیْ لَآ اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّیْ لَآ اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا

अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उशरिकु बिही शै-अन्

अल्लाहु अल्लाहु रब्बी ला उशरिकु बिही शै-अन्

9) या यह दुआ पढ़े -

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَمُوْتُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِی الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا۔

त-वक्कल्तु अ़-लल् हय्यिल्लज़ी ला यमूतु, वल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-ल-दंव-लम् यकुंल्लहू शरीकुन् फ़िल् मुल्कि व-लम् यकुंल्लहू वलिय्युम्मि-नज़्ज़ुल्लि व-कब्बिर्हु तक्बीरा+

तर्जुमा - "मैंने उस (हमेशा) जीवित रहने वाले (अल्लाह) पर भरोसा किया है जिस के लिये मौत नहीं है। और सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिस ने न किसी को बेटा बनाया और न कोई उस के मुल्क (खुदाई) में उस का साझी है और न वह कुछ कमज़ोर ही है कि उस का कोई सहायक हो। और (ऐ मुख़ातब) तू उस की बड़ाई को ख़ूब-ख़ूब बयान कर।"

10) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ، فَلَا تَكِلْنِیْ اِلٰى نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَّ اَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ كُلَّهٗ، لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ۔

अल्लाहुम्म रह्-म-त-क अरजू, फला तकिलनी इला नफ्सी तर्-फ़-त ऐनिन् व-असलिह ली शानी कुल्लहू, लाइला-ह इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "इलाही! मैं तेरी रहमत ही की आशा करता हूँ, इसलिये तू मुझे पलक झपकने तक के लिये भी मेरे नफ्स के सुपुर्द न कर, और मेरे कार्य दुरुस्त कर दे, तेरे सिवा कोई पूजे जाने योग्य नहीं।"

11) और यह दुआ (गिड़गिड़ा कर) माँगे

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

या हय्यु या क़य्यूमु बि-रह्-मति-क अस्-तग़ीसु

"ऐ (हमेशा-हमेशा) जिन्दा रहने वाले, ऐ (समस्त संसार को) क़ायम रखने (और संभालने) वाले! तेरी ही रहमत की दुहाई है।"

12) सज्दा में पड़ कर "या हय्यु या क़य्यूमु" बार-बार कहे।

13) या यह दुआ पढ़े -

لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

लाइला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मि-नज़्ज़ालिमी-न

तर्जुमा - "तेरे अलावा और कोई इबादत के लाइक़ नहीं, तू पाक ज़ात है, बेशक मैं ही (अपने ऊपर) अत्याचार करने वालों में से हूँ।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - जो भी

मुसलमान किसी भी मक़सद के लिये इस आयत को पढ़ कर दुआ माँगेगा अल्लाह तआला उस की दुआ को ज़रूर क़बूल फ़रमायेंगे।

किसी भी रन्ज-ग़म और मुसीबत के समय की दुआ

1) किसी भी रन्ज-ग़म और मुसीबत के समय यह पढ़े और दुआ माँगे -

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ، نَاصِيَتِيْ بِيَدِكَ
مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ، اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ
هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَكَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِيْ كِتَابِكَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ
اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِيْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ
اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ رَبِيْعَ قَلْبِيْ وَنُوْرَ بَصَرِيْ وَجِلَاءَ
حُزْنِيْ وَذَهَابَ هَمِّيْ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अ़ब्दु-क वब्नु अ़ब्दि-क वब्नु अ-मति-क, नासि-यती बि-यदि-क, माज़िन् फ़िय्य हुक्मु-क, अ़द्लुन् फ़िय्य क़ज़ाउ-क, अस्-अलु-क बिकुल्लि इस्मिन् हु-व ल-क, सम्मै-त बिही नफ़्-स-क औ अन्-ज़ल्-तहू फ़ी किताबि-क, औ अ़ल्लम्-तहू अ-ह-दन् मिन् ख़ल्क़ि-क अविस्-ता-सर्-त बिही फ़ी अ़िलमिल ग़ैबि अ़िन्-द-क, अन् तज्-अ़-लल् क़ुर्आ-नल् अ़ज़ी-म रबी-अ़ क़ल्बी वनू-र ब-स-री वजिला-अ हुज़्नी व-ज़हा-ब हम्मी+

तर्जुमा - "इलाही! मैं तेरा ही बन्दा हूँ और तेरे ही बन्दे

और तेरी ही बन्दी का बेटा हूँ (यानी मेरे माँ-बाप ही तेरे बन्दे हैं) मेरी पेशानी (ज़ात) तेरे हाथ में है, तेरा हर हुक्म मेरे हक़ में चलता है, तेरा हर फ़ैसला मेरे बारे में मुकम्मल न्याय है, मैं तेरे हर उस नाम (के वसीले से) जो तेरा (मशहूर) है, तू ने स्वँय उस को (अपना) नाम रखा, या उस को अपनी पुस्तक (क़ुरआन) में नाज़िल फ़रमाया, या अपनी मख़्लूक़ में से किसी को बतलाया, या तू ने उस को इल्मे ग़ैब (के ख़ज़ाना) में अपने पास ही सुरक्षित रखा, मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ कि तू क़ुरआन अज़ीम को मेरे दिल की बहार, निगाह का नूर और मेरे ग़म को दूर करने और मेरी परेशानी समाप्त करने का ज़रीया बना दे।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो भी अल्लाह का बन्दा किसी मुसीबत या रन्ज और ग़म में गिरफ़्तार हो और वह ऊपर की दुआ को पढ़ा करे तो अल्लाह तआला अवश्य उस से मुसीबत, परेशानी और रन्ज-ग़म को दूर फ़रमा देंगे और उस के रन्ज व मुसीबत को खुशी से बदल देंगे।

2) किसी भी रन्ज-ग़म या दुःख बीमारी में गिरफ़्तार होने के समय ज़्यादा से ज़्यादा यह पढ़ा करे

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ

लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि

"कोई भी ताक़त और क़ुव्वत अल्लाह (की मदद) के बिना (हासिल) नहीं।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि "लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह" जो शख़्स पढ़ा करे उस के लिये यह 99 दुःख और दर्द की दवा है, जिस में सब से हल्की बीमारी

फ़िक्र और परेशानी है। (सुब्हानल्लाह! कितना सरल नुस्ख़ा है)

3) हर रन्ज, व ग़म, मुसीबत-परेशानी और दुःख-बीमारी के समय ज़्यादा से ज़्यादा इस्तग़फ़ार पढ़ा करे।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْتَغْفِرُكَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّأَتُوْبُ إِلَيْكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-तग़फ़िरु-क मिन् कुल्लि ज़म्बि-न् व-अतूबु इले-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हर गुनाह की मग़फ़िरत चाहता हूँ और तौबा करता हूँ।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि-जो शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा और पाबन्दी के साथ इस्तिग़फ़ार करता रहेगा अल्लाह उस को हर तंगी (मुसीबत) से छुटकारा और हर ग़म-परेशानी से छुटकारा देंगे, और जहाँ से उस को गुमान भी न होगा वहाँ से उस को रोज़ी अ़ता फ़रमायेंगे।

4) मुसीबत और परेशानी में घिरे हुये परेशान हाल शख़्स के लिये अज़ान के समय पढ़ने की दुआ़ इस से पहले बयान हो चुकी है, उसे पढ़ा करे।

5) जब भी किसी मुसीबत और बला में गिरफ़्तार हो या ख़तरनाक बीमारी हो या ख़तरनाक मामला पेश आने की शंका हो, या किसी बहुत बड़ी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाये तो ज़्यादा से ज़्यादा इस दरूद को पढ़ा कर -

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا

हसबु-नल्लाहु व नेअ्-मल् वकीलु अ़-लल्लाहि त-वक्कल्ना

"काफ़ी है हमारे लिये अल्लाह! वह बहुत ही अच्छा कारसाज़

है, अल्लाह पर ही हमने भरोसा किया है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर किसी बला, या गंभीर मामला (मुसीबत) पेश आने का भय हो तो ऊपर की दुआ को पढ़ा करे।

6) अगर किसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जाये तो यह दुआ पढ़े-

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ عِنْدَكَ أَحْتَسِبُ مُصِيْبَتِيْ فَأْجِرْنِيْ فِيْهَا وَأَبْدِلْنِيْ مِنْهَا خَيْرًا۔

इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊ-न+ अल्लाहुम्म अ़िन्-द-क अह्-तसिबु मुसी-बती फ़-अजिर्नी फ़ीहा व-अब्दिल्नी मिन्हा ख़ै-रन्

"बेशक हम तो अल्लाह ही के बन्दे हैं। ऐ अल्लाह! मैं तेरे ही दरबार में अपनी यह मुसीबत पेश करता हूँ, पस तू मुझे इस मुसीबत में सवाब अ़ता फ़रमा और बदले में इस से बेहतर (नेमत) अ़ता फ़रमा।" اَللّٰهُمَّ أْجُرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاخْلُفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا۔ (صحیح مسلم)

अल्लाहुम्म अजिर्नी फ़ी मुसीबती व-अख़्लिफ़ली ख़ै-रम्मिन्हा

"ऐ अल्लाह! तू मुझे इस मेरी मुसीबत में अज्र दे और बेहतर इस का बदला दे।" (सहीह मुस्लिम)

★

किसी ख़ास शख़्स या गरोह से भय के समय की दुआ

1) अगर किसी शख़्स से (किसी प्रकार का) ख़ौफ़ हो तो यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اكْفِنَاهُ بِمَا شِئْتَ

अल्लाहुम्मक् फ़िनाहु बिमा शे-त

"ऐ अल्लाह! तू हमें उस शख़्स से बचा जिस प्रकार तू चाहे।"

फ़ायदा - संपादक रह0 फ़रमाते हैं - यह हदीस सही है। अबू नईम ने इस को अपनी पुस्तक "अल् मुस्-तख़्-रजु अ़ला सही मुस्लिम" में बयान किया है।

2) अगर किसी ख़ास गरोह से ख़ौफ़ हो तो यह पढ़े.

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ وَنَدْرَءُ بِكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ

अल्लाहुम्म इन्ना नऊज़ुबि-क मिन् शुरुरिहिम् व-नद-रउ बि-क फ़ी नुहूरिहिम्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! हम उनकी शरारतों से तेरी पनाह लेते हैं और तुझ से ही हम उन के मुक़ाबले में अपना बचाव करते हैं।"

3) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ

अल्लाहुम्म इन्नी अज्-अ़लु-क फ़ी नुहूरिहिम् व-अऊज़ुबि-क मिन् शुरूरिहिम्

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझे उन के मुकाबले में (अपने लिये) ढाल बनाता हूँ और उन की बुराइयों से तेरी पनाह लेता हूँ।"

किसी बादशाह, शासक, या किसी और ज़ालिम शख़्स से डर-दहशत के समय की दुआ़

1) अगर किसी बादशाह, शासक या किसी ज़ालिम शख़्स-क़ौम से डर हो तो तीन मर्तबा यह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَعَزُّ مِنْ خَلْقِهٖ جَمِيْعًا، اَللّٰهُ اَعَزُّ مِمَّا اَخَافُ وَ
اَحْذَرُ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمُمْسِكُ السَّمَآءَ
اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ، مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلَانٍ وَّجُنُوْدِهٖ
وَاَتْبَاعِهٖ وَاَشْيَاعِهٖ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ، اَللّٰهُمَّ كُنْ لِّىْ جَارًا مِّنْ
شَرِّهِمْ جَلَّ ثَنَآؤُكَ وَعَزَّ جَارُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ۔

अल्लाहु अक्-बरु, अल्लाहु अ-अ़ज़्ज़ु मिन् ख़ल् क़िही जमी-अ़न्, अल्लाहु अ-अ़ज़्ज़ु मिम्मा अख़ाफु व-अह्-ज़रु, अऊज़ुबिल्लाहिल्लज़ी लाइला-ह इल्ला हु-वल् मुम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ़ अ़-लल् अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निही, मिन् शर्रि अ़ब्दि-क फ़ुलानिन् वजुनूदिही व-अत्बाअ़िही व-अश्याअ़िही मि-नल् जिन्नि वल् इन्सि अल्लाहुम्म कुन् ली जा-रन् मिन् शर्रिहिम् जल्ल सनाउ-क व-अ़ज़्ज़ जारु-क वलाइला-ह गैरु-क

तर्जुमा - "अल्लाह सब से बड़ा है. अल्लाह अपनी तमाम

मख़्लूक़ से अधिक शक्तिशाली है, अल्लाह उस से भी अधिक शक्ति शाली है जिस से मैं डरता हूँ और डर रहा हूँ। मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ जिस के सिवा कोई माबूद नहीं है और जिस ने अपने हुक्म के बग़ैर आकाश को ज़मीन पर रोका हुआ है। और ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ) तेरे फ़लाँ बन्दे के, उस की फ़ौज और लश्कर के और उस के पैरूओं और सेवा कारों के जिन्न हों या इन्सान इन सब की बुराई से। ऐ अल्लाह! तू इन सब की बुराई से मुझे पनाह देने वाला बन जा। तेरी हम्द-सना बहुत बड़ी है और तुझ से पनाह लेने वाला (हमेशा) ग़ालिब होता है और तेरे सिवा कोई भी इबादत के लायक़ नहीं।"

2) या यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَا اَحَدٌ مِّنْهُمْ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى

अल्लाहुम्म इन्ना नऊज़ुबि-क अंय्यफ़रु-त अलैना अ-हदुम्मिन् हुम् औ अंय्यत्ग़ा

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! हम तुझ से पनाह माँगते हैं इस बात से कि उन में से कोई भी हम पर ज़्यादती करे या अत्याचार करे।"

3) या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اِلٰهَ جِبْرَئِيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ وَاِلٰهَ اِبْرَاهِيْمَ وَ
اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ عَافِنِيْ وَلَا تُسَلِّطَنَّ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ عَلَيَّ
بِشَيْءٍ لَّا طَاقَةَ لِيْ بِهٖ.

अल्लाहुम्म इला-ह जिब्री-ल वमीकाई-ल वइसराफ़ी-ल वइला-ह इब्राही-म वइस्मा ई-ल वइस्हा-क़ आफ़िनी वला

तु-सल्लि-तन्-न अ-ह-दम्मिन् ख़ल् कि-क अ़लय्य बिशैइल ला ता-क़-त ली बिही।

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! ऐ जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील के माबूद! और इब्राहीम, इसमाईल और इस्हाक़ के माबूद! तू मुझे अमन-शान्ति दे और मेरे ऊपर अपनी मख़्लूक़ में से किसी को भी किसी ऐसी चीज़ के साथ मुसल्लत न कर जिस (के सहन करने या बचाव करने) की मुझ में क्षमता न हो।"

4) और यह पढ़े -

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِيًّا وَّبِالْقُرْاٰنِ حَكَمًا وَّاِمَامًا

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन् वबिल् इस्लामि दी-नन् वबिमु-हम्मदिन् नबी-यन् वबिल् क़ुरआनि ह-क-मन् वइमा-मन्

तर्जुमा - "मैं (राज़ी-ख़ुशी से) अल्लाह को (अपना) रब, इस्लाम को (अपना) दीन और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को (अपना) नबी और क़ुरआन को फ़ैसला करने वाला और (अपना) अगुवा मानता हूँ।"

शैतानों आदि से ख़ौफ़ के समय की दुआ़

1) अगर किसी शैतान (जिन्न, भूत-प्रेत) वग़ैरह से डरे तो यह दुआ़ पढ़े -

أَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ النَّافِعِ، وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِيْ
لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ، مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَاَ وَبَرَاَ وَمِنْ
شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيْهَا، وَمِنْ شَرِّ

مَاذَرَأَ فِي الْأَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ
اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ طَارِقٍ إِلَّا طَارِقًا يَطْرُقُ بِخَيْرٍ، يَا رَحْمٰنُ

अऊज़ु बि-वज्हिल्लाहिल् करीमिन्नाफ़िअि, वबि-कलिमातिल्लाहित्ताम्मा तिल्लती ला युजाविज़ु हुन्न बर्रुन् वला फ़ाजिरून, मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़ व-ज़-र-अ व-ब-र-अ, वमिन् शर्रि मा यन्ज़िलु मि-नस्समाइ, वमिन् शर्रि मा यअ्रुजु फ़ीहा, वमिन शर्रि मा ज़-र-अ फ़िल् अर्ज़ि, वमिन् शर्रि मा यख़्रुजु मिन्हा, वमिन् शर्रि फ़ि-तनिल्लैलि वन्नहारि, वमिन शर्रि कुल्लि तारिक़िन् इल्ला तरि-क़न् यत्रुक़ु बिख़ैरिन्- यारहमानु'

तर्जुमा - "मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह की जो बड़ा ही करम करने और लाभ पहुँचाने वाला है, और अल्लाह के तमाम कलमात की जिन से कोई अच्छा-बुरा बाहर नहीं है, हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की, फैलाई और बेमिसाल बनाई। और हर उस चीज़ (मख़्लूक़) की बुराई से जो आकाश से उतरती है, और हर उस चीज़ की बुराई से जो आकाश में चढ़ती (जाती) है। और हर उस चीज़ (मख़्लूक़) की बुराई से जो अल्लाह ने ज़मीन में फैलाई है, और हर उस चीज़ की बुराई से जो ज़मीन से निकलती है। और रात-दिन की बलाओं की बुराई से, और रात को (पेश) आने वाली (घटना) की बुराई से, सिवाए उस (पेश) आने वाली (घटना) के जो ख़ैर-बर्कत लाती है। ऐ बहुत रहम करने वाले (मुझ पर रहम फ़रमा)

★

जंगलो, मैदानों या वीरान स्थानों में भूत-प्रेत के घेर लेने के समय का अ़मल

1) जब किसी शख़्स को जंगल-वीराने में वहाँ के रहने वाले भूत-प्रेत घेर लें तो ऊँची आवाज़ से अज़ान दे

2) आयतुल कुर्सी (बुलन्द आवाज़ से पढ़े) (सब भाग जायेंगे और कुछ हानि न पहुँचेगा।

दह्शत और घबराहट के समय की दुआ़

1) जो शख़्स दह्शत और घबराहट महसूस करे, उसे यह दुआ़ पढ़नी चाहिये -

أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهٖ وَشَرِّ عِبَادِهٖ وَمِنْ
هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَاَنْ يَّحْضُرُوْنِ.

अऊज़ु बि-कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन ग़-ज़बिही व-शर्रि अि़बादिही वमिन् ह-मज़ातिश्शयाती-नि व-अंय्यहज़ुरूनि

"मैं अल्लाह के नाम (हमागीर) कलिमात की पनाह लेता हूँ अल्लाह के ग़ज़ब (और गुस्सा) से और उस के बन्दों की बुराई से और शैतान के कचोकों (वस्वसों) से, और इस बात से कि वह शैतान मेरे पास आयें।"

किसी वस्तु से बेबस होजाने की दुआ़

1) किसी शख़्स या चीज़ (काम) से बेबस हो जाये, तो यह पढ़ना चाहिये -

حَسْبِیَ اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ

हस्‌बि-यल्लाहु व नअ़्-मल् वकीलु

तर्जुमा- "काफ़ी है मेरे लिये अल्लाह और वह बड़ा ही अच्छी बिगड़ी बनाने वाला है।"

इच्छा के विपरीत किसी वस्तु के सामने आजाने के समय की दुआ

1) जब किसी व्यक्ति की पसन्द और इच्छा के ख़िलाफ़ कोई चीज़ पेश आ जाये तो उस को यूँ कहना चाहिये कि "अगर मैं ऐसा करता तो ऐसा न होता" बल्कि यूँ कहना चाहिये कि "अल्लाह की तक़दीर से हुआ, अल्लाह ने जो चाहा किया" (उसे इख़्तियार है जो चाहे करे)

कोई कार्य कठिन और मुश्किल हो जाने के समय की दुआ

1) कोई कार्य कठिन हो जाये (या मुश्किल आ पड़े) तो यह दुआ पढ़े -

اَللّٰھُمَّ لَا سَھْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَہٗ سَھْلًا وَّاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ سَھْلًا اِذَا شِئْتَ

अल्लाहुम्म ला सह्-ल इल्ला मा ज-अ़ल्-तहू सह्-लन, व-अन्-त तज्-अ़लुल हज़्-न सह्-लन् इज़ा शि-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह कोई कार्य भी सहल नहीं सिवाए उस के जिस को तू सरल कर दे, और तू तो जब चाहे पथरीली (ज़मीनों) को भी नर्म और बराबर कर दे।"

हाजत की नमाज़ का तरीक़ा और दुआए-हाजत का बयान

1) जिस शख़्स को अल्लाह पाक से कोई विशेष हाजत, या उस के किसी बन्दे से कोई ख़ास कार्य पेश आ जाये, तो उस को चाहिये कि वुज़ू करे अच्छी तरह, फिर दो रकअ़त (अपनी हाजत की नियत से) नमाज़े हाजत पढ़े। इस के बाद अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना बयान करे और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दरूद-सलाम भेजे (यानी दरूद शरीफ़ पढ़े)इसके बाद यह दुआ़ करे-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ، وَ
عَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ، وَالْعِصْمَةَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ، وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ
بِرٍّ، وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا
اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

लाइलाह इल्लल्लाहुल् हलीमुल करीमु, सुब्हा-नल्लाहि रब्बिल् अ़र्शिल् अ़ज़ीमि, अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न, अस्-अलु-क मूजिबाति रह्-मति-क, व-अ़ज़ाइम मग़फ़ि-रति-क, वल्-इ़स्-म-त मिन् कुल्लि ज़म्बिन्, वल् ग़नी-म-त मिन् कुल्लि बिर्रिन, वस्सला-म-त मिन् कुल्लि इस्मि-न्, ला-त-दअ़् ली ज़म्-बन् इल्ला ग़-फ़र्-तहू, वला हम्मन् इल्ला फ़र्रज्-तहू, वला हा-ज-तन् हि-य-ल-क रि-ज़न् इल्ला क़ज़े-तहा या-अर्-ह-मर्राहिमी-न

तर्जुमा - "अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं जो बड़ा

ही बुर्दबार और कर्म करने वाला है, पाक है अल्लाह जो बड़े अर्श का रब (मालिक) है, सब तारीफ़ सारे जहान के रब के लिये मख़्सूस हैं, (ऐ अल्लाह) मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ तेरी रहमत के (वाजिब कर देनेवाले) असबाब का, और रहमत को पक्का कर देने वाली आदतों का, और हर गुनाह से सुरक्षा का, और हर नेकोकारी की नेमतं का, और हर नाफ़र्मानी से सलामती का। ऐ अल्लाह! तू मेरे किसी गुनाह को बिना बख़्शे मत छोड़, और मेरे किसी फ़िक्र (और परेशानी को) बिना दूर किये मत छोड़, और मेरी किसी ऐसी आवश्यकता को जो तेरी मर्ज़ी के अनुकूल हो बिना पूरा किये मत छोड़-ऐ सब से बड़े रहम करने वाले।"

2) या ऊपर बताए तरीक़े के मुताबिक़ वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ के यह दुआ माँगे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَیْكَ بِنَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحْمَةِ، یَا مُحَمَّدُ اِنِّیْ اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰی لِیْ، اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क व-अ-त-वज्जहु इलै-क बि-नबिय्यि-क मु-हम्मदिन् नबिय्यिर्रह-मति, या मु-हम्मदु इन्नी अ-त-वज्जहु बि-क इला रब्बी फ़ी हा-जती हाज़िही लि-तुक़ज़ा ली, अल्लाहुम्म फ़शीफ़्फ़िअहु फ़िय्य

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से ही प्रश्न करता हूँ और तेरी ही तरफ़ मुतवज्जह हूँ तेरे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) आप के वसीले से अपने रब की तरफ़ अपनी इस ज़रूरत के बारे में मुतवज्जह होता हूँ (और दुआ करता हूँ) ताकि वह पूरी हो जाये। ऐ अल्लाह! तू मेरे बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़ारिश क़ुबूल कर ले।"

★★★

कुरआन मजीद हिफ़्ज़ करने के लिए अ़मल और दुआ़

1) जो शख़्स क़ुरआन पाक को हिफ़्ज़ (ज़बानी याद) करने का इरादा करे तो उसे चाहिये कि (जुमेरात के दिन) जुमा की रात में अगर हो सके तो अन्तिम तिहाई रात में उठे कि इस घड़ी में (रहमत के) फ़रिश्ते मौजूद होते हैं, और दुआ़ (अल्लाह के हाँ) कबूल होती है। अगर अन्तिम तिहाई रात को उठ सके तो आधी रात को उठे। अगर यह भी न हो सके तो शुरू रात में ही चार रकअ़त नमाज़ पढ़े इस प्रकार कि पहली रकअ़त में सूरः फ़ातिहा और सूरः यासीन पढ़े, दूसरी रकअ़त में सूरः फ़ातिहा और सूरः हामीम दुख़ान, और तीसरी रकअ़त में सूरः फ़ातिहा और अलिफ़ लाम्मीम तन्ज़ील, और चौथी रकअ़त में सूरः फ़ातिहा और सूरः मुल्क पढ़े। तशह्हुद (यानी अत्तहिय्यात) से फ़ारिग़ होने (और सलाम फेरने) के बाद अल्लाह तआ़ला की अच्छी तरह हम्द व सना बयान करे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर अच्छी तरह दरूद भेजे और तमाम सन्देष्टाओं पर भी दरूद भेजे और (अपने लिये और) समस्त मोमिन मर्दों और औरतों और अपने उन भाइयों के लिये इस्तिग़फ़ार (यानी माफ़ी) चाहे, जो पहले ईमान ला चुके हैं। और इस के बाद आख़िर में यह दुआ़ करे। तीन जुमे या पाँच या सात जुमे इस पर अ़मल करे। अल्लाह के हुक्म से यह दुआ़ ज़रूर कबूल होगी :

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِتَرْكِ الْمَعَاصِيْ اَبَدًا مَّا اَبْقَيْتَنِيْ، وَارْحَمْنِيْ اَنْ
اَتَكَلَّفَ مَا لَا يَعْنِيْنِيْ، وَارْزُقْنِيْ حُسْنَ النَّظَرِ فِيْمَا يُرْضِيْكَ عَنِّيْ،
اَللّٰهُمَّ بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَالْعِزَّةِ
الَّتِيْ لَا تُرَامُ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ بِجَلَالِكَ وَنُوْرِ وَجْهِكَ
اَنْ تُلْزِمَ قَلْبِيْ حِفْظَ كِتَابِكَ كَمَا عَلَّمْتَنِيْ وَارْزُقْنِيْ اَنْ اَتْلُوَهٗ عَلَى
النَّحْوِ الَّذِيْ يُرْضِيْكَ عَنِّيْ، اَللّٰهُمَّ بَدِيْعَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ وَالْعِزَّةِ الَّتِيْ لَا تُرَامُ اَسْئَلُكَ يَا اَللّٰهُ يَا رَحْمٰنُ
بِجَلَالِكَ وَنُوْرِ وَجْهِكَ اَنْ تُنَوِّرَ بِكِتَابِكَ بَصَرِيْ وَاَنْ تُطْلِقَ
بِهٖ لِسَانِيْ وَاَنْ تُفَرِّجَ بِهٖ عَنْ قَلْبِيْ وَاَنْ تَشْرَحَ بِهٖ صَدْرِيْ وَاَنْ
تَغْسِلَ بِهٖ بَدَنِيْ فَاِنَّهٗ لَا يُعِيْنُنِيْ عَلَى الْحَقِّ غَيْرُكَ وَلَا يُؤْتِيْهِ
اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۔

अल्लहुम्मर्–हम्नी बि–तरकिल् म–आसी अ–ब–दम्मा अब्क़ै–तनी, वर्–हम्नी अन् अ–त–कल्ल–फ़ माला यअ़्नीनी, वर्ज़ुक़्नी हुस्–नन्नज़्रि फ़ीमा युर्ज़ी–क अ़न्नी+अल्लाहुम्म बदी–अ़स्समा वाति वल्–अर्ज़ि, ज़ल् जलालि वल् इक्रामि वल्अिज़्ज़तिल्लती ला तुरामु, अस्–अलु–क या अल्लाहु या रहमानु बि–जलालि–क वनूरि वज्हि–क अन् तल्ज़ि–म क़ल्बी हिफ़्–ज़ किताबि–क कमा अ़ल्लम्–तनी वर्ज़ुक़्नी अन् अत्लु–वहू अ़–लन्नह्–विल्लज़ी युर्ज़ी–क अ़न्नी+अल्लाहुम्म बदी–अ़स्समावाति वल् अर्ज़ि ज़ल्जलालि वल् इक्रामि वल् अिज़्ज़तिल्लती ला तुरामु, अस्–अलु–क या अल्लाहु या रहमानु बि–जलालि व नूरी वज्हि–क अन् तु–नव्वि–र बिकिताबि–क ब–सरी व–अन् तुत्लि–क़ बिही

लिसानी व-अन् तु-फ़रि-ज बिहि अन् क़ल्बी व-अन् तश्-र-ह बिही सद्री व-अन् तग़सि-ल बिही ब-दनी, फ़इन्नहू ला युईनुनी अ़-लल्-हक्क़ि गैरु-क वला यूतिही इल्ला अन्-त वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीमि+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जब तक मुझे जीवित रखे हमेशा मुसीबतों के छोड़ने की तौफीक़ देकर मुझ पर रहम फ़रमा और बेकार बातों में पड़ने से बचने की भी तौफ़ीक़ दे और रहम फ़रमा, और जो काम तुझ को मुझ से राज़ी करें उन में अच्छी बसीरत नसीब फ़रमा। ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीनों के ईजाद करने वाले, बड़ाई और जलाल और ऐसी इज़्ज़त के मालिक, जिस के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता, मैं तुझ से प्रशन करता हूँ। ऐ अल्लाह! ऐ रहमान! तेरी बड़ाई और बजुर्गी और तेरी ज़ात के नूर का वास्ता दे कर कि जिस प्रकार तू ने मुझे अपनी किताब का ज्ञान दिया है, इसी प्रकार मेरे दिल को अपनी पुस्तक के ज़बानी याद कर लेने का पाबन्द भी बना दे, और मुझे इस किताब को उस तरह तिलावत करने की तौफ़ीक़ अ़ता कर दे जो तुझे मुझ से राज़ी कर दे।

ऐ अल्लाह! आसमान और ज़मीन के ईजाद करने वाले, बड़ाई और जलाल और उस इज़्ज़त के मालिक जिस के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता, मैं तुझ से प्रशन करता हूँ। ऐ अल्लाह! ऐ रहमान! तेरी बड़ाई और तेरी ज़ात के नूर का वास्ता दे कर कि तू अपनी किताब के नूर से मेरी आँखों को रोशन कर दे, और उस को मेरी ज़बान पर जारी कर दे, और मेरे दिल की घुटन को उस से दूर कर दे, और मेरे सीने को उस से खोल दे, और मेरे बदन को उस (के नूर) से धो डाल (यानी पाक कर दे) इसलिये

कि तेरे सिवा और कोई हक़ (तक पहुँचने) पर मेरी मदद नहीं कर सकता, और तू ही मुझे हक़ अता फ़रमा सकता है और समस्त ताक़त व क़ुव्वत अल्लाह बजुर्ग और बाला ही की (सहायता) से है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे सच्चा नबी बनाकर भेजा है कि (ऊपर बताए गये तरीक़े के अनुसार माँगी गयी) दुआ कभी किसी मोमिन बन्दे की ख़ाली नहीं जाती।

★ ★ ★

तौबा का तरीक़ा और दुआ़

1) जब कोई ग़लती हो जाये, या गुनाह कर बैठे और अल्लाह तआ़ला से तौबा करना चाहे तो अल्लाह पाक की तरफ़ मुतवज्जह हो और दोनों हाथ उस की ओर उठा कर कहे -

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَتُوْبُ اِلَیْكَ مِنْهَا لَآ اَرْجِعُ اِلَیْهَا اَبَدًا

अल्लाहुम्म इन्नी अतूबु इलै-क मिन्हा ला अर्जिअु इलै-हा अ-ब-दन्

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तेरे सामने इस (ग़लती या गुनाह) से तौबा करता हूँ और (इक़रार करता हूँ कि) फिर कभी यह (गुनाह) नहीं करूँगा।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स इस प्रकार तौबा करेगा उस का गुनाह बख़्श दिया जायेगा, मगर शर्त यह है कि दोबारा वही गुनाह न करे।

तौबा की नमाज़

1) जो शख़्स कोई गुनाह कर बैठे तो तुरन्त खड़ा हो और (गुनाह से पाक होने की नियत से) अच्छी तरह स्नान या वुज़ू करे, फिर दो रकअ़त नमाज़े तौबा पढ़े, इसके बाद अल्लाह तआ़ला से उस गुनाह की माफ़ी तलब करे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स इस प्रकार (तौबा के लिये स्नान करे और तौबा की नमाज़ पढ़ने के बाद) अल्लाह पाक से माफ़ी माँगेगा उस का गुनाह माफ़ कर

दिया जायेगा।

2) कोई बड़ा पाप हो जाये तो तीन मर्तबा यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِيْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِيْ مِنْ عَمَلِيْ.

अल्लाहुम्म मग़्फ़ि-रतु-क औ-सअु मिन् ज़ुनूबी व-रह्-मतु-क अर्जा अिन्दी मिन् अ-मली

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तेरी माफ़ी मेरे पापों से ज़्यादा कुशादा है और मुझे अपने अमल के मुक़ाबला में तेरी रहमत की अधिक आशा है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि एक शख़्स नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में (रोता-पीटता) "हाये मेरे पाप" "हाये मेरे पाप" कहता हुआ उपस्थित हुआ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस को यही ऊपर की दुआ बताई, तो उसने उसी प्रकार दुआ की। आप ने फ़रमाया: "दोबारा कहो", उसने पुन: वही कलमें कहे। आप ने फ़रमाया - तीसरी मर्तबा कहो, उसने तीसरी मर्तबा वही दुआ की, इसके बाद आपने फ़रमाया - उठो और जाओ, अल्लाह पाक ने (तुम्हारे गुनाह) बख़्श दिये।

3) कम से कम एक मर्तबा दिन में और एक मर्तबा रात में तौबा - अवश्य कर लिया करो।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला रात में अपना (रहमत का) हाथ बढ़ाते हैं ताकि दिन का गुनाहगार (दिन के गुनाहों से) तौबा कर ले, और दिन में रहमत का हाथ बढ़ाते हैं ताकि रात का गुनाहगार (रात के गुनाहों से

तौबा कर ले (यह सिलसिला बराबर जारी रहेगा) यहां तक कि सूरज मग़रिब से निकले (और क़यामत आये)

इसी प्रकार एक और हदीस में आया है कि एक शख़्स नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में आया और कहने लगा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! हम में से कोई गुनाह कर बैठता है (तो क्या होता है?) आप ने फ़रमाया –(उसके कर्मपत्र में) लिख दिया जाता है। उसने कहा– फिर वह उस गुनाह से तौबा कर लेता है तो? आप ने फ़रमाया– उसकी तौबा क़बूल कर ली जाती है और वह बख़्श दिया जाता है। उस शख़्स ने कहा – वह पुनः वही पाप कर लेता है तो? आप ने फ़रमाया – पुनः उसी के कर्म पत्र में लिख दिया जाता है। उस ने कहा – अगर वह फिर तौबा कर लेता है तो? आप ने फ़रमाया – उस की तौबा क़ुबूल कर ली जाती है और माफ़ कर दिया जाता है। और (याद रखो!) अल्लाह पाक (माफ़ करने से) नहीं थकता तुम ही (माफ़ी माँगने से) थक जाओ तो थक जाओ।"

सूखा काल पड़ने के समय की दुआ और पानी माँगने की नमाज़ का बयान

1)जब वर्षा न हो और सूखा काल पड़ जाये तो लोगों को दोनों घुटनों के बल बैठ कर कहना चाहिये–

يَارَبِّ، يَارَبِّ اَللّٰهُمَّ اَسْقِنَا اَللّٰهُمَّ اَسْقِنَا، اَللّٰهُمَّ
اَغِثْنَا اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا اَللّٰهُمَّ اَغِثْنَا۔

या रब्बि, या रब्बि, अल्लाहुम्म असक़िना, अल्लाहुम्म असक़िना,

अल्लाहुम्म अस्क़िना, अल्लाहुम्म अग़सिना, अल्लाहुम्म अग़िस्ना, अल्लाहुम्म अग़िस्ना

तर्जुमा - "ऐ पर्वरदिगार! (रहम कर) ऐ अल्लाह! तू हमें सैराब कर दे, ऐ अल्लाह! तू हमें सैराब कर दे, ऐ अल्लाह! वर्षा कर दे, ऐ अल्लाह! वर्षा कर दे।"

2) अगर इमाम हो तो (सुबह-सवेरे लोगों को साथ ले कर बस्ती) से बाहर निकले, और जब सूरज का किनारा ज़ाहिर हो जाये तो मिंबर पर बैठे और तक्बीर कहे और अल्लाह की हम्द व सना कहे, इस के बाद यह पढ़े -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
اَنْتَ الْغَنِيُّ وَنَحْنُ الْفُقَرَآءُ، اَنْزِلْ عَلَيْنَا الْغَيْثَ وَاجْعَلْ
مَآ اَنْزَلْتَ عَلَيْنَا قُوَّةً وَّبَلَاغًا اِلٰى حِيْنٍ

अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमीन्+अर्रह्मानिर्रहीम+ मालिकियौमिद्दीन्+लाइला-ह इल्लल्लाहु, यफ़अ़लु मा युरीदु+ अल्लाहुम्म अन्-तल्लाहु ला इला-ह इल्ला अन्-तल् ग़निय्यु व-नह्नुल् फु-क़राउ, अन्ज़िल् अ़ले-नल् ग़े-स वज-अ़ल् मा अन्-ज़ल्-त अ़लेना क़ुव्व-तंव्व- बला-ग़न् इला हीन्+

तर्जुमा - सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है जो तमाम संसार का पालनहार है, बहुत मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है, बदले के दिन का मालिक है, और उसके अ़लावा कोई माबूद नहीं, वह जो चाहता है करता है। मेरे मौला! तू ही अल्लाह है, तेरे अ़लावा कोई माबूद नहीं, तू बे पर्वाह है और हम मुहताज हैं,

तू हम पर वर्षा कर दे, और जो वर्षा हम पर कर उस को हमारे लिये एक समय तक के लिये रोज़ी और जीवन का साधन बना दे।"

★ इसके बाद (आकाश की ओर) दोनों हाथ (इतना ऊपर) उठाए कि बग़ल की सफ़ेदी (यानी बग़ल का अन्दरूनी भाग) नज़र आने लगे। फिर लोगों की तरफ़ अपनी पीठ (और क़िब्ले की तरफ़ मुँह) करे और अपनी चादर को पलट दे (यानी नीचे का हिस्सा ऊपर, ऊपर का नीचे और दायें तरफ़ का बाएँ तरफ़ और बाँये तरफ़ का दायें तरफ़ कर ले) इस बीच में हाथ (इसी तरह आसमान की तरफ़) ऊँचा किये रहे, इस के बाद लोगों की तरफ़ मुँह करे और मिंबर से नीचे उतरे और दो रकअ़त इस्तिस्क़ा की नमाज़ पढे।

2) यह भी दुआ करे -

اَللّٰهُمَّ اَسْقِنَا غَيْثًا مُّغِيْثًا مَّرِيًّا مَّرِيْعًا نَّافِعًا غَيْرَ ضَآرٍّ عَاجِلًا غَيْرَ اٰجِلٍ رَّآئِثٍ

अल्लाहुम्म अस्क़िना ग़ै-सम्मुग़ी-सन् मरी-य्यम्मुरीआ़, नाफ़ि-अ़न् ग़ै-र ज़ार्रिन्, आ़जि-लन् ग़ै-र आ़जिलिन् राइसिन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू हम पर ऐसी वर्षा कर जो माँगने वाली हो, खुशगवार हो, सस्ताई (पैदा करने) वाली हो, लाभ देने वाली हो, नकि हानि पहुँचाने वाली हो, और जल्दी बरसने वाली हो नकि देर में।"

3) और यह भी दुआ करे -

اَللّٰهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ وَبَهَآئِمَكَ وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ وَاَحْيِ بَلَدَكَ الْمَيِّتَ اَللّٰهُمَّ اَنْزِلْ عَلٰٓى اَرْضِنَا زِيْنَتَهَا وَسَكَنَهَا۔

अल्लाहुम्म अस्कि इबा-द-क व-बहाइ-म-क वन्-शुर् रह्-म-त-क व अह्यि ब-ल-द-कल् मय्यि-त+ अल्लाहुम्म अन्ज़िल् अला अर्ज़िना ज़ी-न-त-हा व-स-क-नहा+

तर्जुमा — ऐ अल्लाह! तू अपने बन्दों और चौपायों को सैराब कर दे और अपनी रहमत (वर्षा) को (हर तरफ) फैला दे, और मुर्दा (सूखे) बस्ती को ज़िन्दा (हरा-भरा) कर दे। ऐ अल्लाह! हमारी ज़मीन पर उस की बहार और रौनक नाज़िल फरमा दे।

4. यह भी दुआ पढ़े —

اَللّٰهُمَّ ضَحِكَتْ جِبَالُنَا وَاغْبَرَّتْ اَرْضُنَا وَهَامَتْ دَوَابُّنَا مُعْطِيَ
الْخَيْرَاتِ مِنْ اَمَاكِنِهَا وَمُنْزِلَ الرَّحْمَةِ مِنْ مَعَادِنِهَا وَمُجْرِيَ
الْبَرَكَاتِ عَلٰى اَهْلِهَا بِالْغَيْثِ الْمُغِيْثِ ، اَنْتَ الْمُسْتَغْفَرُ الْغَفَّارُ
فَنَسْتَغْفِرُكَ لِلْحَامَّاتِ مِنْ ذُنُوْبِنَا وَنَتُوْبُ اِلَيْكَ مِنْ عَوَامِّ
خَطَايَانَا ، اَللّٰهُمَّ فَاَرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْنَا مِدْرَارًا وَاَوْصِلْ
بِالْغَيْثِ وَاكِفًا مِنْ تَحْتِ عَرْشِكَ حَيْثُ يَنْفَعُنَا وَيَعُوْدُ عَلَيْنَا
غَيْثًا عَامًّا طَبَقًا غَبَقًا مُجَلِّلًا غَدَقًا خِصْبًا رَائِعًا مُمْرِعَ النَّبَاتِ

अल्लाहुम्म ज़ा-हत् जिबालुना वग़-बर्रत् अर्ज़ुना वहा-मत् दवाब्बुना, मोअ्ति-यल् ख़ैराति मिन् अमाकिनिहा वमुनज़ि-लर्रह्-मति मिन् मआदिनिहा वमुजरि-यल् ब-र-काति अला अह्लिहा बिल् ग़ैसिल् मुग़ीसि, अन्-तल् मुस्-तग़फ़रुल ग़फ़्फ़ार फ़-नस्-तग़फ़िर-क लिल् हाम्माति मिन् ज़ुनूबिना व-नतूबु इलै-क मिन् अ-वाम्मि ख़ताय़ाना+ अल्लाहुम्म फ़-अर्सिलिस्समा-अ अलैना मिद्रा-रन् वऔसिल बिल् ग़ैसि वक़िफ़ि मिन् तहति अर्शि-क हैसु

मिन्-फ़ओना व-यज़ूदु अनैसा मै-कन अम्मन् त-ब-कन् ग़-द-कन् मु-जल्लि-लन् ग़-द-क-न् लिसुबर रानिअन् मुरि-अन्नबाति

तर्जुमा- "ऐ अल्लाह! हमारे पहाड़ (खुश्क और) वीराने हो गये हमारी ज़मीनें वीरान हो गयीं और धूल उड़ाने लगीं, हमारे जानवर प्यासे मरने लगे। ऐ भलाई को उस के स्थान से अता करने वाले! ऐ रहमत (वर्षा) को उसके कानों (बादलों) से नाज़िल फरमाने वाले, वर्षा के ज़रीए मुस्तहिक लोगों पर बर्कतों के (दरिया) बहाने वाले! तू ही है जिस से माफ़ी माँगी जाये, बड़ा माफ़ करने वाला है इसलिए हम तुझ से अपने बड़े-बड़े गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं और आम ग़लतियों से भी तौबा करते हैं। ऐ अल्लाह! इसलिए तू हम पर मूसला धार वर्षा कर देने वाले बादल भेज दे और वर्षा को जल्द पहुँचादे, और खास कर अपने अर्श के नीचे से वर्षा कर दे कि हमें नफ़ा पहुँचाये और हमारे लिये लाभदायक हो, आम और अधिकांश तमाम ज़मीन पर छा जाने वाली और फैल जाने वाली, और जल-थल वर्षा हो। सस्ताई लाने वाली, खुशहाली, हरियाली, खूब घास उगाने वाली, चारा देने वाली हो।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि एक मर्तबा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 ने (सूखा काल के मौका पर) वर्षा की दुआ की और इस्तिग़फ़ार पर ही बस किया

नोट - इस का अर्थ यह है कि बिना नमाज़ के भी वर्षा के लिये दुआ की जा सकती है, और इस्तिग़फ़ार को वर्षा की दुआ में बड़ा दख्ल है, बल्कि इसी पर मदार है (हदीस)

वर्षा के नुक़सान से बचने की दुआएं

1) जब आसमान पर बादल आते हुये देखें तो यह दुआ पढ़ें -

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا اُرْسِلَ بِهٖ اَللّٰهُمَّ سَيْبًا نَافِعًا

अल्लाहुम्म इन्ना नऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा उर्सि-ल बिही अल्लाहुम्म सै-बन्नाफ़ि-अ़न्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! हम तुझ से पनाह माँगते हैं। उस चीज़ की बुराई से जो यह बादल लाया हो। ऐ अल्लाह! इस वर्षा को ख़ैर-बर्कत और लाभदायक बना दे।"

2) अगर वर्षा न हो और बादल खुल जाये तो इस पर "अल्-हम्दुलिल्लाहि" कहे और अल्लाह का शुक्र अदा करे (कि वर्षा न होने ही में भलाई थी)

3) और जब वर्षा हो रही हो तो तीन मर्तबा यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا

अल्लाहुम्म सय्यि-बन्नाफ़ि-अ़न्

"ऐ अल्लाह! ख़ूब बरसने और लाभ देने वाली वर्षा कर।"

या यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ سَيْبًا نَافِعًا

अल्लाहुम्म सै-बन्नाफ़ि-अ़न्

ऐ अल्लाह! ख़ैर-बर्कत और लाभ देने वाली वर्षा कर।

जब वर्षा से नुक़सान पहुँच रहा हो या नुक़सान का डर हो, उस समय की दुआ

1) जब वर्षा बहुत हो जाये और उस से हानि का डर हो तो वह यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اَللّٰهُمَّ عَلَى الْاٰكَامِ وَالْاٰجَامِ وَالظِّرَابِ وَالْاَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ

अल्लाहुम्म हवालेना वला अलेना+ अल्लाहुम्म अ-लल् आकामि वल् आजामि वज़्ज़िराबि वल् औदि-यति व-मनाबितिश्श -जरि

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! हमारे (यानी बस्तियों के) चारों तरफ़ वर्षा कर, हम पर न कर। ऐ अल्लाह! पहाड़ियों पर, जंगलों पर, नदी-नालों, और वादियों पर और पेड़-पौधों के स्थानों पर (वर्षा कर)

बादलों की गरज और बिजली की कड़क के समय

1) जब बादलों के गरजने और बिजली कड़कने की (ख़ौफ़नाक) आवाज़ें सुने तो यह दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ

अल्लाहुम्म ला तक़्तुलना बि-ग़-ज़बि-क वला तुह्लिक्ना बि-अज़ाबि-क वआफ़िना क़ब्-ल ज़ालि-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तुम हमें अपने ग़ज़ब से मत मारना और अपने अज़ाब से हलाक मत करना और इस से पहले ही हमें अम्न और शान्ति बख़्शा देना।"

2) और यह आयत पढ़े

سُبْحَانَ الَّذِیْ یُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِیْفَتِهٖ

सुब्हा-नल्लज़ी यु-सब्बिहुर्रअ़दु बि-हम्दिही वल्-मलाइ-कतु मिन् ख़ी-फ़तिही

तर्जुमा - "पाक है वह ज़ात जिस की तस्बीह और हम्द व सना करता है रअ़्द (फ़रिश्ता नामक) और तमाम फ़रिश्ते भी उस के डर से (हम्द व सना और तस्बीह करते हैं)

आँधी-तूफ़ान के समय की दुआ़

1) जब आँधी आये तो उस की तरफ़ मुँह कर के दोनों घुटनों के बल बैठ जाये और घुटनों पर हाथ रखकर यह दुआ पढ़े-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَهَا وَخَیْرَ مَا فِیْهَا وَخَیْرَ مَآ اُرْسِلَتْ بِهٖ وَ
اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِیْهَا وَشَرِّ مَآ اُرْسِلَتْ بِهٖ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ख़ै-रहा वख़ै-र मा फ़ीहा वख़ै-र मा उर्सि-लत् बिही, व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिहा व-शर्रि मा फ़ीहा व-शर्रि मा उर्सि-लत् बिही+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इस आँधी की ख़ैर-बर्कत का, और जो कुछ उस में है उस की ख़ैर-बर्कत का प्रश्न करता हूँ। और इस आँधी की बुराई से, और जो इस आँधी में है उस की

बुराई से, और जो अपने साथ लायी है उस की बुराई से, तेरी पनाह लेता हूँ।"

2) और यह दुआ पढ़े -

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا رِيَاحًا وَّلَا تَجْعَلْهَا رِيْحًا اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا رَحْمَةً وَّلَا تَجْعَلْهَا عَذَابًا.

अल्लाहुम्मज्-अ़ल्हा रिया-हन् वला तज्-अ़ल्हा री-हन्+अल्लाहुम्मज् अ़ल्हा रह्-म-तन् वला तज्-अ़ल्हा अ़ज़ा-बन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू इन को ख़ैर-बर्कत लाने वाली बना दे और (तबाह-बर्बाद करने वाली) हवा का तूफ़ान न बनाइयो। ऐ अल्लाह! तू इस हवा को रहमत बना दे और अ़ज़ाब और अपना ग़ज़ब न बनाइयो।"

3) अगर आँधी के साथ अँधियारी हो तो सूरः फ़-लक़ और सूरः नास भी पढ़े।

4) और यह दुआ भी माँगे -

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ هٰذِهِ الرِّيْحِ وَخَيْرِ مَا فِيْهَا وَخَيْرِ مَا اُمِرَتْ بِهٖ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ هٰذِهِ الرِّيْحِ وَشَرِّ مَا فِيْهَا وَشَرِّ مَا اُمِرَتْ بِهٖ.

अल्लाहुम्म इन्ना नस्-अलु-क मिन् ख़ैरि हाज़िहिर्रीहि वख़ैरि माफ़ीहा व ख़ैरि मा उमि-रत बिही, व-नऊज़ुबि-क मिन् शर्रि हाज़िहिर्रीहि व-शर्रि मा फ़ीहा वर्शरि मा उमि-रत बिही+

तर्जुमा - "हम तुझ से इस हवा (आँधी) की ख़ैर-बर्कत

का, और जो इस हवा में है उस की ख़ैर-बर्कत का, और जो उसे हुक्म दिया गया है, उस की ख़ैर-बर्कत का सवाल करते हैं, और उस हवा की बुराई से और जो उस हवा में है उस की बुराई से, और उस की बुराई से जो उसे हुक्म दिया गया है पनाह माँगते हैं।"

5) या यह दुआ करे -

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِ مَا اُمِرَتْ بِهٖ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اُمِرَتْ بِهٖ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन् ख़ैरि मा उमि-रत् बिही, व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा उमि-रत् बिही

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इस आँधी को जो हुक्म दिया गया है उस की भलाई का सवाल करता हूँ और जो इस आँधी को हुक्म दिया गया है उस की बुराई से पनाह माँगता हूँ।"

6) और यह दुआ करे -

اَللّٰهُمَّ لَقِحًا لَا عَقِيْمًا

अल्लाहुम्म लक़्-हन् ला अक़ी-मन्

तर्जुमा - ऐ अल्लाह! (तू इस को) वर्षा लाने वाली बना, बाँझ (यानी बे फ़ायदा) न बना।"

मुर्ग़, गधे और कुत्ते की आवाज़ों के समय की दुआ

1) जब मुर्ग़ की बाँग (आवाज़) सुने तो यह कहे –

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन् फ़ज़्लि-क

"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल और इनाम का सवाल करता हूँ।"

2) और जब गधे के बोलने या कुत्तों के भोंकने की आवाज़ सुने तो यह कहे –

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्रजीमि

"मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ मर्दूद शैतान से।"

सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय का अमल

1) जब सूरज ग्रहन या चाँद ग्रहन हो तो अल्लाह से दुआ करे, तक्बीर कहे और नमाज़ (सलाते कसूफ़) पढ़े और सदक़ा-ख़ैरात करे।

नोट – हदीस शरीफ़ में आया है कि मुर्ग़ फ़रिश्ते को देख कर अज़ान देता है और गधा, शैतान को देख कर रेंकता है। (इदरीस)

नोट – दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, मगर दोनों रकअ़तों में फ़ातिहा के बाद सूरः ज़्यादा से ज़्यादा लंबी पढ़े- (इदरीस)

पहली का चाँद देखने के समय की दुआएँ

1) जब पहली तिथि का चाँद देखे तो अल्लाहु अक्-बर कहे और यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهٗ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ
وَالتَّوْفِيْقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى رَبِّيْ وَرَبُّكَ اللّٰهُ

अल्लाहुम्म अहिल्लहू अलैना बिल् युमनि वल् ईमानि वस्सला-मति वल् इस्लामि वत्तौफ़ीकि लि-म तुहिब्बु व-तर्ज़ा रब्बी व-रब्बु-कल्लाहु

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू इस चाँद को बर्कत-ईमान, सलामती और इस्लाम के साथ, और हर उस अमल की तौफ़ीक़ के साथ निकाल जो तुझे पसन्द हो, और जिस से तू राज़ी हो। ऐ चाँद! मेरा और तेरा दोनों का पर्वरदिगार अल्लाह है।"

2) और तीन मर्तबा यह कहे –

هِلَالُ خَيْرٍ وَّرُشْدٍ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ هٰذَا الشَّهْرِ
وَخَيْرِ الْقَدْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ

हिलालु ख़ैरिन् व-रुशदिन्+अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन् ख़ैरि हा-ज़श्शहरि व-ख़ैरिल् क़दरि व-अऊज़ुबि-क मिन शर्रिही

तर्जुमा – "(यह चाँद) ख़ैर-बर्कत और हिदायत व नेकी का चाँद है। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इस महीने की ख़ैर-बर्कत

का, और तक़्दीर की ख़ैर-बर्कत का, सवाल करता हूँ और उसकी बुराई से तेरी पनाह लेता हूँ।"

3) या यह दुआ माँगे :

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا خَيْرَهٗ وَنَصْرَهٗ وَبَرَكَتَهٗ وَفَتْحَهٗ وَنُوْرَهٗ
وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ -

अल्लाहुम्मर् ज़ुक़्ना ख़ै-रहू व-नस्-रहू व-ब-र-क-तहू व-फ़त्-हहू वनू-रहू व-नऊज़ुबि-क मिन् शर्रिही व-शर्रि मा बअ्-दहू

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू हमें इस (महीने) की ख़ैर-बर्कत, सहायता-सहयोग, जय-विजय और इस महीना का नूर अता फ़रमा, और इस (महीने) के और इस के बाद की बुराई से हम पनाह माँगते हैं।"

चाँद की तरफ़ देखने के समय की दुआ

1) जब चाँद की तरफ़ देखे तो यह कहे :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شَرِّ هٰذَا الْغَاسِقِ

अऊज़ु बिल्लाहि मिन् शर्रि हा-ज़ल् ग़ासिकि

तर्जुमा - "मैं पनाह माँगता हूँ इस डूबने वाले (चाँद) की बुराई से।"

★

शबे क़द्र देखने के समय की दुआ़

1) जब शबे क़द्र देखना नसीब हो तो यह दुआ़ करे :

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ

अल्लाहुम्म इन्न-क अ़फ़ुव्वुन् तुहिब्बुल् अ़फ़्-व फ़अ़फ़ु अ़न्नी

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! बेशक तू बहुत माफ़ करने वाला है, माफ़ करने को पसन्द भी करता है, पस तू मुझे भी माफ़ फ़रमा दे।"

आईना (दर्पण) देखने के समय की दुआ़

1) जब शीशे में अपना मुँह देखे तो यह दुआ़ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ

अल्लाहुम्म अन्-त हस्सन्-त ख़ल्क़ी फ़-हस्सिन् ख़ुलुक़ी

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तूने ही ने मेरी सूरत इतनी अच्छी बनाई है तो तू ही मेरे अख़्लाक़ (अचारण) भी अच्छा बना दे।"

2) या यह दुआ़ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ كَمَا حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَاَحْسِنْ خُلُقِیْ وَحَرِّمْ وَجْهِیْ عَلَی النَّارِ

अल्लाहुम्म कमा हस्सन्-त ख़ल्क़ी फ़-अहसिन् ख़ुलुक़ी व-हर्रिम् वज्ही अ़-लन्नारि

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! जैसे तूने मेरी सूरत अच्छी बनाई है ऐसी ही मेरी सीरत भी अच्छी बना दे और मेरा यह चेहरा जहन्नम की आग पर हराम कर दे।"

3) और यह दुआ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَوّٰی خَلْقِیْ وَاَحْسَنَ صُوْرَتِیْ وَزَانَ مِنِّیْ مَا شَانَ مِنْ غَیْرِیْ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी सव्वा ख़ल्क़ी व-अह्-स-न सू-रती वज़ा-न मिन्नी मा शा-न मिन् ग़ैरी

तर्जुमा - शुक्र है उस अल्लाह का जिसने मेरा जिस्म दुरुस्त और ठीक-ठाक बनाया और मेरी सूरत भी इतनी सुन्दर बनाई और जो (हिस्से) दूसरों के ऐबदार बनाए वह मेरे ठीक-ठाक (और सुन्दर) बनाए।"

4) या यह पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَوّٰی خَلْقِیْ فَعَدَّلَهٗ وَصَوَّرَ صُوْرَةَ وَجْهِیْ فَاَحْسَنَهَا وَجَعَلَنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ۔

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी सव्वा ख़ल्क़ी फ़-अ़द लहू व-सव्व-र सू-र-त वज्ही फ़-अह्-स-नहा व-ज-अ़-लनी मि-नल् मुस्लिमी-न

तर्जुमा - "शुक्र है अल्लाह का जिस ने मुझे बनाया और बहुत ही अच्छा बनाया और मेरे चेहरे को सूरत दी और बहुत ही अच्छी सूरत दी (और सब से बड़ा एहसान यह है कि) मुझे मुसलमान बनाया।"

सुन्नत के मुताबिक़ सलाम करने और सलाम का जवाब देने का तरीक़ा

1) जब किसी को सलाम करे तो कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अस्सलामु अलैकुम व-रह्-मतुल्लाहि व-ब-रकातुहू

तर्जुमा - "सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत और बर्कत हो।"

2) और जब किसी के सलाम का जवाब दे तो कहे

وَعَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

व-अलैकुमुस्सलामु व-रह्-मतुल्लाहि व-ब-रकातुहू

तर्जुमा - "और तुम पर भी सलामती हो, और उस की रहमतें और बर्कतें।"

3) और जब किसी अहले किताब (यहूदी, नसारी या किसी भी गैर मुस्लिम) को सलाम करे तो यह कहे

عَلَيْكَ يا عَلَيْكُمْ

अले-क (या) अलैकुम

तर्जुमा - "तुझ पर हो (जो हो) (या) तुम पर हो (जो हो)

4) इसी प्रकार अहले किताब (या गैर मुस्लिम) के सलाम का जवाब दे तो यह कहे :

وَعَلَيْكَ يا وَعَلَيْكُمْ

व-अले-क (या) व-अलैकुम

तर्जुमा - "और तुझ पर भी हो (जो हो) (या) तुम पर भी हो (जो हो)

5) और जब किसी शख़्स का सलाम किसी दूसरे शख़्स के ज़रिए पहुंचे, तो यह कहे

عَلَيْكَ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ

अलै-क व-अलैहिस्सलामु व-रह्-मतुल्लाहि व-ब-रकातुहू

तर्जुमा - "तुम पर और उनपर (यानी दोनो पर) सलामती हो, और अल्लाह की रहमतें और बर्कतें।"

छींकने के समय की दुआ़ और छींकने वाले को दुआ़

1) जब छींक आये तो यह कहे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ يا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ

अल्-हम्दुलिल्लाहि (या) अल्-हम्दुलिल्लाहि अला कुल्लि हालिन

तर्जुमा - "शुक्र है अल्लाह तआला का" (या) "हर हाल में शुक्र है अल्लाह तआला का।"

2) या यह कहे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ مُبَارَكًا عَلَيْهِ كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا وَيَرْضٰى

अल्-हम्दु लिल्लाहि हम्-दन कसी-रन तय्यि-बन मुबा-र-कन फीहि मुबा-र-कन अलैहि कमा युहिब्बु रब्बुना व-यरज़ा

तर्जुमा - "अल्लाह तआला की बहुत-बहुत तारीफ़ है

ذَكَرَاللّٰهُ بِخَيْرٍ مَنْ ذَكَرَنِىْ

ज़-क-रल्लाहु बिख़ैरिन् मन् ज़-क-रनी

तर्जुमा -"जिस शख़्स ने मुझे याद किया अल्लाह उस को भी भलाई के साथ याद करे।"

ख़ुश ख़बरी सुनने और उस का शुक्र अदा करने का तरीक़ा

1) जब कोई खुशख़बरी (अच्छी ख़बर) सुने तो कहे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

अल्-हम्दु लिल्लाहि (या) अल्-हम्दु लिल्लाहि वल्लाहु अक्-बरु

तर्जुमा - "अल्लाह का शुक्र है" (या) "अल्लाह का शुक्र है और अल्लाह ही सब से बड़ा है।"

या - शुक्र के सज्दे अदा करे।

अपनी या दूसरे की ज़ात, या बाल-बच्चों की कोई अच्छी हालत देखने पर दुआ

1) जब अपनी ज़ात और बाल-बच्चों की या किसी दूसरे की कोई अच्छी हालत देखे तो कहे :

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ فِيْهِ

अल्लाहुम्म बारिक् फ़ीहि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू इस में बर्कत दे।"

धन-माल में इज़ाफ़ा और ज़्यादती के लिए दुआ

1) अपने धन-दौलत में बढ़ोतरी और इज़ाफ़ा चाहे तो यह पढ़े :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिन् अ़ब्दि-क व-रसूलि-क व-अ़-लल् मोमिनी-न वल्मोमिनाति वल् मुस्लिमी-न वल् मुस्लिमाति

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! रहमतें नाज़िल फ़रमा मुहम्मद, अपने बन्दे और रसूल पर, और (तमाम) ईमानदार मर्दों और ईमानदार महिलाओं पर, और मुसलमान मर्दों और मुसलमान महिलाओं पर।"

मुसलमान भाई को हँसता हुआ देखने के समय की दुआ

1) जब अपने मुसलमान भाई को हँसता हुआ (खुशहाल) देखे तो यह दुआ दे :

اَضْحَكَ اللهُ سِنَّكَ

अज़्-ह-कल्लाहु सिन्न-क

"अल्लाह तुझे हमेशा हँसता हुआ (और खुशहाल) रखे।"

किसी से मुहब्बत और मित्रता करने का तरीक़ा

1) जब किसी मुसलमान भाई से मुहब्बत और दोस्ती को तो उस को बतला दे और कहे :

إِنِّي أُحِبُّكَ فِي اللهِ

इन्नी उहिब्बु-क फ़िल्लाहि

"मैं तुझ से (केवल) अल्लाह के लिये प्रेम करता हूँ।"

2) उस शख़्स के जवाब में यह कहना चाहिये :

أَحَبَّكَ الَّذِي أَحْبَبْتَنِي لَهُ

अ-हब्ब-कल्लज़ी अह्-बब्-तनी लहू

तर्जुमा - "तुझ से वह अल्लाह मुहब्बत करे जिस के लिये तू मुझ से मुहब्बत करता है।"

मग़्फ़िरत की दुआ देने के समय की दुआ

1) जब कोई शख़्स मग़्फ़िरत की दुआ दे और कहे "ग़-फ़-रल्लाहु ल-क" (अल्लाह तआला तुझे माफ़ करे) तो इस के जवाब में कहे - "ल-क" (और तेरी भी मग़्फ़िरत करे)

बीमार का हाल-चाल पूछने का तरीक़ा

1) जब कोई शख़्स पूछे :

"के-फ़ अस्-बह्-त"

(कैसा हाल है?) तो जवाब में कहे :

"अह्-मदुल्ला-ह इले-क"

(मैं तुम्हारे सामने अल्लाह का शुक्र अदा करता हूँ।"

किसी के आवाज़ देने पर उत्तर देने का तरीक़ा

1) जब कोई शख़्स आवाज़ दे तो उत्तर में कहे :

لَبَّيْكَ

लब्बईका (मैं हाज़िर हूँ)

किसी के एहसान करने के वक़्त की दुआ

1) जब कोई शख़्स कोई एहसान करे तो कहे :

جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا

जज़ा-कल्लाहु ख़ै-रन्

"अल्लाह तुझे नेक बदला दे"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जब किसी ने एहसान करने वाले के एहसान पर "जज़ा-कल्लाहु ख़ै-रन" कह दिया तो उस की तारीफ़ (और शुक्र) का हक़ अदा कर दिया।

जब किसी को धन-माल दे तो यह जवाब दे

1) जब कोई मुसलमान भाई अपने भाई को कुछ माल दे तो इस के जवाब में कहे :

بَارَكَ اللّٰهُ فِيْ اَهْلِكَ وَمَالِكَ

बा-र-कल्लाहु फ़ी अह्लि-क वमा-लि-क

तर्जुमा - "अल्लाह तुम्हारे माल-दौलत और बाल-बच्चों में बर्कत दे।"

किसी क़र्ज़दार से क़र्ज़ वसूल होने के समय की दुआ

1) जब किसी क़र्ज़दार से अपना क़र्ज़ पूरा वसूल कर ले तो उस को यह दुआ दे :

اَوْفَيْتَنِيْ اَوْفَى اللّٰهُ بِكَ

(क) औफ़ै-तनी औ-फ़ल्लाहु बि-क

तर्जुमा - "तूने मेरा पूरा क़र्ज़ अदा कर दिया, और अल्लाह तुम्हें इस का पूरा बदला दे

وَفَى اللّٰهُ بِكَ

(ख) व-फ़ल्लाहु बि-क

तर्जुमा - "अल्लाह तुम से अपना वादा पूरा करे"

أَوْفَى اللّٰهُ

(ग) औफ़ा-कल्लाहु

तर्जुमा - "अल्लाह तुम से वादा पूरा कराए"

किसी पसन्दीदा चीज़ देखने के समय की दुआ

जब कोई भी (अच्छी और) पसन्दीदा चीज देखे तो कहे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिनेअ् - मतिही ततिम्मुस्सालिहातु

तर्जुमा - "सब तारीफ़ उसी अल्लाह के लिये हैं जिस की मदद से नेक काम पूरे होते हैं।"

किसी अप्रिय वस्तु के देखने के समय की दुआ

1) जब कोई (नागवार और) अप्रिय वस्तु देखे तो कहे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ

अल्-हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिन्

तर्जुमा - "अल्लाह का हर हाल में शुक्र है।"

अल्लाह पाक के किसी नेमत के देने पर उस का शुक्र अदा करने का तरीक़ा

1) जब अल्लाह पाक अपने किसी बन्दे को किसी नेमत से नवाज़े तो उस को तीन मर्तबा "अल्-हम्दु लिल्लाहि" (अल्लाह का बहुत-बहुत शुक्र है) कहना चाहिये।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जब अल्लाह तआ़ला अपने किसी बन्दे को किसी नेमत से नवाज़ता है तो वह जब पहली मर्तबा "अल्-हम्दुल्लिलाहि" कहता है तो उस का शुक्र अदा कर देता है। दूसरी मर्तबा "अल्-हम्दुल्लिलाहि" कहता है तो अल्लाह तआ़ला नए सिरे से उस नेमत का सवाब देता है, और जब तीसरी मर्तबा "अल्-हम्दुलिल्लाहि" कहता है तो अल्लाह पाक उस के गुनाह बख़्श देता है।

2) या यह कहे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

अल्-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न

तर्जुमा - "हर प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है। जो तमाम जहानों का पालनहार है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे को किसी नेमत से नवाज़ें और वह बन्दा इस पर "अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न" कहता है तो अल्लाह तआ़ला उस को उस से बेहतर देता है।

क़र्ज़ में गिरफ़्तार होने के समय की दुआ

1) जब कोई क़र्ज़ में गिरफ़्तार हो जाये तो यह दुआ करे :

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्म अक्फ़िनी बि-हलालि-क अन् हरामि-क व-अग़्निनी बि-फ़ज़्लि-क अम्मन् सिवा-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुझे अपनी हलाल रोज़ी देकर हराम से बचाले, और अपने फ़ज़्ल से मुझे अपने अ़लावा से बेनियाज़ कर दे।"

2) या यह दुआ पढ़ा करे :

اَللّٰهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَرَحِيْمَهَا اَنْتَ تَرْحَمُنِىْ فَارْحَمْنِىْ بِرَحْمَةٍ تُغْنِيْنِىْ بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्म फ़ारि-जल् हम्मि काशि-फ़ल् ग़म्मि मुजी-ब दअ़्-वतिल् मुज़्-तर्री-न रह्मा-नद्दुन्या व-रही-महा अन्-त तर्-हमुनी फ़र्-हमुनी बि-रह-मतिन् तुग़्नीनी बिहा अ़न् रह-मति मन् सिवा-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! फ़िक्र को दूर करने वाले, ग़म को समाप्त करने वाले, मजबूरों की दुआ़एँ क़बूल करने वाले, दुनिया-आख़िरत के बहुत बड़े रहम करने वाले मेहरबान, तू ही मुझ पर रहम किया करता है, इसलिये तू ही (इस समय) अपनी

उस रहमत से मुझ पर रहम फ़रमा जिस से तू मुझे अपने अलावा की रहमत से बेनियाज़ कर दे।"

3) या यह दुआ पढा करे :

اَللّٰهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ، تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ، وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَاءُ، وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاءُ، بِيَدِكَ الْخَيْرُ، اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ، تُعْطِيْهِمَا مَنْ تَشَاءُ، وَتَمْنَعُ مِنْهُمَا مَنْ تَشَاءُ، اِرْحَمْنِيْ رَحْمَةً تُغْنِيْنِيْ بِهَا عَنْ رَحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ

अल्लाहुम्म मालि-कल् मुल्कि, तूतिल् मुल्-क मन् तशाउ, व-तन्ज़िउल् मुल्-क मिम्मन् तशाउ, वतुअिज़्ज़ु मन् तशाउ वतुज़िल्लु मन् तशाउ, बि-यदि-कल् ख़ैरु, इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+रह्मा-नद्दुन्या वल् आख़ि-रति तुअ्तीहिमा मन् तशाउ, व-तम्-नउ मिन्हुमा मन् तशाउ, इर्-हम्नी रह्-म-तन् तुग़्नीनी बिहा अ़न् रह्-मति मन् सिवा-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! (सारे) मुल्क के मालिक, तूही जिसको चाहता है मुल्क देता है, और तू ही जिस से चाहता है मुल्क छीन लेता है। तूही जिसको चाहता है इज़्ज़त देता है और तू ही जिसे चाहता है ज़िल्लत देता है। (हर प्रकार की) भलाई तेरे ही हाथ में है, बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (ऐ) दुनिया और आख़िरत में बहुत बड़े रहम करने वाले, तू जिस को चाहता है दुनिया और आख़िरत (की नेमतें) दे देता है और जिसे चाहता है उस को दोनों से मना (वन्चित) कर देता है। तू मुझ पर वह (ख़ास) रहमत फ़रमा कि उस के ज़रीए तू मुझे अपने

अ़लावा की रहमत से बेनियाज़ फ़रमा दे।"

किसी काम से तंग आजाने के समय या और अधिक ताक़त-क़ुव्वत तलब करने के लिए दुआ़

1) जब कोई शख़्स किसी काम से उक्ता जाये या वह काम और ज़्यादा शक्ति चाहे तो उसे चाहिये कि सोते समय 33 मर्तबा "सुब्हा-नल्लाह", 33 मर्तबा "अल्-हम्दु लिल्लाहि", 34 मर्तबा "अल्लाहु अक्-बरु" पढ़ा करे।

2) या हर एक कलमा को 33 मर्तबा पढ़ा करे।

3) या उन तीनों में से किसी एक को 34 मर्तबा और बाक़ी दो को 33-33 मर्तबा पढ़ा करे।

4) या हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तीनों कलमे 10-10 मर्तबा और सोते समय 33 मर्तबा "तस्बीह", 33 मर्तबा "तह्मीद", और 34 मर्तबा "तक्बीर" पढ़ा करे।

शक-शुब्हा में होने के समय की दुआ़

1) जो शख़्स शक और शुब्हे (की बीमारी) में हो जाये उसे चाहिये कि (जब वस्वसे परेशान करें तो) :

أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

नोट - क़र्ज़ अदा होने के लिये सुबह-शाम पढ़ने की दुआ़ (सुबह-शाम की दुआ़ओं में) पहले बयान हो चुकी है।

अऊज़ुबिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्रजीमि)

"मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह की मर्दूद शैतान से" पढ़े और शक-शुब्हे को अपने से दूर करने की कोशिश करता रहे।

2) या यह पढ़े :

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ

आ-मन्तु बिल्लाहि वरुसुलिही

"मैं तो ईमान ले आया अल्लाह और उसके रसूलों पर"

3) या यह पढ़े और बायीं तरफ़ तीन मर्तबा थूक दे -

اَللّٰهُ اَحَدٌ، اَللّٰهُ الصَّمَدُ، لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ

अल्लाहु अ-हदुन्, अल्लाहुस्स-मदु, लम् यलिद् व-लम् यू-लद् व-लम् यकुंल्लहू कुफू-वन् अ-हद्

तर्जुमा - "अल्लाह एक है, अल्लाह बेनियाज़ है, उस से कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ, और न कोई उस के बराबर का है।"

4) और इस के बाद यह दुआ पढ़े :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ وَمِنْ فِتْنَتِهٖ

अऊज़ु बिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्रजीमि वमिन् फ़ित्-नतिही

तर्जुमा - "पनाह लेता हूँ मैं अल्लाह की मर्दूद शैतान और उस के फ़ितनों से।"

★ अगर यह शक-शुब्हे वुज़ू-नमाज़ आदि में पेश आते हों तो

अऊज़ु बिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्रजीमि पढ़ कर बाएँ तरफ़ तीन मर्तबा थूक दे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि इस प्रकार के शक-शुब्हे डालने वाले शैतान का नाम "खिन्-ज़ब्" है। इस दुआ को पढ़ कर तीन मर्तबा बायें तरफ़ थूक दे।

ग़ुस्सा (क्रोध) दूर करने का तरीक़ा

1) जब (किसी भी शख़्स पर या बात पर) ग़ुस्सा आ जाये तो यह पढ़े :

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अऊज़ु बिल्लाहि मि-नश्शैतानिर्रजीमि

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस शख़्स को ग़ुस्सा आ जाये और वह ऊपर की दुआ को पढ़ ले तो ग़ुस्सा जाता रहेगा।

बद् ज़बानी और बुरी बातें दूर करने का तरीक़ा

1) जो शख़्स बद् ज़बान हो (ओल-फ़ोल बकने की आदत हो) उसे पाबन्दी से "इस्तिग़फ़ार" पढ़ना चाहिये।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि०

कहते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बद ज़बानी की शिकायत की तो आपने फ़रमाया – तुम इस्तिग़फ़ार की पाबन्दी क्यों नहीं करते? मैं तो दिन में 100 मर्तबा इस्तिग़फ़ार करता हूँ।

किसी मज्लिस में आने-जाने और शामिल होने के आदाब

1) जब किसी मज्लिस में पहुँचे तो

अस्सलामु अलेकुम व-रह्-मतुल्लाहि कहे। इसके बाद जो चाहे तो बैठ जाये, फिर जब सभा से उठे (और वापस आने लगे) तब भी सलाम करे।

मज्लिस का कफ़्फ़ारा

1) मज्लिस का कफ़्फ़ारा यह है कि वहाँ से उठने (और वापस आने) से पहले तीन मर्तबा यह पढ़े

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ ، سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ، اَشْهَدُ
اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ ۔

सुब्-हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही, सुब्हा-न-कल्लाहुम्म वबि-हम्दि-क, अश्-हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्-तग़फ़िरु-क व-अतूबु इले-क

तर्जुमा – "अल्लाह पाक है और उसी के लिये सब तारीफ़ है, पाकी (बयान करता हूँ) तेरी ऐ अल्लाह! तेरी ही तारीफ़ के साथ। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। मैं तुझ

ही से मग़्फ़िरत चाहता हूँ और तेरी तरफ़ ही रुजूअ़ करता हूँ (तौबा करता हूँ)

2) या यह दुआ़ पढ़े :

عَمِلْتُ سُوْءًا وَّظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْلِىْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

अ़लिम्तु सू-अन् व-ज़-लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर् ली इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "(ऐ अल्लाह!) मैं ने बुरे काम किये और अपने ऊपर अत्याचार किया, पस तू मुझे बख़्श दे, इसलिये कि तेरे अ़लावा और कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता।"

मज्लिस में क्या होना चाहिए

1) कोई भी मज्लिस हो उस में अल्लाह का ज़िक्र और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दरूद व सलाम ज़रूर होना चाहिये।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि कोई जमाअ़त किसी मज्लिस में बैठ कर अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र न करें और अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दरूद न भेजें, तो वह सभा (क़यामत के दिन) उन के लिये नुक़सान का कारण होगा। अब यह अल्लाह तआ़ला को इख़्तियार है कि चाहें तो दन्ड दें और चाहें तो माफ़ कर दें।

बाज़ार जाने के समय की दुआ़

1) जब बाज़ार जाये तो यह दुआ़ पढ़े :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू ला शरी-क लहू, लहुल मुल्कु व-लहुल् हम्दु युह्यी वयुमी-तु वहु-व हय्युन् लायमूतु बि-यदिहिल् ख़ैरु वहु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा – "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस को कोई शरीक नहीं (तमाम) मुल्क भी उसी का है, और उसी के लिये (तमाम तर) तारीफ़ है, वही जिलाता है और वही मारता है, वह सदा ज़िन्दा है उस के लिये मरना नहीं है, उस के हाथ में (हर प्रकार की) भलाई है और वही हर वस्तु पर क़ुदरत रखने वाला है।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस शख़्स ने बाज़ार में क़दम रखते समय ऊपर की दुआ पढ़ली तो अल्लाह तआला उस के लिये दस लाख नेकियाँ (उस के कर्म पत्र में) लिख देंगे और दस लाख ग़लतियाँ (उस के कर्म पत्र में से) मिटा देंगे, और दस लाख दर्जे उस के बुलन्द कर देंगे और जन्नत में उस के लिये एक घर (महल) बना देंगे।

2) बाज़ार में दाख़िल होते समय या बाज़ार की तरफ़ जाते समय यह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ السُّوْقِ وَخَيْرَ مَا فِيْهَا، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُصِيْبَ فِيْهَا يَمِيْنًا فَاجِرَةً اَوْ صَفْقَةً خَاسِرَةً،

बिस्मिल्लाहि, अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ख़ै-र

हाज़िहिस्सूक़ि, वख़ै-र मा फ़ीहा, व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रिहा व-शर्रि मा फ़ीहा, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अन् उसी-ब फ़ीहा यमी-नन् फ़ाजि-र -तन् औ सफ़क़तन् ख़ासिरतन

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ, ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से इस बाज़ार की ख़ैर-बर्कत का और जो इस बाज़ार में है उस की ख़ैर-बर्कत का सवाल करता हूँ, और तेरी पनाह लेता हूँ उस बुराई से जो उस में है उस की बुराई से। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ इस बात से कि कोई झूठी क़सम खाऊँ या घाटा (और हानि) का मामला करूँ।"

3) हर व्यापारी और दूकानदार बाज़ार से वापस आते समय (कोई सी) दस आयतें पढ़ लिया करे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने व्यापारियों को संबोधित कर के फ़रमाया - ऐ ताजिरों की क़ौम! क्या तुम में से कोई इस से अ़जिज़ है? कि बाज़ार से वापस आते समय क़ुरआन पाक की दस आयतें पढ़ लिया करे, तो अल्लाह तआ़ला हर आयत के बदले दस नेकियाँ (उस के कर्म पत्र में) लिख दें।

फ़स्ल का पहला फल देखने के समय की दुआ़ और आदाब

1) जब फ़स्ल का पहला फल देखे तो कहे :

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ ثَمَرِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مَدِيْنَتِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِيْ صَاعِنَا، وَبَارِكْ لَنَا فِيْ مُدِّنَا.

अल्लाहुम्म बारिक् लना फ़ी-स-मरिना, वबारिक् लना फ़ी मदी-नतिना, वबारिक् लना फ़ी साअ़िना, वबारिक् लना फ़ी मुद्दिना

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू हमारे फलों में बर्कत दे, हमारे साअ़ (यानी बड़े मापों) में बर्कत दे और हमारे मुद (यानी छोटे मापों) में बर्कत दे।"

★ जब कोई मौसम का ताज़ा और नया फल लाया जाए तो सब से छोटे बच्चे को बुलाये और उस को दे दे।

किसी दुःख, बीमारी में किसी को गिरफ़्तार देखने के समय की दुआ़

1) जो शख़्स किसी को (दुःख, बीमारी या मुसीबत में) गिरफ़्तार देखे तो आहिस्ता से कहे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आ़फ़ानी मिम्मब्-तला-क बिही व-फ़ज़्ज़-लनी अ़ला कसीरिम्मिमन् ख़-ल-क़ तफ़्ज़ी-ला

तर्जुमा - "शुक्र है अल्लाह का जिस ने मुझे उस चीज़ (यानी दुःख, तक्लीफ़) से अमन और शान्ति में रखा जिस में तुम्हें मुबतला किया है, और बहुत सी मख़्लूक़ पर मुझे स्पष्ट तौर पर फ़ज़ीलत दी।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स किसी को दुःख और बीमारी में गिरफ़्तार देख कर ऊपर की दुआ़ पढ़ लेगा वह ज़िन्दगी भर उस दुःख तक्लीफ़ से सुरक्षित रहेगा।

✺

किसी वस्तु के गुम हो जाने या ग़ुलाम, नौकर-चाकर, जानवर आदि के भाग जाने के समय की दुआ़

1) जब कोई चीज़ गुम हो जाये या ग़ुलाम (नौकर, जानवर वग़ैरह) भाग जाये तो यह दुआ़ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَآدَّ الضَّآلَّةِ وَهَادِيَ الضَّلَالَةِ اَنْتَ تَهْدِيْ مِنَ
الضَّلَالَةِ اُرْدُدْ عَلَيَّ ضَآلَّتِيْ بِقُدْرَتِكَ وَسُلْطَانِكَ فَاِنَّهَا
مِنْ عَطَآئِكَ وَفَضْلِكَ

अल्लाहुम्म रआद्दज़्ज़ाल्लति व हादियज़्ज़लालति अन्-त तह्दी मि-नज़्ज़ला-लति, उर्दुद् अ़-लय्य ज़ाल्लती बिक़ुद्-रति-क वसुल्तानि-क फ़इन्नहा मिन् अ़ताइ-क व-फ़ज़्लि-क

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! गुम हुयी वस्तुओं को वापस लाने वाले, भटके हुये को राह दिखाने वाले, तू ही भटके हुये को रास्ता दिखाता है, तू अपनी क़ुदरत और ताक़त से मेरी खोइ हुयी चीज़ को दिला दे, इसलिये कि वह चीज़ तेरी ही दी हुयी और तेरे ही फ़ज़्ल और इनाम में से है।"

बद्शगूनी का कफ़्फ़ारा

1) किसी चीज़ से बदशगूनी न ले। अगर ऐसा कर बैठे तो इस का कफ़्फ़ारा यह है कि यह कहे :

اَللّٰهُمَّ لَا خَيْرَ اِلَّا خَيْرُكَ وَلَا طَيْرَ اِلَّا طَيْرُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

अल्लाहुम्म ला ख़ै-र इल्ला ख़ैरु-क, वला तै-र इल्ला तैरु-क, वला इला-ह ग़ैरु-क

तर्जुमा – "इलाही! तेरी ख़ैर-बर्कत के अलावा कोई ख़ैर-बर्कत नहीं और तेरे शुगून के सिवा और कोई शगून नहीं, और तेरे अलावा कोई माबूद नहीं।"

2) जब बदशुगूनी की नागवार बात देखे तो यह कहे

اَللّٰهُمَّ لَا يَاْتِيْ بِالْحَسَنَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا يَذْهَبُ بِالسَّيِّئَاتِ اِلَّا اَنْتَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ۔

अल्लाहुम्म ला याती बिल् ह-सनाति इल्ला अन्-त, वला यज़्-हबु बिस्सय्यिआति इल्ला अन्-त, वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बि-क

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तेरे सिवा कोई अच्छाइयों को नहीं ला सकता, और तेरे सिवा कोई बुराइयों को दूर नहीं कर सकता, और कोई ताक़त और क़ुव्वत तेरी सहायता के बिना (हासिल) नहीं।"

बुरी नज़र लग जाने के समय की दुआ़

1) जिस को बुरी नज़र लग जाये उस को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस पवित्र क़ौल से झाड़े:

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا

बिसमिल्लाहि, अल्लाहुम्मज़् हब् हर्रहा व-बर्दहा व-व-स-बहा

तर्जुमा – "अल्लाह के नाम पर, ऐ अल्लाह! तू इस (बुरी

नज़र) के ठन्डे और गर्म को, दुःख और दर्द को दूर कर दे।"

2) इस के बाद कहे :

قُمْ بِإِذْنِ اللّٰهِ

कुम् बिइज़्निल्लाहि

"अल्लाह के हुक्म से खड़ा हो जा"

जानवर को बुरी नज़र लग जाने के समय की दुआ

1) अगर किसी जानवर को बुरी नज़र लगी हो तो उस के दायें नथुने में चार मर्तबा और बायें नथुने में तीन मर्तबा यह पढ़ कर फूँके -

لَا بَاسَ اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا يَكْشِفُ الضُّرَّ اِلَّا اَنْتَ۔

ला बा-स, अज़्हिबिल् बा-स रब्बन्नासि, इश्फ़ि अन्-तश्शाफ़ी, ला यक्शिफुज़्ज़ुर्र इल्ला अन्-त

तर्जुमा -" कोई डर नहीं, दूर कर दे दुःख, बीमारी ऐ लोगों के पालनहार! स्वास्थ दे दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे सिवा कोई दुःख-तक्लीफ़ को दूर नहीं कर सकता।"

❑❋❑

जिन्न, आसेब वग़ैरह का प्रभाव हो जाने के समय की दुआ

1) अगर किसी शख़्स पर जिन्न-आसेब वग़ैरह का प्रभाव हो जाये तो उसे सामने बैठा कर नीचे की 11 आयतों और 3 सूरतों को पढ़ कर दम करे :

(1) اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ ۝ (سورۂ فاتحہ)

1. अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ-लमीन्+ अर्रह्मानिर्रहीम + मालिकि यौमिद्दीन् + इय्या-क नाअ्बुदु वइय्या-क नस्-तअ़ीन् + इह्दि-नस्सि रा-तल् मुस्-तक़ीम् सिरा-तल्लज़ी-न अन्-अम्-त अ़लैहिम् ग़ैरिल् मग़ज़ूबि अ़लैहिम् व-लज़्ज़ाल्लीन् (सूरः फ़ातिहा)

(2) الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَا اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝

2. आलिफ़ लाममीम् ज़ालि-कल् किताबु ला रै-ब फ़ीहि, हु-दल्लिल् मुत्तक़ीन्+ अल्लज़ी-न यूमिनू-न बिल्ग़ैबि वयुक़ीमू-नस्सला-त वमिम्मा र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ू-न + वल्लज़ी- न यूमिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क वमा उन्ज़ि-ल

मिन् क़ब्लि-क वबिल् आख़ि-रति हुम् यूक़िनून्+ उलाइ-क अला हु-दम्मिर् ब्बिहिम् वउलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून् + (सूरः ब-क़-रः)

(३) وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ (سورۂ بقرہ)

3. वइला हुकुम इलाहुंव्वाहिदुन् लाइला-ह इल्ला हु-वर्रहमानुर्रहीमु (सूरः ब-क़-रः)

(۴) اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ لَهٗ
مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِیْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ
اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا
وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِيْمُ (سورۂ بقرہ)

4. अल्लाहु लाइला-ह इल्ला हु-व अल्-हय्युल् क़य्यूमु ला ताख़ुजूहु सि-नतुंव्वला नौमुन्+लहू माफ़िस्समा वाति वमा फ़िल् अर्ज़ि मन् ज़ल्लज़ी यश-फ़अु अिन्-दहू इल्ला बिइज़्निही+ यअ्-लमु मा बै-न ऐदीहिम् वमा ख़ल्-फ़हुम् वला युहीतू-न बिशैइम्मिन् अिल्मिही इल्ला बिमा शा-अ+वसि-अ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्-अर्-ज़ वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहु-वल् अलिय्युल् अज़ीमु+ (सूरः ब-क़-रः)

(۵) لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْٓ اَنْفُسِكُمْ
اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ
يَّشَآءُ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ

رَبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا
رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا
رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا
اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (سورۂ بقرہ)

5. लिल्लाहि मा फ़िस्समा वाति वमा फ़िल् अर्ज़ि वइन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु+ फ़-यग़्फ़िरु लि-मय्याशाउ वयु-अ़ज़्ज़िबु मय्यशाउ+वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+आ-म-नर्रसूलु बिमा उन्ज़ि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल् मोमिनून्+ कुल्लुन् आ-म-न बिल्लाहि व-मला इ-कतिही वकुतुबिही वरुसुलिही+ला नु-फ़र्रिकु बै-न अ-हदिम् मिर्रुसुलिही+ वक़ालू समेअ़्ना व-अतअ़्ना ग़ुफ़रा-न-क रब्बना वइले-कल मसीरु+ला यु-कल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्-सन् इल्ला वुस्-अ़हा लहा मा क-स-बत् व-अ़लैहा मक्-त-स-बत्+रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ अख़्-तअ़्ना+रब्बना वला तह्मिल् अ़लैना इस्-रन् अकमा ह-मल्-तहू अ़-लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिना रब्बना वला तु-हम्मिल्ना मा ला ता-क़-त लना बिही+वअ़्फ़ु अ़न्ना वग़्फ़िर लना वर्-हम्ना अन्-त मौलाना फ़न्सुरना अ़-लल क़ौमिल काफ़िरी-न+ (सूरः ब-क़-रः)

(۶) شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا

بِالْقِسْطِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (آل عمران)

6. शहि-दल्लाहु अन्नहू लाइला-ह इल्ला हु-व, वल्-मलाइ-कतु उलुल् अिल्मि क़ाइ-मम् बिल् क़िसति, लाइला-ह इल्ला हु-वल् अज़ीज़ुल् हकीमु (आले इमरान)

(۷) اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ - (اعراف)

7. इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल्-अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्-तवा अ-लल् अ़र्शि, युग्शिल्लै-लन्नहा-र यत्लुबुहू हसीसंव्वश्शम्-स वल् क़-म-र वन्नुजू-म मु-सख़्ख़रातिम् बि-अम्रिही, अला लहुल् ख़ल्कु वल्-अम्रु, तबा-र-कल्लाहु रब्बुल् आ-लमी-न (सूरः आराफ़)

(۸) فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ○ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ - (مومنون)

8. फ़-त-आ-लल्लाहुल् मलिकुल् हक़्क़ु, लाइला-ह इल्ला हु-व रब्बुल् अ़र्शिल् करीमि+ व-मंय्यद्अु म-अ़ल्लाहि इला-हन् आ-ख़-र ला बुर्-हा-न लहू बिही फ़इन्नमा हिसाबुहू अ़िन्-द रब्बिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल् काफ़िरू-न, वक़ुर्रब्बिग़् फ़िर् वर्-हम् व-अन्-त ख़ैरुर्राहिमीन्+ सूरः मोमिनून)

(९) وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ نِ الْكَوَاكِبِ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ (الصافات)

९. वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़न, फ़ज़्ज़ाजिराति ज़ज्‌-रन्, फ़त्तालियाति ज़िक्‌-रन्, इन्न इला-हकुम् लवाहिदुन्, रब्बुस्समावाति वल्-अर्ज़ि वमा बै-नहुमा व-रब्बुल् मशारिकि+ इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बिज़ी-नतिनिल् कवाकिबि वहिफ़्-ज़म्मिन् कुल्लि शैतानिम्मारिदिन्-ला यस्सम्मअू-न इ-लल् म-लइल् अअ्ला वयुक्‌-ज़फ़ू-न मिन् कुल्लि जानिब्+दुहू-रव्व-लहुम् अ़ज़ाबुव्वासिब + इल्ला मन् ख़तिफ़-फ़ल् ख़त्-फ़-त फ़-अत्‌ब-अ़हू शिहाबुन् साक़िब, फ़स्‌-तफ़्तिहिम् अहुम् अ-शद्दु ख़ल्-क़न् अम्मन् ख़-लक़्ना, इन्ना ख़-लक़्नाहुम् मिन् तीनिल्लाज़िब्+ (सूरः साफ़्फ़ात)

(१०) هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (حشر)

10. हु-वल्लाहुल्लज़ी लाइला-ह इल्ला हु-व आ़लिमुल् ग़ैबि

वश्शहा-दति, हु-वर्रह्मानुर्रहीमु+ हु-वल्लाहुल्लजी लाइला-ह इल्ला हु-व, अल्-मलिकुल् कुद्दुसुस्सलामुल् मोमिनुल् मुहैमिनुल् अजीजुल् जब्बारुल् मु-त-कब्बिरु सुबहा-नल्लाहि अम्मा युशरिकू-न + हु-वल्लाहुल् ख़ालिकुल् बारिउल मु-सव्विरु लहुल् असमाउल् हुसना, यु-सब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल्-अरज़ि व-हु-वल् अज़ीज़ुल हकीमु+ (सूरः हश्र)

(۱۱) وَاَنَّهٗ تَعَالٰی جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ (جن)

11. व-अन्नहू तआला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज साहि-ब-तव्वला व-लदा+व-अन्नहू का-न यकूलु सफ़ीहुना अ-लल्लाहि श-तता+ (सूरः जिन्न)

(۱۲) قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۔

12. कुल् हु-वल्लाहु अ-हद्+अल्लाहुस्स-मद्+लम् यलिद् व-लम् यू-लद्+ व-लम् यकुल्लहू कुफ़ु-वन् अ-हद्+ (सूरः इख़्लास)

(۱۳) قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

13. कुल् अऊज़ु बि-रब्बिल फ़-लक़+मिन् शर्रि मा ख़-लक़+वमिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब्+ वमिन् शर्रिन्नफ़्फ़ा साति फ़िल् अु-क़द्+वमिन् शर्रि हासिदिन इज़ा ह-सद्+ (सूरः फ़-लक़)

(१४) قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَٰهِ النَّاسِ ۝ مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

14. कुल अऊज़ु बि-रब्बिन्नास् + मलिकिन्नास्+ इलाहिन्नास् + मिन् शर्रिल् वस्वा सिल् ख़न्नास+अल्लज़ी यु-वस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास्+मि-नल्जिन्नति वन्नास्+ (सूरः नास)

पागल पन के लिए उपचार

1) पागल व्यक्ति पर तीन दिन सुबह सुबह-शाम सूरः फ़ातिहा पढ़ कर दम करे, हर मर्तबा सूरत ख़त्म करने पर मुँह का थूक इकट्ठा कर के उस पर डाले।

साँप-बिच्छू के काटे का उपचार

1) जिस को साँप-बिच्छू वग़ैरह ज़हरीले (विषैले) जानवर ने काट लिया हो उस पर सात मर्तबा सूरः फ़ातिहा पढ़ कर दम करे।

2) पानी और नमक मिला कर जिस स्थान पर काटा है मलता जाये और सूरः काफ़िरून, सूरः फ़-लक़, सूरः नास पढ़ कर दम करता जाये।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि एक मर्तबा नमाज़ में बिच्छू ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को काट लिया नमाज़ के बाद आप ने फ़रमाया - अल्लाह लानत करे बिच्छू पर, नमाज़ी को छोड़ता है और न बेनमाज़ी को। फिर आपने नमक और पानी मँगवाया, आप काटने के स्थान पर मलते जाते और ऊपर की तीनों सूरतों को पढ़ते जाते थे।

नोट - तर्जुमा याद करने का शौक़ हो तो तर्जुमे वाले क़ुरआन मजीद से याद कर लें (इदरीस)

या यह पढ़ कर दम करे :

بِسْمِ اللّٰهِ شَجَّةٌ قَرْنِيَّةٌ مِلْحَةٌ بَحْرٌ

बिस्मिल्लाहि शज्जतुन् क़-रनिय्यतुन् मिल्-हतु बहरिन्

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि हम ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में बिच्छू वगैरह के काटे का ऊपर का मंत्र पेश किया तो आप ने हमें उसे पढ़ने की अनुमति दे दी और फ़रमाया –यह जिन्नों के इक़रार और मुआहिदा में से है।

जले हुए के लिए दुआ

1) जले हुये शख़्स पर यह पढ़ कर दम करे

اَذْهِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَا شَافِيَ اِلَّا اَنْتَ

अज़हिबिल् बा–स रब्बन्नासि, इशफ़ि, अन्–तश्शाफ़ी, ला शाफ़ीया इल्ला अन्–त

तर्जुमा – "दूर करदे तक्लीफ़ को ऐ लोगों के पर्वरदिगार! शिफ़ा दे दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे अलावा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं है।"

आग बुझाने की दुआ

1) कहीं पर आग लगी हो तो "अल्लाहु अक्बर" कहे और बुझाए।

नोट – आम तौर पर ऐसे मन्त्र जिनके अर्थ मालूम न हों, उन्हें पढ़ना मना है। इस मन्त्र की चूँकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पे पढ़ने की अनुमति दे दी है इसलिये इसका पढ़ना जाइज़ है। (इद्रीस)

फ़ायदा – संपादक रह0 फ़रमाते हैं – यह अमल आज़माया हुआ है।

पेशाब बन्द हो जाने और पथरी के लिये दुआ

1) जब पेशाब बन्द हो जाये, या पथरी हो तो यह दुआ पढ़े – رَبُّنَا اللّٰهُ الَّذِىْ فِى السَّمَآءِ، تَقَدَّسَ اسْمُكَ، اَمْرُكَ فِى السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ كَمَا رَحْمَتُكَ فِى السَّمَآءِ فَاجْعَلْ رَحْمَتَكَ فِى الْاَرْضِ وَاغْفِرْلَنَا حُوْبَنَا وَخَطَايَانَا اَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِيْنَ فَاَنْزِلْ شِفَآءً مِّنْ شِفَآئِكَ وَرَحْمَةً مِّنْ رَّحْمَتِكَ عَلٰى هٰذَا الْوَجَعِ.

रब्बु-नल्लाहुल्लज़ी फ़िस्समाइ, त-क़द्द-स इस्मु-क, अम्रु-क फ़िस्समाइ वल्-अर्ज़ि, कमा रह्-मतु-क फ़िस्समाइ, फ़ज्-अल् रह्-म-तक फ़िल् अर्ज़ि, वग़्फ़िर लना हू-बना व-ख़तायाना, अन्-त रब्बुत्तैय्यिबी-न फ़-अन्ज़िल् शिफ़ा-अन् मिन् शिफ़ाइ-क व-रह्-म-तन् मिन् रह्-मति-क अ़ला हा-ज़ल् वज्अि+

तर्जुमा – "हमारा रब अल्लाह है जो आकाश में है (ऐ हमारे रब!) तेरा नाम पाक है, तेरा हुक्म आसमान और ज़मीन में (बराबर) है, तेरी रहमत जैसे आसमान में है ऐसे ही ज़मीन में भी आम कर दे, हमारे गुनाह और ख़ताएँ माफ़ कर दे, तू पाक लोगों का परवरदिगार है, इसलिये तू अपने शिफ़ा (के भन्डार) से शिफ़ा और रहमत (के ख़ज़ाने) से रहमत नाज़िल फ़रमा दे इस बीमारी पर (कि यह समाप्त हो जाये)

फोड़े-फुन्सी और घाव के लिए दुआ

1) जिस शख़्स के फोड़ा-फुन्सी या ज़ख़्म (घाव) हो उस का उपचार इस प्रकार करे कि अपनी शहादत की उंगली ज़मीन पर रख कर यह कहते हुये उठाए :

بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَا بِرِيْقَةِ بَعْضِنَا يُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا

बिस्मिल्लाहि, तुर्-बतु अर्ज़िना, बिरी-क़ति बअ्ज़िना, युश्फ़ा सक़ीमुना बिइज़्नि रब्बिना

तर्जुमा - अल्लाह के नाम के साथ, हमारी ही ज़मीन की मिट्टी, हम ही में से किसी एक शख़्स के थूक के साथ, हमारे परवरदिगार के हुक्म से हमारा बीमार अच्छा हो जाये।"

2) या कहे :

يُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا

युश्फ़ा सक़ीमुना बिइज़्नि रब्बिना

तर्जुमा - "हमारा बीमार हमारे रब के हुक्म से अच्छा हो जाना चाहिये"

हाथ-पाँव सुन्न हो जाने के लिए अ़मल

1) जब पाँव (या हाथ) सुन्न हो जाये तो जिस से सब से अधिक मुहब्बत हो उस का नाम ले।

जिस्मानी दु:ख-तक्लीफ़ के लिए दुआ

1) जिस शख़्स को कोई जिस्मानी दु:ख, दर्द या कोई और

तक्लीफ़ हो वह अपना दाँया हाथ तक्लीफ़ की जगह रखे और तीन मर्तबा "बिस्मिल्लाहि" कहे और सात मर्तबा यह दुआ पढ़े -

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ

अऊज़ु बिल्लाहि वकुद्-रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु वउहाज़िरु

तर्जुमा - मैं अल्लाह और उस की क़ुदरत की पनाह लेता हूँ उस तक्लीफ़ की बुराई से जो मुझे हो रही है।"

2) या सात मर्तबा यह पढ़े :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ

अऊज़ु बिल्लाहि बिअिज़्ज़तिल्लाहि वकुद्-रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु

तर्जुमा - "मैं अल्लाह की इज़्ज़त और क़ुदरत की पनाह लेता हूँ उस तक्लीफ़ की बुराई से जो मुझे हो रही है।"

3) या तक्लीफ़ के स्थान पर हाथ रख कर सात मर्तबा यह दुआ पढ़े :

اَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مِّنْ شَرِّ مَا اَجِدُ

अऊज़ु बिअिज़्ज़तिल्लाहि वकुद्-रतिही अला कुल्लि शैइन् मिन् शर्रि मा अजिदु

तर्जुमा - " मैं अल्लाह की अिज़्ज़त और हर वस्तु पर उस की क़ुदरत की पनाह लेता हूँ उस तक्लीफ़ की बुराई से जो मुझे हो रही है।"

4) या तक्लीफ़ की जगह पर हाथ रख कर ताक़ मर्तबा यानी तीन, या पाँच, या सात मर्तबा यह पढ़ कर और फिर हाथ

उठा कर फिर इसी प्रकार चन्द मर्तबा यह अ़मल करे:

بِسْمِ اللّٰهِ اَعُوْذُ بِعِزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّ مَا اَجِدُ مِنْ وَّجْعِیْ هٰذَا

बिस्मिल्लाहि अऊज़ु बिअ़िज़्ज़तिल्लाहि वकुद्-रतिही मिन् शर्रि मा अजिदु मिन् वज्अ़ी हाज़ा

तर्जुमा – "अल्लाह के नाम के साथ, मैं पनाह लेता हूँ अल्लाह की इज़्ज़त और क़ुदरत की, उस तकलीफ़ की बुराई से जो मुझे इस दर्द की वजह से हो रही है।"

5) या (खुद बीमार) अपने ऊपर "मु-अ़व्वज़ात" यानी सूरः "फ़-लक़" और सुरः "नास" पढ़ कर दम कर ले।

आँख दुखने के लिए दुआ़

1) जिस शख़्स की आँखें दुःख रही हों वह यह दुआ़ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِیْ بِبَصَرِیْ وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنِّیْ وَاَرِنِیْ فِی الْعَدُوِّ ثَاْرِیْ وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ ظَلَمَنِیْ۔

अल्लाहुम्म मत्तेअ़नी बि-ब-सरी वज्-अ़लहुल वारि-स मिन्नी व-अरिनी फ़िल् अ़दुव्वि सारी वन्सुरनी अ़ला मन् ज़- ल-मनी

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मुझे मेरी आँख की रोशनी से लाभ पहुँचा, और उसको मेरा वारिसा (यादगार) बना दे और मेरे दुश्मन (की ज़िन्दगी) में मेरा बदला मुझे (अपनी आँखों से) दिखा दे और जो मुझ पर अत्याचार करे उस पर मेरी सहायता फ़रमा।"

बुख़ार के लिए दुआ

1) जिस को बुख़ार आ जाये वह यह पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ وَّمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ۔

बिस्मिल्लाहिल् कबीरि, अऊज़ु बिल्लाहिल् अज़ीमि मिन् शर्रि कुल्लि अिर्क़िन नअ़्आरिन् मिन् शर्रि हर्रिन्नारि

तर्जुमा - "बज़ुर्ग-बड़े अल्लाह के नाम से, मैं पनाह लेता हूँ और बज़ुर्ग और बड़े की हर जोश मारने वाली रग की बुराई से और जहन्नुम की आग से सोरिश (जलन) की बुराई से।"

सख़्त बीमारी और ज़िन्दगी से निराशा के समय

1) अगर कोई सख़्त बीमारी में घिर जाये और ज़िन्दगी से निराश हो जाये तो मरने की दुआ तो न करे, बल्कि अगर दुआ ही करनी है तो यह करे :

اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِيْ مَا كَانَتِ الْحَيٰوةُ خَيْرًا لِّيْ وَتَوَفَّنِيْ اِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّيْ

अल्लाहुम्म अह्यिनी मा का-नतिल् हयातु ख़ै-रल्ली व-त-वफ़्फ़नी इज़ा का-नतिल् वफ़ातु ख़ै-रल्ली

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुझे ज़िन्दा रख जब तक कि ज़िन्दगी मेरे लिये बेहतर हो और मौत देदे जब तक कि मरना मेरे लिये बेहतर हो।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - अगर्चे कितनी ही सख़्त बीमारी हो और ज़िन्दगी से निराश हो, मरने की दुआ न माँगे और ज़्यादा से ज़्यादा ऊपर की दुआ माँगे।

किसी बीमार का हाल-चाल मालूम करने के समय की दुआ

1) अगर किसी बीमार का हाल-चाल और ख़ैरियत मालूम करे तो यह कहे :

لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ، لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَـآءَ اللّٰهُ

ला बा-स तहूरुन् इन् शा-अल्लाहु+ला बा-स तहूरुन् इन् शा-अल्लाहु

तर्जुमा - "कोई घबराने की बात नहीं अल्लाह ने चाहा तो (यह बीमारी ज़ाहिरी और अन्दरूनी तक्लीफ़ों से) पाक कर देने वाली है+कोई घबराने की बात नहीं इन शा-अल्लाह, (यह बीमारी ज़ाहिरी और अन्दरूनी ख़राबियों को) पाक कर देने वाली है।"

2) (शहादत की उँगली पर अपना थूक लगा कर इस प्रकार ज़मीन पर रखे कि मिट्टी उस पर लग जाये, फिर बीमार या घायल के बदन पर तक्लीफ़ के स्थान पर लगाता जाये) और यह दुआ पढ़ता जाये :

بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَا وَرِيْقَةُ بَعْضِنَا يُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا يَا بِاِذْنِ اللّٰهِ

बिसमिल्लाहि तुर-बतु अर्ज़िना वरी-क़तु बअ़ज़िना युश्फ़ा सक़ीमुना बिइज़्नि रब्बिना (या) बिइज़्निल्लाहि

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ, हमारी ज़मीन की मिट्टी, हम ही में से एक का थूक, हमारा बीमार स्वास्थ लाभ पाये हमारे रब के हुक्म से।"

3) या दायाँ हाथ बीमार के बदन पर फेरता जाये और यह कहता जाये :

اَللّٰهُمَّ اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِهٖ وَاَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَآءَ اِلَّا شِفَآؤُكَ شِفَآءً لَّا يُغَادِرُ سَقَمًا۔

अल्लाहुम्म अज़्हिबिल् बा-स, रब्बन्नासि इश्फ़िही, व-अन्-तश्शाफ़ी ला शिफ़ा-अ इल्ला शिफ़ाउ-क शिफ़ाउन् ला युग़ादिरु सक़-मन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तकलीफ़ को दूर फ़रमा (ऐ) लोगों के पलानहार! इस बीमारी को शिफ़ा दे, और तू ही स्वास्थ देने वाला है, तेरी शिफ़ा के सिवा कोई शिफ़ा नहीं, ऐसी शिफ़ा दे कि कोई बीमारी बाक़ी न रहने दे।"

4) या यह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُّؤْذِيْكَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ اَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ اَللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ۔

बिस्मिल्लाहि अर्क़ी-क मिन् कुल्लि शैइन् यूज़ी-क, वमिन् शर्रि कुल्लि नफ़्सिन् औ ऐनिन् हासिदिल्लाहु यश्फ़ी-क, बिस्मिल्लाहि अर्क़ी-क

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ मैं तुम पर दम करता हूँ हर उस चीज़ से जो तुझे तकलीफ़ दे और हर इन्सान के

या हसद करने वाली आँख की बुराई से, अल्लाह तुझे शिफ़ा दे। मैं अल्लाह के नाम के साथ तुझ पर दम करता हूँ।"

5) या तीन मर्तबा यह पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ وَاللّٰهُ يَشْفِيْكَ مِنْ كُلِّ دَآءٍ فِيْكَ مِنْ شَرِّ
النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ۔

बिस्मिल्लाहि अरक़ी-क वल्लाहु युश्फ़ी-क मिन् कुल्लि दाइन् फ़ी-क मिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फ़िल् अु-क़दि वमिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा-ह-स-द

तर्जुमा - "मैं अल्लाह के नाम से तुझ पर दम करता हूँ, और अल्लाह ही तुझ को शिफ़ा देगा हर उस बीमारी से जो तेरे अन्दर हो और झाड़-फूँक करने वाली महिलाओं की बुराई से, और हसद करने वालों की बुराई से जबकि वह हसद करने लगें।"

6) या तीन मर्तबा यह पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ دَآءٍ يَّشْفِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ حَاسِدٍ اِذَا
حَسَدَ وَمِنْ كُلِّ ذِيْ عَيْنٍ۔

बिस्मिल्लाहि अरक़ी-क मिन् कुल्लि दाइन् यश्फ़ी-क मिन् शिर्रि कुल्लि हासिदिन् इज़ा ह-स-द वमिन् कुल्लि ज़ी अैनिन्

तर्जुमा - "मैं अल्लाह के नाम के साथ तुझ पर दम करता हूँ, हर बीमारी से अल्लाह तुझे शिफ़ा दे हर हसद करने वाले की बुराई से जबकि वह हसद करने लगे, और नज़र लगाने वाले की बुराई से।"

7) या यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اشْفِ عَبْدَكَ يَنْكَأُ لَكَ عَدُوًّا اَوْ يَمْشِيْ لَكَ اِلٰى جَنَازَةٍ

अल्लाहुम्मशफ़ि अब्-द-क यन्-कउ ल-क अदुव्वन् औ यमशी ल-क इला जना-ज़तिन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू अपने इस बन्दे को शिफ़ा देदे कि यह (अच्छा हो कर) तेरे किसी दुश्मन को घायल करेगा या (कम से कम) तेरी रज़ा के लिये किसी जनाज़े के साथ जायेगा।"

8) या यह दुआ करे :

اَللّٰهُمَّ اشْفِهٖ اَللّٰهُمَّ عَافِهٖ (يا) اَعْفِهٖ

अल्लाहुम्मश् फ़ीही अल्लाहुम्म आफ़िही (या) अअ्फ़िही

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू बीमार को शिफ़ा दे दे" (या) "उसे तन्दुरुस्त कर दे"।

9) मरीज़ का नाम ले कर यह कहे :

يَا فُلَانُ شَفَى اللّٰهُ سَقَمَكَ وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَعَافَاكَ فِيْ دِيْنِكَ وَ جِسْمِكَ اِلٰى مُدَّةِ اَجَلِكَ۔

या फ़ुलानु श-फ़ल्लाहु सक़-म-क व-ग़-फ़-र ज़म्-ब-क व-आफ़ा-क फ़ी दीनि-क वजिस्मि-क इला मुद्दति अ-जलि-क

तर्जुमा - "ऐ फ़लाँ! अल्लाह ने तेरी बीमारी को शिफ़ा दे दी, तेरे गुनाह बख़्श दिये, और मरते दम तक के लिये तेरे दीन को भी और तेरे बदन को भी आफ़ियत दे दी (इन्शाअल्लाह)

10) या 7 मर्तबा यह दुआ पढ़े :

أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ أَنْ يَّشْفِيَكَ

अस्-अलुल्ला-हल् अज़ी-म रब्बल् अ़र्शिल् अज़ीमि अय्यंश् फ़ी-क

तर्जुमा - "मैं अल्लाह बजुर्ग और बड़ाई वाले से दुआ करता हूँ जो बड़े अ़र्श का मालिक है कि मुझे शिफ़ा दे दे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस शख़्स ने भी किसी ऐसे बीमार की, अ़यादत की जिस की मौत न आयी हो और (ऊपर की) दुआ की तो अल्लाह पाक उस बीमार को उस बीमारी से ज़रूर ही शिफ़ा देदेंगे।

11) या यह दुआ करे :

يَا حَلِيْمُ يَا كَرِيْمُ اشْفِ فُلَانًا

या हलीमु, या करीमुश्फ़ि-फुला-नन्

तर्जुमा - "ऐ हलीम, ऐ करम करने वाले! तू फ़लाँ को शिफ़ा दे दे।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि एक व्यक्ति हज़रत अ़ली रज़ि० के पास आया और कहा - कि फ़लाँ व्यक्ति बीमार है। आपने फ़रमाया - क्या तुम्हें इस बात की खुशी है कि वह अच्छा हो जाये? उस ने कहा - जी हाँ। तो फ़रमाया - तुम (ऊपर की) दुआ करो वह अच्छा हो जायेगा।

★

स्वँय बीमार आदमी के लिए बीमारी की हालत में दुआ

1) बीमार आदमी बीमारी की हालत में 40 मर्तबा यह आयत पढ़े :

لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ

लाइला–ह इल्ला अन्–त सुब्हा–न–क इन्नी कुन्तु मि–नज़्ज़ालिमी–न

तर्जुमा – "तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ही अत्याचार करने वालों में से हूँ।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस मुसलमान ने अपनी बीमारी की हालत में 40 मर्तबा ऊपर की आयत पढ़ ली तो अगर इस बीमारी में देहान्त कर गया तो 40 शहीदों का सवाब पाएगा। और अगर अच्छा हो गया तो उस के समस्त पाप बख़्श दिये जायेंगे।

2) बीमारी के ज़माना में यह दुआ पढ़े :

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ، لَا إِلٰهَ
إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ، لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْكُ
وَلَهُ الْحَمْدُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ۔

लाइला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्–बरु+लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू+ लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू ला शरी–क लहू+लाइला–ह इल्लल्लाहु लहुल् मुल्कु व–लहुल् हम्दु

+लाइला-ह इल्लल्लाहु वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि+

तर्जुमा - "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह ही सब से बड़ा है +अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला और (तन्हा) है+ अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का कोई साझीदार नहीं+ अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी का (तमाम) मुल्क है और उसी के लिये सब तारीफ़ है+अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और कोई भी ताक़त और क़ुव्वत अल्लाह के सिवा (हासिल) नहीं।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - जो शख़्स अपनी बीमारी की हालत में ऊपर की दुआयें पढ़ता रहा और देहान्त कर गया तो जहन्नुम की आग उसको न खा सकेगी।

शहीद होने या मदीना शरीफ़ में देहान्त पाने की इच्छा और दुआ

1) सच्चे दिल से और सच्ची तमन्ना से यह दुआ किया करे :

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ شَهَادَةً فِیْ سَبِیْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِیْ بِبَلَدِ رَسُوْلِكَ

अल्लाहुम्मर् ज़ुक़नी शहा-द-तन् फ़ी सबीलि-क वज्-अल् मौती बि-ब-लदि रसूलि-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते में शहादत अता फ़रमा और अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के नगर (मदीना शरीफ़) में मुझे मौत दे।"

फ़ायदा -हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स सच्चे

दिल से अल्लाह की राह में शहीद होने की दुआ माँगेगा वह अगर्चे बिस्तर पर मरे लेकिन अल्लाह तआला उसको शहीदों के दर्जे पर पहुँचा देगा।

हदीस शरीफ़ में यह भी आया है कि जो शख़्स सच्चे दिल से शहादत को चाहेगा उस को शहादत का दर्जा दे दिया जाएगा, अगर्चे उस को शहादत न मिले।

और यह भी हदीस में आया है कि जिस ने सच्चे दिल से अल्लाह की राह में क़त्ल होने की दुआ माँगी फिर (चाहे अपनी मौत) मर जाये, या क़त्ल कर दिया जाये (हर हाल में) उस को शहीद का सवाब मिलेगा।

अल्लाह की राह में शहीद होने का सवाब

1) हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस शख़्स ने (अल्लाह की राह में) ऊँटनी का दुध दूहने के बीच के समय के बराबर भी (यानी थोड़ी देर के लिये भी) जंग की, उस के लिये जन्नत वाजिब होगी।

देहान्त के समय की दुआ

1) मरने के समय, मरने वाले का मुँह क़िबले की तरफ़ कर दिया जाये और वह यह दुआ माँगे :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاَلْحِقْنِيْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى

अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली वर्-हम्नी व-अल्हिक़्नी बिर्फ़ीक़िल अअ्ला

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा, और मुझे रफ़ीक़े आला (नबियों और बुज़ुर्गों) के साथ मिला दे।"

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ

2) लाइला-ह इल्लल्लाहु इन्न लिल्मौति स-करातिन्

तर्जुमा - "अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं है, बेशक मौत की सख़्तियाँ (सत्य) हैं।

3) और यह दुआ़ करता रहे :

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّىْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ الْمَوْتِ

अल्लाहुम्म अअ़िन्नी अ़ला ग़-मरातिल् मौति व-स-करातिल् मौति

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मौत की सख़्तियों पर और जान निकलने (की तक्लीफ़) पंर मेरी मदद फ़रमा।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है अल्लाह तआ़ला (फ़रिश्तों से) फ़रमाते हैं - मेरा मोमिन बन्दा मेरे नज़दीक हर भलाई (के ऊँचे दर्जे) का हक़दार है (इसलिये कि) मैं उस के दोनों पहलू के दर्मियान से उस की रूह निकाल रहा हूँ और वह (जान निकाले जाने के समय भी) मेरी तारीफ़ कर रहा है (इसलिये ऐसे समय ऊपर की दुआ़ पढ़ना और अल्लाह पाक की हम्द व सना करना बड़े सौभाग्य की बात है।

★

मरने वाले को तल्क़ीन (आश्वासन)

1) जो लोग मरने वाले के पास हों वह लोग उसको "लाइला-ह इल्लल्लाहु" की तल्क़ीन् करें, यानी ख़ुद कलमा पढ़ें ताकि वह भी उन को सुन कर कलमा पढ़े।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस शख़्स की ज़बान पर अन्तिम बात "लाइला-ह इल्लल्लाहु" हो, वह जन्नत में (ज़रूर) दाख़िल होगा।

मय्यित के पास जो लोग मौजूद हों वह यह दुआ पढ़ें

1) जो लोग मय्यित के पास हों वह उस की आँखें बन्द कर दें और यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ وَّارْفَعْ دَرَجَتَهٗ فِي الْمَهْدِيِّيْنَ وَاخْلُفْهُ فِيْ عَقِبِهٖ
فِي الْغَابِرِيْنَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهٗ يَارَبَّ الْعَالَمِيْنَ وَافْسَحْ لَهٗ فِيْ قَبْرِهٖ وَنَوِّرْ لَهٗ فِيْهِ

अल्लाहुम्मग़फ़िर लिफ़ुलानिन् वर्-फ़ा द-र-ज-तहू फ़िल् महदिय्यी-न वख़्लुफ़्हु फ़ी अ़क़िबिही फ़िल् ग़ाबिरी-न वग़फ़िर लना व-लहू या रब्बल् आ-लमी-न वफ़्-सह् लहू फ़ी क़ब्रिही व-नव्विर् लहू फ़ीहि

तर्जुमा - " ऐ अल्लाह! फ़लाँ शख़्स (यहाँ मय्यित का नाम ले) को बख़्श दे और हिदायत पाये हुये लोगों (यानी जन्नती लोगों) में उस का दर्जा बुलन्द फ़रमा और उस के पीछे रह जाने वालों में तू उस का क़ायम मुक़ाम बन जा और हमारी और उस

की (सब की) मग़्फ़िरत फ़रमा दे। ऐ सारे जहानों के पालनहार! उस की क़ब्र को कुशादा कर दे और क़ब्र में उस को नूर अ़ता फ़रमा (यानी उस की क़ब्र को रोशन कर दे)

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जो मय्यित के पास मौजूद हो वह मय्यित की आँखें बन्द कर दे और उस के लिये ऊपर की दुआ़ पढ़े, तो फ़रिश्ते उस की दुआ़ पर आमीन कहते हैं।

मय्यित के घर वालों के लिए दुआ़

1) मय्यित का हर घर वाला यह दुआ़ करे :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلَهٗ وَاَعْقِبْنِیْ مِنْهُ عُقْبٰی حَسَنَةً

अल्लाहुम्मग़् फ़िर ली व-लहू व-अअ़्क़िब्नी मिन्हु अुक़्-ब-न् ह-स-न-तन्

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मेरी और उस की मग़्फ़िरत फ़रमा और मुझे उस का अच्छा बदला दे।"

2) और मय्यित के लिये सूरः यासीन पढ़ी जाये।

3) और जिस पर (इस मय्यित की मौत की वजह से) मुसीबत पड़ी है, वह यह पढ़े

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ اْجُرْنِیْ فِیْ مُصِیْبَتِیْ وَاَخْلِفْ لِیْ خَیْرًا مِّنْهَا

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअ़ू-न+अल्लाहुम्म अजिर्नी फ़ी मुसी-बती वख़लिफ़् ली ख़ै-रम्मिन्हा

तर्जुमा – "बेशक हम सब अल्लाह के ही हैं और हम

उसी की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मेरी इस मुसीबत में मुझे बदला दे और इस के बदले मुझे बेहतर बदला दे।"

जिस का बच्चा मर जाये उस के लिये दुआ

1) जिस का बच्चा मर जाये वह

अल्-हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिन् (और)

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ-न पढ़े

फ़ायदा - हदीस क़ुद्सी में आया है कि जब किसी (मुसलमान) बन्दे का बच्चा, मर जाता है तो अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से कहते हैं- तुमने मेरे बन्दे के बच्चा की जान निकाल ली? फ़रिश्ते कहते है। - जी हाँ (ऐ मेरे रब!) अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं- तुम ने उस के दिल का फूल तोड़ लिया? फ़रिश्ते कहते हैं- जी हाँ। अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं। मेरे बन्दे ने इस पर क्या कहा? फ़रिश्ते कहते हैं- उस ने "अल्-हम्दुलिल्लाहि" कहा और "इन्ना लिल्लाहि वइन्ना इलैहि राजिऊ-न" पढ़ा। इस पर अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं- (जाओ) मेरे उस बन्दे के लिये जन्नत में एक महल बना दो और उस का नाम "बैतुल् हम्दि" (हम्द का महल) रख दो।

ताज़ि-यत करने वाले यह कहें

1) जब ताज़ि-यत (पुर्से) के लिये जाये तो घर वालों को सलाम करे और कहे -

إِنَّ لِلّٰهِ مَا أَخَذَ وَلِلّٰهِ مَا أَعْطَىٰ وَكُلٌّ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ

इन्ना लिल्लाहि मा अ-ख़-ज़ वलिल्लाहि मा आअ्ता वकुल्लुन अि़न्-दहू बि-अ-जलिम्मु-सम्मन् फ़ल्-तसबिर् वल्-तह्-तसिब्

तर्जुमा - "बेशक अल्लाह ही का था जो उसने ले लिया और अल्लाह ही का था जो उस ने दिया था। और अल्लाह तआ़ला के हाँ हर एक ही की मौत की मुद्दत सुनिश्चित है, पस तुम सब्र करो। और सवाब हासिल करो।"

ताज़ि-यत (पुरसी) के पत्र का विषय

★ जब किसी को ताज़ियत का पत्र लिखना हो तो नीचे के मज़्मून (विषय) का ख़त लिखे :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ताज़ियत का ख़त हज़रत म-आ़ज़ बिन जबल रज़ि० के पुत्र के देहान्त पर

1) हज़रत मआ़ज़ बिन ज-बल् रज़ि0 के बेटे के देहान्त पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने (नीचे का पत्र) लिखा था -

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ، مِنْ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰهِ إِلَى مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ، سَلَامٌ عَلَيْكَ، فَإِنِّيْ أَحْمَدُ إِلَيْكَ اللّٰهَ الَّذِيْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ، أَمَّا بَعْدُ فَأَعْظَمَ اللّٰهُ لَكَ الْأَجْرَ وَأَلْهَمَكَ الصَّبْرَ وَرَزَقَنَا

وَإِيَّاكَ الشُّكْرَ، فَإِنَّ أَنْفُسَنَا وَأَمْوَالَنَا وَأَهْلِيْنَا وَأَوْلَادَنَا
مِنْ مَوَاهِبِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ الْهَنِيْئَةِ وَعَوَارِيْهِ الْمُسْتَوْدَعَةِ نُمَتَّعُ
بِهَا إِلَى أَجَلٍ مَعْدُوْدٍ وَيَقْبِضُهَا لِوَقْتٍ مَعْلُوْمٍ ثُمَّ افْتَرَضَ
عَلَيْنَا الشُّكْرَ إِذَا أَعْطَى وَالصَّبْرَ إِذَا ابْتَلَى فَكَانَ ابْنُكَ مِنْ
مَوَاهِبِ اللهِ الْهَنِيْئَةِ وَعَوَارِيْهِ الْمُسْتَوْدَعَةِ مَتَّعَكَ بِهِ فِيْ
غِبْطَةٍ وَسُرُوْرٍ وَقَبَضَهُ مِنْكَ بِأَجْرٍ كَبِيْرٍ الصَّلٰوةِ وَالرَّحْمَةِ
وَالْهُدٰى إِنِ احْتَسَبْتَ، فَاصْبِرْ وَلَا يُحْبِطْ جَزَعُكَ أَجْرَكَ
فَتَنْدَمَ وَاعْلَمْ أَنَّ الْجَزَعَ لَا يَرُدُّ شَيْئًا وَلَا يَدْفَعُ حُزْنًا وَمَا
هُوَ نَازِلٌ فَكَأَنْ قَدْ، وَالسَّلَامُ۔

बिसमिल्ला हिर्रह्मा निर्रहीम् + मिन् मु-हम्मदिन् रसूलिल्लाहि इला- म-आज़िब्नि ज-बलिन्, सलामुन् अ़लै-क, फ़इन्नी अह्-मदु इलै-कल्ला-हल्लज़ी लाइला-ह इल्ला हु-व, अम्मा बअ़्दु! फ़अ़्-ज़-मल्लाहु ल-कल् अज्-र वल्-ह-म-कस्सब्-र व-र-ज़-क़ना वइय्या-क़श्शुक्-र, फ़इन्न अन्फु-सना व-अम्वा-लना व-अह्लीना वऔला-दना मिव्वाहिबिल्लाहि अ़ज़्ज़ावजल्लल हनिय्याति व-अ़वारिय्यतिल् मुस्तौ-द-अ़ति तु-मत्तअ़ु बिहा इला अ-जलिम्मादूदिन् व-यक़्बिज़ुहा लि-वक़्तिन् मालूमिन् सुम्मफ़्-त-र-ज़ अ़लै-नश्शुक्-र इज़ा अअ़्ता वस्सब्-र इ-ज़ब्-तला फ़का-न ब्नु-क मिन मवाहिबिल्लाहिल् हनिय्यति व-अवारिय्यहिल् मुस्तौ-द-अ़ति मत्त-अ़-क बिही फ़ी ग़िब्-ततिन् वसुरुरिन्, व-क़-ब-ज़हू मिन्-क बि-अज्रिन् कबीरि निस्सलाति वर्रह्-मति वल् हुदा इनिह्-त-स ब्-त, फ़स्बिर् वला युह्बित ज-ज़अ़ु-क

अज़्-र-क फ़-तन्-द-म वअ-लम् अन्नल् ज-ज़-अ ला यरुद्दु शै-अन् वला यद्-फ़अु हुज़्-नन् क्मा हु-व नाज़िलुन् फ़-क-अन् क़द्, वस्सलामु

तर्जुमा– "(शुरू करता हूँ) अल्लाह के नाम के साथ, जो बड़ा रहम करने वाले मेहरबान हैं। अल्लाह के सन्देष्टा "मु-हम्मद" की तरफ़ से मआज़ बिन ज-बल् के नाम!

तुम पर सलामती हो! मैं तुम्हारे सामने अल्लाह की तारीफ़ करता हूँ जिस के अलावा कोई माबूद नहीं है। हम्द व सना के बाद! अल्लाह तुम्हें बहुत बड़ा बदला अ़ता फ़रमाये और सब्र करने की तौफ़ीक़ दे और हमें और तुम्हें शुक्र अदा करना नसीब फ़रमाये, इसलिए कि बेशक हमारी जानें, हमारा माल, हमारे बाल-बच्चे और हमारी औलाद सब अल्लाह बज़ुर्ग और बरतर के बेहतरीन तुहफ़े और उधार के तौर पर हवाले की गयी चीज़ें हैं जिन से हमें एक सुनिश्चत समय तक फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया जाता है और निश्चित समय पर उन को (वापस) ले लेता है, फिर हम पर फ़र्ज़ किया है कि जब वह दे तो हम शुक्र अदा करें और जब वह आज़माए (और उन को वापस ले ले) तो सब्र करें।

तुम्हारा बेटा भी अल्लाह की उन्हीं बेहतरीन नेमतों और हवाले की हुयी उधार चीज़ों में से एक (उधार का तुहफ़ा) था। अल्लाह तआला ने तुम्हें उस से बेहतरीन सूरत में नफ़ा पहुँचाया और (अब) उस बड़े अज्र को रहमत और मग़्फ़िरत व हिदायत के बदले में वापस ले लिया, मगर शर्त यह है कि सब्र और शुक्र करो। इसलिये तुम अब सब्र और शुक्र से काम लो और (देखो) तुम्हारा रोना-धोना तुम्हारे सवाब को कहीं बर्बाद न कर दे कि

फिर तुम्हें शर्मिन्दगी उठानी पड़े। और याद रखो! कि रोना-धोना कुछ नहीं लौटा कर लाता और न ही रन्ज और ग़म को दूर करता है। और जो होने वाला है वह तो हो कर रहेगा - सलामती हो तुम पर।"

फ़रिश्तों की ताज़ियत का बयान

1) या नीचे के शब्दों में ताज़ियत करे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ!

اِنَّ فِى اللّٰهِ عَزَاءً مِّنْ كُلِّ مُصِيْبَةٍ وَّخَلَفًا مِّنْ كُلِّ فَائِتٍ فَبِاللّٰهِ فَثِقُوْا وَاِيَّاهُ فَارْجُوْا فَاِنَّمَا الْمَحْرُوْمُ مَنْ حُرِمَ الثَّوَابَ-

وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ-

अस्सलामु अ़लैकुम् व-रह्-मतुल्लाहि व-ब-रकातुहू!

इन्न फ़िल्लाहि अ़ज़ाअअम मिन् कुल्लि मुसी-बतिन् व-ख़-ल-फ़न् मिन् कुल्लि फ़ाइतिन्, फ़बिल्लाहि फ़-फ़सिक़ू वइय्याहू फ़र्जू, फ़इन्न-मल् महरूमु मन् हुरि-सस्सवा- व-वस्सलामु अ़लैकुम व-रह्-मतुल्लाहि व-ब-रकातुहू+

तर्जुमा - "तुम पर सलामती हो और अल्लाह की बर्कतें और रहमतें (नाज़िल) हों। बेशक अल्लाह ही हर मुसीबत में सब्र देने वाला है और वही हाथ से गयी हुई चीज़ का बदला देने वाला है। इसलिये तुम सब अल्लाह ही पर भरोसा करो और उसी से आशा रखो, इसलिये कि अस्ली महरूम तो वह है जो अज्र और सवाब से महरूम रहा। और तुम सब पर सलामती हो और अल्लाह की रहमतें और बर्कतें हों।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम देहान्त कर गये तो फ़रिश्तों ने आप के घर वालों और सहाबा की इन्हीं ऊपर के लफ़्ज़ों में ताज़ियत की थी।

हज़रत ख़िज़्र की ताज़ियत

1) या नीचे के लफ़्ज़ों में ताज़ियत करे :

إِنَّ فِي اللّٰهِ عَزَاءً مِّنْ كُلِّ مُصِيبَةٍ، وَعِوَضًا مِّنْ كُلِّ فَائِتٍ، وَخَلَفًا مِّنْ كُلِّ هَالِكٍ، فَإِلَى اللّٰهِ فَأَنِيبُوا، وَإِلَيْهِ فَارْغَبُوا، وَنَظَرُهُ إِلَيْكُمْ فِي الْبَلَاءِ، فَانْظُرُوا، فَإِنَّمَا الْمُصَابُ مَنْ لَّمْ يُجْبَرْ

इन्न फ़िल्लाहि अ़ज़ा–अन् मिन् कुल्लि मुसी–बतिन्, वअ़ि–व–ज़न् मिन् कुल्लि फ़ाइतिन् व–ख़–ल–फ़न् मिन् कुल्लि हालिकिन्, फ़इ–लल्लाहि फ़–अनीबू, वइलैहि फ़र–ग़बू, व–न–ज़रुहू इलैकुम् फ़िल्बलाई, फ़न्ज़ुरु, फ़इन्नमल् मुसाबु मल्लम् युज्–बरु

तर्जुमा – "बेशक अल्लाह ही हर मुसीबत में सब्र देने वाला है, और हर मुर्दा शख़्स या चीज़ का बदला और हर हलाक हुये शख़्स या चीज़ का बदला देने वाला है। पस तुम सब अल्लाह की तरफ़ लौटो और उसी की तरफ़ झुको, और इस आज़माइश में उसकी नज़र तुम्हारी तरफ़ है, इसलिये तुम ख़्याल रखो (कि कहीं अज्र और सवाब से महरूम न हो जाना) इसलिये कि मुसीबत का मारा (वास्तव में) वही शख़्स है जिस को बदला (यानी अज्र और सवाब) नहीं दिया गया।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के देहान्त के दिन) एक सफ़ेद दाढ़ी

वाला, तन्दुरुस्त और शक्ति शाली, सुन्दर (और ख़ूबसूरत शख़्स आया और लोगों की गर्दनें लाँघता हुआ (जनाज़ा के पास) पहुँचा और ख़ूब फूट-फूट कर रोया और फिर सहाबा की तरफ़ मुहँ करके ऊपर के लफ़्ज़ों में ताज़ियत की और तुरन्त चला गया। हज़रत अबू बक्र और हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया-यह ख़िज़्र अलै० थे।

मय्यित को उठाने या जनाज़ा उठाने के समय

1) जो लोग मय्यित को उठाकर चारपाई पर लेटाएँ, या जनाज़ा उठायें, उस समय "बिस्मिल्लाहि" कहें।

जनाज़ा की नमाज़ की दुआ

1) जनाज़ा की नमाज़ में सलात-सलाम (दरूद व सलाम) पढ़ने के पश्चात् यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ اَمَتِكَ كَانَ يَشْهَدُ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ
وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ، وَيَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ
اَصْبَحَ فَقِيْرًا اِلٰى رَحْمَتِكَ، وَاَصْبَحْتَ غَنِيًّا عَنْ عَذَابِهٖ، تَخَلّٰى مِنَ
الدُّنْيَا وَاَهْلِهَا، اِنْ كَانَ زَاكِيًا فَزَكِّهٖ، وَاِنْ كَانَ مُخْطِئًا فَاغْفِرْ لَهٗ
اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهٗ-

अल्लाहुम्म अब् दु-क वब्नु अ-मति-क का-न यश्-हदु अल्लाइला-ह इल्ला अन्-त, वह्-द-क, लाशरी-क ल-क, व-यश् -हदु अन्न मु-हम्म-दन् अब्दु-क व-रसूलु-क,

अस्-ब-ह फ़क़ी-रन् इला रह्-मति-क, व-अस्-बह्-त ग़निय्यन् अन् अज़ाबिही, त-ख़ल्ला मि- नद्दुन्या व-अह्लिहा, इन् का-न ज़ाकि-यन् फ़-ज़क्किही, वइन् का-न मुख़्ति-अन् फ़ग़फ़िर् लहू+अल्लाहुम्म ला तुह्रिम्ना अज्-रहू वला तुज़िल्लना बअ्-दहू

तर्जुमा - " ऐ अल्लाह! (यह) तेरा बन्दा और तेरी लौंडी का बेटा गवाही दिया करता था कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं है। और गवाही दिया करता था कि मुहम्मद तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं। (अब यह) तेरी रहमत का आशा वान है और तू इस को अज़ाब देने से बेनियाज़ है (अब यह) दुनिया और दुनिया वालों से अलग हो कर तेरे दरबार में हाज़िर है। अगर यह (गुनाहों से) पाक है तो और ज़्यादा तू इसे पाक-साफ़ कर दे, और गुनाह गार है तो उस की मग़्फ़िरत कर दे। ऐ अल्लाह! तू हमें भी (रोने-धोने में गिरफ़्तार कर के) उस के सवाब से महरूम न कर और इसके बाद तू हमें गुमराह भी न कीजियो।"

2) या यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهٗ وَارْحَمْهُ وَعَافِهٖ، وَاعْفُ عَنْهُ، وَاَكْرِمْ نُزُلَهٗ وَ
وَسِّعْ مَدْخَلَهٗ وَاغْسِلْهُ بِالْمَآءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ، وَنَقِّهٖ مِنَ
الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ، وَاَبْدِلْهُ دَارًا
خَيْرًا مِّنْ دَارِهٖ، وَاَهْلًا خَيْرًا مِّنْ اَهْلِهٖ، وَزَوْجًا خَيْرًا مِّنْ زَوْجِهٖ
وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَاَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ۔

अल्लहुम्मग् फ़िर् लहू वर्-हम्हु, वआफ़िही, वाअ़फु अन्हु, व-अक्रिम् नुज़ु-लहू, व-वस्सिअ् मद्-ख़-लहू वग़्सिलहु बिल

माइ वस्सल्जि वल् ब-रदि, व-नक़्क़िही मि-नल् ख़ताया कमा नक़्क़ै-तस्सौ-बल् अब्-य-ज़ मि-नद्-नसि, व-अब्दिल्हु दा-रन् ख़ै-रम्मिन् दारिही, व-अह्-लन् ख़ै-रम्मिन् अह्लिही, वज़ौ-जन् ख़ै-रम्मिन् ज़ौजिही, व-अद्ख़िल्हुल् जन्न-त व-अइज़्हु मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि व-अज़ाबिन्नारि+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू इसे माफ़ कर दे, इस पर रहम फ़रमा, इस को आफ़ियत दे, इस की अच्छी मेहमानी कर, इस का ठिकाना (क़ब्र) कुशादा कर दे, और इस (के गुनाह) को पानी के साथ बर्फ़ के साथ, ओलों के साथ, ऐसे धो दे और पाक-साफ़ कर दे जैसे, तू सफ़ेद कपड़े को मैल-कुचैल से पाक-साफ़ कर देता है। और इस को उस के (दुनिया के) घर से बेहतर घर, और उस के घर वालों से बेहतर घर वाले, और उस की पत्नी के बेहतर पत्नी बदला दे। और इस को जन्नत में दाख़िल कर दे और क़ब्र के अज़ाब से और (जहन्नुम की) आग के अज़ाब से पनाह दे दे।"

3) या यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا، وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا، وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا
وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا، اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى
الْاِسْلَامِ، وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ، اَللّٰهُمَّ
لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهٗ۔

अल्लाहुम्मग़ फ़िर लि-हय्यिना व-मय्यितिना, व-सग़ीरिना व-कबीरिना, व-ज़-करिना वउन्साना, वशाहिदिना वग़ाइबिना+अल्लाहुम्म मन् अह्यै-तहू मिन्ना फ़अह्यिही अ-लल् इस्लामि, व-मन् त-वफ़्फ़ै-तहू मिन्ना फ़-त- वफ़्फ़हू अ-लल्

ईमानि+ अल्लाहुम्म ला तुहरिम्ना अज्-रहू वला तुज़िल्लना बअ्दहू

तर्जुमा – "तू हमारे ज़िन्दा और मरे हुये को, छोटे और बड़े को, मर्दों और औरतों को, मौजूद और ग़ाइब आदमियों को बख़्श दे। ऐ अल्लाह! तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे उसे इस्लाम पर ज़िन्दा रख और जिस को वफ़ात दे उस को ईमान पर वफ़ात दे। ऐ अल्लाह! तू हमें इस (पर सब्र करने) के अज्र से महरूम न कर और उस (की वफ़ात) के बाद हमें गुमराह न करना।"

4) या यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبُّهَا وَاَنْتَ خَلَقْتَهَا وَاَنْتَ هَدَيْتَهَا لِلْاِسْلَامِ وَ
اَنْتَ قَبَضْتَ رُوْحَهَا وَاَنْتَ اَعْلَمُ بِسِرِّهَا وَعَلَانِيَتِهَا
جِئْنَا شُفَعَاءَ فَاغْفِرْ لَهَا۔

अल्लाहुम्म अन्-त रब्बुहा व-अन्-त ख़-लक़्-तहा व-अन्-त हदै-तहा लिल् इस्लामि व-अन्-त क़-बज़्-त रु-हहा व-अन्-त अअ़्-लमु बिसिर्रिहा व-अ़ला नि-यतिहा जिअ्ना शु-फ़आ-अ फ़ग़्फ़िर् लहा

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू ही इस का पालनहार है, तू ने ही इस को पैदा किया, और ऐ मेरे मौला! तू ने ही इस को इस्लाम लाने की हिदायत दी, और (अब) तू ने ही इस की जान निकाली है, तू ही इसके अन्दर-बाहर को जानता है, हम (तेरे ही हुक्म से) सिफ़ारिश करने आये हैं, तू (अपने फ़ज़्ल और करम से) इस को माफ़ फ़रमा दे।"

5) या यह दुआ पढ़े –

اَللّٰهُمَّ اِنَّ فُلَانَ بْنَ فُلَانٍ فِيْ ذِمَّتِكَ وَحَبْلِ جِوَارِكَ فَقِهٖ مِنْ فِتْنَةِ
الْقَبْرِ وَعَذَابِ النَّارِ وَاَنْتَ اَهْلُ الْوَفَاءِ وَالْحَمْدِ اَللّٰهُمَّ فَاغْفِرْ لَهٗ
وَارْحَمْهُ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम्म इन्न फुला–नब्–न फुलानिन् फ़ी ज़िम्मति–क व–हब्लि जवारि–क फ़क़िही मिन् फ़ित्–नतिल् क़ब्रि व–अज़ाबिन्नारि, व–अन्–त अहलुल् वफ़ाइ वल्–हमदि, अल्लाहुम्म फ़ग़फ़िर् लहू वर्–हम्हु इन्न–क अन्–तल् ग़फ़ूर्रहीम्+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! फ़लाँ का बेटा फ़लाँ (यहाँ मुर्दे का और उस के पिता का नाम ले) तेरी हिफ़ाज़त और तेरी ही पनाह के सहारे पर है, पस तू इस को क़ब्र की आज़माइश से और जहन्नुम की आग से बचा ले, और तू (अपने वादे को) पूरा करने वाला और सब तारीफ़ों के लायक़ है। ऐ अल्लाह! पस तू इस को माफ़ कर दे, और इस पर रहम फ़रमा। बेशक तू ही बड़ा माफ़ करने वाला है।"

6) या यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ وَابْنُ اَمَتِكَ احْتَاجَ اِلٰى رَحْمَتِكَ وَاَنْتَ غَنِيٌّ
عَنْ عَذَابِهٖ اِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِيْ اِحْسَانِهٖ وَاِنْ كَانَ مُسِيْئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ

अल्लाहुम्म अ़ब्दु–क वब्नु अ–मति–क इहताजा इला रह्–मति–क व–अन्–त ग़निय्युन् अ़न् अ़ज़ाबिही इन् का–न मुह्सि–नन् फ़ज़िद् फ़ी एहसानिही वइन् का–न मुसी–अन् फ़–तजा–वज़् अ़न्हु+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तेरा (यह) बन्दा और तेरी लौंडी का बेटा, तेरी रहमत का मोहताज है, और तू इस को दन्ड देने से बेनियाज़ है, अगर यह नेक है तो इस की नेकियों में इज़ाफ़ा

फ़रमा और अगर यह गुनाहगार है तो इसे माफ़ फ़रमा दे।"

7) या यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِعَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ كَانَ يَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ وَاَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ اِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَزِدْ فِيْ اِحْسَانِهٖ وَاِنْ كَانَ مُسِيْئًا فَاغْفِرْ لَهٗ وَلَا تُحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ

अल्लाहुम्म अ़ब्दु-क वब्नु अ़ब्दि-क का-न यश्-हदु अल्लाइला-हइल्लल्लाहु व-अन्न मु-हम्म-दन् अ़ब्दु-क व-रसूलु-क, व-अन्-त अअ़्-लमु बिही मिन्नी, इन का-न मुह्सि-नन् फ़ज़िद् फ़ी एह्सानिही वइन् का-न मुसी-अन् फ़ग़्फ़िर् लहू, वला तुह्‌रिम्‌ना अज्-रहू वला तफ़्तिन्ना बअ़्-दहू

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तेरा (यह) बन्दा और तेरे बन्दे का बेटा गवाही दिया करता था कि अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं है और यह कि मुहम्मद तेरे बन्दे और रसूल हैं, और तू तो मुझ से ज़्यादा इस (के हाल) को जानता है, अगर यह नेक है तो इस की नेकियों और भलाई में ज़्यादती फ़रमा और अगर यह गुनाहगार है तो इस को माफ़ कर दे, और तू हमें भी इस (की मौत पर सब्र) के सवाब से महरूम न फ़रमा, और इस (के मरने) के बाद हमें किसी आज़माइश में न डाल।"

नोट- जनाज़ा की नमाज़ में पढ़ने की मशहूर दुआ़ नं0 3 है, बाक़ी में से किसी दुआ़ को भी इस के बाद पढ़ ले तो कोई हरज नहीं। बेहतर यह है कि जनाज़ा की नमाज़ ख़त्म होने के बाद इन दुआ़ओं में से किसी भी दुआ़ को पढ़ कर मय्यित के लिये माफ़ी की दुआ़ करे। बहरहाल, याद तो इन सभी दुआ़ओं और इन के तर्जुमों को ही कर लेना चाहिये, और कभी कोई दुआ़ पढ़े और कभी कोई दुआ़ (इदरीस)

मय्यित को क़ब्र में रखने के समय की दुआ़

1) जब मय्यित को क़ब्र में उतारे तो यह कहे :

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى سُنَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

बिस्मिल्लाहि व-अ़ला सुन्नति रसूलिल्लाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व-सल्ल-म)

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ, और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत (यानी मिल्लत) पर (हम इस को दफ़्न करते हैं)

2) या यह कहे :

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ)

बिस्मिल्लाहि वबिल्लाहि व-अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

तर्जुमा - "अल्लाह के नाम के साथ, और अल्लाह (के हुक्म) से, (हम इस को) अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की मिल्लत पर (दफ़्न करते हैं)

3) या यह कहे :

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى

بِسْمِ اللّٰهِ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ -

मिन्हा ख़-लक़्नाकुम् वफ़ीहा नुई़दुकुम् वमिन्हा नुख़्रिजुकुम्

ता-र-तन् उख़्रा+ बिस्मिल्लाहि वफ़ी सबीलिल्लाहि व-अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाहि+

तर्जुमा - " इसी ज़मीन से हम ने तुम को पैदा किया है, और इसी ज़मीन में हम तुम को लौटा देंगे, और इसी ज़मीन से हम तुम को (क़यामत के दिन) दोबारा निकालेंगे+अल्लाह के नाम के साथ और अल्लाह ही की राह में और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के दीन पर (हमने इस को दफ़्न किया है)

दफ़्न से फ़ारिग़ होने के बाद की दुआ़

1) जब दफ़्न से फ़ारिग़ हो जायें तो क़ब्र के पास खड़े हो कर (मौजूद लोगों से) यह कहें :

اِسْتَغْفِرُوا اللّٰہَ لِاَخِیْکُمْ وَسَلُوْا لَہُ التَّثْبِیْتَ فَاِنَّہُ الْاٰنَ یُسْاَلُ

इस्-तग़फ़िरुल्ला-ह लि-अख़ीकुम् व-सलू लहुत्तसबी-त फ़इन्नहुल् आ-न युस्-अलु

तर्जुमा - "तुम अपने भाई के लिये अल्लाह तआ़ला से माफ़ी माँगो, और उस के (मुन्किर नकीर के जवाब में) साबित क़दम रहने की दुआ़ करो, इसलिये कि इस समय इस से सवाल (व जवाब) किया जा रहा है।"

2) दफ़्न के बाद क़ब्र पर सूरः ब-क़-रः का पहला रुकूअ़ (यानी अलिफ़ लाम मीम से मुफ़लिहून् तक) और अन्तिम रुकूअ़ (यानी आ-म-नर्रसूलु से काफ़िरी-न तक पढ़ा जाये।

क़ब्रों की ज़ियारत के लिए क़ब्रुस्तान जाने के समय की दुआ़

1) जब क़ब्र की ज़ियारत के लिये क़ब्रुस्तान जाये तो यह कहे :

السلام عليكم أهل الديار من المؤمنين والمسلمين وإنا
إن شاء الله بكم للاحقون، نسأل الله لنا ولكم العافية،
أنتم لنا فرط ونحن لكم تبع

अस्सलामु अ़लैकुम् अह्-लद्दियारि मि-नल् मोमिनी-न वल् मुस्लिमी-न वइन्ना इन् शा-अल्लाहु बिकुम् ललाहिक़ू-न+ नस्-अलुल्ला-ह लना व-लकुमुल् आ़फ़ि-य-त, अन्तुम् लना फ़-रतुन् व-नह्नु लकुम् त-ब अ़ुन्+

तर्जुमा – "ऐ (इस) बस्ती के रहने वाले मोमिनो और मुसलमानों! तुम पर सलाम। बेशक हम भी इनशाअल्लाह तुम से बहुत जल्द मिलने वाले हैं, हम अल्लाह तआ़ला से अपने और तुम्हारे लिये शान्ति की दुआ़ करते हैं, तुम हम से पहले जाने वाले हो और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।"

2) या यह कहे :

السلام على أهل الديار من المؤمنين والمسلمين ويرحم
الله المستقدمين منا والمستأخرين وإنا إن شاء الله بكم للاحقون

अस्सलामु अ़ला अह्लिद्दियारि मि-नल् मोमिनी-न वल मुस्लिमी-न व-यर्-हमुल्लाहुल् मुस्-तक़दिमी-न मिन्ना वल

मुस्ताख़िरी-न+वइन्ना इन शा-अल्लाहु बिकुम् ललाहिक़ू-न

तर्जुमा – "ऐ (इस) बस्ती के रहने वाले मोमिनो और मुसलमानों! तुम पर सलाम! और अल्लाह हम में से पहले जाने वालों पर भी रहम फ़रमाये, और बाद को जाने वालों को भी, और हम भी इन्शाअल्लाह बहुत जल्द तुम से मिलने वाले हैं।"

3) या यह कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ وَاَتَاكُمْ مَّا تُوْعَدُوْنَ غَدًا مُّؤَجَّلُوْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ۔

अस्सलामु अ़लैकुम् दा-र क़ौमिम मोमिनी-न व-अताकुम मा तू-अ़दू-न ग़-दन् मु-अज्जलू-न वइन्ना इन् शा- अल्लाहु बिकुम् लाहिक़ू-न

तर्जुमा – "ऐ मोमिनों की बस्ती के रहने वालो, तुम पर सलाम! और तुम्हारे सामने तो वह (सवाब और अ़ज़ाब) आ गया है जिस का आने वाले कल के समय (यानी मरने के बाद) वादा किया गया था, हम भी इन्शाअल्लाह बहुत जल्द तुम से मिलने वाले हैं (हमारे सामने भी आ जायेगा)

4) या यह कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ

अस्सलामु अ़लैकुम् दा-र क़ौमिम मोमिनी-न वइन्ना इन् शा-अल्लाहु बिकुम् लाहिक़ू-न

तर्जुमा – "ऐ मोमिन क़ौम की बस्ती के रहने वालो, तुम पर सलाम! और हम भी अल्लाह ने चाहा तो तुम से मिलने वाले

हैं।"

5) या यह कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ وَاَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ

अस्सलामु अ़लेकुम् या अह्-लल् क़ुबूरि यग़फ़िरुल्लाहु लना व-लकुम् व-अन्तुम् स-लफ़ुना व-नह्नु बिल् इस्रि

तर्जुमा - "ऐ क़ब्र वालो तुम पर सलाम! अल्लाह हमे भी माफ़ कर दे, तुम हम से पहले चले गये हो, हम भी तुम्हारे पीछे आ रहे हैं।"

दूसरा बाब

वह ज़िक्र जिस की फ़ज़ीलत किसी भी समय और स्थान और सबब के साथ मख़्सूस नहीं

1) जहाँ भी हो, जिस समय भी हो, जितना संभव हो "लाइला-ह इल्लल्लाहु" का ज़िक्र करे।

फ़ायदा - 1. हदीस शरीफ़ में आया है कि वह ज़िक्र जो किसी समय, स्थान और सबब के साथ मख़्सूस नहीं वह "लाइला-ह इल्लल्लाहु" ही है, यही सब से अफ़ज़ल ज़िक्र है। दूसरी हदीस में है कि - यही सब से बढ़ कर नेकी है।

2. एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त से सब से ज़्यादा उस को फ़ायदा हासिल होगा जिसने जान व दिल से (यानी इख़्लास के साथ) लाइला-ह इल्लल्लाहु कहा होगा।

3. और एक हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - जिस शख़्स ने लाइला-ह इल्लल्लाहु कहा और उस के दिल में जौ के बराबर भी इख़्लास या ईमान

होगा वह दोज़ख़ से निकाल लिया जायेगा। और जिस ने यह कलमा कहा और उस के दिल में गेहूँ के दाना के बराबर भी इख़्लास या ईमान होगा, वह भी दोज़ख़ से निकाल लिया जायेगा। और जिसने यह कलमा कहा – और उस के दिल में तनिक भर भी भलाई या ईमान होगा वह भी दोज़ख़ से निकाल लिया जायेगा।

4. एक और हदीस में आया है कि – जिस शख़्स ने (दिल से) लाइला–ह इल्लल्लाहु कहा वह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा अगर्चे उसने बालात्कार (ज़िना) और चोरी (जैसे गुनाह) भी किये हों, अगर्चे उस ने ज़िना और चोरी भी की हो, अगर्चे उस ने ज़िना और चोरी भी की हो (तीन मर्तबा फ़रमाया)

5. एक और हदीस में आया है कि – नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया – तुम अपने ईमान को ताज़ा करते रहा करो। सहाबा ने पूछा – ऐ अल्लाह के रसूल! ईमान को किस प्रकार ताज़ा करें? आप ने फ़रमाया – ज़्यादा से ज़्यादा लाइला–ह इल्लल्लाहु कहते रहा करो।

6. एक और हदीस में आया है कि – नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया – लाइला–ह इल्लल्लाहु को अल्लाह तक पहुँचने से कोई चीज़ नहीं रोक सकती।

7. एक और हदीस में आया है कि – लाइला–ह इल्लल्लाहु (का ज़िक्र) कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहने देता, और कोई भी अमल उस के बराबर नहीं है।

8. एक और हदीस में है कि अगर सातों आसमान और सातों ज़मीनें तराज़ू के एक पलड़े में हों और लाइला–ह इल्लल्लाहु

दूसरे पलड़े में हो, तो वह उन सब से बढ़ जायेगा।

9) एक और हदीस में आया है कि – जब भी कोई बन्दा दिल से लाइला–ह इल्लल्लाहु कहता है उस के लिये आकाश के दर्वाज़े खुल जाते हैं, यहां तक कि वह अर्श तक पहुंच जाता है, जब तक कि वह बड़े–बड़े गुनाहों से बचता रहा हो।

कलम–ए–तौहीद की फ़ज़ीलत

1) कम से कम एक मर्तबा और जितना ज़्यादा भी हो सके यह कलम–ए–तौहीद पढ़ा करे:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ . لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

लाइला–ह इल्लल्लाहु, वह्–दहू, ला शरी–क लहू, लहुल् मुल्कु व–लहुल्–हम्दु युह्यी वयुमी–तु वहु–व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा – "अल्लाह के अ़लावा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उस का (सब) मुल्क है, और उस के लिये (तमाम) तारीफ़ है, वही जिलाता है, और वही मारता है, और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि –

1. जो शख़्स इस कलम–ए–तौहीद को दस मर्तबा पढ़ेगा तो उस शख़्स के समान होगा जिसने हज़रत इस्माईल (अलै०) की औलाद (अ़रब क़ौम) में से चार ग़ुलाम आज़ाद किये हों।

2. और जो एक मर्तबा पढ़ेगा वह उस शख़्स की तरह होगा

जिस ने (किसी भी कौम का) एक गुलाम आज़ाद किया हो।

3. और जो सौ मर्तबा यह कलमा पढ़ेगा उस को दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब मिलेगा और उस के लिये 100 नेकियाँ लिख दी जायेंगी और उस की 100 बुराइयाँ मिटा दी जायेंगी। और यह कलमा उस के लिये शैतान से बचाव का सामान (सुरक्षा) होगा, और कयामत के दिन कोई भी उस से अफ़्ज़ल अमल पेश करने वाला न होगा सिवाए उस शख़्स के जिसने उस से भी ज़्यादा यह कलमा पढ़ा होगा।

4. यही वह कलमा है जो हज़रत नूह (अलै0) ने अपने बेटे को सिखलाया था (मगर उसने उस से काम न लिया और तूफ़ान में हलाक हो गया) इसलिये कि अगर तमाम आसमान एक पलड़े में (रखे) हों (और यह कलमा दूसरे पलड़े में) तो यह कलमा उन से बढ़ जायेगा, और अगर (सब) आसमान हल्के की तरह हों तो यह कलमा (अपने बोझ से) उन को मिला देगा।

2) ज़्यादा से ज़्यादा यह कलमा पढ़ा करे -

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۔

लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्-बरु वला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीमि

तर्जुमा - "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह ही सब से बड़ा है, और कोई भी ताकत और कुव्वत अल्लाह बजुर्ग और बड़े के सिवा (हासिल) नहीं।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - "लाइला-ह

इल्लल्लाहु" और "वल्लाहु अक्-बरु" दो कलिमात हैं, उन में से एक (लाइला-ह इल्लल्लाहु) तो अर्श से वेर कहीं रुकता ही नहीं, और दूसरा (अल्लाहु अक्-बरु) आसमान और ज़मीन के दर्मियान (फ़ज़ा) को भर देता है।

एक और हदीस में है कि यह दोनों कलमे "वला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अ़लिय्यिल् अ़ज़ीमि" के साथ (मिल कर) तो ज़मीन पर जो शख़्स भी इन (तीनों कलमात) को पढ़ेगा उसके गुनाहों का अवश्य ही कफ़्फ़ारा बना दिया जायगा, अगर्चे वह समुन्द्र के झागों के बराबर हों।

कलम-ए-शहादत की फ़ज़ीलत

1) जितना भी मुमकिन हो (चलते-फ़िरते) यह कलमा पढ़ा करे-

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व-अन्न मु-हम्म-दर्रसूलुल्लाहि

तर्जुमा - "मैं (दिल से) गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और यह कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - जो शख़्स इस बात की गवाही देगा कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह पाक उस पर दोज़ख़ की आग को हराम कर देंगे।

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि0 ने (यह हदीस सुन कर) अनुरोध किया- ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मैं लोगों को इस की सूचना न दे दूँ कि वह खुश हो जायें? आप ने फ़रमाया- कि तब तो लोग इसी पर भरोसा कर लेंगे (और सब नेक कार्य छोड़ देंगे और सवाब से महरूम हो जायेंगे) चुनान्चे हज़रत मआज़ रज़ि0 ने केवल (हक़ बात छुपाने के) गुनाह से बचने के लिये अपनी वफ़ात के समय इस हदीस को बयान किया है।

एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स (सच्चे दिल से) इस कलम-ए-शहादत को पढ़ेगा (और फिर उस पर क़ायम रहेगा और अ़मल करेगा) तो अल्लाह तआ़ला उस पर दोज़ख़ को हराम कर देंगे।

2) या यह कलम-ए-शहादत पढ़ा करे :

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु व-अश्-हदु अन्न मु-हम्म-दन् अ़ब्दुहू व-रसूलुहू

तर्जुमा - "मैं (सच्चे दिल से) गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।"

फ़ायदा - "काग़ज़ के पर्चा वाली"[1] मशहूर हदीस में आया है कि वह पर्चा जिस पर "अश्-हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु

---

1. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के एक आदमी को अपने सामने बुलायेंगे तो उस के ख़िलाफ़ 99 आमाल नामों के दफ़्तर फैला दिये जायेंगे जिन में ⊗

व-अश्-हदु अन्न मु-हम्मदन् अब्दुहू व-रसूलुहू" लिखा होगा, वह उन 99 दफ़्तरों (आमाल नामों) पर जिन में से हर दफ़्तर इतना लंबा होगा जहाँ नज़र जायेगी और उसी हिसाब से भारी हो जायेगा (वज़न बढ़ जायेगा)

- - - - - - - - - - -

(X)से हर दफ़्तर की लंबाई नज़र की दूरी के बराबर लंबी होगी फिर अल्लाह तआला फ़रमायेंगे - क्या तू इस (बुरे आमाल नामों की सूची) में से किसी का इन्कार करता है? (कि मैं ने फ़लाँ गुनाह नहीं किया है) या मेरे लिखने वाले फ़रिश्तों ने तेरे ऊपर कोई अत्याचार किया है? (कि कोई गुनाह तुम ने नहीं किया और उन्होंने लिख लिया, या लिखने में कमी-बेशी कर दी) तो वह कहेगा - नहीं, ऐ पर्वरदिगार! (न मैं इन में से किसी गुनाह का इन्कार करता हूँ न ही लिखने वालों पर जुल्म का आरोप लगाता हूँ) तो इस पर अल्लाह तआला फ़रमाएँगे - क्यों नहीं, बेशक हमारे पास तेरी एक नेकी है (उस का वज़न करो) इसलिए कि आज तुम पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा (कि उन का वज़न न किया जाये) जाओ वज़न कराओ। तो एक पर्चा निकाला जायेगा जिस पर कलम-ए-शहादत लिखा होगा, तो (उस को देख कर) वह कहेगा - ऐ रब! इस पर्चे की उन बुराइयों की लंबी-चौड़ी सूची के सामने क्या हकीकत है (मैं इसे क्या वज़न कराऊँ) तो अल्लाह पाक फ़रमाएँगे - नहीं, इस का वज़न ज़रूर कराया जाएगा, इसलिए कि आज तुम पर कुछ भी ज़ुल्म नहीं होगा।

फिर वह तमाम आमाल नामों का दफ़्तर एक पलड़े में रखा जायेगा और कलम-ए-शहादत का पर्चा दूसरे पलड़े में। (उसके वज़न से) उन का पलड़ा ऊपर उठ जायेगा और वह पर्चा भारी हो जयेगा (और वह एक नेकी, इख़्लास की बर्कत से तमाम बुरे कामों और गुनाहों पर भारी हो जायेगी) इसलिये कि अल्लाह तआला (की तौहीद) के मुक़ाबले में कोई चीज़ भी भारी नहीं हो सकती।

(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा - मिश्कात पृष्ठ 466 के हवाला से)

3) या यह कलम-ए-शहादत पढ़ा करे -

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
وَأَنَّ عِيْسٰى عَبْدُ اللّٰهِ وَابْنُ أَمَتِهٖ وَكَلِمَتُهٗ أَلْقَاهَا إِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ
مِّنْهُ وَأَنَّ الْجَنَّةَ حَقٌّ وَّأَنَّ النَّارَ حَقٌّ۔

अश्-हदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु वह्-दहू व-अन्न मु-हम्म-दन् अब्दुहू व-रसूलुहू व-अन्न ईसा अब्दुल्लाहि वब्नु अ-मतिही व-कलि-मतुहू अल्क़ाहा इला मर्-य-म वरुहुम्मिनहु, व-अन्नल् जन्न-त हक़्क़ुन् वन्नारू हक़्क़ुन्

तर्जुमा - "मैं गवाही देता हूँ कि बेशक अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और यह कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं, और यह कि ईसा अल्लाह के बन्दे और उस की बन्दी (मरयम) के बेटे और अल्लाह का वह कलमा (हुक्म) हैं जो मरयम की तरफ़ इल्क़ा फ़रमाया अल्लाह की जानिब से (फूँकी हुयी) रूह हैं, और यह कि जन्नत भी हक़ है और दोज़ख़ भी हक़ है"

फ़ाइदा - या यह कलम-ए-शहादत पढ़ेगा अल्लाह तआला उस को जन्नत के आठ दर्वाज़ों में से जिस दर्वाज़े से वह (दाख़िल होना) चाहेगा दाख़िल करेगा।

4) या यह कलिम-ए-शहादत पढ़े :

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ وَأَنَّ عِيْسٰى عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ وَابْنُ أَمَتِهٖ وَ
كَلِمَتُهٗ أَلْقَاهَا إِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَّالنَّارُ حَقٌّ۔

अश्–हदु अल्लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू ला शरी–क लहू व–अन्न मु–हम्म–दन् अब्दुहू व–रसूलुहू व–अन्न ईसा अब्दुल्लाहि व–रसूलुहू वबनु अ–मतिही व–कलि–मतुहू अल्काहा इला मर्–य–म वरुहुम्मिन्हु+वल् जन्नतु हक्कुन् वन्नारु हक्कुन्

तर्जुमा – "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, और यह कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं, और यह कि ओसा अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं और उस की लौंडी के बेटे हैं और अल्लाह का वह कलमा (हुक्म) हैं जो मरयम की जानिब इल्का फ़रमाया, और उस की जानिब से (फूँकी हुई) रूह हैं, और यह कि जननत हक़ है और जहन्नुम हक़ है।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स यह गवाही देगा (और उस पर अमल भी करेगा। अल्लाह तआला उस को जन्नत में दाख़िल कर देगा, उस के अमल कुछ भी हों। या (यह फ़रमाया कि) जन्नत के आठ दरवाजो में से जिस दरवाजे से वह (दाख़िल होना) चाहे (दाख़िल कर दिया जायेगा)

5) या यह कलमा पढ़ा करे :

لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ اَعَزَّ جُنْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَغَلَبَ الْاَحْزَابَ
وَحْدَهٗ فَلَا شَیْءَ بَعْدَهٗ

लाइला–ह इल्लल्लाहु वह्–दहू अ–अज़्ज़ जुन्–दहू व–न–स–र अब्–दहू व–ग़–ल–बल् अह्ज़ा–ब वह्–दहू फ़ला शै–अ बअ्–दहू

तर्जुमा – "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह

अकेला और तन्हा है, उसी ने अपने (बन्दों के) लश्कर को ग़ालिब किया और अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की सहायता फ़रमायी (चुनान्चे वह) अकेले ही दुश्मन की फ़ौजों पर ग़ालिब आ गया, पस अब इस के बाद कुछ नहीं रहा।"

6) और यह कलमा पढ़ा करे :

لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ، اَللّٰهُ أَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّسُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَارْزُقْنِيْ۔

लाइला-ह इल्लल्लाहु, वह्-दहू, ला शरी-क लहू, अल्लाहु अक्‌-बरु कबी-रन् वल्-हम्दु लिल्लाहि कसी-रन् वसुब्हा-नल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न+ ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अज़ीज़िल् हकीमि+ अल्लाहुम्मग्‌ फ़िर् ली वर्-हम्नी वह्‌दिनी वर्‌ज़ुक्‌नी+

तर्जुमा - "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं है, अल्लाह सब से बड़ा है, और अल्लाह ही के लिये तमाम तारीफ़ है बहुत-बहुत तारीफ़। और तमाम जहानों का पार्वदिगार अल्लाह (हर बुराई से) पाक है, कोई ताक़त और कोई क़ुव्वत (सब पर) ग़ालिब और हिक्मतों वाले अल्लाह (की मदद) के बग़ैर (हासिल) नहीं। ऐ अल्लाह! तू मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा, मुझे हिदायत दे और मुझे रोज़ी अ़ता फ़रमा।"

फ़ायदा – एक देहाती ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा – मुझे ऐसी चीज़ बतला दीजिये जिसे मैं पढ़ा करूँ, तो आपने उस को ऊपर के कलमें को पढ़ने की ताकीद फ़रमायी।

तस्बीह, तह्मीद और उस की फ़ज़ीलत

1) ज़्यादा से ज़्यादा यह तस्बीह पढ़ा करें :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हा–नल्लाहि वबि–हम्दिही

"अल्लाह पाक है और उसी की हम्द व सना है"

फ़ायदा – हदीस में आया है कि जो शख़्स एक मर्तबा यह तस्बीह व तहमीद पढ़ेगा उस के लिये दस नेकियाँ लिखी जायेंगी और जो शख़्स दस मर्तबा पढ़ेगा उस के लिये 100 नेकियाँ लिखी जायेंगी। जो 100 मर्तबा पढ़ेगा उस के लिये हज़ार नेकियाँ लिखी जायेंगी। और जो इस से ज़्यादा मर्तबा पढ़ेगा उस के लिये अल्लाह (उसी हिसाब से) उस से ज़्यादा नेकियाँ लिखेगा।

दूसरी हदीस में आया है कि यह वह सब से अफ़ज़ल कलाम है जो अल्लाह तआला ने अपने फ़रिश्तों के लिये चुना है।

एक और हदीस में आया है कि जो दिन में 100 मर्तबा यह तस्बीह पढ़ेगा उस के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर (क्यों न) हों।

एक और हदीस में है कि यही वह कलमात हैं जिन का

हज़रत नूह (अलै0) ने अपने बेटे को हुक्म दिया था, इसलिये कि यही (तमाम) मख़्लूक़ की इबादत और तस्बीह है और उसी (की बर्कत) से मख़्लूक़ को रोज़ी दी जाती है।

एक और हदीस में है कि जो शख़्स इन कलमात को (एक मर्तबा) कहता है उस के लिये जन्नत में एक दरख़्त लगा दिया जाता है।

एक और हदीस में आया है कि जिस शख़्स को (किसी दुःख, बीमारी, या ख़ौफ़ और परेशानी की वजह से) डर हो कि रात तक्लीफ़ और बेचैनी में गुज़रेगी, या जिस का माल ख़र्च करने में दिल दुखता हो, या जो दुश्मन से लड़ने से जान चुराता हो उस शख़्स को (इन तमाम कमज़ोरियों और बुराईयों से बचने के लिये) ज़्यादा से ज़्यादा इस तस्बीह को पढ़ाना चाहिये (अल्लाह पाक उन को दूर कर देगा) इसलिये कि यह कलमात अल्लाह तआ़ला को इस से ज़्यादा पसन्द हैं कि तुम उस की राह में सोने का एक पहाड़ ख़र्च कर दो।

2) या यह कलमात पढ़ा करे :

سُبْحَانَ رَبِّیْ وَبِحَمْدِہٖ

सुब्हा-न रब्बी वबि-हम्दिही

तर्जुमा - "मेरा रब पाक है और उसी की सब तारीफ़ है"

फ़ायदा- हदीस शरीफ़ में आया है कि यह कलमे अल्लाह को सब से ज़्यादा पसन्द हैं।

3) या यह कलमे पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ

सुब्हा-नल्लाहिल् अज़ीमि

तर्जुमा - "अल्लाह बजुर्ग और बड़ा पवित्र है"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - जो शख्स यह कलमात कहता है उस के लिये जन्नत में पौधा लग जाता है।

4) या यह कलमात पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हा-नल्लाहिल् अज़ीमि वबि-हम्दिही

तर्जुमा - "पाकी (बयान करता हूँ) बजुर्ग और बड़े अल्लाह की, और उसी की तारीफ़ के साथ"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख्स (उस की तस्बीह को) एक मर्तबा पढ़ता है उस के लिये जन्नत में एक खजूर का पेड़ लगा दिया जाता है।

इसलिए कि यही (तस्बीह) मख़्लूक़ की इबादत है और इसी (की बर्कत) से उन को रोज़ी दी जाती है।

5) या यह कलमें पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ

सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही सुब्हा-नल्लाहिल् अज़ीमि

तर्जुमा - "पाकी (बयान करता हूँ) अल्लाह की, और उस की ही तारीफ़) पाकी (बयान करता हूँ) बजुर्ग और सब से बड़े अल्लाह की"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - दो कलमे हैं

जो ज़बान पर बहुत हल्के हैं लेकिन (अ़मल की) तराज़ु में बड़े वज़नी हैं रहम करने वाले (पर्वरदिगार) को बहुत पसन्द हैं -

सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही सुब्हा-नल्लाहिल् अ़ज़ीमि

6) इन के साथ यह कलमें और मिला कर पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही सुब्हा-नल्लाहिल् अ़ज़ीमि अस्-तग़फ़िरुल्ला-हल् अ़ज़ी-म व-अतूबु इलैहि

तर्जुमा - "अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) और उसी की हम्द के साथ। अल्लाह बुज़ुर्ग की पाकी (बयान करता हूँ) अल्लाह बज़ुर्ग से ही माफ़ी माँगता हूँ और उसी के सामने तौबा करता हूँ।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि

जो शख़्स इन (चार) कलमात को पढ़ेगा तो यह कलमात जैसे उस ने पढ़े होंगे (जू के तू) लिख दिये जायेंगे और फिर अर्श के साथ लटका दिये जायेंगे। कोई भी गुनाह जो वह करेगा उन को नहीं मिटा सकेगा, यहाँ तक कि जब वह श़ख़्स क़यामत के दिन अल्लाह से मिलेगा तो वह इन कलमात को जैसे उस ने पढ़े थे (जू का तूं) पायेगा।

7) या कम से कम तीन मर्तबा इस प्रकार तस्बीह पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضٰى نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

सुब्हा-नल्लाहि वबि-हम्दिही अ-द-द ख़ल्क़िही, व-रिज़ा नफ़्सिही, वज़ि-न-त अर्शिही, वमिदा-द कलिमातिही+

तर्जुमा - "अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) और उसी की तारीफ़ के साथ, उस की मख़्लूक़ की संख्या के बराबर और उस की अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ और उस के अर्श के वज़न के बराबर, और उस की कलमात की सियाही के बराबर!"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि -

"एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी पत्नी हज़रत जुवैरिया रज़ि0 के पास से सुबह-सवेरे ही फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर (बाहर) तशरीफ़ ले गये, वह उस समय अपने मुसल्ला पर (बैठी हुयी) तस्बीह पढ़ रही थीं। फिर आप चाश्त की नमाज़ पढ़ कर वापस आये तब भी वह बैठी हुयी तस्बीह ही पढ़ रही थीं तो आप ने पूछा - क्या तुम इसी तरह बैठी हुयी तस्बीह पढ़ रही हो जिस हाल में मैं तुम्हें छोड़ कर गया था? उन्होंने कहा-जी हाँ। आपने फ़रमाया-तुम्हारे (पास से जाने के) बाद मैंने केवल चार कलमे तीन मर्तबा कहे हैं जो अगर उस (तस्बीह) के साथ तौले जायें जो तुम ने दिन निकलने से (इस समय) तक पढ़ा है तो वह उन सब से वज़न में बढ़ जायेंगे। वह कलमे (ऊपर के चार कलमे) हैं।

8) या इस तरह तस्बीह पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ خَلْقِهٖ

सुब्हा-नल्लाहि अ़-द-द ख़ल्क़िही

सुब्हा-नल्लाहि रिज़ा नफ़्सिही

सुब्हा-नल्लाहि ज़ि-न-त अ़र्शिही

सुब्हा-नल्लाहि मिदा-द कलिमातिही

अल्हम्दुलिल्लाहि अ़-द-द ख़ल्क़िही

अल्हम्दुलिल्लाहि रिज़ा नफ़्सिही

अल्हम्दुलिल्लाहि ज़ि-न-त अ़र्शिही

अल्हम्दुलिल्लाहि मिदा-द कलिमातिही

तर्जुमा - "अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) उस की मख़्लूक़ की संख्या के बराबर! अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़। अल्लाह की (पाकी बयान करता हूँ) उसके अर्श के बराबर। अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) उस के अर्श के बराबर। अललाह की पाकी (बयान करता हूँ) उस के कलमात की सियाही के बराबर।

सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है उस की मख़्लूक़ की तादाद के बराबर। सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है उस की अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़। सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है। उस के अ़र्श के बराबर। सब तारीफ़ अलाह के लिये है उसके कलमात की सियाही के बराबर।"

9) या इस प्रकार तस्बीह, तहमीद और तहलील पढ़ा करें:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ، وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ، عَدَدَ
خَلْقِهٖ وَرِضٰى نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ

अल्लाह की पाकी (बयान करता हूं) और उस की तारीफ़, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह सब से बड़ा है, उस की मख़लूक़ की तादाद के बराबर, और उसकी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक

और उस के अर्श के बराबर उसके कलमात की सियाही के बराबर।"

10) या इस प्रकार चारों कलमात पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي السَّمَآءِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي الْاَرْضِ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا بَيْنَ ذٰلِكَ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا هُوَ خَالِقٌ

सुब्हा-नल्लाहि अ-द-द मा ख़-ल-क़ फ़िस्समाइ
व सुब्हा-नल्लाहि अ-द-द मा ख़-ल-क़ फ़िल् अर्ज़ि
व सुब्हा-नल्लाहि अ-द-द मा बै-न ज़ालि-क
व सुब्हा-नल्लाहि अ-द-द मा हु-व ख़ालिकुन्

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - (एक दिन) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक सहाबी महिला के पास गये (तो आप ने देखा) उन के सामने गुठलियाँ या कंकरियाँ (रखी हुयी) थीं। उनपर वह तस्बीह पढ़ रही थीं। यह देख कर आप ने फ़रमाया - मैं तुम्हें इस से आसान (या यह फ़रमाया कि) अफ़ज़ल तरीक़ा न बतलाऊँ? वह यह है कि तुम इस प्रकार पढ़ा करो (और फिर ऊपर का तरीक़ा बताया)

एक दूसरी हदीस में आया है कि (एक दिन) आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी पत्नी हज़रत सफ़िय्या के पास गये तो उन के सामने चार हज़ार गुठलियाँ रखी थीं जिन पर वह तस्बीह पढ़ रही थीं। आप ने फ़रमाया - जब से मैं तुम्हारे पास खड़ा हूँ (उतनी देर में) मैंने इस से ज़्यादा तस्बीह पढ़ ली। उन्होंने कहा आप मुझे भी बतला दीजिये। तो आपने ऊपर का तरीक़ा बतलाया।

नोट - इसी प्रकार "अल्लाहु अक्बर" के साथ चारों कलमात। इसी तरह "अल्-हमदु लिल्लाहि" के साथ। इसी तरह "लाइला-ह इल्लल्लाहु" के साथ। इसी तरह "वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" के साथ चारों कलमात पढ़े)

11) या इस प्रकार पढ़ा करे -

سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْءَ مَا خَلَقَ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ
عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْءَ كُلِّ شَيْءٍ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ
مَا أَحْصٰى كِتَابُهٗ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْءَ مَا أَحْصٰى كِتَابُهٗ۔

सुबहा-नल्लाहि अ़-द-द मा ख़-ल-क़

सुबहा-नल्लाहि मिल्-अ मा ख़-ल-क़

सुबहा-नल्लाहि अ़-द-द कुल्लि शैइन्

सुबहा-नल्लाहि मिल्-अ कुल्लि शैइन्

सुबहा-नल्लाहि अ़-द-द मा अह्सा किताबुहू

सुबहा-नल्लाहि मिल्-अ मा अह्सा किताबुहू

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ مَا خَلَقَ وَالْحَمْدُ
لِلّٰهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ كُلِّ شَيْءٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ
عَدَدَ مَا أَحْصٰى كِتَابُهٗ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ مَا أَحْصٰى كِتَابُهٗ۔

वल्-हम्दु लिल्लाहि अ़-द-द मा ख़-ल-क़

वल्-हम्दु लिल्लाहि मिल्-अ मा ख़-ल-क़

वल्-हम्दु लिल्लाहि अ़-द-द कुल्लि शैइन्

वल्-हम्दु लिल्लाहि मिल्-अ कुल्लि शैइन्

वल्-हम्दु लिल्लाहि अ-द-द मा अह्सा किताबुहू

वल्-हम्दु लिल्लाहि मिल्-अ मा अहसा किताबुहू

तर्जुमा - "अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) उस की मख़्लूक़ की शुमार के बराबर

अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) उस की मख़्लूक़ को भर देने के बराबर

अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) हर चीज़ की संख्या के बराबर

अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ)हर चीज़ को भर देने के बराबर

अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) उस चीज़ की शुमार के बराबर जिस को किताब घेरे हुये है।

अल्लाह की पाकी (बयान करता हूँ) उसको भर देने के बराबर जिस पर उस की किताब एहाता किये हुये है।

सब तारीफ़ है अल्लाह की उस की मख़्लूक़ की संख्या के बराबर

सब तारीफ़ है अल्लाह की उसकी मख़्लूक़ को भर देने के बराबर

सब तारीफ़ है अल्लाह की हर चीज़ के शुमार के बराबर

सब तारीफ़ है अल्लाह की हर चीज़ को भर देने के बराबर

सब तारीफ़ है अल्लाह की हर उस चीज़ की तादाद के बराबर जिस को उस की किताब घेरे हुये है

सब तारीफ़ है अल्लाह की हर उस चीज़ को भर देने के बराबर. जिस पर अल्लाह की किताब एहाता किये हुये है।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - एक मर्तबा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से फ़रमाया - क्या मैं ऐसी चीज़ न बतला दूँ जो तुम्हारे रात से ले कर दिन तक, और दिन से लेकर रात तक के अल्लाह

के ज़िक्र से (सवाब में भी और अ़मल में भी) अफ़ज़ल है? इस के बाद ऊपर की तस्बीह बयान फ़रमायी।

12) या इस प्रकार तस्बीह पढ़ा करे -

سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ، سُبْحَانَ اللهِ مِلْءَ مَا خَلَقَ، سُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا فِي الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ وَسُبْحَانَ اللهِ مِلْءَ مَا فِي الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ وَسُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ مَا أَحْصَى كِتَابُهُ وَسُبْحَانَ اللهِ مِلْءَ مَا أَحْصَى كِتَابُهُ وَسُبْحَانَ اللهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ وَسُبْحَانَ اللهِ مِلْءَ كُلِّ شَيْءٍ،

सुब्-हा-नल्लाहि अ़-द-द मा ख़-ल-क़

सुब्-हा-नल्लाहि मिल्-अ मा ख़-ल-क़

सुब्-हा-नल्लाहि अ़-द-द मा फ़िल अर्ज़ि वस्समाइ

व सुब्-हा-नल्लाहि मिल्-अ मा फ़िल् अर्ज़ि वस्समाइ

व सुब्-हा-नल्लाहि अ़-द-द मा अह्सा किताबुहू

व सुब्-हा-नल्लाहि मिलअ मा अह्सा किताबुहू

व सुब्-हा-नल्लाहि अ़-द-द कुल्लि शैइन्

सुब्-हा-नल्लाहि मिल्-अ कुल्लि शैइन्

(इसी प्रकार "सुब्हा-नल्लाह" के स्थान पर हर जगह "अल्-हम्दु लिल्लाहि" कहे।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - (एक मर्तबा) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अबू उमामा रज़ि० से फ़रमाया - क्या मैं तुम्हें तुम्हारे रात में दिन समेत, और दिन में रात समेत (किये हुये) अल्लाह के ज़िक्र से (सवाब में) ज़्यादा या (फ़रमाया कि) अफ़ज़ल चीज़ न बतला

दूँ? वह यह (ऊपर का ज़िक्र) है।

बाज़ रिवायतों में "सुब्हा-नल्लाहि" के स्थान पर "अल्-हम्दु लिल्लाहि" आया है और इस के बाद "सुब्हा-नल्लाहि" और इसी तरह "अल्लाहु अक्बर" भी। बाज़ रिवायतों में "अल्लाहु अक्बर" नहीं (सिर्फ़ अल्हम्दु लिल्लाह" और "सुब्हानल्लाह" है)

13) या इस प्रकार पढ़ लिया करे -

अल्लाहु अक्-बरु 10 मर्तबा, "सुब्हा-नल्लाहि" 10 मर्तबा, और "अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली" 10 मर्तबा।

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - हज़रत अबू राफ़े रज़ि० की पत्नी उम्मे सलमा रज़ि० ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा-ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! मुझे चन्द कलमें बतला दीजिये (जिसे आसानी से याद कर लूँ और पढ़ लिया करूँ) ज़्यादा न बतलाइये। आप ने फ़रमाया-तुम 10 मर्तबा "अल्लाहु अक्-बरु" कहा करो, अल्लाह तआला (उन के जवाब में) कहेगा।- "यह मेरे लिये है" और 10 मर्तबा "अल्लाहुम्मग़् फ़िर ली" (ऐ अल्लाह! तू मुझे बख़्श दे, कहा करो, अल्लाह तआला फ़रमायेगा "मैंने बख़्श दिया"। तो तुम इस तरह 10 मर्तबा कहोगी तो अल्लाह भी 10 मर्तबा कहेगा और इस प्रकार तुम्हारी माफ़ी हो जायेगी।

14) या इस प्रकार तस्बीह पढ़ा करे :

سُبْحَانَ رَبِّیْ وَبِحَمْدِہٖ، سُبْحَانَ رَبِّیْ وَبِحَمْدِہٖ

सुब्हा-न रब्बी वबि-हम्दिही, सुब्हा-न रब्बी वबि-हम्दिही

तर्जुमा - "पाक है मेरा पर्वरदिगार, और उसी की सब

तारीफ़ है"

"पाक है मेरा पर्वरदिगार, और उसी की सब तारीफ़ है"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि -

सुब्हा-न रब्बी वबि-हम्दिही, सुब्हा-न रब्बी वबि-हम्दिही" सब से अफ़ज़ल कलाम है।

15) या इस प्रकार पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ

सुब्हा-नल्लाहि वल्-हम्दुलिल्लाहि

"पाक है अल्लाह और सब तारीफ़ अल्लाह के लिये ही है"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि - "सुब्हा-नल्लाहि, वल्-हम्दु लिल्लाहि" आसमान और ज़मीन के दर्मियान को भर देते हैं और (सिर्फ़) "अल्-हम्दु लिल्लाहि" (अमाल की) तराज़ू भर देता है।

16) या इस तरह पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ

सुब्हा-नल्लाहि, वल्-हम्दु लिल्लाहि, वलाइला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्-बरु

"पाक है अल्लाह और अल्लाह के लिये ही सब तारीफ़ है, और अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह (ही) सब से बड़ा है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि -

1. यह चार कलमें अल्लाह पाक को सब से ज़्यादा प्यारे हैं, इन में से जिस से चाहो शुरू कर दो, कोई हरज नहीं। 2. एक और हदीस में है कि क़ुरआन करीम के बाद यह सब से अफ़ज़ल कलाम है और (वास्तव में) यह क़ुरआन ही के कलमात हैं।

3. एक और हदीस में है कि इन (चारों) कलिमों को जो शख़्स पढ़ा करेगा उस के लिये इन कलमों के हर हर्फ़ के बदले में दस नेकियाँ लिख दी जायेंगी।

4. इस प्रकार एक और हदीस में आया है कि - नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - मुझे इन कलमात को पढ़ लेना हर उस चीज़ से ज़्यादा प्यारी है जिस पर सूरज निकला (यानी दुनिया और उस की तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है)

5. एक और हदीस में है कि - जो शख़्स इन कलमात को पढ़ेगा उस के लिये हर हर्फ़ के बदले दस नेकियाँ लिख दी जायेंगी।

6. एक और हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - मैं इन कलमात के पढ़ने को हर चीज़ से ज़्यादा महबूब रखता हूँ जिन पर सूरज निकलता है (यानी तमाम दुनिया से)

7. एक और हदीस में आया है कि जन्नत की मिट्टी बहुत अच्छी है और पानी भी बहुत मीठा है, वह ख़ाली होती है और उस के पौधे यह ही (चारों) कलमात देते हैं (जो शख़्स जितना ज़्यादा ज़िक्र करता है उतनी ही अधिक उस की जन्नत हरी-भरी होती है)

8. एक और हदीस में आया है कि हर कलमें के बदले में तुम्हारे लिये एक पेड़ का पौधा लगा दिया जाता है।

9. एक और हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया – जहन्नुम से (बचाव के लिये) ढाल संभाल लो, यानी इन (चारों) कलमात को पढ़ा करो, क्योंकि यह कलमात (पढ़ने वाले के) दायें-बायें से (हर पहलू से) और (आगे) पीछे से (हर तरफ़ से बचाने के लिये) आयेंगे, और यही बाक़ी रहने वाली नेकियाँ हैं।

10. एक और हदीस में है कि हर तस्बीह (सुब्हानल्लाह) सदक़ा है, और हर तहमीद (अल्-हम्दु लिल्लाहि) सदक़ा है, और हर तह्लील (लाइला-ह इल्लल्लाहु) सदक़ा है, और हर तक्बीर (अल्लाहु अक्-बरु) सदक़ा (यानी सवाब का ज़रिया) है।

सलातुत्तस्बीह का तरीक़ा और सवाब

17) यही चार कलमात (सुब्हा-नल्लाहि, अल्-हम्दु लिल्लाहि, लाइला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्-बरु) सलातुत्तस्बीह में (300 मर्तबा) पढ़े जाते हैं।

फ़ायदा – अल्लाह के रसूल सल्लल्लालु अलैहि व सल्लम ने अपने चचा हज़रत अब्बास रज़ि0 को इस का सवाब और तरीक़ा इस प्रकार बयान फ़रमाया –

ऐ मेरे चचा! ऐ अब्बास! क्या मैं आप को ऐसे दस तोहफ़े न अता करूँ, दस नेमतें न दे दूँ, (यानी) दस बातें न बतला दूँ कि जब आप उन पर अमल कर लें तो अल्लाह तआला आप के अगले-पिछले, नए-पुराने, छोटे-बड़े, जान बूझ कर, या अन्जाने

में किये हुये, खुल्लम-खुल्ला किये हुये, या पोशीदा तौर पर किये हुये सारे गुनाह माफ़ फ़रमा दें?

आप चार रकअ़त नमाज़ पढ़ें (इस प्रकार कि) हर रकअ़त में सूरः फ़ातिहा और (कोई सी भी) सूरत पढ़ें। किरात से फ़ारिग होने के बाद खड़े-खड़े 15 मर्तबा "सुब्हा-नल्लाहि, अल्-हम्दु लिल्लाहि, लाइला-ह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्-बर" कहें। फिर रुकूअ़ में जायें तो (तीन मर्तबा "सुब्हा-न रब्बि-यल् अज़ीमि" कहने के बाद) दस मर्तबा रुकूअ़ ही की हालात में यही (चारों) कलमात कहें। फिर रुकूअ़ से खड़े हो कर (खड़े-खड़े) दस मर्तबा यही कलमात कहें। फिर सज्दा में जायें और (तीन मर्तबा "सुब्हा-न रब्बि-यल् आला" कहने के बाद) दस मर्तबा (सज्दा की हालत में) यही कलमात कहें। फिर सज्दा से सर उठायें और (अल्लाहु अक्बर कहने के बाद बैठ-बैठे) दस मर्तबा यही कलमात कहें। फिर (दूसरे) सज्दा में जायें और (3 मर्तबा सुब्हा-न रब्बि-यल् आला कहने के बाद) खड़े होने से पहले (बैठे-बैठे) दस मर्तबा यही कलमात कहें। यह कुल 75 कलमात हर रकअ़त में हुये।

इसी प्रकार आप चार रकअ़त (में कुल 300 मर्तबा) पढ़ें। अगर हो सके तो हर रोज़ एक मर्तबा पढ़ें। अगर यह न हो सके तो हर जुमा में (जुमा की नमाज़ से पहले) एक मर्तबा पढ़ें। अगर यह भी न हो सके तो हर महीना में एक मर्तबा। अगर यह भी न हो सके तो साल में एक मर्तबा पढ़ा करें। अगर यह भी न हो सके तो उम्र में (एक मर्तबा ज़रूर) पढ़ें।

18) या इन चारों कलमात के साथ (पाँचवें कलमे का) इज़ाफ़ा कर के इस तरह पढ़े :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हा-नल्लाहि, वल्-हम्दु लिल्लाहि, वला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्-बरु, वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीमि

तर्जुमा - "पाक है अल्लाह, और उसी के लिये सब तारीफ़ है, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है, और अल्लाह ही सब से बड़ा है, और कोई भी क़ुव्वत और ताक़त अल्लाह बज़ुर्ग (की मदद) के बग़ैर हासिल नहीं।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि कलमात बाक़ी रहने वाली (यादगार) नेकियाँ हैं और यह (इन्सान के) गुनाहों को इस तरह झाड़ देती हैं जैसे पेड़ (बहार के मौसम में) अपने पत्ते झाड़ देता है। और यह (कलमात) जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं।

एक और हदीस में आया है कि यह कलमात जो शख़्स क़ुरआन न पढ़ सकता हो उस के लिये क़ुरआन (की जगह) काफ़ी होते हैं।

19). और ऊपर के (पाँच) कलमात के साथ यह दुआ इस तरह माँगा करे -

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ وَارْزُقْنِيْ وَعَافِنِيْ وَاهْدِنِيْ-

(सुब्हा-नल्लाहि, वल्-हम्दु लिल्लाहि, वलाइला-ह

इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्-बरु, वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीमि+) अल लाहुम्मर् हम्नी वरज़ुक़्नी वआफ़िनी वह्दिनी+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मुझ पर रहम फ़रमा, मुझे रोज़ी अता कर, मुझे आफ़ियत दे, और हिदायत नसीब फ़रमा।"

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि-जो शख़्स क़ुरआन न पढ़ सकता हो यह कलमात भी उस के लिये क़ुरआन की जगह काफ़ी हो सकते है। जिस शख़्स ने इन को पाबन्दी के साथ इख़्तियार किया (यानी पढ़ा) उस ने अपने हाथ ख़ैर-बर्कत से भर लिये।

20) दुआ के बग़ैर ऊपर के (चारों) कलमात को "व-तबा-र-कल्लाहु" के साथ मिला कर इस तरह पढ़ा करे :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَتَبَارَكَ اللّٰهُ

सुब्हा-नल्लाहि, वल् हम्दु लिल्लाहि, वला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्-बरु, व-तबा-र-कल्लाहु

फ़ायदा – हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स इस तरह से इन कलमात को पढ़ता है तो इन कलमात पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर दिया जाता है वह उन को अपने परों के नीचे लेकर ऊपर चढ़ता है (राह में) फ़रिश्ता जिस सभा से भी गुज़रता है वह इन कलमात के पढ़ने वाले के लिये माफ़ी की दुआ करते हैं, यहाँ तक कि (इस पढ़ने वाले की जानिब से) इन कलमात को अल्लाह के दरबार में (हम्द व सना के) तोहफ़े के तौर पर पेश कर दिया जाता है।

21) या इस तरह इन को पढ़े :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

सुब्हा-नल्लाहि, वल्-हम्दु लिल्लाहि, वला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्-बरु, वल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़-लमी-न+

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने कलाम में से यह चार कलमे पसन्द फ़रमाये हैं, इसलिये जो शख़्स "सुब्हा-नल्लाहि" कहता है उस के लिये 20 नेकियाँ लिख दी जाती हैं और उस की 20 बुराइयाँ मिटा दी जाती हैं। इसी तरह जो शख़्स "अल्-हम्दु लिल्लाहि" कहता है (उस के लिये भी 20 नेकियाँ लिख दी जातीं हैं और 20 बुराइयाँ मिटा दी जाती हैं) इसी तरह जो शख़्स "अल्लाहु अक्-बरु" कहता है (उस की भी 20 बुराइयाँ मिटा दी जाती हैं और 20 नेकियाँ लिख दी जाती हैं) और जो शख़्स सच्चे दिल से "अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़-लमी-न" कहता है उस की तो 30 नेकियाँ लिख दी जाती हैं और 30 बुराइयाँ मिटा दी जाती हैं।

इसी प्रकार एक और हदीस में आया है कि एक मर्तबा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - क्या तुम में से हर शख़्स रोज़ाना उहुद पहाड़ के बराबर अ़मल नहीं कर सकता? सहाबा ने कहा- ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह कैसे सभंव है? आपने ने फ़रमाया - तुम सब कर सकते हो। सहाबा ने पूछा-वह कौन सा अ़मल है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया-"सुब्हा-नल्लाहि" उहुद पहाड़ से

बहुत बड़ा है और "वला इला-ह इल्लल्लाहु" भी उहुद से बहुत बड़ा है, इसी प्रकार "वल-हम्दु लिल्लाहि" उहुद से बहुत बड़ा है और इसी तरह "वल्लाहु अक्-बरु" भी उहुद से बहुत बड़ा है।

एक और हदीस में आया है कि 100 मर्तबा "सुब्हा-नल्लाहि" कहना इस्माईल अलै० (यानी अरब) में से 100 गुलामों के आज़ाद कर देने के बराबर है। और 100 मर्तबा "वल्-हम्दु लिल्लाहि" कहना 100 ज़ीन कसे हुये लगाम पड़े हुये घोड़ों के बराबर है जिन पर जिहाद के लिये (मजाहिदों को) सवार किया जाये। और "अल्लाहु अक्-बरु" कहना अल्लाहके नजदीक ऐसे 100 क़ीमती ऊँटों के बराबर है जिन के गले में कुर्बानी के हार पड़े हों (और वह मक्का में ज़िब्ह किये जायें) और "ला इला-ह इल्लल्लाहु" तो ज़मीन और आसमान के दर्मियान को भर देता है।

एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- वाह, वाह, यह पाँच चीज़ें अमल के तराज़ू में किस क़दर भारी हैं। 1. लाइला-ह इल्लल्लाहु 2 वसुब्हा-नल्लाहि 3. वल्-हम्दु लिल्लाहि 4. वल्लाहु अक्-बरु 5 किसी मुसलमान का नेक लड़का जो मर जाये और वह उस पर सब्र करे। (यानी रोना-पीटना न करे)

एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया-तुम जो "सुब्हा-नल्लाहि, वला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्-हम्दु लिल्लाहि," कह कर अल्लाह की बड़ाई बयान करते हो, तुम्हारे यह कलमे रहमान के अर्श के चारों तरफ़ इस तरह घूमते (और तवाफ़ करते) रहते हैं कि उन की आवाज़ (यानी गूँज) उड़ने वाली शहद की मक्खियों की तरह गूँजती है (और इस तरह) कलिमात पढ़ने वाले की याद दिलाते

रहते हैं। क्या तुम में से हर शख़्स इस को पसन्द न करेगा कि इस तरह (बराबर) होता रहेगा या (फ़रमाया) इस की यादहानी बराबर होती रहेगी?

एक और हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - ज़्यादा से ज़्यादा अच्छी यादगारें क़ायम करो यानी "अल्लाहु अक्-बरु, वलाइला-ह इल्लल्लाहु, वसुब्हा-नल्लाहि, वल्-हम्दु लिल्लाहि, वला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" पढ़ा करो।

"लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" की फ़ज़ीलत और सवाब

1) या सिर्फ़ यही पढ़ा करे :

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि यह कलमा पढ़ा करो, इसलिये कि यह कलमा जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।

दूसरी हदीस में है कि - जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है।

तीसरी हदीस में आया है कि - जन्नत (के पेड़) का एक पौधा है।

चौथी रिवायत में है कि यह 99 बीमारियों की दवा है (जैसा कि ऊपर की हदीस में बयान हो चुका है) जिन में सब से

हल्की बीमारी रन्ज-ग़म और फ़िक्र व परेशानी है (जिस को यह कलमा दूर करता है)

पाँचवीं हदीस में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में मौजूद था कि (अचानक) मेरी ज़बान से "लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" निकल गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - क्या तुम जानते हो इसका अर्थ क्या है? मैंने कहा - अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- (इस का अर्थ यह है कि) अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त के बिना किसी शख़्स को नाफ़रमानी (और गुनाह) से बचने की ताक़त नहीं, और अल्लाह की सहायता के बिना किसी शख़्स को अल्लाह की इताअ़त की ताक़त नहीं।

छठी हदीस में है कि "लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि वला मल्-ज-अ मि-नल्लाहि इल्ला इलैहि (अल्लाह के अ़लावा कोई उस के गुस्सा और नाराज़गी से नजात की जगह नहीं) के इज़ाफ़ा के साथ, तो जन्नत के ख़ज़ानों में से एक (बहुत बड़ा) ख़ज़ाना है।

"रज़ीतुबिल्लाहि" की फ़ज़ीलत

1) कभी कभार दिन में दो-चार मर्तबा पढ़ा करे :

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَسُوْلًا وَّنَبِيًّا

रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन् वबिल् इसलामि दी-नन् वबिमु-हम्मदिन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म रसू-लन् (या) नबिय्यन्

तर्जुमा - "मैं अल्लाह के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल (या नबी) होने पर राज़ी हो चुका हूँ।"

फ़ायदा- हदीस शरीफ़ में आया है कि - जिसने ऊपर के कलमे कह लिये उस के लिये जन्नत वाजिब हो गयी।

अल्लाह से इक़रार (अनुबन्ध)

اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اِنِّيْٓ اَعْهَدُ
اِلَيْكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا اَنِّيْٓ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ،
وَحْدَكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ، فَاِنَّكَ
اِنْ تَكِلْنِيْٓ اِلٰى نَفْسِيْ تُقَرِّبْنِيْ مِنَ الشَّرِّ وَتُبَاعِدْنِيْ مِنَ الْخَيْرِ وَ
اِنِّيْٓ اِنْ اَثِقُ اِلَّا بِرَحْمَتِكَ فَاجْعَلْ لِّيْ عِنْدَكَ عَهْدًا تُوَفِّيْنِيْهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ.

अल्लाहुम्म रब्बस्समावाति वल् अर्ज़ि, आलि-मल् ग़ैबि वश्शहा-दति, इन्नी अअ्-हदु इलै-क फ़ी हाज़िहिल् हयातिद्दुन्या अन्नी अश-हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त, वह्-द-क, ला शरी-क ल-क, व-अन्न मु-हम्म-दन् अब्-दु-क व-रसूलु-क, फ़इन्न-क इन् तकिल्नी इला नफ़सी तु-क़र्रिब्नी मि-नश्शर्रि वतुबाअिद्नी मि-नल् ख़ैरि, वइन्नी इन् असिक़ु इल्ला बि-रह-मति-क, फज्-अ़ल्ली अ़िन्-द-क अह्-दन् तूफ़ीनीहि यौ-मल् क़िया-मति इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल् मीआ-द

तर्जुमा -" ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पर्वरदिगार! पोशीदा और खुले को जानने वाले! बेशक मैं तुझ से इस दुनिया

की ज़िन्दगी में इक़रार और वादा करता हूँ कि (मैं सच्चे दिल से) गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा और कोई माबूद नहीं है। तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं है। और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तेरे बन्दे और सन्देष्टा हैं। (यह इक़रार) इसलिये करता हूँ कि तू ने अगर मुझ को मेरे (बुरे) नफ़्स के हवाले कर दिया तो (गोया) तू ने मुझे बुराई से क़रीब कर दिया और भलाई से दूर कर दिया (इसलिये तू ऐसा कीजियो) इसलिये कि मैं तो तेरी रहमत के सिवा और किसी चीज़ पर भरोसा नहीं करता इसलिये तू मुझ से ऐसा वादा कर ले जिसे तू क़यामत के दिन पूरा करे (कि तू मुझे जन्नत में दाख़िल कीजियो) बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ़ कभी नहीं करता।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि-जो शख़्स अल्लाह के ऊपर का इक़रार कर लेगा (और फिर उस पर क़ायम रहेगा) तो अल्लाह पाक क़यामत के दिन अपने फ़रिश्तों से फ़रमायेंगे कि "मेरे इस बन्दे ने मुझ से एक वादा लिया है तुम उस को पूरा करो" चुनान्चे अल्लाह तआला उस को (अपने फ़ज़्ल और करम से) जन्नत में दाख़िल कर देंगे।

हज़रत सह्ना रह० (हदीस के रावी) कहते हैं कि मैं ने क़ासिम बिन अब्दुर्रहमान को बतलाया कि औफ़ ने मुझे यह (ऊपर वाली) हदीस सुनाई है तो हज़रत क़ासिम ने कहा-(इस में आश्चर्य की क्या बात है?) हमारे घर की तो हर पर्देदार (यानी बालिग़) लड़की अपने घर में इस दुआ को पढ़ा करती है।

"तह्मीद" (अल्लाह की हम्द) करने का एक और तरीक़ा

1) इस प्रकार अल्लाह की हम्द और सना किया करे :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ كَمَا يُحِبُّ رَبُّنَا وَيَرْضٰى

अल्-हम्दु लिल्लाहि हम्-दन् कसी-रन् तय्यि-बन् मुबा-र-कन फ़ीहि कमा युहिब्बु रब्बुना व-यर्ज़ा

तर्जुमा -" सब तारीफ़ अल्लाह के लिये ही है, ऐसी तारीफ़ जो बहुत ज़्यादा है, पाक और बर्कत वाली है, जैसी हमारा रब चाहता और पसन्द करता है।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि :

एक शख़्स अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस में हाज़िर हुआ, जब वह बैठ गया और उसने ऊपर के कलमात कहे तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि जैसे ही उस ने यह कलमात कहे, दस फ़रिश्ते उस की तरफ़ आये, हर एक यह चाहता था कि मैं उन को लिख लूँ, लेकिन उन की समझ में यह नहीं आया कि किस तरह लिखें (यानी उन का कितना सवाब लिखें) चुनान्चे अल्लाह तआ़ला के सामने उन को पेश किया तो अल्लाह ने फ़रमाया-उन को ऐसे ही लिख लो जैसे मेरे बन्दे ने कहा है (और मैं उन का सवाब खुद दूँगा)

★★★

तीसरा बाब

इस्तिग़फ़ार और उस की फ़ज़ीलत

1) सय्यिदुल इसतिग़फ़ार (सब से बड़े इस्तिग़फ़ार) का ज़िक्र इस से पहले आ चुका है (फिर भी दोबारा लिखते है।) इसे अधिक से अधिक पढ़ा करें –

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُكَ، وَاَنَا عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ بِنِعْمَتِكَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّاۤ اَنْتَ.

अल्लाहुम्म अन्–त रब्बी लाइला–ह इल्ला अन्–त, ख़–लक्–तनी, वअना अ़ब्दु–क, व–अना अ़ला अ़हदि–क व वअ़दे–क मस्–त–तअ़्तु, अऊज़ुबि–क मिन् शर्रि मा स–नअ़्तु, अबूउ बि नेअ़्–मति–क अ–लय्य व–अबूउ बि–ज़म्बी, फ़ग़्फ़िर्ली इन्नहू ला यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू–ब इल्ला अन्–त

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू ही मेरा पर्वरदिगार है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है, तू ने ही मुझे पैदा किया है, मैं तेरा ही बन्दा हूँ, मैं तेरे वादे और इक़रार पर (क़ायम) हूँ जितना मुझ से हो सका। मैं पनाह माँगता हूँ उन (तमाम कामों) की बुराई से जो

मैंने किये। मेरे ऊपर जो तेरी नेमतें हैं उन को स्वीकार करता हूँ और मैं अपने गुनाहों का भी इक़रार करता हूँ, पस तू मेरे गुनाहों को बख़्श दे इसलिये कि तेरे अ़लावा और कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता।"

फ़ायदा - 1. हदीस शरीफ़ में आया है कि - अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - मैं दिन में 70 मर्तबा (दूसरी रिवायत के अनुसार) 70 मर्तबा से भी अधिक अल्लाह से तौबा- इस्तिग़फ़ार करता हूँ। तीसरी रिवायत में है कि 100 मर्तबा।

2. दूसरी हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - तुम लोग (ज़्यादा से ज़्यादा) अल्लाह तआ़ला के सामने तौबा किया करो, इसलिये कि मैं स्वँय दिन में 100 मर्तबा तौबा करता हूँ।

3. तीसरी हदीस में है आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - जिस शख़्स ने (हर गुनाह करने के बाद तुरन्त तौबा) इस्तिग़फ़ार कर लिये तो वह गुनाह पर अड़ा नहीं रहा, अगर्चे वह 70 मर्तबा (तौबा-इस्तिग़फ़ार के बाद भी) गुनाह करे।

4. चौथी हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - मेरे दिल पर भी (दुनियावी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में लगे रहने की वजह से ग़फ़लत का) पर्दा पड़ जाता है (इसलिये) मैं दिन में 100 मर्तबा अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता हूँ।

5. एक और हदीस में आया है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - क़सम है उस अल्लाह की जिस के

क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर तुम इतने गुनाह करो कि उस से ज़मीन और आसमान भर जायें और फिर भी तुम अल्लाह से माफ़ी माँगो तो अल्लाह पाक ज़रूर तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा। और क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जान है कि अगर मान लो तुम (बिल्कुल) गुनाह न करो तो अल्लाह तआला ऐसी क़ौम पैदा करे जो गुनाह के काम करें और फिर उस से माफ़ी माँगे और वह उनके गुनाह माफ़ करे।[1]

6. एक और हदीस में है कि क़सम है उस ज़ात पाक की जिस के हाथ में मेरी जान है कि अगर -----तुम गुनाह (बिल्कुल) न करो तो अल्लाह तुम को दुनिया से उठा ले और

----

1. गुनाह और ख़ता से केवल फ़रिश्ते सुरक्षित हैं। अगर इन्सान गुनाह या ख़ता बिल्कुल छोड़ दें तो इन्सान ही न रहें, बल्कि फ़रिश्ते हो जायें। तो फिर अल्लाह तआला के माफ़ करने और बख़्शने की सिफ़त का कोई फ़ायदा ही न रहेगा, और अल्लाह तआला ने तमाम मख़्लूक़ को अपने कमालात और सिफ़ात के इज़हार के लिये पैदा किया है, इसलिये लाज़िमी तौर पर ऐसे फ़रिश्ते जैसे इन्सानों की जगह अल्लाह पाक भूल-चूक करने और अपने गुनाहों से माफ़ी माँगने वाली मख़्लूक़ को पैदा करेगा ताकि उस की उन दो बड़ी सिफ़तों का ज़हूर हो। वह गुनाह के काम करें और माफ़ी माँगें और अल्लाह माफ़ करे, वह ग़लतियाँ कर बैठें तो तुरन्त तौबा करें और अल्लाह पाक उन के गुनाह बख़्शें। ग़रज़ हदीस का सिर्फ़ यह बतलाना है कि गुनाह के काम कर बैठना इन्सान की फ़ितरत में दाख़िल है, इस पर अल्लाह की रहमत से निराश न होना चाहिये, बल्कि तुरन्त तौबा-इस्तिग़फ़ार करना चाहिये। चुनान्चे अल्लाह तआला ने फ़रमाया - "ऐ अपनी जानों पर ज़्यादती करने वालो (गुनाहगार) बन्दो! तुम अल्लाह की रहमत से निराश मत हो, बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ़ कर देता है।"

तुम्हारी जगह ऐसे लोगों को पैदा करे जो गुनाह करें और फिर माफ़ी माँगे और अल्लाह उन के गुनाह बख़्शे।

7. एक और हदीस में आया है कि जो अल्लाह से माफ़ी मांगता है अल्लाह उस को बख़्श देता है।

8. एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स चाहे कि क़यामत के दिन उस का आमाल नामा उस को खुश कर दे तो उस को ज़्यादा से ज़्यादा (तौबा और) इस्तिग़फ़ार करते रहना चाहिये)

9. एक और हदीस में आया है कि जो भी मुसलमान कोई गुनाह करता है तो उस के गुनाह को लिखने वाला फ़रिश्ता तीन घड़ी (कुछ देर) रुका रहता है, अगर उसने उस तीन घड़ी के अन्दर-अन्दर अल्लाह से अपने उस गुनाह की माफ़ी माँग ली तो वह फ़रिश्ता (उस गुनाह को नहीं लिखता और) क़यामत के दिन उस की इस गुनाह पर पकड़ न करेगा और न अज़ाब दिया जायेगा।

10. एक और हदीस में आया है कि इब्लीस (शैतान) ने अपने रब से कहा - तेरी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम! मैं आदम की औलाद को जब तक उन के (बदन में) जानें हैं बराबर गुमराह करता रहूँगा। इस पर उस के रब ने कहा - तो मुझे भी अपनी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम है कि मैं भी उन को माफ़ करता रहूँगा जब तक वह मुझ से माफ़ी माँगते रहेंगे।

11. और उस शख़्स का वाक़िआ तो पहले ही (तौबा के बाब में) आ चुका है जिसने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आकर कहना शुरू कर दिया था - हाए मेरे

गुनाह (तो इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- तो इस्तिग़फ़ार क्यों नहीं करता)

12. एक और हदीस में आया है कि जो भी दो हिफ़ाज़त करने वाले फ़रिश्ते किसी भी दिन (किसी बन्दे का) आमाल नामा अल्लाह पाक के सामने पेश करते हैं। और वह उस आमाल नामा के शुरू और अन्त में इस्तिग़फ़ार देखता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है - बेशक मैंने माफ़ कर दिया वह तमाम गुनाह जो उस आमाल नामा के अव्वल और आख़िर के दर्मियान (लिखे हुये) हैं।

13. हदीस में आया है कि जो कोई तमाम मोमिन (भाइयों) और मोमिन (बहनों) के लिये अल्लाह तआला से माफ़ी चाहता है तो अल्लाह तआला हर मोमिन मर्द और मोमिन औरत के (इस्तिग़फ़ार) के बदले एक नेकी उस के लिये लिख देते हैं।

14. (रन्ज-ग़म की दुआओं के संदर्भ में) यह हदीस (पूरी) आ चुकी है कि जो शख़्स पाबन्दी के साथ ज़्यादा से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करता रहता है अल्लाह तआला उस की हर तन्गी (और सख़्ती) से निकलने का रास्ता पैदा कर देते हैं।

15. और (सोते समय की दुआओं के संदर्भ में) यह हदीस भी पूरी आ चुकी है कि जो शख़्स हर मोमिन मर्द और मोमिन महिला के लिये हर रोज़ इस्तिग़फ़ार करता है तो -----(पूरी हदीस वहाँ देखें)

16) और (तौबा की नमाज़ के तहत) उस शख़्स की हदीस भी पूरी आ चुकी है जिस ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर कहा था - ऐ अल्लाह के

रसूल! हम में कोई शख़्स गुनाह करता है। आप ने फ़रमाया- (उस के आमाल नामे में) लिख दिया जाता है। उस ने कहा - फिर वह उस गुनाह से माफ़ी माँग लेता है। आप ने फ़रमाया - उस को माफ़ कर दिया जाता है (और यह भी लिख दिया जाता है)

17. एक और हदीस क़ुदसी में आया है कि अल्लाह तआ़ला (आदम की औलाद को मुख़ातब कर के) कहते हैं। ऐ आदम की औलाद! बेशक तू जब तक मुझ से दुआ माँगता रहेगा और (माफ़ी की) आशा रखेगा मैं तुझ को माफ़ करता रहूँगा, कितने ही गुनाह क्यों न हों, और (बिल्कुल ही) पर्वा न करूँगा। ऐ आदम की औलाद! अगर तेरे गुनाह (ज़मीन से) आसमान की ऊँचाई तक भी पहुँच जायेंगे और फिर तू मुझ से मग़्फ़िरत तलब करेगा तो मैं तेरे गुनाह बख़्श दूँगा। ऐ आदम की औलाद! अगर तू ज़मीन भर गुनाह भी मेरे सामने लायेगा और फिर तू मेरे सामने इस हालत में पेश होगा कि तू ने किसी भी चीज़ को मेरे साथ शरीक न किया होगा तो मैं भी ज़मीन भर मग़्फ़िरत तेरे लिए ज़रूर लाऊँगा (यानी माफ़ कर दूँगा)

एक और हदीस में आया है कि जब भी कोई बन्दा गुनाह कर लेता है और फिर (उसी समय शर्मिन्दा हो कर) कहता है- "ऐ मेरे मौला! मैं तो गुनाह कर बैठा अब तू इसको बख़्श दे" तो उस का पर्वरदिगार (फ़रिश्तों के सामने) फ़रमाता है- क्या मेरे इस बन्दा को विश्वास है कि उस का कोई पर्वरदिगार है जो गुनाहों को भी माफ़ करता हो, और उन पर पकड़ भी करता है? (सुन लो!) मैंने अपने इस बन्दा को बख़्श दिया। फिर वह बन्दा जब तक अल्लाह चाहता है इस वादे पर क़ायम रहता है। फिर कोई गुनाह कर बैठता है तो फिर (शर्मिन्दा होकर) कहता है -

"ऐ मेरे मौला! मैं तो यह एक और गुनाह कर बैठा तू इस गुनाह को भी माफ़ कर दे। तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं- "मेरे इस बन्दा को भी यक़ीन है कि कोई पर्वरदिगार है जो गुनाह माफ़ भी करता है और उन पर पकड़ भी करता है? (सुन लो!) मैंने इस को फिर माफ़ कर दिया। फिर जब तक अल्लाह चाहे वह गुनाहों से रुका रहता है। फिर और कोई गुनाह कर बैठता है तो फिर (शर्मिन्दा हो कर) कहता है- "ऐ मेरे पर्वरदिगार! मैं तो फिर यह एक और गुनाह कर बैठा तू इस को भी बख़्श दे।" अल्लाह तआला फिर (फ़रिशतों से) फ़रमाते हैं - मेरे इस बन्दे को यक़ीन है कि कोई पर्वरदिगार है जो गुनाहों को माफ़ भी करता है और उन पर सज़ा भी देता है (सुनो!) मैं ने अपने इस बन्दे को फिर माफ़ कर दिया (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने) तीन मर्तबा उस बन्दा के गुनाह और तौबा का ज़िक्र फ़रमाया और (इस के बाद) फ़रमाया- पस इसी तरह जो चाहे करता रहे (यानी हर गुनाह के बाद तौबा करता रहे)

18) एक और हदीस में आया है कि उस शख़्स के लिये शुभ सूचना है जिस के आमाल नामा में बहुत अधिक इस्तिग़फ़ार मौजूद हों।

19) उस शख़्स की हदीस भी पहले गुज़र चुकी है जिसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपनी तेज़ ज़बानी (और बद ज़बानी) की शिकायत की थी तो आप ने फ़रमाया था- तुम्हें इस्तिग़फ़ार की ख़बर नहीं? (इस्तिग़फ़ार ही तो इस ऐब को दूर करता है)

"इस्तिग़फ़ार" का तरीक़ा

1) "अस्-तग़्फ़िरुल्ला-ह", "अस्-तग़्फ़िरुल्ला-ह" ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करे।

2. तीन मर्तबा या पाँच मर्तबा (सच्चे दिल से अर्थ का ध्यान कर के) इन कलमात के साथ इस्तिग़फ़ार पढ़ा करे :

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ

अस्-तग़्फ़िरुल्ला-हल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-वल् हय्युल् क़य्यूमु व-अतूबु इलैहि

तर्जुमा - "मैं माफ़ी चाहता हूँ उस अल्लाह से जिस के सिवा कोई माबूद नहीं है, वह (हमेशा-हमेशा) ज़िन्दा रहने वाला (आसमान और ज़मीन को) क़ायम रखने वाला है और उसी के सामने तौबा करता हूँ"

फ़ायदा - हदीस में आया है कि जो शख़्स इन कलमात के साथ (सच्चे दिल से) माफ़ी तलब करेगा उस की मग़्फ़िरत कर दी जायेगी, अगर्चे वह जिहाद के मैदान से ही भागा होगा।

2. दूसरी रिवायत में है कि अगर्चे उस के गुनाह समुन्दर के झागों की तरह (अनगिन्त) हों। और एक रिवायत में तीन मर्तबा है, और दूसरी में पाँच मर्तबा।

3. इन लफ़्ज़ों के साथ ज़्यादा इस्तिग़फ़ार किया करे :

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ

रब्बिग़फ़िर्ली वतुब् अ़-लय्य इन्न-क अन्-तत्तव्वाबुर्रहीमु

ऐ मेरे पर्वरदिगार! तू मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले। बेशक तू ही बहुत बड़ा तौबा करने वाला मेहरबान है।"

फ़ायदा -1. एक हदीस शरीफ़ में आया है कि सहाबा कहते हैं - हम लोग नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़बान से इन (ऊपर के) कलिमात को एक-एक मज्लिस में 100-100 मर्तबा गिना करते थे।

2. हज़रत रबीअ़ बिन ख़ुसैम रज़ि0 ने कितनी अच्छी बात कही है कि तुम में से किसी शख़्स को "अस्-तग़फ़िरुल्ला-ह व-अतूबु इलैहि" न कहना चाहिये कि ऐसा न हो कि कहीं यह (कहना) झूठ और गुनाह हो जाये, बल्कि "अल्लाहुम्मग़ फ़िर् ली वतुब अ़-लय्य" कहना चाहिये।[1]

---

1. "अस्-तग़फ़िरुल्ला-ह व-अतूबु इलैहि" (मैं उस अल्लाह से माफ़ी माँगता हूँ और तौबा करता हूँ) और "अल्लाहुम्मग़ फ़िरली वतुब अ़-लय्य" (ऐ अल्लाह! तू मुझे बख़्श दे और मेरी तौबा-इस्तिग़फ़ार दुरुस्त है। ताहम जैसा की उन के तर्जुमा से ज़ाहिर है इन में बहुत खुला फ़र्क़ है।

पहले जुम्ले में अपने माफ़ी माँगने और तौबा करने की ख़बर दे रहा है) ख़बर अगर वाक़िआ के अनुसार हो तो सच्ची होती है और अगर वाक़िआ के ख़िलाफ़ हो तो झूठी होती है। इसलिये हर ख़बर में सच और झूठ दोनों की संभावना होती है। चुनान्चे यहाँ भी इस बात की संभावना है कि यह केवल किसी को दिखाने के लिये कह रहा हो। हक़ीक़त में अल्लाह से माफ़ी माँगना और तौबा करना मक़सूद न हो या सिर्फ़ ज़बान से कह रहा हो दिल किसी और तरफ़ लगा हुआ हो, ऐसी सूरत में यह कहना झूठ होगा और गुनाह भी। अगर्चे यह केवल संभावना है, ऐसा होता नहीं। इस के विपरीत उस के दूसरे वाक्य में किसी बात की ख़बर नहीं देता, बल्कि अल्लाह को पुकार कर उस से

शेष अगले पृष्ठ

संपादक रह0 फ़रमाते हैं कि इस का मतलब यह नहीं है कि इस प्रकार इस्तिग़फ़ार (हक़ीक़त में) झूठ (और गुनाह) होता है जैसा कि हमारे कुछ उल्मा समझ बैठे हैं (बल्कि रबीअ़ रह0 के क़ौल का मतलब यह है कि) यह गुनाह इसलिए है कि जब (कोई शख़्स) ग़ाफ़िल और बेपर्वाह दिल के साथ मग़्फ़िरत तलब करेगा और दिल से मग़्फ़िरत तलब करने की तरफ़ मुतवज्जह और मुज़तरिब न होगा तो बेशक यह (ग़फ़लत और लापरवाही) एक गुनाह है जिस की सज़ा (दुआ के क़बूल होने से) महरूमी है। और यह (रबीअ़ रह0 का क़ौल) ऐसा ही है जैसा कि हज़रत राबिआ़ बसरी (रज़ि0) ने फ़रमाया है कि – हमारा तो इस्तिग़फ़ार ख़ुद बहुत कुछ इस्तिग़फ़ार का मोहताज है (क्योंकि हम ज़बान से तो अस्‌-तग़्फ़िरुल्लाह कहते हैं, लेकिन हमारा ध्यान कहीं और होता है) लेकिन जो शख़्स (ज़बान से) अतूबु इ-लल्लाहि कहता है और (दिल से) तौबा नहीं करता तो इस में

-------------- पिछले पृष्ठ का शेष भाग

पर देखें माफ़ी माँगनें और तौबा क़बूल कर लेने का सवाल करता है। इन्सान जब किसी को पुकार कर कोई सवाल करता है तो उस का ध्यान उस की तरफ़ ज़रूर होता है, इसलिये पहले वाक्य के मुक़ाबले में दूसरे वाक्य से तौबा इस्तिग़फ़ार करना बेहतर है। यह तो शरीअ़त का हुक्म है, बाक़ी अल्लाह के वली और बज़ुर्ग लोग चूँकि बहुत ज़्यादा मुहताज होते हैं, उन के हाँ ज़रा-ज़रा सी बात पर पकड़ होती है, इसलिये महज़ इस शुब्हा के कारण पहले जुम्ले को झूठ और गुनाह कह दिया और दूसरे जुम्ले से तौबा-इस्तिग़फ़ार की हिदायत फ़रमायी है-वल्लाहु आलम (इदरीस)

शक नहीं कि यह झूठ होगा।[1] (इसलिये कि वाकिआ के ख़िलाफ़ है)

बाकी रही तौबा और मग़्फ़िरत की दुआ, तो अगर बेतवज्जुही के साथ भी करेगा तब भी हो सकता है कि वह दुआ के कबूल होने का समय हो और कबूल हो जाये। इसलिये कि (मसल मशहूर है कि) "जो शख़्स दरवाज़ा खटखटाता रहता है कभी न कभी (दरवाज़ा खुल ही जाता है और) वह अन्दर दाख़िल हो ही जाता है"।

इस हकीकत की वज़ाहत अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बहुत अधिक इस्तिग़फ़ार करने से भी होती है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक-एक मज्लिस में 100-100 मर्तबा इस्तिग़फ़ार करते थे। इस के विपरीत अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस शख़्स के बारे में

---

1. संपादक रह० का "अस्-तग़फ़िरुल्ला-ह" और "अतूबु इलैहि" में यह फ़र्क़ करना कि बे दिली और बे तवज्जुही के साथ "अस्-तग़फ़िरुल्लाह" कहना गुनाह तो है, लेकिन झूठ नहीं। और "अतूबु इलैहि" झूठ है, कुछ स्पष्ट नहीं, बल्कि दोनों कलमे बराबर हैं, और अगर बे दिली और बे तवज्जुही की सूरत में "अतूबु इलैहि" झूठ है तो कोई वजह नहीं कि इसी बेदिली औ बे तवज्जुही की सूरत में "अस्-तग़फ़िरुल्लाह" झूठ न हो। और अगर "अस्-तग़फ़िरुल्लाह" बे दिली और बे तवज्जुही की सूरत में एक ऐसा गुनाह है जिस की सज़ा (कबूलियत से) महरूमी है तो कोई वजह नहीं कि "अतूबु इलैहि" को ऐसा गुनाह जिस की सज़ा कबूलिय्यत से महरूमी हो न कहा जाये। अल्लाह ही बेहतर जाने। बात वही है जो ऊपर के हाशिया में कही गयी है - (इदरीस)

जिस ने एक मर्तबा या तीन मर्तबा (सच्चे दिल से और मुकम्मल तवज्जुह के साथ) "अस्तग़फ़िरुल्ला-ह व-अतूबु इलैहि" कहा, तो आप ने साफ़ तौर से उस की मग़फ़िरत का हुक्म लगा दिया, अगर्चे वह जिहाद के मैदान से क्यों न भागा हो।

संपादक (मुसन्निफ़) रह० फ़रमाते हैं - लो, अब तो (इस्तिग़फ़ार के दोनों तरीक़े) की हक़ीक़त तुम्हारे सामने स्पष्ट कर दी गयी है, अब जो तरीक़ा तुम्हें अच्छा मालूम हो उसे अपने लिये चुन लो।

संपादक रह० फ़रमामाते हैं कि "किताबुज़्ज़ुह्द" में हज़रत लुक़मान से रिवायत है कि उन्होंने अपने बेटे को नसीहत फ़रमायी कि - अपनी ज़बान को "अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली" का आदी बना लो, इसलिये कि अल्लाह तआला की कुछ ऐसी घड़ियाँ भी हैं कि उन में वह किसी भी माँगने वाले के सवाल को रद्द नहीं फ़रमाता (दिल से माँगता हो या ज़बान से)

चौथा बाब

क़ुरआन करीम और उस की सूरतों और आयतों के पढ़ने की फ़ज़ीलत

1) रोज़ाना क़ुरआन मजीद की तिलावत किया करे इसलिये कि

1. नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया क़ुरआन पढ़ा करो, इसलिये कि यह क़ुरआन क़यामत के दिन क़ुरआन पढ़ने वालों की सिफ़ारिश करने के लिये आयेगा।

2. एक हदीस क़ुदसी में आया है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं – जिस शख़्स को क़ुरआन मजीद (की तिलावत करने, याद करने, ग़ौर फ़िक्र करने और तफ़सीर व तर्जुमा वग़ैरह करने) की मश्ग़ूलियत (व मसरूफ़ियत) ने मेरा ज़िक्र करने और मुझ से दुआयें माँगने से रोक दिया (यानी ज़िक्र करने और दुआ माँगने की फ़ुरसत न मिली) तो मैं उस को उस शख़्स से बढ़ कर देता हूँ जो मैं दुआयें (और हाजतें) माँगने वालों को देता हूँ (यानी उस की तमाम ज़रूरतें और मुरादें पूरी कर देता हूँ) और (नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया) अल्लाह के कलाम को और तमाम कलामों पर ऐसी ही फ़ज़ीलत (और बड़ाई) हासिल है जैसी खुद अल्लाह तआ़ला को अपनी तमाम मख़्लूक़

पर।

3. एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया – तुम क़ुरआन को सीखो (और उस का ज्ञान प्राप्त करो) और उस को पढ़ो-पढ़ाओ, इसलिये कि मिसाल उस शख़्स के हक़ में जिसने क़ुरआन सीखा (और उस का ज्ञान प्राप्त किया) फिर उस को पढ़ा-पढ़ाया भी और उस पर अ़मल भी किया (ख़ास कर तहज्जुद की नमाज़ में पढ़ा) ऐसी है, जैसे मुश्क से भरी हुयी एक (मुँह खुली) थैली, जिसकी महक हर जगह पहुँचती है। और उस शख़्स के हक़ में जो कुरआन को सीखता तो है (और उस का इल्म हासिल करता है) मगर (रात को ग़ाफ़िल पड़ा) सोता रहता है (न तहज्जुद में क़ुरआन पढ़ता है और न उस पर अ़मल करता है) हालाँकि उस के (दिल के) अन्दर क़ुरआन मौजूद है, ऐसी है जैसे, एक मुश्क से भरी हुई थैली जिस का मुँह कस कर बाँध दिया गया हो।

4. एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया – जिस शख़्स ने अल्लाह की किताब (क़ुरआन) का एक हर्फ़ पढ़ा उस के लिये एक नेकी है और हर नेकी का सवाब (कम से कम) दस गुना है। मैं यह नहीं कहता (यानी यह न समझना) कि "अलिफ़ लाम मीम" एक हर्फ़ है, बल्कि "अलिफ़" एक हर्फ़ है और "लाम" एक हर्फ़ है और "मीम" एक हर्फ़ है (लिहाजा अलिफ़ लाम्मीम् पढ़ने में तीन नेकियाँ हैं और उन का सवाब कम से कम 30 नेकियों के बराबर है)

5. एक और हदीस में आया है कि (नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया) रश्क के लायक दो शख़्स है

1. वह शख़्स जिस को अल्लाह पाक ने क़ुरआन मजीद की दौलत दी और वह दिन-रात उस पर अमल करता है। 2. वह शख़्स जिस को अल्लाह पाक ने माल-दौलत दिया और वह दिन-रात (उस के हुक्म के मुताबिक़) उस माल को ख़र्च करता रहता है।

6. एक और हदीस में आया है कि - कयामत के दिन क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने वाले से कहा जायेगा - (क़ुरआन) पढ़ते जाओ और (जन्नत के दर्जों पर) चढ़ते जाओ, और ऐसे ही ठहर-ठहर कर पढ़ो जैसे तुम दुनिया में ठहर-ठहर कर (क़ुरआन) पढ़ा करते थे, इसलिये कि तुम्हारा स्थान (दर्जा) इस अन्तिम आयत में है जो तुम पढ़ोगे।

7. एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स क़ुरआन पढ़ता है और वह उस में ख़ूब माहिर है (यानी ख़ूब अच्छी तरह पढ़ता है) तो वह कयामत के दिन (नेकियाँ) लिखने वाले बज़ुर्ग फ़रिश्तों के साथ होगा। और जो शख़्स (याद न होने की वजह से) अटक-अटक कर पढ़ता है और इस (तरह पढ़ने) में काफ़ी मशक्क़त बर्दाशत करता है उस को दोहरा सवाब मिलता है (एक क़ुरआन पढ़ने का और एक मशक्क़त उठाने का)

सूरः "फ़ातिहा" की फ़ज़ीलत

1) सूर: फ़ातिहा (अल्हम्दु) नमाज़ के अलावा भी (हर आयत के माना समझ कर) पढ़ा करे, इसलिये कि -

1. हदीस में आया है कि फ़ातिहा (मर्तबा में) क़ुरआन की सब से बड़ी सूरत है, यही "सबा मसानी" (सात बार पढ़ी जाने वाली आयतें) और "क़ुरआन अज़ीम" है।

2. दूसरी हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया – मुझे "फ़ाति-हतुल् किताब" (क़ुरआन की पहली सूरत) अर्श के नीचे (ख़ास ख़ज़ाना) से दी गयी है।

3. एक और हदीस में आया है कि एक मर्तबा जिब्राईल अलै० नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुये थे कि अचानक ऊपर से (आकाश से) एक टूटने की सी आवाज़ सुनी तो कहा – यह एक ऐसा फ़रिश्ता (आसमान से) उतरा है जो आज से पहले कभी नहीं उतरा था। तो फ़रिश्ता ने सलाम किया और कहा – (ऐ अल्लाह के रसूल!) मुबारक हो, आप को दो नूर दिये गये हैं जो आप से पहले किसी नबी को नहीं दिये गये थे 1. सूरः फ़ातिहा 2. सूरः ब-क़-रः की अन्तिम दो आयतें। इन का जो हर्फ़ भी आप पढ़ेंगे उस का सवाब आप को दिया जायेगा।

"सूरः ब-क़-रः" की फ़ज़ीलत

1) सूरः ब-क़-रः रोज़ाना पढ़ा करे इसलिये कि :

1. एक हदीस में आया है कि जिस घर में सूरः ब-क़-रः पढ़ी जाती है शैतान उस घर से बिला शुब्हा भाग जाता है।

2. एक और हदीस में आया है कि सूरः ब-क़-रः पढ़ा करो। उस को हासिल करना (और पढ़ना) बर्कत का सबब है और उस को छोड़ बैठना (टोटा और) अफ़सोस का सबब है। और नाकारा लोगों को ही (उस के पढ़ने) की क़ुदरत नहीं होती।

3. एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स रात में सूरः

ब-क़-रः पढ़ेगा, तीन रात शैतान उस घर में दाख़िल न होगा"। और जो शख़्स दिन में पढ़ेगा तीन दिन तक शैतान उस घर में दाख़िल न होगा।

4. एक और हदीस में आया है कि हर चीज़ का एक कोहान (यानी सब से बुलन्द हिस्सा) होता है। क़ुरआन का कोहान सूरः ब-क़-रः है।

5. एक और हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - मुझे सूरः ब-क़-रः (ख़ास तौर पर) लोहे महफ़ूज़ से दी गयी है।

सूरः "ब-क़-रः" और "आले इमरान" की फ़ज़ीलत

1) सूरः ब-क़-रः के साथ सूरः आले इमरान भी पढ़ा करे, इसलिये कि

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि दो चमकती हुयी रोशन सूरतें सूरः ब-क़-रः और सूरः आले इमरान पढ़ा करो इसलिये कि यह दोनों सूरतें क़यामत के दिन इस तरह आयेंगी गोया वह दो (साया करने वाले) बादल हैं या दो साएबान हैं, या दो परे बाँधे हुये परिन्दों की टुकड़ियाँ हैं अपने पढ़ने वालों के बख़्शवाने के लिये (अल्लाह तआला से) झगड़ा करती होंगी।

"आ-यतुल् कुर्सी की फ़ज़ीलत

★ ज़्यादा से ज़्यादा उठते-बैठते आयतुल कुर्सी की तिलावत किया करो इसलिये कि :

1. हदीस शरीफ़ में आया है : आयतुल् कुर्सी अल्लाह की किताब (क़ुरआन) की (सब के लिहाज़ से) सब से बड़ी आयत है। एक रिवायत में है कि यह क़ुरआन की आयतों की सरदार है।

2. दूसरी हदीस में आया है कि जिस माल या औलाद पर इस आयतुल् कुर्सी को पढ़ कर दम करोगे या लिख कर (माल में) रख दोगे, या बच्चा के गले में डाल दो गे तो शैतान उस माल और औलाद के करीब भी न आयेगा।

सूर: "ब-क़-र:" की अन्तिम दो आयतों की फ़ज़ीलत

★ सूर: की अन्तिम दो आयतें आ-म-नर्रसूलु से आख़िर तक रात में सोते समय पढ़ा करे इसलिए कि :

1. हदीस शरीफ़ में आया है सूर: ब-क़-र: की दो आयतें आ-म-नर्रसूलु से आख़िर तक जिस घर में पढ़ी जायें तीन दिन तक शैतान उस घर के पास भी नहीं आता।

2. दूसरी हदीस में आया है कि अल्लाह तआ़ला ने सूर: ब-क़-र: को ऐसी दो आयतों पर समाप्त किया है जो मुझे उस ख़ज़ाना से मिली हैं जो अर्श के नीचे है। इस लिये तुम ख़ुद भी उन्हें सीखो (और याद कर लो) (अपने घर के) औरतों-बच्चों को भी सिखलाओ (और याद कराओ) इसलिये कि वह रहमत (का सामान) हैं और क़ुरआन (का निचोड़) हैं और (बड़ी अहम) दुआ हैं।

★

सुरः "अन्आम" की फ़ज़ीलत

★ सूरः अन्आम भी पढ़ा करे। इसलिये कि :

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि - जब यह सूरः उतरी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने "सुब्हा-नल्लाहि" कहा और फिर फ़रमाया- अल्लाह की क़सम! इस सूरत को पहुँचाने इतने फ़रिश्ते आये हैं कि उन की भीड़ से आसमान के कनारे ढक गये।

सूरः "कह्फ़" की फ़ज़ीलत

★ हर जुमे को रात में या दिन में सूरः कह्फ़ ज़रूर पढ़ा करे इसलिये कि :

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि - जो शख़्स जुमे के दिन सूरः कह्फ़ पढ़ लेता है उस के लिये इस जुमे से आने वाले जुमे के दर्मियान (पूरे सप्ताह) एक नूर बख़्शता रहता है।

2. एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स जुमे की रात में सूरः कह्फ़ पढ़ लेता है उस के लिये उस की जगह काबा शरीफ़ के दर्मियान एक नूर बख़्शता रहता है।

3. एक रिवायत में है कि जिस शख़्स ने सूरः कह्फ़ जिस तरह उतरी है उसी तरह (सही ढंग से) पढ़ ली तो उस की जगह और मक्का के दर्मियान वह एक नूर बनी रहती है। और जो शख़्स इस की अन्तिम दस आयतें पढ़ता रहेगा और दज्जाल (उस की ज़िन्दगी में) ज़ाहिर हो गया तो वह उस शख़्स पर काबू न पा सकेगा (यानी दज्जाल के फ़ितना से सुरक्षित रहेगा)

4. एक हदीस में में है कि जो शख़्स इस सूरः को पढ़ता रहेगा उस के लिये यह सूरः क़ियामत के दिन उस की जगह से मक्का शरीफ़ तक (रोशनी बिखेरती हुयी) नूर होगी। और जो शख़्स इस की अन्तिम दस आयतें हमेशा पढ़ता रहेगा फिर अगर दज्जाल (उसके ज़माना में) निकल भी आयेगा तो उस को कोई हानि न पहुँचा सकेगा।

5. एक और हदीस में आया है कि जिस शख़्स ने सूरः कहफ़ की पहली दस आयतें याद कर लीं (और बराबर पढ़ता रहा) वह दज्जाल के फ़ितने से बचा दिया जायेगा। इसी हदीस की एक रिवायत में आया है कि जिस शख़्स ने इस सूरः की दस आयतें (और दूसरी रिवायत में है कि) अन्तिम दस आयतें याद कर लीं (और हमेशा पढ़ता रहा) वह दज्जाल के फ़ितने से सुरक्षित रहेगा।

6. एक और रिवायत में है कि जो शख़्स सूरः कहफ़ की पहली तीन आयतें पढ़ता रहेगा वह भी दज्जाल के फ़ित्ने से सुरक्षित रहेगा।

7. एक हदीस में आया है कि जो शख़्स दज्जाल को पाले (यानी उस के सामने निकल आये) उस को चाहिये कि वह सूरः कहफ़ की शुरू की दस आयतें उस के मुँह से पढ़ दे (एक और रिवायत में है) इसलिये कि यह आयतें पढ़ने वाले के लिये उस के फ़ितने से पनाह देने वाली हैं।

सूरः "ताहा, तवासीन्" और "हवामीन" की फ़ज़ीलत

★ 'तवासीन' जो सूरतें "तासीन" से शुरू होती हैं, और

'हवामीम' यानी जो सूरतें "हामीम" से शुरू होती हैं, इन को गाहे-बगाहे पढ़ा करे, इसलिये कि :

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया- सूरः "त्वाहा" और "त्वासीन" और "हवामीम" मुझ को हज़रत मूसा अ़लै० की आसमानी तख़्तियों में से दी गयी हैं।

सूरः "यासीन्" की फ़ज़ीलत

★ सूरः यासीन (सुबह-शाम) पढ़ा करे, ख़ास तौर पर जान निकलने की हालत में, या मरने के बाद मय्यित को पढ़ कर सुनाए। इसलिए कि :

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि - सूरः यासीन क़ुरआन करीम का दिल है, जो शख़्स इसको अल्लाह और आख़िरत के लिये पढ़ा करेगा उस की मग़्फ़िरत कर दी जायेगी और उस को मरने वालों पर (जान निकलते समय) पढ़ा करो।

सूरः "फ़त्ह" की फ़ज़ीलत

★ सूरः फ़त्ह भी (सप्ताह में किसी दिन या जुमे को) पढ़ा करे - इसलिये कि

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - सूरः फ़त्ह मुझे उन तमाम चीज़ों से ज़्यादा प्यारी है जिन पर सूरज निकला है (यानी तमाम दुनिया से)

सूरः "मुल्क" की फ़ज़ीलत

★ सूरः मुल्क (तबा-र-कल्लज़ी बि-यदिहिल् मुल्कु) ज्यादा से ज्यादा पढ़ा करे और इस को पढ़ कर मरने वालों को सवाब भी पहुँचाया करे इसलिये कि

1. हदीस शरीफ़ में आया है इस सूरः की 30 आयतें (बराबर पढ़ने वाले) आदमी की इतनी शफ़ाअत करती हैं कि उस को माफ़ कर दिया जाता है।

2. एक रिवायत में है कि अपने पढ़ने वाले की माफ़ी का उस समय तक सवाल करती रहती हैं कि उस को बख़्श दिया जाता है।

3. एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मेरा जी चाहता है कि यह सूरः मुल्क हर मोमिन के दिल में हो (यानी हर मुसलमान उस को ज़रूर याद कर ले और पाबन्दी से पढ़ा करे।

4. एक और हदीस में आया है कि (मरने वाले) आदमी की क़ब्र में (अज़ाब के फ़रिश्ते) पैर की तरफ़ से (अज़ाब देने) आते हैं, तो उस के पैर कहते हैं कि तुम इस तरफ़ से नहीं आ सकते इसलिए कि यह शख़्स हमारे ज़रीआ (नमाज़ में खड़ा हो कर) सूरः मुल्क पढ़ा करता था। फिर सीने (दिल) की तरफ़ से, पेट की तरफ़ से आते हैं तो वह सब भी इसी तरह रोक देते हैं) फिर सर की तरफ़ से आते हैं (ग़र्ज़) हर हिस्सा यही कह देता है (कि तुम इधर से नहीं आ सकते, क्योंकि यह शख़्स हमारे ज़रीए से सूरः मुल्क पढ़ा करता था) पस यह सूरत उस को क़ब्र के अज़ाब से बचा देती है। और यह सूरत (या इस की यह फ़ज़ीलत)

तौरेत में भी मौजूद है। जिस ने इसे रात में पढ़ लिया उस ने बहुत कुछ और बहुत अच्छा अ़मल किया।

सूरः "ज़िल्ज़ाल" की फ़ज़ीलत

★ गाहे-बगाहे, चलते-फिरते सूरः इज़ा ज़ुल्ज़ि-लतिल् पढ़ता रहा करे,

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि यह सूरः क़ुरआन के चौथाई हिस्सा (के बराबर) है। और एक रिवायत में है कि आधे क़ुरआन के बराबर है।

2. एक और हदीस में आया है कि (एक सहाबी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा -) ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ! मुझे क़ुरआन की कोई (मुख़्तसर सी) जामे और सब को शामिल) सूरत पढ़ा दीजिये जिसे (मैं पाबन्दी से) पढ़ा करूँ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस को सूरः ज़िल्ज़ाल पढ़ा दी (और याद करा दी) इस से फ़ारिग़ हो कर उस शख़्स ने कहा - क़सम है उस पाक ज़ात की जिसने आप को रसूल बना कर भेजा है, मैं इस से ज़्यादा कभी नहीं पढ़ूँगा। फिर (यह कह कर वह शख़्स) चला गया। आप ने (यह सुन कर) दो मर्तबा फ़रमाया - इस बेचारे आदमी ने फ़लाह (नजात) पाली, इस बेचारे आदमी ने नजात पा ली।

सूरः "काफ़िरून" की फ़ज़ीलत

★ सूरः काफ़िरून (क़ुल् या अय्यु-हल् काफ़िरू-न) दिल से पढ़ता रहा करे -

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि सूरः काफ़िरून चौथाई

क़ुरआन है।

2. एक और रिवायत में है कि (सवाब में) चौथाई क़ुरआन के बराबर है।

सूरः "काफ़िरून" और सूरः "इख़्लास" की मुश्तरक फ़ज़ीलत[1]

★ सूरः काफ़िरून और सूरः इख़्लास (कुल् ह-वल्लाहु) दोनों को हमेशा पढ़ा कर -

1. एक हदीस में आया है कि दो सूरतें बड़ी ही अच्छी हैं। जो फ़ज्र की (फ़र्ज़) नमाज़ से पहले दो रक्अ़तों (सुन्नतों) में पढ़ी जाती हैं। सूरः काफ़िरून और सूरः इख़्लास।

---

1. सूरः काफ़िरून और इख़्लास, इन दोनों का नाम हदीस में "तौहीद की दो सूरतों" आया है और इन के एक साथ पढ़ने की ख़ास कर फ़ज्र और मग़्रिब की सुन्नतों में बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। इस की वजह यह मालूम होती है कि तौहीद के दो हिस्से हैं। पहले हिस्से में अल्लाह के अ़लावा के माबूद होने का इन्कार है और सूरः काफ़िरून में इसी का बयान और एलान है। दूसरे हिस्सा में अल्लाह के माबूद होने का इक़रार है और सूरः इख़्लास में इसी का एलान है। इसलिये यह दोनों सूरतें "क़ुल" (कह दो!) से आरम्भ हुयी हैं, इसलिये यह दोनों सूरतें वास्तव में तौहीद के दो हिस्से हैं, इसलिये इन दोनों को एक साथ पढ़ने की यह फ़ज़ीलत आयी है, ख़ास कर फ़ज्र की सुन्नतों में कि उस समय दिन निकलता है, और मग़्रिब की सुन्नतों में कि उस समय रात शुरू होती है।

गोया एक मुसलमान इन दोनों नमाज़ों में रोज़ाना इन दोनों सूरतों को पढ़ कर अल्लाह के एक होने का एलान करता है - सुब्हानल्लाह!

(इदरीस)

सूरः "इज़ा जा-अ" की फ़ज़ीलत

★ सूरः नस्र (इज़ा जा-अ नसरुल्लाहि) बराबर पढ़ा करे-

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि यह क़ुरआन का चौथा हिस्सा है।

सूरः "इख़्लास" की फ़ज़ीलत

★ सूरः इख़्लास (क़ुल् हु-वल्लाहु अ-हद) ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ा करो -

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि यह सूरः क़ुरआन का तिहाई हिस्सा है। एक रिवायत में है कि (सवाब में) तिहाई हिस्सा के बराबर है।

2. एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस सहाबी के बारे में --जो इमाम थे और हर नमाज़ में इसे पढ़ा करते थे। और जब उन से इस का सबब मालूम किया गया तो कहा - मुझे इस सूरत से बड़ी मुहब्बत है- आप ने फ़रमाया - उस शख़्स को ख़बर दे दो कि बेशक अल्लाह तआला भी उस से मुहब्बत करते हैं।

3. एक और हदीस में सहाबी का ज़िक्र है कि वह हमेशा और सूरतों के साथ इस सूरः को हर रकअत में ज़रूर पढ़ा करते थे। जब उन से कारण पूछा गया तो उन्होंने कहा- मुझे इस सूर से बड़ी मुहब्बत है। इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया- इस सूरत की मुहब्बत ही तुम को जन्नत में दाख़िल कर देगी।

4. एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक शख़्स को (सच्चे दिल से) सूरः इख़्लास पढ़ते सुना तो फ़रमाया - इस के लिये जन्नत वाजिब हो गयी।

5. एक और हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया - क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है कि यह सूरः एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है।

6. एक और हदीस में है कि जो शख़्स सोने के इरादे से बिस्तर पर लेटे और फिर दायें करवट पर लेट कर 100 मर्तबा सूरः इख़्लास पढ़ लिया करे तो क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा "ऐ मेरे बन्दे! तू अपनी दायीं तरफ़ की जन्नत में चला जा"।

सूरः "फ़-लक़" और "नास" की फ़ज़ीलत

★ सूरः फ़ल-क़ और सूर नास ज़्यादा से ज्यादा पढा करे इसलिये कि :

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत उक़्बा बिन आ़मिर रज़ि0 से फ़रमाया- क्या तुम्हें दो बेहतरीन पढ़ी जाने वाली सूरतें न बतलाऊँ? इसी रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया - इन दोनों सूरतों को पढ़ा करो कि इन जैसी और सूरतें तुम हर्गिज़ न पढ़ोगे (क्योंकि जैसा इन में अल्लाह से पनाह लेने का ज़िक्र है और किसी सूरः में नहीं है)

2. एक और हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम जिन्न और इन्सान की बुरी नज़र से (मुख़्तलिफ़ लफ़्ज़ों में) पनाह माँगा करते थे। यहाँ तक कि यह दो सूरतें आप पर नाज़िल हो गयीं तो आप ने इन्हीं दोनों को इख़्तियार कर लिया और इन के अलावा (पनाह माँगने वाले लफ़्ज़ों) को छोड़ दिया।

3. एक और हदीस में आया है कि न किसी सवाल करने वाले ने इन जैसी सूरतों के साथ सवाल किया और न किसी पनाह माँगने वाले ने इन जैसी सूरतों के साथ पनाह माँगी। दूसरी रिवायत में यह भी आया है कि - इन दोनों सूरतों को पढ़ा करो जब भी जाओ और जब भी तुम (सोकर) उठो।

4. एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

तुम सूरः फ़-लक़ पढ़ा करो इसलिये कि तुम इस से ज़्यादा अल्लाह को महबूब और इस से ज़्यादा जल्द अल्लाह तक पहुँचने वाली (यानी क़बूल होने वाली) और कोई सूरत नहीं पढ़ सकते। इसलिये जहाँ तक तुम से हो सके तुम इस को मत छोड़ो।

5. इसी हदीस की दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ यह हैं - तुम ऐसी कोई चीज़ हर्गिज़ नहीं पढ़ सकते जो इस सूर- फ़-लक़ से ज़्यादा अल्लाह के नज़दीक पहुँचने वाली यानी मक़बूल हो।

6. एक और हदीस में है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - क्या तुम ने इन आयतों को नहीं देखा जो आज रात ही नाज़िल हुयी है? तुम इन से बेहतर आयतें हर्गिज़ नहीं पा सकते - सूरः फ़-लक़ और सूरः नास

★ ★ ★

पाँचवाँ बाब

वह दुआ़एं जो किसी ख़ास समय और ख़ास वजह के साथ मख़्सूस नहीं हैं

★ नीचे लिखी गयी हर प्रकार की छोटी-बड़ी दुआ़यें, इस्तिग़फ़ार वग़ैरह और उन के तर्जुमे कुल या जितने हो सकें याद कर लें और नमाज़ों के बाद ख़ास कर फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद और किसी दुआ़ करने के मौक़े पर जितना समय हो, इन को ज़रूर पढ़ लिया करें – इन्शाअल्लाह! यह सब दुआ़यें ज़रूर क़बूल होंगी ।

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ وَ
الْمَغْرَمِ وَالْمَأْثَمِ. اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَ
فِتْنَةِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغِنٰى وَشَرِّ
فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ. اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ
خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِيْ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى
الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا
بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ.

1. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् अ़ज्ज़ि वल् क-स्लि वल्जुब्नि वल्-ह-रमि वल् मग़्-रमि वल् मा-समि+अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अ़ज़ाबिन्नारि वफ़ित्-नतिन्नारि वफ़ित्-नतिल् क़ब्रि व-अ़ज़ाबिल् क़ब्रि व-शर्रि फ़ित्-नतिल् ग़िना व-शर्रि फ़ित्-नतिल् फ़क़्रि वमिन् शर्रि फ़ित्-नतिल् मसीहिद्दज्जालि+

अल्लाहुम्मग़् सिल् ख़ताया-य बि माई वस्सल्जि वल्-ब-रदि व-नक़्क़ि क़ल्बी मि-नल् ख़ताया कमा यु-नक़्क़ स्सौबुल् अब्-यज़ु मि-नद्द-नसि वबाअ़िद् बैनी वबै-न ख़ताया-य कमा बा-अ़त्त बै-नल् मशरिक़ि वल् मग़रिबि+

तर्जुमा -" ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ आजिज़ी से, काहिली से, बुज़दिली से, हद से ज़्यादा बुढ़ापे से, क़र्ज़ (या तावान) से, और (हर प्रकार के) गुनाह से+ ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ जहन्नम के अ़ज़ाब से, और (जहन्नुम की) आग के फ़ितने से, और क़ब्र के फ़ितने से, और क़ब्र के अ़ज़ाब से, और मालदारी के फ़ितने की बुराई से, और तन्गहाली के फ़ितने की बुराई से, और काने दज्जाल के फ़ितने की बुराई से+

ऐ अल्लाह! तू मेरी ख़ताओं को बर्फ़ से, ओलों के पानी से धो दे और मेरे दिल को (हर प्रकार की) ख़ताओं से ऐसे पाक कर दे जैसे सफ़ेद कपड़े को मैल-कुचैल से पाक-साफ़ किया जाता है, और मेरे और मेरी ख़ताओं के दर्मियान इतनी दूरी कर दे जितनी दूरी तूने पूरब और पश्चिम के दर्मियान रखी है।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ

وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ،

2. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् अ़जज़ि वल् क-सलि वल् जुब्नि वल्-ह-रमि, व-अऊज़ुबि-क मिन् फ़ित्-नतिल् मह्या वल् ममाति+

तर्जुमा -" ऐ अल्लाह! मैं आजिज़ी से और काहिली से और बुज़ दिली से और हद से ज़्यादा बुढ़ापे से पनाह माँगता हूँ। और तेरी ही पनाह लेता हूँ क़ब्र के अ़ज़ाब से, और तेरी ही पनाह लेता हूँ ज़िन्दगी और मौत के हर फ़ितने से।"

★ बाज़ रिवायतों में इस दुआ़ के साथ नीचे की भी दुआ़ अल्फ़ाज़ की कमी और बेशी के साथ आयी है)

وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْقَسْوَةِ وَالْغَفْلَةِ وَالْعَيْلَةِ وَالذِّلَّةِ وَالْمَسْكَنَةِ،
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْكُفْرِ وَالْفُسُوْقِ وَالشِّقَاقِ وَالسُّمْعَةِ
وَالرِّيَاءِ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الصَّمَمِ وَالْبَكَمِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَ
سَيِّئِ الْاَسْقَامِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ،

व-अऊज़ुबि-क मि-नल् क़स्-वति, वल् ग़फ़्-लति, वल् अ़ै-लति, वज़्ज़िल्लति, वल् मस्-क-नति व-अऊज़ुबि -क मि-नल् फ़क़्रि, वल् कुफ़रि, वल् फ़ुसूक़ि, वशिशक़ाक़ि, वस्सुम्-अ़ति, वर्रिया -इ+ व-अऊज़ुबि-क मि-नस्स- ममि वल् ब-कमि, वल् जुनूनि वल् जुज़ामि, वसय्यइल् अस्क़ामि, व-ज़-लइद्दैनि+

तर्जुमा -"और मैं पनाह माँगता हूँ सख़्त दिली से, ग़फ़्लत (और लापर्वाही) से, मुहताजी से, ज़िल्लत (और रुसवाई) से, ख़्वारी से + और मैं पनाह लेता हूँ फ़क़्र से, कुफ़्र से, बदकारी से, परस्पर झगड़ा (फ़साद) से और (लोगों के) सुनावे और दिखावे

(की ख़्वाहिश) से+ और तुझ ही से पनाह माँगता हूँ बहरे पन से, गूँगे पन से और पागल पन से, और कोढ़ से, और ख़तरनाक बीमारियों से, और क़र्ज़ के ग़लबे (और बोझ) से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَ
الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ۔

3. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् हम्मि, वल् हुज़्नि वल्-अ़ज्ज़ि, वल्कसलि, वल् बुख़्लि, वल् जुब्नि, व-ज़-लअिद्दैनि, व-ग़-ल-बतिर्रि जालि+

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ फ़िक्र (परेशानी) से, रन्ज-ग़म से, आजिज़ी से, काहिली से, कन्जूसी से, बुज़दिली से, क़र्ज़ के बोझ से और (ज़बर्दस्त) लोगों के ग़लबे (और वबाल) से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنْ اَنْ اُرَدَّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ۔

4. इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् बुख़्लि, व-अऊज़ुबि-क मि-नल् जुब्नि, व-अऊज़ुबि-क मिन् अन् उ-रद्द इला अर्-ज़लिल् अुमरि, व-अऊज़ुबि-क मिन् फ़ित्-नतिद्दुन्या, व-अऊज़ुबि-क मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि+

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ कन्जूसी से, और पनाह माँगता हूँ इससे कि उम्र के नाकारा हिस्सा को पहुँचू, और पनाह माँगता हूँ दुनिया के हर फ़ितने से, और पनाह माँगता हूँ क़ब्र के अज़ाब से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَالْهَرَمِ
وَعَذَابِ الْقَبْرِ اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِىْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَيْرُ
مَنْ زَكّٰهَا اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ
وَمِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَمِنْ نَّفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَّا يُسْتَجَابُ لَهَا

5. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् अजज़ि, वल् कसलि, वल् जुब्नि, वल् बुख़्लि, वल् ह-रमि व-अज़ाबिल् क़ब्रि+अल्लाहुम्म आति नफ़्सी तक़्वा हा, व-ज़क्किहा अन्-त ख़ैरु मन् ज़क्काहा, अन्-त वलिय्युहा व मौलाहा+अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अ़िल्मिन् ला यन्-फ़अु, वमिन् क़ल्बिन् ला यख़्-शअु, वमिन् नफ़्सिन् ला तश्-बअु, वमिन् दअ़्-वतिन् ला युस्-तजाबु लहा+

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ ही से पनाह माँगता हूँ आ़जिज़ी, काहिली, बुज़दिली, कन्जूसी बुरे बुढ़ापे से और क़ब्र के अ़ज़ाब से + ऐ अल्लाह! तू मेरे नफ़्स को परहेज़गारी अ़ता कर दे और तू उस को पाक-साफ़ कर दे+ तू ही उस को बेहतरीन पाक-साफ़ करने वाला है, तू ही उस का मालिक और आक़ा है। ऐ अल्लाह! मैं पनाह माँगता हूँ उस ज्ञान से जो (दीन और दुनिया में) नफ़ा न दे, और उस दिल से जो (तुझ से) न डरता हो, और उस (लालची) नफ़्स से जो कभी आसूदा न हो, और उस दुआ़ से जो क़बूल न हो।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَسُوْٓءِ الْعُمُرِ وَفِتْنَةِ الصَّدْرِ
وَعَذَابِ الْقَبْرِ

6. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् बुख़्लि वसूइल्

अ़म्रि वफ़ित्-नतिस्सद्रि व-अ़ज़ाबिल् क़ब्रि+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ बख़ीली से, बुरी उम्र से, नफ़्स के हर फ़ितने से, और क़ब्र के अज़ाब से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِعِزَّتِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَنْ تُضِلَّنِیْ اَنْتَ
الْحَیُّ الَّذِیْ لَا یَمُوْتُ وَالْجِنُّ وَالْاِنْسُ یَمُوْتُوْنَ۔

7. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिइज़्ज़ति-क, लाइला-ह इल्ला अन्-त अन् तुज़िल्लनी, अन्-तल् हय्युल्लज़ी ला यमूतु वल्जिन्नु वल् इन्सु यमूतू-न

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तेरे ग़लबे और क़ुदरत की पनाह लेता हूँ, तेरे अ़लावा कोई माबूद नहीं, इस बात से कि तू मुझे गुमराह कर दे। तू ही वह (हमेशा-हमेशा) ज़िन्दा रहने वाला है जिस के लिये मरना नहीं, और तमाम जिन्नात और इन्सान ज़रूर मरेंगे।"

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَآءِ وَدَرْكِ الشَّقَآءِ وَسُوْٓءِ
الْقَضَآءِ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَآءِ۔

8. अल्लाहुम्म इन्ना नऊ़ज़ुबि-क मिन् जहदिल् बलाइ, व-दर्किश्शक़ाइ, वसूइल् क़ज़ाइ, व-शमा-ततिल् अअ़्दाइ

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! बेशक हम तुझ से पनाह माँगते हैं हर बला (और मुसीबत) की सख़्ती से, और अभाग्य (नहूसत) के घेर लेने से, और बुरे भाग्य से, और दुश्मनों के (हम पर) ख़ुश होने से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ اَعْمَلْ

9. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा अमिल्तु वमिन् शर्रि मा लम् अअ्-मल्

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैंने (अब तक) जो किया उस की बुराई से और जो नहीं किया उस की भी बुराई से तेरी पनाह माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ اَعْمَلْ

10. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा अलिम्तु वमिन् शर्रि मा लम् अअ्-लम्

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! जो मैं जानता हूँ (कि मैंने किया है) उस की बुराई से भी पनाह माँगता हूँ, और जो मैं नहीं जानता उस की बुराई से भी पनाह माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَ
فُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَجَمِيْعِ سَخَطِكَ۔

11. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् ज़वालि नेअ्-मति-क व-त-हव्वुलि आफ़ि-यति-क वफ़ु जा-अति निक़्-मति -क व-जमीअ़ि स-ख़्ति-क

तर्जुमा .-"ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ तेरी (दी हुयी हर) नेमत के ख़त्म हो जाने से और तेरी (दी हुयी) तन्दुरुस्ती और अन व चैन के बदलाव से, और तेरी अचानक पकड़ से, और तेरी तमाम नाराज़गी (और हर गुस्सा) से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِیْ وَمِنْ شَرِّ بَصَرِیْ وَمِنْ
شَرِّ لِسَانِیْ وَمِنْ شَرِّ قَلْبِیْ وَمِنْ شَرِّ مَنِيِّیْ۔

12. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन शर्रि सम्ओ वमिन् शर्रि ब-सरी वमिन् शर्रि लिसानी वमिन् शर्रि क़ल्बी वमिन् शर्रि मनिय्यती

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ अपने कानों की बुराई से, अपनी आँखों की बुराई से, अपनी ज़बान की बुराई से, अपने दिल की बुराई से, अपनी मनी (यानी वीर्य की ख़्वाहिश) की बुराई से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْفَاقَةِ وَالذِّلَّةِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ۔

13. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् फ़क़्रि वल् फ़ा-क़ति वज़्ज़िल्लति व-अऊज़ुबि-क मिन् अन् अज़्लि-म औ उज़्-ल-म

तर्जुमा –"ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ फ़क़ीरी, मुहताजी, ज़िल्लत-रुसवाई से, और तेरी पनाह लेता हूँ इससे कि मैं (किसी पर) अत्याचार करूँ या मुझ पर अत्याचार किया जाये (यानी कोई मुझ पर अत्याचार करे)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ التَّرَدِّیْ وَ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ وَالْهَرَمِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ يَّتَخَبَّطَنِیَ الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِيْلِكَ مُدْبِرًا وَّاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَمُوْتَ لَدِيْغًا۔

14. अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् हदमि, व-अऊज़ुबि-क मि-नत्त-रद्दी, व-अऊज़ुबि-क मि-नल् ग़रक़ि,

वल्-हर्कि, वल्-ह-र-मि+ व-अऊज़ुबि-क मिन अय्य-त-ख़ब्-ब-त् निश्शैतानु ज़िन्-दल् मौति, व- अऊज़ुबि-क मिन् अन् अमू-त फ़ी सबीलि-क मुद्बि-रन्, व-अऊज़ुबि-क मिन् अन् अमू-त लदी-ग़न्

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ (किसी मकान वग़ैरह के नीचे) दब कर मरने से, और तुझ से पनाह माँगता हूँ (किसी ऊँचे स्थान से) गिर कर मरने से और पनाह माँगता हूँ डूब कर मरने से, जल कर मरने से और हद से ज़्यादा बुढ़ापे से और इस से पनाह माँगता हूँ कि तेरी राह में (जंग से) पीठ फेर कर भागता हुआ मरूँ। और इस से पनाह माँगता हूँ कि साँप-बिच्छु के काटे से मरूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ مُّنْكَرَاتِ الْاَخْلَاقِ وَالْاَعْمَالِ
وَالْاَهْوَاءِ وَالْاَدْوَاءِ۔

15. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् मुन्-करातेल् अख़्लाकि़ वल् अअ्मालि वल्अह्वाई वल्-अद्वाइ

तर्जुमा -"ऐअल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बुरे अख़्लाक़, बुरे आमाल, बुरी ख़्वाहिश और बुरे मर्ज़ से (तू मुझे इन सब से बचा ले)

16. अल्लाहुम्म इन्ना नंस्-अलु-क मिन ख़ैरि मा स-अ-ल-क मिन्हु नबिय्यु-क मु-हम्मदुन् सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्ल-म, व-नऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मस्-तआ-ज़ मिन्हु नबिय्यु-क मु-हम्मदुन् सल्लल्लाहु अलैहि व-सल्ल -म, व-अन्-तल् मुस-तआनु व-अले-कल् बलाग़ु, वला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहि+

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! हम तुझ से हर वह भलाई माँगते हैं जो तेरे प्यारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुझ से माँगी है, और हर उस चीज़ से पनाह माँगते हैं जिस से तेरे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने माँगी है, तू ही मददगार है और तेरे ही ऊपर (हमें मक्सूद तक) पहुँचना है, और कोई भी ताक़त और कुव्वत अल्लाह के सिवा (हासिल) नहीं।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ جَارِ السُّوْءِ فِیْ دَارِ الْمُقَامَةِ فَاِنَّ جَارَ الْبَادِیَةِ یَتَحَوَّلُ۔

17. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन जारिस्सूइ फी दारिल् मुक़ा-मति फ़इन्न जा-रल् बादि-यति य-त-हव्वलु

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से वतन में बुरे पड़ोसी होने से पनाह माँगता हूँ, इसलिये कि सफ़र का साथी तो बदल ही जाता है (जुदा हो जाता है)

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الْكُفْرِ وَالدَّیْنِ

18. अऊज़ुबिल्लाहि मि-नल् कुफ़्रि वद्दैनि

तर्जुमा - "मैं कुफ़्र और क़र्ज़ से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الْعَدُوِّ
وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَاءِ۔

19. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् ग़-ल-बतिद्दैनि व-ग़-ल-बतिल् अदूव्वि व-शमा-ततिल् आअ्दाई

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं कर्ज़ के बोझ, दुश्मन के दबाव और दुश्मनों की हंसी से तेरी पनाह चाहता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَقَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَ
دُعَاءٍ لَّا يُسْمَعُ وَنَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَ(فِىْ رِوَايَةٍ) وَمِنَ الْجُوْعِ
فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِيْعُ (وَفِىْ رِوَايَةٍ) وَمِنَ الْخِيَانَةِ فَبِئْسَتِ
الْبِطَانَةُ وَمِنَ الْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَمِنَ الْهَرَمِ وَمِنْ اَنْ
اُرَدَّ اِلٰى اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَ
فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ

20. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् इल्मिन ला यनफ़ाअु, व-क़ल्बिन् ला यख़्शअु, वदुआइन् ला युसमाअु, व-नफ़्सिन् ला तशबअु, (वफ़ीरिवायतीन) वमि-नल् जूअि, फ़इन्नहू बे-सज्ज़ जीअु, (वफ़ीरिवायतिन) वमि-नल् ख़िया-नति फ़बे-सतिल् बिता-नतु, वमि-नल् कसलि, वल् बुख़्लि, वल् जुब्नि, वमि-नल् ह-रमि, वमिन् अन् उ-रद्द इला अर्-ज़लिल अुमरि, वमिन् फ़ित्-नतिद्दज्जालि, व-अज़ाबिल् क़ब्रि, वफ़ित्-नतिल् महया वल् ममाति+

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस ज्ञान से जो नफ़ा न दे, उस दिल से जिस में तेरा डर न हो, उस दुआ से (जो तेरे दरबार में) सुनी न जाये, उस (लालची) नफ़्स से जो

कभी आसूदा न हो। और उस भूख से कि जो बहुत बुरा साथी है, और ख़ियानत से कि वह बहुत बुरा दोस्त है, और काहिली, बख़ीली, बुज़दिली, हद से ज़्यादा बुढ़ापे से, इस उम्र से कि मैं सब से ज़लील हिस्सा को पहुँचूँ, दज्जाल के फ़ितने से, क़ब्र के अज़ाब से और ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُكَ عَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَمُنْجِيَاتِ اَمْرِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म इन्ना नस्-अलु-क अज़ाइ-म मग़फ़ि-रति-क वमुन्जियाति अम्रि-क, वस्सला-म-त मिन् कुल्लि इस्मिन्, वल्-ग़नी-म-त मिन् कुल्लि बिर्रिन् वल् फ़ौ-ज़ बिल्-जन्नति वन्नजाति मि-नन्नारि+

तर्जुमा – ऐ अल्लाह! हम तुझ से सवाल करते हैं तेरी मग़फ़िरत के पक्के साधनों का, और तेरे हर हुक्म से मुक्त करने वाले कामों का, और हर गुनाह से सलामती का, हर नेक काम की ग़नीमत का, जन्नत नसीब होने और जहन्नुम से नजात पाने का।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ

21. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क इ़ल्-मन् नाफ़ि-अन् व-अऊज़ुबि-क मिन् इ़ल्मिन् ला यन्-फ़उ़

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नफ़ा पहुँचाने वाले ज्ञान का प्रश्न करता हूँ और लाभ न पहुँचाने वाले ज्ञान से पनाह माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَعَمَلٍ لَّا يُرْفَعُ وَ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَقَوْلٍ لَّا يُسْمَعُ۔

22) अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अिल्मिल्ला यन्-फ़अु व-अ़-मलिल्ला युर-फ़अु व-क़ल्बिल्ला यख़्-शअु वक़ौलिल्ला युस्-मअु

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ उस इल्म से जो नफ़ा न पहुँचाये, और उस अ़मल से जो (तेरे दरबार में) क़ुबूल न हो, और उस दिल से जिस में तेरा डर न हो, और उस बात से जो सुनी न जाये।"

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ اَنْ نَّرْجِعَ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا اَوْ نُفْتَنَ عَنْ دِيْنِنَا

23. अल्लाहुम्म इन्ना नऊज़ुबि-क अन्नर् जि-अ़ अ़ला अअ़्क़ाबिना औ नुफ़्-त-न अ़न् दीनिना

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह चाहते हैं इस से कि हम उल्टे पाँव (अपनी पहली हालत पर) लौट जायें, या हम अपने दीन के बारे में किसी फ़ितने के अन्दर डाल दिये जायें।"

نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ عَذَابِ النَّارِ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ۔

24. नऊज़ुबिल्लाहि मिन् अ़ज़ाबिन्नारि, नऊज़ुबिल्लाहि मि-नल् फ़ि-तनि मा ज़-ह-र मिन्हा वमा ब-त-न, नऊज़ु बिल्लाहि मिन् फ़ित्-नतिद्दज्जालि

तर्जुमा -"हम अल्लाह की पनाह लेते हैं जहन्नुम के अ़ज़ाब से, हम अल्लाह से पनाह चाहते हैं (हर प्रकार के)

फ़ितनों से, उन में से ज़ाहिर हों और जो उन में से पोशीदा हों, और हम अल्लाह की पनाह लेते हैं दज्जाल के फ़ितने से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا یَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَّا یَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ دُعَاءٍ لَّا یُسْمَعُ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هٰؤُلَاءِ الْاَرْبَعِ۔

25. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् अिलमिल्ला यन्-फ़अु, वमिन् क़ल्बिल्ला यख़्-शअु, वमिन् नफ़्सिल्ला तश्-बअु, वमिन् दुआइल्ला युस्-मअु+अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् हाउलाइल् अर्-बअि

तर्जुमा –"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ उस इल्म से जो नफ़ा न दे, उस दिल से जिस में आजिज़ी न हो, और उस दुआ से जो (तेरे दर्बार में) सुनी न जाये, और उस (लालची) नफ़्स से जिस का कभी पेट न भरे। ऐ अल्लाह! मैं इन चारों (आफ़तों) से तेरी पनाह माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَخَطَایَ وَعَمَدِیْ

26. अल्लाहुम्मग् फ़िर् ली ज़ुनूबी व-ख़-तई व-अ-मदी

तर्जुमा –"ऐ अल्लाह! तू मेरे तमाम गुनाह बख़्श दे, बिला इरादा किये हुये भी और जानबूझ कर किये हुये भी।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ دُعَاءٍ لَّا یُسْمَعُ وَقَلْبٍ لَّا یَخْشَعُ وَنَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ۔

27. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् दुआइल्ला युस्-मअु

व-क़ल्बिल्ला यख़्-शअु व-नफ़्सिल्ला तश-बअु

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह लेता हूँ उस दुआ से जो (तेरे दरबार में) सुनी न जाये, और उस दिल से जिस में (तेरा) डर और ख़ौफ़ न हो और उस (लालची) नफ़्स से जो कभी आसूदा न हो।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَفِتْنَةِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

28. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् क-सलि वल् ह-रमि वफ़ित्-नतिस्सद्‌रि व-अ़ज़ाबिल् क़ब्‌रि

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! बेशक तू मुझे पनाह दे, और हम से बढ़े हुये बढ़ापे से और सीने के फ़ितनों से, और क़ब्र के अ़ज़ाब से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ يَوْمِ السُّوْءِ وَمِنْ لَيْلَةِ السُّوْءِ وَمِنْ
سَاعَةِ السُّوْءِ وَمِنْ جَارِ السُّوْءِ فِیْ دَارِ الْمُقَامَةِ

29. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिंय्यौमिस्सूइ वमिन् लै-लतिस्सूइ वमिन् सा-अ़तिस्सूइ वमिन् जारिस्सूइ फ़ी दारिल् मुक़ा-मति

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! बेशक मैं तेरी पनाह लेता हूँ बुरे दिन से, बुरी रात से, बुरी घड़ी से, और वतन के बुरे पड़ोसी से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَسَيِّئِ الْاَسْقَامِ

30. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् ब-रसि वल्जुनूनि वल् जुज़ामि व-सय्यिइल् अस्क़ामि

तर्जुमा –"ऐ अल्लाह! तू मुझे ब-रस (सफ़ेद दाग़) से, पागल पन से और कोढ़ से, और तमाम बुरी (और घातक) बीमारियों से सुरक्षित रख ले।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْٓءِ الْاَخْلَاقِ

31. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नश्शिक़ाक़ि वन्निफ़ाक़ि वसूइल् अख़्-लाक़ि

तर्जुमा –"ऐ अल्लाह! तू मुझे पनाह दे (परस्पर के) झगड़े (और फ़साद) से, और मुनाफ़िक़त से और तमाम बुरे (और ज़लील) अख़्लाक़ से।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِيْعُ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخِيَانَةِ فَاِنَّهَا بِئْسَتِ الْبِطَانَةُ۔

32. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् जूअि फ़इन्नहू बिए-सज़्ज़जीअु, व-अऊज़ुबि-क मि-नल् ख़िया-नति फ़इन्नहा बे-सतिल् बिता-नतु

तर्जुमा –"ऐ अल्लाह! तू मुझे पनाह दे भूख (प्यास) से इसलिये कि यह बहुत बुरा साथी है, और तू मुझे पनाह दे ख़ियानत से इसलिये कि यह बहुत बुरा छुपा हुआ साथी है।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْاَرْبَعِ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ دُعَآءٍ لَّا يُسْمَعُ۔

33. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मि-नल् अर-बअि, मिन्‌अिल्‌ मिल्ला यन्-फ़अु वमिन् क़ल्बिल्ला यख़्-शअु, वमिन्

नफ़्सिल्ला तश्-बअु, वमिन् दुआ़ इल्ला युस्-मअु

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू मुझे चार वस्तुओं से अपनी पनाह में ले ले। उस इल्म से जो नफ़ा न दे, उस दिल से जिसमें आजिज़ी न हो और उस दुआ से जो सुनी न जाये।"

▲❋▲❋▲

कुछ और मुख़्तलिफ़ दुआएँ

★ इन दुआओं का भी पढ़ना सुन्नत है। इन में से जितना हो सके अपनी हालत के अनुसार याद कर लेनी चाहिये और गाहे-बगाहे ख़ास कर नमाज़ों के बाद और उन वक़्तों में जिन का बयान दीबाचा (भूमिका) में आ चुका है ज़रूर पढ़नी चाहिये, और अपनी हर ज़रूरत और हाजत अल्लाह से ही माँगनी चाहिये।

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ۔

1. अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फ़िदुनया ह-स-न-तंव्व फ़िल आख़िरति हसन तव्वक़िना अज़ा-बन्नारि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! ऐ हमारे पर्वरदिगार! तू हमें दुनिया में भी अच्छी नेमतें अ़ता फ़रमा और आख़िरत में भी अच्छी नेमतें (अ़ता फ़रमा) और हमें जहन्नुम के अ़ज़ाब से बचाले।"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ خَطِيْٓئَتِيْ وَجَهْلِيْ وَاِسْرَافِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ۔

2. अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली ख़ती-अती, व-जह्ली, वइस्राफ़ी फ़ी अम्री वमा अन्-त अअ्-लमु बिही मिन्नी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू माफ़ कर दे मेरी ख़ताओं को, मेरी नादानियों को, मेरी अपने कामों में लापरवाही को, और उन तमाम बातों को जिन्हें तू मुझ से ज़्यादा जानता है।"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ جِدِّيْ وَهَزْلِيْ وَخَطَئِيْ وَعَمَدِيْ وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ وَفِيْ رِوَايَةٍ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

3. अल्लाहुम्मग़ फ़िर् ली जिद्दी, व-हज़्ली, व-ख़-त-ई, व-अ-मदी, वकुल्ल ज़ालि-क अिन्दी+ (वफ़ीरिवायतीन) अन्-तल् मु-क़द्दिमु व-अन्-तल् मु-अख़्ख़िरु व-अन्-त अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर+

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू मेरे सच-मुच किये हुये काम हँसी-मज़ाक़ में किये हुये, बिला इरादा किये हुये, जान बूझ कर किये हुये तमाम गुनाहों को माफ़ कर दे, और यह सब काम मुझ से हुये हैं। तू ही (अपनी रहमत की तौफ़ीक़ में जिसे चाहे) आगे करने वाला है और तू ही (जिस को चाहे) पीछे डाल देने वाला है, और तू ही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ جِدِّيْ وَهَزْلِيْ وَخَطَئِيْ وَعَمَدِيْ وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ

4. अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली जिद्दी व-हज़्ली व-ख़-त-ई व-अ-मदी वकुल्लु ज़ालि-क अिन्दी

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू मेरे सचमुच किये हुये, हँसी-मज़ाक़ में किये हुये, बिला इरादा किये हुये और जान बूझ कर किये हुये,, तमाम गुनाहों को माफ़ कर दे, और यह सब गुनाह के काम मुझ से हुये है।"

اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ عَنِّيْ خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِيْ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِيْ وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ۔

5. अल्लाहुम्मग् सिल् अन्नी ख़ताया-य बिमाइस्सल्जि वल्-ब-रदि व-नक़्क़ि क़ल्बी मि-नल् ख़ताया कमा नक़्क़ै-तस्सौ-बल् अब्-य-ज़ मि-नद्द-नसि वबाअिद् बैनी वबै-न ख़ताया-य कमा बा-अत्त बै-नल् मशरिक़ि वल् मग़रिबि+

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू मुझ से मेरी ख़ताओं को बर्फ़ और ओलों के (साफ़ और ठन्डे) पानी से धो डाल, और तू मेरे दिल को ख़ताओं से इस प्रकार पाक-साफ़ कर दे, जैसे तू सफ़ेद उजले कपड़े को मैल-कुचैल से पाक-साफ़ कर देता है। और तू मेरी ख़ताओं के दर्मियान ऐसी दूरी कर दे जैसा तू ने पूरब और पश्चिम के दर्मियान दूरी कर रखी है।"

اَللّٰهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوْبِ صَرِّفْ قُلُوْبَنَا عَلٰى طَاعَتِكَ

6. अल्लाहुम्म मु-सर्रि-फ़ल् कुलूबि सर्रिफ़ कुलू-बना अ़ला ता-अ़ति-क

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! दिलों को फेर देने वाले! तू हमारे दिलों को अपनी फ़रमाबरदारी पर फेर दे।"

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ وَسَدِّدْنِيْ

7. अल्लाहुम्मह् दिनी व-सद्दिदनी

तर्जुमा -"या अल्लाह! तू मुझे हिदायत दे और मेरे क़दम को जमा दे।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْۤ اَسْاَلُكَ الْهُدٰى وَالسَّدَادَ

8. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् हिदा-य-त वस्सिदा-द

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से (दीन के कामों में)

हिदायत और (दुनिया के कामों में) किफ़ायत माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْهُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰی

9. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् हुदा वत्तुका वल्-अफ़ा-फ़ वल्ग़िना

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हिदायत, परहेज़गारी, पारसाई और (मख़्लूक़ से) बेनियाज़ी का सवाल करता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ

الَّتِیْ فِیْهَا مَعَاشِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ اٰخِرَتِیَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ وَاجْعَلِ

الْحَیٰوةَ زِیَادَةً لِّیْ فِیْ كُلِّ خَیْرٍ وَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّیْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ

10. अल्लाहुम्म अस्लिह् ली दीनीयल्लज़ी हु-व अिस्-मतु अम्री व-अस्लिह् ली दुन्या-यल्लती फ़ीहा मआशी, व-अस्लिह ली आख़ि-रतिल्लती फ़ीहा मआदी, वज्- अलिल् हया-त ज़िया-द-तल्ली फ़ी कुल्लि ख़ैरिन्, वज्- अलिल् मौ-त रा-ह-तन ली मिन् कुल्लि शर्रिन्

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू मेरे दीन को दुरुस्त कर दे जो मेरे हर काम की हिफ़ाज़त का ज़रीया है, और मेरी दुनिया को दुरुस्त कर दे जिस में मुझे ज़िन्दगी गुज़ारनी है, मेरी आख़िरत को दुरुस्त कर दे जहाँ मुझे लौट कर जाना है, मेरी ज़िन्दगी को हर अच्छे कार्य में ज़्यादती का ज़रीया बना दे, और मौत को मेरे लिये हर बुराई से नजात का ज़रीआ बना दे।"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ وَارْحَمْنِیْ وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ وَاهْدِنِیْ

11. अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली वर्-हम्नी वआफ़िनी वर्ज़ुक्नी वह्दिनी

तर्जुमा – "इलाही तू मुझे बख़्श दे, मुझ पर रहम फ़रमा, मुझे (तन्दुरुस्ती और) आफ़ियत दे, मुझे (हलाल) रोज़ी दे और मुझे हिदायत दे।"

رَبِّ أَعِنِّي وَلَا تُعِنْ عَلَيَّ، وَانْصُرْنِي وَلَا تَنْصُرْ عَلَيَّ، وَامْكُرْ لِي وَلَا
تَمْكُرْ عَلَيَّ، وَاهْدِنِي وَيَسِّرِ الْهُدٰى لِي، وَانْصُرْنِي عَلٰى مَنْ بَغٰى عَلَيَّ،
رَبِّ اجْعَلْنِي لَكَ ذَكَّارًا، لَكَ شَكَّارًا، لَكَ رَهَّابًا، لَكَ مِطْوَاعًا، لَكَ
مُطِيعًا، إِلَيْكَ مُخْبِتًا، إِلَيْكَ أَوَّاهًا مُنِيبًا، رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِي وَاغْسِلْ
حَوْبَتِي وَأَجِبْ دَعْوَتِي وَثَبِّتْ حُجَّتِي وَسَدِّدْ لِسَانِي، وَاهْدِ
قَلْبِي وَاسْلُلْ سَخِيمَةَ صَدْرِي۔

12. रब्बि अअ़िन्नी वला तुअ़िन् अ़-लय्य, वन्सुरनी वला तन्सुर् अ़-लय्य, वम्कुर ली वला तम्कुर् अ़-लय्य वह्दिनी व-यस्सिरिल् हुदा ली, वन्सुरनी अ़ला मन् बग़ा अ़-लय्य +रब्बिज्-अ़ल्नी ल-क ज़क्कारा, ल-क शक्कारा, ल-क रह्हाबा, ल-क मित्वाआ़, ल-क मुतीआ़, इले-क मुख़्बितन, इले-क अव्वा-हम्मुनीबा+रब्बि त-क़ब्बल् तौ-बती, वग़्सिल् हौ-बती, व-अजिब् दअ़्-वती, व-सब्बित् हुज्जती, व-सदिद् लिसानी, वह्दि क़ल्बी, वस्लुल् सख़ी-म-त सद्री+

तर्जुमा – "ऐ मेरे पालनहार! तू मेरी मदद कर, मेरे ख़िलाफ़ किसी और की मदद न कर। मुझे कामियाब बना दे और मेरे ऊपर किसी को कामियाब न कर। मेरे हक़ में ग़ौर फ़रमा और मेरे ऊपर किसी की तदबीर को कारगर न फ़रमा। मुझे हिदायत दे और हिदायत (पर बाक़ी रहने को) मेरे लिये आसान कर दे। जो मुझ पर अत्याचार करे उस के मुक़ाबले में मेरी सहायता फ़रमा। ऐ मेरे

मौला! तू मुझे ज़्यादा से ज़्यादा अपना ज़िक्र करने वाला, अपना ही शुक्र करने वाला, अपने ही से डरने वाला, अपना फ़रमांबरदार, अपना ही इताअ़त करने वाला, तुझ से बहुत आजिज़ी करने वाला, तेरे ही सामने रोने वाला और (अपनी ही तरफ़) लौटने वाला बना दे।

ऐ मेरे रब! तू मेरी तौबा को क़बूल फ़रमा ले, मेरे गुनाहों को धो दे, मेरी (इस) दुआ़ को क़बूल फ़रमा, मेरी (नजात की) दलील पर मुझे क़ायम रख, मेरी ज़बान को दुरुस्त कर दे और मेरे दिल को हिदायत दे और मेरे सीने के खोट को निकाल फेंक।"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَارْضَ عَنَّا وَتَقَبَّلْ مِنَّا وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَنَجِّنَا مِنَ النَّارِ وَاَصْلِحْ لَنَا شَأْنَنَا كُلَّهٗ۔

13. अल्लाहुम्मग़् फ़िर् लना वर्-हम्ना वर्-ज़ अ़न्ना व-त-क़ब्बल् मिन्ना व-अद्ख़िल्-नल् जन्न-त व-नज्जिना मि-नन्नारि व-अस्लिह् लना शा-नना कुल्लहू

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू मुझे माफ़ कर दे, हम पर रहम फ़रमा, हम से राज़ी हो जा, (हमारी बन्दगी) क़बूल फ़रमा, हमें जन्नत में दाख़िल फ़रमा, हमें दोज़ख़ से नजात दे और हमारे सारे काम दुरुस्त कर दे।"

اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِنَا وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِنَا وَاهْدِنَا سُبُلَ السَّلَامِ وَنَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ وَجَنِّبْنَا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَبَارِكْ لَنَا فِيْ اَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُلُوْبِنَا وَاَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ

الرَّحِيْمُ وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا قَابِلِيْهَا وَاَتِمَّهَا عَلَيْنَا.

14. अल्लाहुम्म अल्लिफ़ बै-न क़ुलूबिना, व-असलिह ज़ा-त बैनिना, वहदिना सुबु-लस्सलामि, व-नज्जिना मि- नज़्ज़ुलुमाति इ-लन्नूरि, व-जन्निब्-नल् फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा वमा ब-त-न, वबारिक् लना फ़ी अस्माअिना, व-अब्सा रिना, वकुलूबिना, व-अज़्वाजिना, वज़ुर्रीयातिना, वतुब् अ़लै ना, इन्न-क अन्-तत्तव्वाबुर्रहीमु, वज्-अ़ल्ना शाकिरी-न लिनेअ्-मति-क मुस्नी-न बिहा क़ाबि लीहा, व-अतिम्महा अ़लैना

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह! तू हमारे दिलों में परस्पर मुहब्बत पैदा कर दे, हमारे आसपास के मामलात (और संबन्ध) दुरुस्त कर दे, हम को सलामती की राहों की हिदायत फ़रमा, हम को (कुफ्र और गुमराही की) तारीकियों से (ईमान की) रोशनी की तरफ नजात दे, हम को खुली और छुपी बदकारियों से दूर रख, हमारे कानों को, हमारी आँखों को, हमारे दिलों को, हमारे बीवी-बच्चों को, हमारे हक़ में बर्कत बना दे और हमारी दुआ को क़बूल फ़रमा ले, बेशक तू ही बड़ा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है। और हमें अपनी नेमतों का शुक्र अदा करने वाला, और उन का अहल् बना दे, और उन (नेमतों) को हम पर पूरा फ़रमा दे।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الْاَمْرِ، وَاَسْاَلُكَ عَزِيْمَةَ الرُّشْدِ وَاَسْاَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ، وَاَسْاَلُكَ لِسَانًا صَادِقًا، وَقَلْبًا سَلِيْمًا، وَخُلُقًا مُسْتَقِيْمًا، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ وَاَسْاَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ مِمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ

اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ۔

15. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कस्सबा-त फ़िल् अम्रि, व-अस्-अलु-क अज़ी-म-तर्रुश्दि, व-अस्-अलु-क शुक्-नेअ्-मति-क, वहुस्-न अ़िबा-दति-क, व-अस्- अलु-क लिसा-नन् सादि-क़न्, क़ल्-बन् सली-मन्, वख़ुलु-क़न् मुस्-तक़ी-मन्, व-अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा तअ्-लमु, व-अस्-अलु-क मिन ख़ैरि मा तअ्-लमु, व-अस्-तग़्फ़िरु-क मिम्मा तअ्-लमु, इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल् ग़ुयूबि+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हर (दीन के) काम में जमे रहने का सवाल करता हूँ, और मैं तुझ से पक्की सच्ची नेकी के कार्य करने का प्रश्न करता हूँ, और तेरी नेमतों का शुक्र अदा करने (की तौफ़ीक़) का और तेरी (अच्छी तरह) इबादत करने का सवाल करता हूँ, और मैं तुझ से सच्ची ज़बान, बेदाग़ और दुरुस्त अख़्लाक़ का सवाल करता हूँ, और मैं तुझ से हर उस चीज़ की बुराई से जिस को तू ही जानता है पनाह चाहता हूँ, और हर उस चीज़ की भलाई से जिसको तू ही जानता है सवाल करता हूँ, और हर उस चीज़ से जिस को तू ही जानता है माफ़ी माँगता हूँ, बेशक तू ही तमाम ग़ैब की बातों का बहुत बड़ा जानने वाला है।"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ

وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ۔

16. अल्लाहुम्मग़ फ़िर्ली मा क़द्दमतु वमा अख़्ख़र्तु वमा अस्-रर्तु वमा अअ्-लन्तु वमा अन्-त अअ्-लमु बिही मिन्नी, लाइला-ह इल्ला अन्-त

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मेरे अगले किये हुये और पिछले किये हुये, छुपा कर किये हुये और खुले तौर पर किये हुये तमाम गुनाह, और वह गुनाह जिनको तू मुझ से ज़्यादा जानता है सब को बख़्श दे, तेरे अ़लावा कोई इबादत के लायक़ नहीं।"

اَللّٰهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُوْلُ بِهٖ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعَاصِيْكَ
وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهٖ جَنَّتَكَ وَمِنَ الْيَقِيْنِ مَا تُهَوِّنُ بِهٖ
عَلَيْنَا مَصَائِبَ الدُّنْيَا وَمَتِّعْنَا بِاَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَا
اَحْيَيْتَنَا وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا وَاجْعَلْ ثَارَنَا عَلٰى مَنْ ظَلَمَنَا وَ
انْصُرْنَا عَلٰى مَنْ عَادَانَا وَلَا تَجْعَلْ مُصِيْبَتَنَا فِيْ دِيْنِنَا وَلَا تَجْعَلِ
الدُّنْيَا اَكْبَرَ هَمِّنَا وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا غَايَةَ رَغْبَتِنَا وَلَا تُسَلِّطْ
عَلَيْنَا مَنْ لَّا يَرْحَمُنَا۔

17. अल्लाहुम्मक़ सिम् लना मिन् ख़श–यति–क मा तहूलु बिही बै–नना वबै–न मआ़सी–क वमिन् ता–अ़ति–क मा तु–बल्लिग़ुना बिही जन्नत–क, वमि–नल् यक़ीनि मा तु–हव्विनु बिही अ़लैना मसाइ–बद्दुन् या, व–मत्तेअ़ना बि–अस्माइना व–अब्सारिना वक़ुव्वतिना मा अह्यै–तना, वज्–अ़ल्हुल् वारि–स मिन्ना वज्–अ़ल् सा–रना अ़ला मन् ज़–ल–मना, वन्सुरना अ़ला मन् आ़–दाना, वला तज्–अ़ल्मुसी–ब–तना फ़ी दीनिना, वला तज्–अ़लिद्दुन्या अक्–ब–र हम्मिना, वला मब्–ल–ग़ अ़िल्मिना, वला ग़ा–य–त रग़्–बतिना, वला तु–सल्लित् अ़लैना मन् ला यर–हमुना+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू हमें अपने डर का इतना हिस्सा देदे जिस से तू हमारे और नाफ़रमानियों के दर्मियान रुकावट हो

जाये, और अपनी फ़र्मांबरदारी का इतना हिस्सा देदे जिस से तूम हमें अपनी जन्नत में पहुँचा दे, और यक़ीन व ईमान का इतना हिस्सा दे दे जिस से तू हमारे ऊपर दुनिया की मुसीबतों का (सहना) आसान कर दे, और जब तक तू हमें ज़िन्दा रखे हमारे कानों से, हमारी आँखों से, हमारी ताक़त से हमें हम को नफ़ा पहुँचा, और उस नफ़े और फ़ाइदे को हमारा वारिस (यानी हमारे मरने के बाद हमारी यादगार) बना दे, और जो हम पर अत्याचार करे उस से हमारा बदला ले, और जो हम से दुश्मनी रखे उस पर हमारी सहायता फ़रमा। और तू हमारी मुसीबत हमारे दीन में मत तजवीज़ कर (यानी हमें दीनी मुसीबत में मत डाल) और तू दुनिया को हमारा सब से बड़ा मक़्सद और हमारे इल्म की मन्ज़िल और रग़्बत की अन्तिम सीमा मत बना, और तू उन लोगों को हम पर हुक्मराँ (शासक) न बना जो हम पर रहम न खायें।

اَللّٰهُمَّ زِدْنَا وَلَا تَنْقُصْنَا وَاَكْرِمْنَا وَلَا تُهِنَّا وَاَعْطِنَا وَلَا تَحْرِمْنَا وَ
اٰثِرْنَا وَلَا تُؤْثِرْ عَلَيْنَا وَاَرْضِنَا وَارْضَ عَنَّا۔

18. अल्लाहुम्म ज़िद्ना वला तन्क़ुस्ना व-अक्रिम्ना वला तुहिन्ना व-अअ्तिना वला तह्रिम्ना वआसिर्ना वला तूसिर अ़लैना वर्ज़िना वर्-ज़ अ़न्ना

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू हमारी नेकियाँ ज़्यादा फ़रमा और कम न फ़रमा, तू हमें इज़्ज़त अ़ता फ़रमा और ज़लील न कर, तू हमें (अपनी नेमतें) अ़ता फ़रमा और महरूम न कर, और तू हमें ही तरजीह दे और हम पर (किसी और को) तरजीह न दे, और तू हम को भी राज़ी कर दे और तू भी हम से राज़ी होजा।"

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِيْ رُشْدِيْ وَاَعِذْنِيْ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ

19. अल्लाहुम्म अल्हिम्नी रुश्दी वा-अअिज्नी मिन् शर्रि नफ़्सी

तर्जुमा – "इलाही तू मेरे दिल में नेकी डाल दे और मेरे नफ़्स की बुराई से मुझे पनाह दे।"

اَللّٰهُمَّ قِنِیْ شَرَّ نَفْسِیْ وَاعْزِمْ لِیْ عَلٰی رُشْدِ اَمْرِیْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ مَآ اَسْرَرْتُ وَمَآ اَعْلَنْتُ وَمَآ اَخْطَأْتُ وَمَا عَمَدْتُّ وَمَا جَهِلْتُ

20. अल्लाहुम्म क़िनी-शर्र नफ़्सी, वअ्ज़िम् ली अ़ला रुश्दि अम्री, अल्लाहुम्मग़ फ़िर् ली मा अस्-रर्तु वमा अअ्-लन्तु वमा अख़्-तअतु वमा अ़-मत्तु वमा जहिल्तु

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मुझे मेरे नफ़्स की बुराई से सुरक्षित रख, और मुझे हर काम में नेकी करने का पक्का इरादा अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! मैंने जो छुपा कर किया और जो खुले तौर पर किया, और जो बिला इरादा किया, और जो जान बूझ कर किया और जो नादानी से किया सब माफ़ कर दे।"

اَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

21. अस्-अलुल्ला-हल् आ़फ़ि-य-त फ़िद्दुन्या वल् आख़ि-रति

तर्जुमा – "मैं अल्लाह से दुनिया और आख़िरत (दोनों) की आफ़ियत चाहता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ وَاَنْ تَغْفِرَ لِیْ وَتَرْحَمَنِیْ وَاِذَآ اَرَدْتَّ بِقَوْمٍ فِتْنَةً فَتَوَفَّنِیْ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ وَاَسْأَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ

وَحُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُ اِلٰى حُبِّكَ۔

22. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क फ़े-लल् ख़ैराति, व-तर्-कल् मुन्-कराति, वहुब्बल् मसाकीनि, व-अन् तग़्फ़िर्ली, व-तर्-हमनी, वइज़ा अ-रद ता बिक़ौमिन् फ़ित्-न-तन् फ़-त-वफ़्फ़नी ग़े-र मफ़्तूनिन, व-अस्- अलु-क हुब्ब-क वहुब्ब मय्युहिब्बु-क वहुब्ब अ़-मलिन् यु-क़र्रिबु इला हुब्बि-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नेक कामों के करने और बुरे कामों को छोड़ने की तौफ़ीक़, और ग़रीबों से मुहब्बत करने की तौफ़ीक़ चाहता हूँ, और यह कि तू मुझे बख़्श दे, और मुझ पर रहम फ़रमा, और यह कि जब तू किसी क़ौम को आज़माइश में डालना चाहे तो मुझ को तू उस आज़माइश में डाले बिना (दुनिया से) उठा लेना, और मैं तुझ से तेरी मुहब्बत और हर उस शख़्स की मुहब्बत जो तुझ से मुहब्बत करता है, और उस अ़मल की मुहब्बत जो तेरी मुहब्बत से क़रीब कर दे माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّكَ وَالْعَمَلَ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ

حُبَّكَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِیْ وَاَهْلِیْ وَالْمَاءِ الْبَارِدِ

23. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क हुब्ब-क वहुब्ब मय्युहिब्बु-क वल्-अ़-म-लल्लज़ी यु-बल्लिग़ुनी हुब्ब-क+अल्लाहुम्मज्-अल् हुब्ब-क अ-हब्ब इ-लय्य मिन्नफ़्सी व-अह्ली वल्माइल् बारिदि+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरी मुहब्बत का सवाल करता हूँ, और हर उस शख़्स की मुहब्बत अ़ता फ़रमा दे जिसकी मुहब्बत तेरे नज़दीक मुझे नफ़ा दे। ऐ अल्लाह! पस जिस तरह तू ने मुझे वह चीज़ें दी हैं जो मैं पसन्द करता हूँ तू (उसी तरह)

उन चीज़ों को उस चीज़ की कुव्वत (का ज़रीया भी) बना दे जो तुझे पसन्द है। और ऐ अल्लाह! जिस तरह तू ने मुझ से उन चीज़ों को दूर रखा है जो मुझे पसन्द हैं तो (उसी तरह) तू मुझे उन चीज़ों में (मसरूफ़ कर के) जो तुझे पसन्द है (उन से) फ़ारिग़ भी बना दे (कि उन का ख़्याल भी न आये)

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يَّنْفَعُنِیْ حُبُّهٗ عِنْدَكَ اَللّٰهُمَّ مَا رَزَقْتَنِیْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ قُوَّةً لِّیْ فِيْمَا تُحِبُّ اَللّٰهُمَّ وَمَا زَوَيْتَ عَنِّیْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ فَرَاغًا لِّیْ فِيْمَا تُحِبُّ

24. अल्लाहुम्मर् ज़ुक्नी हुब्ब-क वहुब्ब मय्यन्-फ़अुनी हुब्बुहू अिन्-द-क, अल्लाहुम्म फ़-कमा र-ज़क्-तनी मिम्मा उहिब्बु, फ़-ज्-अल्हु क़ुव्व-तल्ली फ़ीमा तुहिब्बु, अल्लाहुम्म, वमा ज़वे-त अन्नी मिम्मा उहिब्बु, फ़ज्-अल्हु फ़रा-ग़ल्ली फ़ीमा तुहिब्बु

तर्जुमा -"ऐ अल्लाह तू मुझे अपनी मुहब्बत फ़रमा दे हर उस शख़्स की मुहब्बत अता फ़रमा दे जिसकी मुहब्बत तेरे नज़दीक मुझे नफ़ा दे। ऐ अल्लाह पस जिस तरह तू ने मुझे वह चीज़ें दी है। जो मैं पसन्द करता हूँ तो (इसी प्रकार) उन चीज़ों को उस चीज़ की क़ुव्वत का साधन बना दे जो तुझे पसन्द हो। और ऐ अल्लाह जिस प्रकार तूने मुझे उन चीज़ों से दूर रखा है जो मुझे पसन्द हैं तो (इसी प्रकार) तू मुझे उन चीज़ों में (लगा कर के) जो तुझे पसन्द हैं (उन से) ख़ाली कर दे (ताकि उन का ख़्याल भी न आये)।

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِیْ بِسَمْعِیْ وَبَصَرِیْ وَاجْعَلْهُمَا الْوَارِثَ مِنِّیْ وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ يَّظْلِمُنِیْ وَخُذْ مِنْهُ بِثَارِیْ۔

25. अल्लाहुम्म मत्तेअ् बि-सम्ओ़ी व-ब-सरी वज्-अ़ल्हु-मल् वारि-स मिन्नी वन्सुरनी अ़ला मन् यज़्लिमुनी वख़ुज़् मिन्हु बिसारी +

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुझ को मेरे कानों से और आँखों से (सही) फ़ायदा पहुँचा और उन्हीं दोनों (के फ़ायदों) को मेरी यादगार बना दे, और जो शख़्स मुझ पर अत्याचार करे उस के मुक़ाबले पर मेरी मदद फ़रमा, और उस से मेरा बदला ले।"

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ[26] ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ

26. या मु-क़ल्लि-बल् क़ुलूबि सब्बित् क़ल्बी अ़ला दीनि-क

तर्जुमा - "ऐ दिलों को पलट देने वाले! तू मेरे दिल को अपने दीन पर साबित क़दम रख।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا لَّا يَرْتَدُّ وَنَعِيْمًا لَّا يَنْفَدُ وَ
مُرَافَقَةَ نَبِيِّنَا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ اَعْلٰى دَرَجَةِ الْجَنَّةِ

27. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ईमा-नन् ला यर्-तद्दु व-नओ़ी-मन् ला यन्-फ़दु वमुरा-फ़-क़-त नबिय्यिना सल्लल्लाहु अ़लैहि व-स-ल्ल-म फ़ी अअ़्ला द-र-जतिल् जन्नति जन्नतिल् ख़ुल्दि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से ऐसा ईमान माँगता हूँ जो अपने स्थान से न हटे और ऐसी नेमत माँगता हूँ जो समाप्त न हो, और जन्नत के ऊँचे दर्जे यानी ख़ुल्द की जन्नत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लहि व सल्लम से नज़दीकी की दरख़्वास्त करता हूँ (तू क़बूल फ़रमा)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ صِحَّةً فِیْ اِیْمَانٍ وَّاِیْمَانًا فِیْ حُسْنِ خُلُقٍ وَّنَجَاحًا تُتْبِعُهٗ فَلَاحًا وَّرَحْمَةً مِّنْكَ وَعَافِیَةً وَّمَغْفِرَةً مِّنْكَ وَرِضْوَانًا

28. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क सिह्ह-तन् फ़ी इमानिन, वईमा-नन् फ़ी हुसनि ख़ुलुक़िन् व-नजा-हन् तुतबिअुहू फ़ला-हन् व-रह-म-तन् मिन्-क, व-आफ़ि-य-तंव-मग़फ़ि-र-तम्मिन्-क वरिज़्वा-नन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दीन के साथ स्वास्थ्य का, बेहतरीन अख़्लाक़ के साथ ईमान का, ऐसी कामियाबी का जिस के बाद तू (दोनों दुनिया की) कामियाबी अ़ता फ़रमा। और तेरी ख़ास रहमत और आफ़ियत का और तेरी ख़ास मग़फ़िरत का और तेरी रज़ामन्दी का सवाल करता हूँ (तू पूरा फ़रमा दे)

اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِیْ بِمَا عَلَّمْتَنِیْ وَعَلِّمْنِیْ مَا یَنْفَعُنِیْ وَارْزُقْنِیْ عِلْمًا تَنْفَعُنِیْ بِهٖ

29. अल्लाहुम्मन् फ़अ़नी बिमा अ़ल्लम्-तनी व-अ़ल्लम्नी मा यन्-फ़अ़ुनी वरज़ुक़्नी अ़िल्-मन् तन्-फ़अ़ुनी बिही+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जो ईल्म तू ने मुझे दिया है उस से मुझे नफ़ा भी पहुँचा, और जो ईल्म मुझे नफ़ा दे वह मुझे अ़ता फ़रमा, और मुझे वह ज्ञान दे जिस से तू मुझे नफ़ा पहुँचाये।"

اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِیْ بِمَا عَلَّمْتَنِیْ وَعَلِّمْنِیْ مَا یَنْفَعُنِیْ وَزِدْنِیْ عِلْمًا اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی كُلِّ حَالٍ وَّاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ حَالِ اَهْلِ النَّارِ

30. अल्लाहुम्मन् फ़अ़नी बिमा अ़ल्लम्-तनी, मा यन्-फ़अ़ुनी वज़िद्नी अ़िल्-मन् अल्-हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिन,

व-अऊज़ुबिल्लाहि मिन् हालि अह्लिन्नारि+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जो तू ने मुझे ज्ञान दिया है उस से मुझे नफ़ा (भी) पहुँचा, और जो ज्ञान मुझे नफ़ा दे वह मुझे अ़ता फ़रमा, और मेरे ज्ञान में ज़्यादती फ़रमा, और हर हाल में अल्लाह का ही शुक्र है और मैं जहन्नुम वालों की हालत से अल्लाह की पनाह माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ وَقُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ اَحْيِنِيْ مَا عَلِمْتَ الْحَيٰوةَ خَيْرًا لِّيْ وَتَوَفَّنِيْ اِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِّيْ وَاَسْاَلُكَ خَشْيَتَكَ فِى الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَكَلِمَةَ الْاِخْلَاصِ فِى الرِّضَا وَالْغَضَبِ وَاَسْاَلُكَ نَعِيْمًا لَّا يَنْفَدُ وَقُرَّةَ عَيْنٍ لَّا تَنْقَطِعُ وَاَسْاَلُكَ الرِّضَا بِالْقَضَاءِ وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَلَذَّةَ النَّظَرِ اِلٰى وَجْهِكَ وَالشَّوْقَ اِلٰى لِقَائِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَّفِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ اَللّٰهُمَّ زَيِّنَّا بِزِيْنَةِ الْاِيْمَانِ وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مُّهْتَدِيْنَ۔

31. अल्लाहुम्म बिअ़िल्-मि-कल् ग़ै-ब वक़ुद्-रति-क अ़-लल् ख़ल्क़ि अह्यीनी मा अ़लिम्-तल् हया-त ख़ै-रल्ली, व-त-वफ़्फ़नी इज़ा अ़लिम्-तल् वफ़ा-त ख़ै-रल्ली, व-अस्-अलु-क ख़श्-य-त-क फ़िल् ग़ैबि वश्शहा-दति, व-कलि-म-तल् इख़्लासि फ़िर्रिज़ा वल् ग़-ज़बि, व-अस्-अलु-क नअ़ी-मल्ला यन्-फ़दु वक़ुर्र-त अ़ैनिल्ला तन्-क़तिअु व-अस्-अलु-करिज़ा बिल्-क़ज़ाइ व-बर्-दल् अ़ैशि बअ़्-दल् मौति, व-लज़्ज़-तन्नज़रि इला वज्-हि-क वश्शौ-क़

इला लिक़ाइ-क, व-अऊज़ुबि-क मिन् ज़र्राइ मुज़िर्रतिन वफ़ित्-न तिन् मुज़िल्लातिन्+अल्लाहुम्म ज़य्यिन्ना बिज़ी-नतिल ईमानि वज्अल्ना हुदा-तम्मुह्-तदी-न

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू अपने ग़ैब के ईल्म, मख़्लूक़ पर अपनी क़ुदरत के वसीले से मुझे उस समय तक ज़िन्दा रख जब तक तेरे ईल्म में मेरे लिये ज़िन्दा रहना बेहतर है। और उस समय तू मुझे (दुनिया से) उठा ले जब तेरे ईल्म में मेरे लिये मर जाना बेहतर है। और मैं तुझ से एकान्त में भी (जब कोई न हो) और सब के सामने भी तुझी से डरने का, और ख़ुशनूदी और नाराज़गी (दोनों हालतों) में हक़ बात कहने की तौफ़ीक़ का सवाल करता हूँ। और मैं तुझ से वह नेमतें माँगता हूँ जो कभी ख़त्म न हों और वह आँखों की ठन्डक (यानी इतमीनान और ख़ुशी) माँगता हूँ जो कभी ख़त्म न हों। और मैं तेरे फ़ैसले पर राज़ी होने की (तौफ़ीक़) और मरने के बाद सुकून की ज़िन्दगी तुझ से तलब करता हूँ। और तेरे दीदार की लज़्ज़त और तेरी मुलाक़ात के शौक़ की दुआ करता हूँ। और मैं पनाह माँगता हूँ बदहाली और गुमराह करने वाले फ़ितनों से। ऐ अल्लाह! तू हम को ईमान (के नूर) की ज़ीनत से सँवार दे और हमें हिदायत पाये हुये रहनुमा में से बना दे।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ، مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ، عَاجِلِهٖ وَاٰجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ اَعْلَمْ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا سَأَلَكَ عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ، وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَاذَ مِنْهُ عَبْدُكَ

وَنَبِيُّكَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ
عَمَلٍ، وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ
وَاَسْأَلُكَ اَنْ تَجْعَلَ كُلَّ قَضَآءٍ لِّيْ خَيْرًا (وَفِيْ رِوَايَةٍ) وَاَسْأَلُكَ
مَا قَضَيْتَ لِيْ مِنْ اَمْرٍ اَنْ تَجْعَلَ عَاقِبَتَهٗ رُشْدًا،

32. अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क मि–नल् ख़ैरि कुल्लिही, आजिलिही वआजिलिही, मा अलिम्तु मिन्हु वमा लम् अअ्–लम् + व–अऊज़ुबि–क मि–नर्शरि कुल्लिही, आजिलिही वआजिलिही, मा अलिम्तु मिन्हु वमा लम् अअ्–लम्+अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–क मिन् ख़ैरि मा–स–अ–ल–क अब्–दु–क व–नबिय्यु–क, व–अऊज़ुबि–क मिन् शर्रि मा आ–ज़ मिन्हु अब्दु–क व–नबिय्यु–क+ अल्लाहुम्म इन्नी अस्–अलु–कल् जन्न–त वमा क़र्र–ब इलैहा मिन् क़ौलिन् औ अ–मलिन्, व–अऊज़ुबि–क मि–नन्नारि वमा क़र्र–ब इलैहा मिन् क़ौलिन् औ अ–मलिन्, व–अस्–अलु–क अन् तज्–अ–ल क़ज़ाइल्ली ख़ै–रन् वफ़ी रिवायती व–अस्–अलु–क मा क़ज़ै–त ली मिन् अम्रिन् अन् तज्–अ–ल आक़ि–ब–तहू रुश्–दन्

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से हर प्रकार की भलाई, जल्द आने वाली भी और देर में आने वाली भी, जो मैं जानता हूँ वह भी तलब करता हूँ। और मैं तेरी पनाह लेता हूँ हर क़िस्म की बुराई से जो जल्द आने वाली हो उस से भी और जो देर में आने वाली हो उस से भी, और जो मैं जानता हूँ उस से भी और जो मैं नहीं जानता उस से भीं

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से वह तमाम भलाइयाँ और ख़ूबियाँ माँगता हूँ जो तुझ से तेरे बन्दे और तेरे नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम) ने माँगी है। और मैं तुझ से हर उस बुराई से पनाह माँगता हूँ जिस से तेरे बन्दे और तेरे नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पनाह माँगी है। और मैं तुझ से सवाल करता हूँ जन्नत का और उस क़ौल और अमल का जो मुझे जन्नत से क़रीब कर दे। और मैं तुझ से जहन्नुम से पनाह माँगता हूँ और हर उस क़ौल और अमल का जो मुझे जहन्नुम से क़रीब कर दे। और मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि तू अपना हर फ़ैसला मेरे हक़ में बेहतर बना दे। और मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि जिस काम का तू मेरे हक़ में फ़ैसला करे उस का अन्जाम मेरे लिये अच्छा कर दे।"

اَللّٰهُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِى الْاُمُوْرِ كُلِّهَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْىِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْاٰخِرَةِ

33. अल्लाहुम्म अह्सिन् आक़ि-ब-तना फ़िल् उमूरि कुल्लिहा। व-अजिर्ना मिन् ख़िज़्यिद्दुन्या व-अज़ाबिल् आख़ि-रति

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! इलाही। तू हमारे हर काम का अन्जाम हमारे हक़ में अच्छा कर दे, और हमें दुनिया की रुसवाई और आख़िरत के अज़ाब से पनाह दे।"

اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِىْ بِالْاِسْلَامِ قَآئِمًا وَّاحْفَظْنِىْ بِالْاِسْلَامِ قَاعِدًا وَّاحْفَظْنِىْ بِالْاِسْلَامِ رَاقِدًا وَّلَا تُشْمِتْ بِىْ عَدُوًّا وَّلَا حَاسِدًا اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ مِنْ كُلِّ خَيْرٍ خَزَآئِنُهٗ بِيَدِكَ

34. अल्लाहुम्मह् फ़ज़्नी बिल् इस्लामि क़ाइ-मन्, वह्-फ़ज़्नी बिल् इस्लामि क़ाअि-दन्, वह्-फ़ज़्नी बिल् इस्लामि राक़ि-दन्, वला तुश्मित् बी अदुव्वन वला हासि-दन्+ अल्लाहुम्म इन्नी

अस्-अलु-क मिन् कुल्लि ख़ैरिन् ख़ज़ाइनुहू बि-यदि-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू खड़े होने की हालत में भी इस्लाम के ज़रीए मेरी सुरक्षा कर, और बैठा होने की हालत में भी इस्लाम से मेरी सुरक्षा कर, और सोने की हालत में भी इस्लाम से मेरी सुरक्षा कर, (यानी उठते-बैठते, सोते-जागते हर हालत में इस्लाम की पनाह में रख) और किसी दुश्मन को या हसद करने वाले को मुझ पर हँसने का मौक़ा न दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझ से वह तमाम ख़ूबियाँ और भलाइयाँ माँगता हूँ जिन के ख़ज़ाने तेरे ही हाथ में हैं।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ مَا اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ وَاَسْاَلُكَ
مِنَ الْخَيْرِ الَّذِیْ هُوَ بِيَدِكَ كُلِّهٖ ـ [35]

35. अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि-क मिन् शर्रि मा अन्-त आख़िज़ुन् बिनासि-यतिही व-अस्-अलु-क मि-नल् ख़ैरिल्लज़ी हु-व बि-यदि-क कुल्लिही

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ हर उस चीज़ की बुराई से जो तेरे ही हाथ में है, और तमाम भलाइयों का सवाल करता हूँ जो तेरे ही हाथ में हैं।"

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْاَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَآئِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالسَّلَامَةَ
مِنْ كُلِّ اِثْمٍ وَّالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ

36. अल्लाहुम्म इन्ना नस्-अलु-क मूजिबाति रह्-मति-क व-अज़ाइमा मग़फ़ि-रति-क वस्सला-म-त मिन् कुल्लि इस्मिन् वल् ग़नी-म-त मिन् कुल्लि बिर्रिन् वल् फ़ौ-ज़ा बिल्-जन्नति वन्नजा-त मि-नन्नारि +

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! हम तुझ से तेरी रहमत के साथ नों (यानी आमाल और इख़्लास) को और तेरी मग़िफ़रत पक्के साधनों को चाहते हैं, और हर गुनाह से सलामती और हर नेकी की दौलत माँगता है, और जन्नत तक पहुँचने और दोज़ख़ की आग से निजात की दुआ करते हैं।"

اَللّٰهُمَّ لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ، وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَ لَا دَيْنًا اِلَّا قَضَيْتَهٗ وَلَا حَاجَةً مِّنْ حَوَائِجِ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ۔

37. अल्लाहुम्म ला त-दअ्ली ज़म्-बन् इल्ला ग़-फ़र-तहू, वला हम्मन् इल्ला फ़र्रज्-तहू, वला दै-नन् इल्ला क़ज़ै-तहू, वला हा-ज-तन् मिन् हवाइजिद्दुन्या वल् आख़ि-रति इल्ला क़ज़ै-तहा+ या अर्-ह-मर्राहिमी-न+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू हमारा कोई गुनाह ऐसा न छोड़ जिसे तू बख़्श न दे, और न कोई ऐसी फ़िक्र और परेशानी छोड़ जिसे तू दूर न कर दे, और न कोई ऐसा क़र्ज़ जिसे तू अदा न कर द्दे, और न कोई दुनिया और आख़िरत की ऐसी ज़रूरत जिसे तू पूरा न कर दे, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले।"

اَللّٰهُمَّ اَعِنَّا عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

38. अल्लाहुम्म अअ़िन्ना अ़ला ज़िकरि-क वशुकरि-क वहुस्नि अ़िबा-दति-क

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू हमारी सहायता फ़रमा अपना ज़िक्र करने पर, और अपना शुक्र अदा करने पर, और अपनी अच्छी ईबादत करने पर (और हमें उन की तौफ़ीक़ देदे)

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

39. अल्लाहुम्म अअिन्नी अ़ला ज़िक्रि-क वशुक्रि-क वहुस्नि अिबा-दति-क

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरी मदद फ़रमा अपना ज़िक्र करने पर, और अपना शुक्र अदा करने पर, और अपनी अच्छी इबादत करने पर।"

اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِيْ بِمَا رَزَقْتَنِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَاخْلُفْ عَلٰى
كُلِّ غَائِبَةٍ لِّيْ بِخَيْرٍ

40. अल्लाहुम्म कन्निअ़नी बिमा र-ज़क्-तनी वबारिक् ली फ़ीहि वख़्लुफ़ अ़ला कुल्लि ग़ाइ-बतिन् ली बिख़ैरिन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! जो रोज़ी तू ने मुझे दी है उस पर मुझे क़नाअ़त दे और उन में मेरे लिये बर्कत अ़ता फ़रमा, और तू मेरी हर ग़ायब चीज़ (यानी धन-माल वग़ैरह) पर भलाई के साथ मेरी हिफ़ाज़त करने वाला बन जा (यानी सब को अमन और शन्ति अ़ता कर)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْاَلُكَ عِيْشَةً نَقِيَّةً وَّمِيْتَةً سَوِيَّةً وَّمَرَدًّا
غَيْرَ مُخْزِيٍّ وَّلَا فَاضِحٍ

41. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ओ़-श-तन् नक़िय्य-तन् व-मय्यि-तन् सविय्य-तन् व-म-रद्दन् ग़ै-र मख़्ज़िय्यिन् वला फ़ाज़िहिन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पाकीज़ा ज़िन्दगी की और अच्छी हालत में मौत की और (दुनिया से) ऐसी वापसी की

दुआ माँगता हूँ जिस में (हश्र के दिन) न मेरी रुसवाई हो और न लानत - मलामत।"

اللّٰهُمَّ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّ فِیْ رِضَاكَ ضُعْفِیْ وَخُذْ اِلَى الْخَیْرِ
بِنَاصِیَتِیْ وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ مُنْتَهٰی رِضَائِیْ اللّٰهُمَّ اِنِّیْ
ضَعِیْفٌ فَقَوِّنِیْ وَاِنِّیْ ذَلِیْلٌ فَاَعِزَّنِیْ وَاِنِّیْ فَقِیْرٌ فَارْزُقْنِیْ

42. अल्लाहुम्म इन्नी ज़ओफ़ुन् फ़-क़व्वि फ़ी रिज़ा-क ज़ुअ्फ़ी, वख़ुज़् इ-लल् ख़ैरि बिनासि-यती, वज्-अलिल् इस्ला-म मुन्-तहा रिज़ाई, अल्लाहुम्म इन्नी ज़ओफ़ुन् फ़-क़व्विनी, वइन्नी ज़लीलुन् फ़-अइज़्ज़नी, वइन्नी फ़क़ीरुन् फ़र्ज़ुक़नी।

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं (दीन के कामों में) कमज़ोर हों पस तू अपनी रज़ा (के हासिल करने) में मेरी कमज़ोरी को ताक़त से बदल दे, पेशानी पकड़ (कर मुझे) भलाई की तरफ़ (मुतवज्जेह) कर दे, और इस्लाम को मेरे लिये इन्तिहाई पसन्दीदा (चीज़) बना दे। इलाही! मैं कमज़ोर हूँ तू मुझे ताक़त दे, मैं ज़लील हूँ तू मुझे इज़्ज़त दे, मैं मुहताज हूँ तू मुझे रोज़ी दे।"

اللّٰهُمَّ اَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَا شَیْءَ قَبْلَكَ وَاَنْتَ الْاٰخِرُ فَلَا شَیْءَ
بَعْدَكَ نَعُوْذُ بِكَ مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ نَاصِیَتُهَا بِیَدِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ
الْاِثْمِ وَالْكَسَلِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمَاْثَمِ وَالْمَغْرَمِ
اللّٰهُمَّ نَقِّنِیْ مِنْ خَطَایَایَ كَمَا نَقَّیْتَ الثَّوْبَ الْاَبْیَضَ مِنَ
الدَّنَسِ اللّٰهُمَّ بَاعِدْ بَیْنِیْ وَبَیْنَ خَطَایَایَ كَمَا بَاعَدْتَ بَیْنَ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ هٰذَا مَا سَاَلَ مُحَمَّدٌ رَبَّهٗ۔

43. अल्लाहुम्म अन्-तल् अव्वलु फ़ला शै-अ क़ब्-ल-क, व-अन्-तल् आख़िरु फ़ला शै-अ बअ्-दक, अऊज़ुबि-क मिन् कुल्लि दाब्बतिन् नासि-यतुहा बि-यदि-क, व-अऊज़ुबि-क मि-नल् इस्मि वल्-कसलि व-अज़ाबिल् क़ब्रि वफ़ित्-नतिल् क़ब्रि, व-अऊज़ुबि-क मि-नल् मासमि वल् मग़-रमि+अल्लाहुम्म नक़्क़िनी मिन् ख़ताया-य कमा नक़्क़ै-तस्सौ-बल् अब्-य-ज़ मि-नद्द-नसि+ अल्लाहुम्म बाअ़िद बैनी वबै-न ख़ताया-य कमा बा-अ़दता बै-नल् मश्रिकि वल् मग़रिबि, हाज़ा मा स-अ-ल मु-हम्मदुन् रब्बहू

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू ही अव्वल है तुझ से पहले कुछ नहीं। तू ही आख़िर है, तेरे बाद कुछ नहीं। मैं तुझ से पनाह माँगता हूँ हर ज़मीन पर चलने वाली मख़्लूक़ से जो तेरे ही हाथ में है। और पनाह माँगता हूँ हर गुनाह से और काहिली से और क़ब्र के अ़ज़ाब से और क़ब्र की आज़माइश से। और मैं पनाह माँगता हूँ हर गुनाह (के नतीजे) से और हर क़र्ज़ (के नतीजे) से। ऐ अल्लाह! तू मुझे मेरी ख़ताओं से ऐसा पाक-साफ़ कर दे जैसे तू सफ़ेद कपड़े को मैल से पाक-साफ़ कर देता है। ऐ अल्लाह! तू मेरे और मेरी ख़ताओं के दर्मियान इतनी दूरी कर दे जितनी पूरब और पश्चिम के दर्मियान तू ने दूरी कर रखी है। यह वह दुआयें हैं जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपने रब से माँगी हैं।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَسْأَلَةِ، وَخَيْرَ الدُّعَاءِ، وَخَيْرَ النَّجَاحِ
وَخَيْرَ الْعَمَلِ، وَخَيْرَ الثَّوَابِ، وَخَيْرَ الْحَيَاةِ، وَخَيْرَ الْمَمَاتِ، وَثَبِّتْنِیْ
وَثَقِّلْ مَوَازِيْنِیْ، وَحَقِّقْ اِيْمَانِیْ، وَارْفَعْ دَرَجَتِیْ، وَتَقَبَّلْ صَلٰوتِیْ

وَاغْفِرْ خَطِيْئَتِيْ وَاَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰى مِنَ الْجَنَّةِ اٰمِيْنَ

44. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क खै-रल् मस्-अ-लति, वखै-रद्दुआइ, वखै-र न्नजाहि, वखै रल् अ-मलि, वखै-रस्सवाबि, वखै-रल् हयाति, वखै-रल् ममाति, व-सब्बित्नी, व-सक्किल् मवाज़ीनी, व-हक्किक़ ईमानी, वर्-फअ् द-र-जती, व-त-कब्बल् सलाती, वग़्फ़िर् ख़ती-अती, व-अस्-अलु-कद्-र जातिल् अुला- मि-नल् जन्नति-आमीन

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से बेहतरीन सवाल की, बेहतरीन दुआ की, बेहतरीन कामियाबी की, बेहतरीन अमल की, बेहतरीन सवाब की, बेहतरीन ज़िन्दगी की, और बेहतरीन मौत की दुआ माँगता हूँ। तू मुझे (हक़ पर) क़ाइम रख और मेरी (नेकियों की) तराज़ू (का पल्ला) भारी कर दे, मेरे ईमान को ठोस करदे, मेरा दर्जा को बुलन्द कर दे, मेरी नमाज़ क़ुबूल फ़रमा, मेरी ख़ताओं को माफ़ कर दे, मैं तुझ से जन्नत के बुलन्द दर्जों का सवाल करता हूँ – आमीन (यानी ऐ अल्लाह यह दुआ क़ुबूल फ़रमा ले)

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ فَوَاتِحَ الْخَيْرِ وَخَوَاتِمَهٗ وَجَوَامِعَهٗ وَاَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ وَظَاهِرَهٗ وَبَاطِنَهٗ وَالدَّرَجَاتِ الْعُلٰى مِنَ الْجَنَّةِ اٰمِيْنَ. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا اٰتِيْ وَخَيْرَ مَا اَفْعَلُ وَخَيْرَ مَا اَعْمَلُ وَخَيْرَ مَا بَطَنَ وَخَيْرَ مَا ظَهَرَ وَالدَّرَجَاتِ الْعُلٰى مِنَ الْجَنَّةِ اٰمِيْنَ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क फ़वाति-हल् खैरि व-ख़वाति-महू, व-जवामि-अहू, व-अव्व-लहू, वआख़ि-रहू, वज़ाहि-रहू, वबाति-नहू, वद्द-रजातिल् अुला मि-नल् जन्नति- आमीन।

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ख़ै-र मा आती, वख़ै-र मा अफ़्-अ़लु, वख़ै-र मा अअ़-मलु, वख़ै-र मा ब-त-न, वख़ै-र मा ज़-ह-र, वद्द-रजातिल् उला मि-नल् जन्नति- आमीन।

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से भलाई के आरंभ का और भलाई के अन्त का, भर पूर ख़ैर-ख़ूबी का, खुले और छुपे ख़ैर का और जन्नत के ऊँचे दर्जों का सवाल करता हूँ - आमीन (तू यह दूआ़ क़बूल फ़रमा ले)

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ हर उस चीज़ की भलाई का जो मैं इख़्तियार करूँ, हर उस काम की भलाई का जो मैं करूँ, हर उस काम की भलाई का जो मैं इख़्तियार करूँ, जो ज़ाहिर है उस की भलाई का और जो पोशीदा है उस की भलाई का और जन्नत में ऊँचे दर्जों का - आमीन (यानी तू अ़ता फ़रमा दे)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ اَنْ تَرْفَعَ ذِكْرِیْ، وَتَضَعَ وِزْرِیْ، وَتُصْلِحَ اَمْرِیْ، وَتُطَهِّرَ قَلْبِیْ، وَتُحَصِّنَ فَرْجِیْ، وَتُنَوِّرَ قَلْبِیْ، وَتَغْفِرَ لِیْ ذَنْبِیْ، وَاَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰی مِنَ الْجَنَّةِ اٰمِیْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ اَنْ تُبَارِكَ لِیْ فِیْ سَمْعِیْ، وَفِیْ بَصَرِیْ، وَفِیْ رُوْحِیْ، وَفِیْ خَلْقِیْ، وَفِیْ خُلُقِیْ، وَفِیْ اَهْلِیْ، وَفِیْ مَحْیَایَ، وَفِیْ مَمَاتِیْ، وَفِیْ عَمَلِیْ، وَتَقَبَّلْ حَسَنَاتِیْ وَاَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰی مِنَ الْجَنَّةِ اٰمِیْنَ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क अन् तर्-फ़-अ़ ज़िक्री, व-त-ज़-अ़ विज़्री, वतुस्लि-ह अम्री, वतु-तह्हि-र क़ल्बी, वतु-हस्सि-न फ़र्जी, वतु-नव्वि-र क़ल्बी, व-तग़्फ़ि-र् ली ज़म्बी, व-अस्-अलु-कद्द-रजातिल् अुला मि-नल् जन्नति -

आमीन।

अल्लाहुम्म इन्नी अस्‌-अलु-क अन् तुबारिक ली फ़ी समअ़ी, वफ़ी ब-सरी, वफ़ी रूही, वफ़ी खल्क़ी, वफ़ी खुलक़ी, वफ़ी अहली, वफ़ी महया-य, वफ़ी ममाती, वफ़ी अ़-मली, व-त-क़ब्बल ह्-सनाती, व-अस्‌-अलु-क द्-रजातिल् अुला मि-नल् जन्नति-आमीन।

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि तू मेरा ज़िक्र बुलन्द कर दे, मेरा बोझ हल्का कर दे, मेरा हर काम दुरुस्त कर दे, मेरा दिल पाक कर दे, मेरी शर्मगाह को पाक दामन बना दे, मेरे दिल को रोशन कर दे, मेरे गुनाह बख़्श दे और मुझे जन्नत में ऊँचे दर्जे अ़ता फ़रमा- आमीन (तू क़बूल फ़रमा ले)

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि तू मेरे कानों में, मेरी आँखों में, मेरी रूह में, मेरे बदन में, मेरे अख़्लाक़ में, मेरे घर-बार में, मेरी पूरी ज़िन्दगी में, मेरी मौत में और मेरे हर अ़मल में मेरे लिये बर्कतें अ़ता फ़रमा दे, मेरी नेकियों को क़बूल फ़रमा ले, और मैं तुझ से जन्नत में बुलन्द दर्जों की दुआ करता हूँ - आमीन (तू क़बूल फ़रमा ले)

اللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَوْسَعَ رِزْقِكَ عَلَيَّ عِنْدَ كِبَرِ سِنِّيْ وَانْقِطَاعِ عُمُرِيْ

45. अल्लाहुम्मज्‌-अ़ल् औ-स-अ़ रिज़्क़ि-क अ़-लय्य अि़न्-द कि-बरि सिन्नी वइन्‌क़िताअि़ अुमरी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे (बुढ़ापे) में और अन्तिम उम्र में ज़्यादा कुशादा रोज़ी अ़ता फ़रमा।"

اللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَخَطَايَايَ وَعَمَدِيْ

46. अल्लाहुम्मग़् फ़िर् ली ज़ुनूबी व ख़ताई व-अ़-मदी

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मेरे तमाम गुनाह, बिला इरादा और जान बूझ कर की हुयी ख़ताएँ सब माफ़ फ़रमा दे।"

يَا مَنْ لَّا تَرَاهُ الْعُيُوْنُ وَلَا تُخَالِطُهُ الظُّنُوْنُ وَلَا يَصِفُهُ الْوَاصِفُوْنَ وَلَا تُغَيِّرُهُ الْحَوَادِثُ وَلَا يَخْشَى الدَّوَآئِرَ، يَعْلَمُ مَثَاقِيْلَ الْجِبَالِ، وَمَكَايِيْلَ الْبِحَارِ، وَعَدَدَ قَطْرِ الْاَمْطَارِ، وَعَدَدَ وَرَقِ الْاَشْجَارِ، وَعَدَدَ مَا اَظْلَمَ عَلَيْهِ اللَّيْلُ وَاَشْرَقَ عَلَيْهِ النَّهَارُ وَلَا تُوَارِىْ مِنْهُ سَمَآءٌ سَمَآءً وَّلَا اَرْضٌ اَرْضًا وَّلَا بَحْرٌ مَّا فِىْ قَعْرِهٖ وَلَا جَبَلٌ مَّا فِىْ وَعْرِهٖ، اِجْعَلْ خَيْرَ عُمُرِىْ اٰخِرَهٗ وَخَيْرَ عَمَلِىْ خَوَاتِيْمَهٗ وَخَيْرَ اَيَّامِىْ يَوْمَ اَلْقَاكَ فِيْهِ.

47. या मन् ला तराहुल् अुयूनु, वला तुख़ालितुहु ज़्ज़ुनूनु, वला यसिफ़ुहुल् वासिफ़ू-न, वला तु-ग़य्यिरुहुल् हवादिसु, वला यख़्-शद्दवाइर, यअ्-लमु मसाक़ी-लल् जिबालि, वमकाई-लल् बिहारि, व-अ़-द-द क़त्रिल् अम्तारि, व-अ़-द-द व-रक़िल् अश्जारि, व-अ़-द-द मा अज़्-ल-म अ़लैहिल्लैलु व-अश्-र-क़ अ़लैहिन्नहारु, वला तुवारी मिन्हु समाउन् समा-अन्, वला अर्ज़ुन् अरज़न वला बहरुम्मा फ़ी क़अ्रिही, वला ज-बलुन् मा फ़ी वअ्रिही, इज्-अ़ल् ख़ै-र अुमरी आख़ि-रहू वख़ै-र अ़-मली ख़वाती-महू, वख़ै-र अय्यामी यौ-म अल्क़ा-क फ़ीहि

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! ऐ वह (पाक ज़ात) जिस को न (इस दुनिया में यह) आँखें देख सकती हैं, न (किसी के) ख़्याल और गुमान की उस तक पहुँच हो सकती है, न सिफ़तें बयान

करने वाले उस की सिफ़तें बयान कर सकते हैं, न ज़माने की घटनायें उस को प्रभावित कर सकती हैं, न ज़माने के फ़ेर बदल का उसे कोई डर है, जो पहाड़ों (तक) के वज़न और समुन्दरों (तक) के माप जानता है, वर्षा की बूँदें की मात्रा और पेड़ के पत्तों (तक) की संख्या जानता है, रात अपनी अँधियारी में जिन चीज़ों को छुपा लेती है और दिन जिन चीज़ों को रोशन करता है उन की संख्या भी जानता है, न एक आसमान, दूसरे आसमान को उस से छुपा सकता है और न एक ज़मीन दूसरी ज़मीन को उस से छुपा सकती है, और न कोई समुन्दर उन चीज़ों को जो उस की तह में हैं उस से छुपा सकता है, और न कोई पहाड़ उन चीज़ों को जो उस के ग़ारों में है छुपा सकता है। तू मेरी अन्तिम उम्र को बेहतरीन उम्र (का हिस्सा) बना दे और मेरे अन्तिम आमाल को बेहतरीन अमल और मेरा बेहतरीन दिन, उस दिन को बना दे जिस मे मुझे तुझ से मिलना नसीब हो।"

يَا وَلِيَّ الْإِسْلَامِ وَأَهْلِهِ ثَبِّتْنِيْ بِهِ حَتّٰى أَلْقَاكَ

48. या वलिय्यल् इस्लामि व-अहलिही सब्बित्नी बिही हत्ता अल्क़ा-क

तर्जुमा – "ऐ इस्लाम और इस्लाम के मानने वालों के मौला! तू मुझे इस्लाम पर उस समय तक क़ायम रख कि तुझ से मेरी मुलाक़ात हो जाये।"

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْأَلُكَ الرِّضَا بِالْقَضَاءِ وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَلَذَّةَ النَّظَرِ إِلٰى وَجْهِكَ، وَالشَّوْقَ إِلٰى لِقَائِكَ فِيْ غَيْرِ ضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَّلَا فِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ۔

49. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कर्रिज़ा बिल् क़ज़ाइ,

व-बर्-दलऐशि बा-दल् मौति, व-लज़्ज़-तन्नज़्रि इला वज्हि-क, वशौ-क़ इला लिक़ाइ-क फ़ी ग़ैरि ज़र्रा-अ मुज़िर्रतिन् वला फ़ित्-नतिन् मुज़िल्लतिन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से सवाल करता हूँ तेरे फ़ैसले पर राज़ी होने का, और मरने के बाद अच्छी ज़िन्दगी का, और तेरे दीदार की लज़्ज़त का, और तेरी मुलाक़ात के शौक़ का जो बिना तक्लीफ़ पहुँचाये और गुमराही के फ़ितने में डाले हुये (नसीब) हो।"

اَللّٰهُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِى الْاُمُوْرِ كُلِّهَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْىِ
الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْاٰخِرَةِ ـ

50. अल्लाहुम्म अह्सिन् आक़ि-ब-तना फ़िल् उमूरि कुल्लिहा व-अजिर्ना मिन् ख़िज़्यिद्दुन्या व-अज़ाबिल् आख़ि-रति+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू हमारे हर काम का अन्जाम बेहतर फ़रमा, और हमें दुनिया की रुसवाई और आख़िरत के अज़ाब से पनाह दे।"

फ़ायदा - हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स अल्लाह से यह दुआ करता रहेगा वह किसी (बड़ी) बला में गिरिफ़्तार होने से पहले ही वफ़ात पा जायेगा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ غِنَاىَ وَغِنَا مَوْلَاىَ

51. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ग़िना-य वग़िना मौला-य

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं अपने ग़िना का और अपने (हर) मददगार के ग़िना का तुझ से सवाल करता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ عِيْشَةً نَقِيَّةً وَّمِيْتَةً سَوِيَّةً وَّمَرَدًّا غَيْرَ مُخْزِيٍّ وَّلَا فَاضِحٍ۔

52. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क ई-श-तन नकिय्य-तन वमी-त-तन सविय्य-तन व-म-रद्दन गै-र मुख़ज़ियिव्वला फ़ाज़िहिन्

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से साफ़-सुथरी ज़िन्दगी की, बेहतरीन मौत की और बिना किसी ज़िल्लत के (दुनिया से) वापिसी की (यानी हश्र की) दुआ माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاَدْخِلْنِی الْجَنَّةَ

53. अल्लाहुम्मग़् फ़िर्ली वर्-हम्नी व-अद्ख़िलनिल्-जन्न-त

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे, मुझ पर रहम कर दे और मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे।"

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْ دِيْنِیَ الَّذِیْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِیْ وَفِیْ اٰخِرَتِیَ الَّتِیْ اِلَيْهَا مَصِيْرِیْ وَفِیْ دُنْيَایَ الَّتِیْ فِيْهَا بَلَاغِیْ وَاجْعَلِ الْحَيٰوةَ زِيَادَةً لِّیْ فِیْ كُلِّ خَيْرٍ وَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّیْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ

54. अल्लाहुम्म बारिक् ली फ़ी दीनि-यल्लज़ी हु-व अिस्-मतु अम्री वफ़ी आख़िर-रति-यल्लती इलैहा मसीरी, वफ़ी दुनया-यल्लती फ़ीहा बलाग़ी, वज्-अलिल् हया-त ज़िया-द-तन् फ़ी कुल्लि ख़ैरिन, वज्-अलिल् मौ-त रा-ह-तन् ली मिन् कुल्लि शर्रिन्

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मेरे दीन में बर्कत अता फ़रमा जो मेरे हर काम में मेरी सुरक्षा का साधन है, और मेरी आख़िरत

में, जहाँ मुझे लौट कर जाना है, और मेरी दुनियाँ में जो (दीन-दुनियाँ के मक़्सद तक) मेरी रसाई का स्थान है (बर्कत अता फ़रमा) और तू ज़िन्दगी को मेरे लिये हर भलाई में ज़्यादती का ज़रीआ बना दे और मौत को हर बुराई से राहत (नजात) का ज़रीया बना दे।"

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ صَبُوْرًا وَّاجْعَلْنِىْ شَكُوْرًا وَّاجْعَلْنِىْ فِىْ عَيْنِىْ صَغِيْرًا وَّفِىْ اَعْيُنِ النَّاسِ كَبِيْرًا۔

55. अल्लाहुम्मज् अल्नी सबूरन् वज्-अल्नी शकू-रन् वज्-अलनी फ़ी अैनी सग़ी-रन् वफ़ी अअ्युनिन्नासि कबी-रन्

तर्जुमा - "इलाही! तू मुझे बड़ा सब्र करने वाला बना दे, तू मुझे बड़ा शुक्र अदा करने वाला बना दे, और तू मुझे मेरी नज़र में (तो) छोटा (लेकिन) लोगों की नज़रों में बड़ा बना दे।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ الطَّيِّبَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ وَاَنْ تَتُوْبَ عَلَىَّ وَاِنْ اَرَدْتَّ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً اَنْ تَقْبِضَنِىْ اِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ۔

56. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कत्तय्यिबाति, व-तर्-कल् मुन्-कराति, वहुब्बल् मसाकीनि, व-अन् ततू-ब अ-लय्य, वइन् अ-रत्त बिअिबादि-क फ़ित्-नतन् अन् तक़्बि-ज़्नी इलै-क ग़ै-र मफ़्तूनिन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से पाक चीज़ों (को हासिल करने) की और बुराइयों को छोड़ने की और ग़रीबों से मुहब्बत करने की दुआ माँगता हूँ, और इसकी कि तू मेरी तौबा क़बूल कर ले, और इसकी कि अगर (किसी समय) तू

अपने बन्दों को किसी आज़माइश में डालना चाहे तो मुझे उस आज़माइश में डाले बग़ैर ही अपने पास बुला ले (दुआ माँगता हूँ तू क़बूल फ़रमा ले)।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا

57. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क अिल्-मन्नाफि-अन् व-अ-म-लन् मु-त-क़ब्बल-लन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नफा पहुँचाने वाले इल्म का और क़बूल होने वाले अमल का सवाल करता हूँ (तू पूरा कर दे)

اَللّٰهُمَّ ضَعْ فِیْٓ اَرْضِنَا بَرَكَتَهَا وَزِيْنَتَهَا وَسَكَنَهَا

58. अल्लाहुम्म जअ़् फी अर्ज़िना ब-र-क-तहा वज़ी-न-तहा व-स-क-नहा

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू हमारे मुल्क में बर्कत, हरयाली और अमन व शान्ति रख दे।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ بِاَنَّكَ الْاَوَّلُ فَلَا شَیْءَ قَبْلَكَ وَالْاٰخِرُ
فَلَا شَیْءَ بَعْدَكَ وَالظَّاهِرُ فَلَا شَیْءَ فَوْقَكَ وَالْبَاطِنُ
فَلَا شَیْءَ دُوْنَكَ اَنْ تَقْضِیَ عَنَّا الدَّيْنَ وَاَنْ تُغْنِيَنَا مِنَ الْفَقْرِ

59. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क बि-अन्न-कल् अव्वलु फ़ला शै-अ क़ब्-ल-क, वल् आख़िरु फ़ला शै-अ बअ़्-द-क, वज़्ज़ाहिरु फ़ला शै-अ फ़ौ-क़-क, वल् बातिनु फ़ला शै-अ दू-न-क अन् तक़्ज़ि-य अन्नद्दै-न व-अन् तुग़नि-यना मि-नल् फ़क़्रि

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से इसलिये सवाल करता हूँ कि तू ही अव्वल है, तुझ से पहले और कोई चीज़ नहीं। तू ही आख़िर है, तेरे बाद और कोई चीज़ नहीं। तू ही ज़ाहिर (यानी सब से बढ़ कर है) तुझ से ऊपर (बढ़ कर) और कोई चीज़ नहीं। तू ही (सब से ज़्यादा) पोशीदा और छुपा हुआ है, तुझ से नीचे (ज़्यादा पोशीदा) और कोई चीज़ नहीं (तू ही इस सवाल को पूरा कर सकता है) कि तू हमारा कर्ज़ अदा कर दे और तंग दस्ती से (नजात देकर) ख़ुशहाली दे दे।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَهْدِيْكَ لِاَرْشَدِ اَمْرِيْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ

60. अल्लाहुम्म इन्नी अस्‌-तह्‌दी-क लि-अर्‌-शदि अम्‌री, व-अऊज़ुबि-क मिन्‌ शर्रि नफ़्सी+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने (हक़ में) सब से अच्छे काम की रहनुमाई तलब करता हूँ और तुझ ही से अपने नफ़्स की बुराई से पनाह माँगता हूँ।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَغْفِرُكَ لِذَنْبِيْ وَاَسْتَهْدِيْكَ لِمَرَاشِدِ اَمْرِيْ
وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ فَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ رَبِّيْ اَللّٰهُمَّ فَاجْعَلْ رَغْبَتِيْ
اِلَيْكَ وَاجْعَلْ غِنَايَ فِيْ صَدْرِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا رَزَقْتَنِيْ وَ
تَقَبَّلْ مِنِّيْ اِنَّكَ اَنْتَ رَبِّيْ۔

61. अल्लाहुम्म इन्नी अस्‌-तग़्फ़िरु-क लि-ज़म्बी, व-अस्‌-तह्‌दी-क लि-मराशिदि अम्‌री, व-अतूबु इलै-क, फ़तुब अ-लय्य, इन्न-क अन्‌-त रब्बी+ अल्लाहुम्म फ़ज्‌-अल्‌ रग्‌-बती इलै-क, वज्‌-अल्‌ ग़िना-य फ़ी सद्‌री, वबारिक्‌ ली फ़ीमा र-ज़क्‌-तनी, व-त-क़ब्बल्‌ मिन्नी, इन्न-क अन्‌-त रब्बी+

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से अपने गुनाहों की मग़्फ़िरत तलब करता हूँ, और अपनी ज़िन्दगी के सही कामों की रहनुमाई तलब करता हूँ, और तेरे दरबार में तौबा तलब करता हूँ, पस तू मेरी तौबा क़बूल फ़रमा, बेशक तू ही मेरा पर्वरदिगार है + ऐ अल्लाह! तू मुझे अपनी तरफ़ झुका ले, मेरे दिल को ग़नी बना दे, जो कुछ (रोज़ी) तू ने मुझे दी है उस में बर्कत दे, और तू मेरी यह दुआ क़बूल फ़रमा ले, बेशसक तू ही मेरा पर्वरदिगार है।"

يَا مَنْ أَظْهَرَ الْجَمِيلَ وَسَتَرَ الْقَبِيحَ وَيَا مَنْ لَا يُؤَاخِذُ بِالْجَرِيرَةِ
وَلَا يَهْتِكُ السِّتْرَ يَا عَظِيمَ الْعَفْوِ يَا حَسَنَ التَّجَاوُزِ يَا وَاسِعَ الْمَغْفِرَةِ
يَا بَاسِطَ الْيَدَيْنِ بِالرَّحْمَةِ يَا صَاحِبَ كُلِّ نَجْوَى يَا مُنْتَهَى كُلِّ
شَكْوَى يَا كَرِيمَ الصَّفْحِ يَا عَظِيمَ الْمَنِّ يَا مُبْتَدِئَ النِّعَمِ قَبْلَ
اسْتِحْقَاقِهَا يَا رَبَّنَا وَيَا سَيِّدَنَا وَيَا مَوْلَانَا وَيَا غَايَةَ رَغْبَتِنَا
أَسْأَلُكَ يَا اللّٰهُ أَنْ لَا تَشْوِيَ خَلْقِي بِالنَّارِ۔

62. या मन् अज़्-ह-रल् जमी-ल व-स-त-रल् क़बी-ह, वया मन् ला युआख़िज़ु बिल्-जरी-रति, वला यहतिकुस्सित्-र, या अज़ी-मल् अफ़्वि, या ह-स-नत्त जावुज़ि, या वासि-अल् मग़फ़ि-रति, या बासि-तल् यदैनि बिर्रह्-मति, या साहि-ब कुल्लि नज्वा, या मुन्-तहा कुल्लि शक्वा, या करी-मस्सफ़्हि, या अज़िमल मन्नी या मुब्-तदि-अन्नि- अमि क़ब्-ल इसतिह्क़ाक़िहा, या रब्बना वया सय्यि-दना, वया मौलाना, वया ग़ा-य-त रग़्-ब-तेना, अस्-अलु-क या अल्लाहु अन् ला तुश्वीया ख़ल्क़ी बिन्नारि +

तर्जुमा - "ऐ वह (करीम ज़ात) जिस ने (अपने बन्दों के) अच्छे कामों को ज़ाहिर किया और बुरे कामों पर पर्दा डाला,

और ऐ वह (रहम करने वाली) ज़ात जो जुर्म पर तुरन्त पकड़ नहीं करता, और (बदकारियों को) ज़ाहिर (नहीं करता) ऐ बहुत बड़े माफ़ फ़रमाने वाले, ऐ बहुत अच्छे दरगुज़र करने वाले, ऐ कुशादा मग़फ़िरत वाले, ऐ रहमत के लिये दोनों हाथ खुले रखने वाले, ऐ हर चुपके-चुपके की गयी बातों के जानने वाले, ऐ हर शिकायत के आख़िरी सुनने वाले, ऐ रहम से दर गुज़र करने वाले, ऐ बहुत बड़े एहसान करने वाले, ऐ समय से पहले नेमतों (के देने) में पहल करने वाले, ऐ हमारे पर्वरदिगार! ऐ हमारे मौला! ऐ हमारे मालिक! ऐ हमारे रग़बत की इन्तिहा! मैं तुझ से सवाल करता हूँ, ऐ अल्लाह! तू मेरे बदन को जहन्नुम की आग से मत झुलसाना।"

تَمَّ نُوْرُكَ فَهَدَيْتَ فَلَكَ الْحَمْدُ، عَظُمَ حِلْمُكَ فَعَفَوْتَ فَلَكَ الْحَمْدُ، بَسَطْتَ يَدَكَ فَاَعْطَيْتَ فَلَكَ الْحَمْدُ، رَبَّنَا وَجْهُكَ اَكْرَمُ الْوُجُوْهِ، وَجَاهُكَ اَعْظَمُ الْجَاهِ، وَعَطِيَّتُكَ اَفْضَلُ الْعَطِيَّةِ وَاَهْنَاُهَا، تُطَاعُ رَبَّنَا فَتَشْكُرُ، وَتُعْصٰى رَبَّنَا فَتَغْفِرُ، وَتُجِيْبُ الْمُضْطَرَّ، وَتَكْشِفُ الضُّرَّ، وَتَشْفِي السَّقِيْمَ، وَتَغْفِرُ الذَّنْبَ، وَتَقْبَلُ التَّوْبَةَ، وَلَا يَجْزِيْ بِاٰلَائِكَ اَحَدٌ، وَلَا يَبْلُغُ مِدْحَتَكَ قَوْلُ قَائِلٍ.

63. तम्म नूरु-क फ़-हदै-त फ़-ल-कल् हम्दु, अ़जु-म हिल्मु-क फ़-अफ़ौ-त फ़-ल-कल् हम्दु, ब-सत्त य-द -क फ़आतै-त फ़-ल-कल् हम्दु, रब्बना वजहु-क अक्-रमुल् वजूहि, वजाहु-क अअ्-ज़मुल् जाहि, व- अ़तिय्यतु-क अफ़-ज़लुल् अ़तिय्याति व-अह्-नउहा, तुताअु रब्बना फ़-तश्कुरु, तुअ़्सा रब्बना फ़-तग़फ़िरु, वतुजीबुल् मुज़्-तर्र, व-तक्शिफ़ुज़्ज़ुर्र, व-तश्फ़िस्सक़ी-म, व- तग़फ़िरुज़्ज़म्-ब, व-त-क़ब्बलुत्तौ-ब-त, वला यज्ज़ी

बिआलाइ-क अ-हदुन्, वला यब्लुग़ु मद-ह-त-क क़ौलु क़ाइलिन्+

तर्जुमा - "तेरी हिदायत का नूर पूरा (और कामिल) है इसीलिये तू ने (तमाम मख़्लूक़ को) हिदायत की, पस तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ है, तेरी बुर्दबारी बहुत बड़ी है, इसीलिये तू (अपने बन्दों को) माफ़ फ़रमाता है, पस तेरे ही लिये तारीफ़ है, तूने अपना हाथ (देने के लिये) खुला रखा है, इसलिये तू ने (तमाम मख़्लूक़ को रोज़ी)दी है, पस तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ है। ऐ हमारे रब! तेरी ज़ात सब से बढ़ कर करीम है और तेरा जलाल सब से बढ़ कर जलाल है, तेरा दिया हुआ सब से अफ़ज़ल और सब से बेहतर तोहफ़ा है। ऐ हमारे रब! तेरी इताअत की जाती है तू उस का बदला देता है, और ऐ हमारे रब! तेरी नाफ़रमानी की जाती है तो तू बख़्श देता है, तू हर मजबूर की सुनता है और (उसकी) तकलीफ़ को दूर करता है, और हर बीमार को स्वास्थ देता है, और हर गुनाह को माफ़ कर देता है, और (हर शख़्स की) तौबा को क़बूल करता है, तेरी (इन) नेमतों का न कोई बदला दे सकता है और न किसी तारीफ़ करने वाले की तारीफ़, तेरी तारीफ़ का हक़ अदा कर सकती है।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَرَحْمَتِكَ فَاِنَّهٗ لَا يَمْلِكُهَا اِلَّا اَنْتَ

64. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-क मिन फ़ज़्लि-क व-रह्-मति-क फ़इन्नहू ला यम्लिकुहा इल्ला अन्-त

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल और रहमत का सवाल करता हूँ इसलिये कि तेरे सिवा और कोई उस का मालिक नहीं है (तू मेरा सवाल पूरा कर दे)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا أَخْطَأْتُ وَمَا تَعَمَّدْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا جَهِلْتُ وَمَا عَلِمْتُ۔

65. अल्लाहुम्मग़ फ़िर्ली मा अख़्तातु वमा त-अ़म्मत्तु वमा अस्-रर्तु वमा अअ्-लन्तु वमा जहिल्तु वमा अ़लिम्तु

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू माफ़ कर दे जो कुछ मैंने बिला इरादा किया और जो कुछ जान बूझ कर किया, और जो छुपा कर किया और जो खुले तौर पर किया, और जो कुछ मैंने नहीं जाना (यानी नादानी से किया) और जो मैंने जाना (यानी जान बूझ कर किया)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَظُلْمَنَا وَهَزْلَنَا وَجِدَّنَا وَخَطَأَنَا وَعَمْدَنَا وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدَنَا۔

66. अल्लाहुम्मग़् फ़िर् लना ज़ुनु-बना वज़ुल्-मना व-हज़्-लना वजिद्दना व-ख़-त-अना व-अ़-म-दना, वकुल्लु ज़ालि-क अ़िन्-दिना

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे ज़ुल्मों को भी, हमारे मज़ाक़ के तौर पर किये हुये या संजीदगी से किये हुये गुनाहों को भी, हमारे बिला इरादा किये हुये और जानबूझ कर किये हुये गुनाहों को भी, और हर प्रकार के गुनाह जो हम से हुये हैं (सब को तू बख़्श दे)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ خَطَئِيْ وَعَمَدِيْ وَهَزْلِيْ وَجِدِّيْ وَلَا تَحْرِمْنِيْ بَرَكَةَ مَا أَعْطَيْتَنِيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ فِيْمَا أَحْرَمْتَنِيْ۔

67. अल्लाहुम्मग़ फ़िर् ली ख़-त-ई, व-अ़-मदी, व-हज़्ली,

वजिद्दी, वला तह़्रिमनी, ब-र-क-त मा अअ़्तै-तनी वला तफ़्तिन्नी फ़ीमा अह्-रम्-तनी

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! तू मेरे जानबूझ कर और अन्जाने में किये हुये गुनाहों को, और मेरे हंसी में या संजीदगी से किये हुये गुनाहों को माफ़ कर दे, और जो तूने मुझे दिया है उस की बर्कत से मुझे महरूम (वन्चित) न फ़रमा, और जिस चीज़ से तू ने मुझे महरूम कर रखा है उस की आज़माइश में मुझे मत डाल (उस का ख़्याल मेरे दिल से निकाल दे ताकि तेरी नाशुक्री न कर बैठूँ)

اَللّٰهُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِیْ فَاَحْسِنْ خُلُقِیْ

68. अल्लाहुम्म अह्-सन्-त ख़ल्क़ी फ़-अह़्सिन् ख़ुलुक़ी

तर्जुमा – "इलाही! तू ने मुझे अच्छा बनाया है, तू मेरे अख़्लाक़ (आचरण) को भी अच्छा बना दे।"

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاهْدِنِی السَّبِیْلَ الْاَقْوَمَ

69. रब्बिग़् फ़िर् वर्-हम् वह्दिनिस्सबी-लल् अक़्-व-म

तर्जुमा – "मेरे मौला! तू मुझे माफ़ कर दे और रहम कर दे और रहम फ़रमा और मुझे सीधी राह पर चला।"

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ

70. अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल् अ़फ़्-व वल्-आफ़ि-य-त

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ से माफ़ी और अमन व शान्ति माँगता हूँ (तू अता फ़रमा दे)

फ़ायदा - 1) हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह से माफ़ी माँगा करो इसलिये कि किसी भी शख़्स को ईमान व यक़ीन के बाद माफ़ी से बेहतर कोई नेमत नहीं दी गयी है।

2) एक और हदीस में आया है कि हज़रत अ़ब्बास रज़ि0 ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा - ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! मुझे कोई दुआ़ बतला दीजिये जो मैं अल्लाह तआ़ला से माँगा करूँ। आप ने फ़रमाया - तुम अपने रब से आफ़ियत (की दुआ़) माँगा करो। (हज़रत अ़ब्बास रज़ि0 कहते हैं) कुछ दिन बाद फिर मैं (आप के पास) आया और कहा- ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कोई दुआ़ बता दीजिये जो मैं अपने रब से माँगा करूँ। आप ने फ़रमाया - ऐ मेरे चचा! आप अल्लाह से दुनिया और आख़िरत (दोनों) में आफ़ियत की दुआ़ माँगा कीजिये। इसी रिवायत में यह अल्फ़ाज़ भी आये हैं कि "ऐ चचा! ज़्यादा से ज़्यादा आफ़ियत की दुआ़ माँगा कीजिये।"

3) एक और हदीस में आया है कि बन्दों ने अल्लाह से इस से अफ़ज़ल कोई दुआ़ नहीं माँगी कि वह उन की मग़फ़िरत कर दे और उ़न को आफ़ियत के साथ रखे।

4) एक और हदीस में आया है (एक मर्तबा हज़रत उम्मे सलमा रज़ि0 ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा) आप मुझे कोई ऐसी दुआ़ क्यों नहीं बतला देते जो मैं अपने रब से माँगा करूँ? आप ने फ़रमाया - क्यों नहीं! तुम यह दुआ़ माँगा करो।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ اِغْفِرْلِيْ ذَنْبِيْ وَاَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِيْ وَ
اَجِرْنِيْ مِنْ مُضِلَّاتِ الْفِتَنِ مَا اَحْيَيْتَنَا

अल्लाहुम्म रब्बन्न बियि मु-हम्मदिन् गफ़िरली ज़म्बी वज़्-हब् ग़ै-ज़ क़ल्बी व-अजिरनी मिम्मु ज़िल्लातिल् फ़ि-तनि मा अह्ये-तना

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रब! तू मेरे गुनाह बख़्श दे, मेरे दिल के ग़ज़ब और गुस्सा को दूर कर दे और जब तक तू हमें ज़िन्दा रखे गुमराह करने वाले फ़ितनों से सुरक्षित रख।"

5) एक और हदीस में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - तुम में से कोई भी यह दुआ हर्गिज़ न माँगे -

अल्लाहुम्म लक़्क़िनी हुज्जती (ऐ अल्लाह मुझे मेरी हुज्जत की तल्क़ीन कर) इसलिये कि (ज़िन्दगी में) हुज्जत की तल्क़ीन तो काफ़िर को की जाती है, (शैतान की तरफ़ से) बल्कि यह दुआ करे- "अल्लाहुम्म लक़्क़िनी हुज्ज-तल् ईमानि इन्-दल् मम्माति" (ऐ अल्लाह! तू मुझे मरते समय ईमान की हुज्जत (यानी इख़्लास के साथ तौहीद के कलमे की तल्क़ीन फ़रमा (यानी नसीब कर)

नोट - 'तल्क़ीन' के मअ्ना है "किसी के सामने कोई बात कहना ताकि वह भी सुन कर वही बात कहे" हदीस शरीफ़ का अर्थ यह है कि शैतान काफ़िरों को गुमराही पर बाक़ी रखने के लिये ज़िन्दगी भर कुफ़्-शिर्क की बातें उन के सामने कहता रहता है, जैसा कि अल्लाह पाक ने फ़रमाया - "बेशक शैतान अपने दोस्तों के दिलों में (गुमराही की बातें) डालता रहता है" इसलिये ज़िन्दगी में तल्क़ीन की दुआ करना शैतान को गुमराह करने की दावत देना है। इसके विपरीत मुसलमान मरने वाला मरते समय जान निकलने की तक्लीफ़ की वजह

से बेशक इस बात का मुहताज होता है कि कोई उस के सामने हुज्जते ईमान (कलम-ए-तय्यिबा) पढ़े, ताकि वह भी सुन कर कलमा पढ़े और ईमान पर उस का ख़ातिमा (समापन) हो, इसलिये इस की ज़रूर दुआ करनी चाहिये वल्लाहु आ-लमु (अल्लाह ही बेहतर जानने वाला है)

★ ★ ★ ★ ★

ख़ातिमा (समापन)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद सलाम भेजने की फ़ज़ीलत

1. हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस मज्लिस में लोग जमा होंगे और वह उस में न अल्लाह का ज़िक्र करेंगे और न अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद-सलाम भेजेंगे, क़यामत के दिन उन की वह मज्लिस उन के लिये (अल्लाह के ज़िक्र और दरूद-सलाम के) सवाब (से महरूमी की वजह से) हसरत-अफ़सोस का सबब होगी, अगर्चे वह जन्नत में दाख़िल भी हो जाएं।

2. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया - जुमे के दिन ज़्यादा से ज़्यादा मुझ पर दरूद-सलाम भेजा करो, क्योंकि तुम्हारा दरूद-सलाम (जुमा के दिन ख़ास तौर पर) मेरे सामने पेश किया जाता है।

3. एक और हदीस में आया है कि जो भी कोई शख़्स जुमे के दिन मुझ पर दरूद भेजता है उसका दरूद (ख़ास तौर पर) मेरे सामने पेश किया जाता है)

4. एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स भी मुझ पर (मेरी क़ब्र पर खड़े होकर) मेरी रूह सलाम भेजता है (ख़ास कर मेरी तरफ़ मुतवज्जह कर दी मुझ पर लौटा दी जाती है (यानी उस की तरफ़ मुतवज्जह कर दी

जाती है) यहाँ तक कि मैं उस के सलाम का जवाब देता हूँ।

5. एक और हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : क़यामत के दिन मेरे सब से ज़्यादा क़रीब वह शख़्स होगा जिसने सब से ज़्यादा मुझ पर दरूद भेजा होगा।

6. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया असली कंजूस वह शख़्स है जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और उस ने मुझ पर दरूद न भेजा हो।

7. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तुम अधिक से अधिक मेरे ऊपर दरूद भेजा करो इसलिये कि यह दरूद तुम्हारे (बातिन की पाकी के) लिये ज़कात (यानी पाक करने का साधन) है।

8. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जिस शख़्स के सामने मेरा नाम आये उस को चाहिये कि मुझ पर दरूद भेजे, इसलिये कि जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजता है अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमायेंगे ।

9. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : वह शख़्स ज़लील हुआ जिस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वह मुझ पर दरूद न भेजे।

10. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स मेरा ज़िक्र करे उस को मुझ पर दरूद भेजना चाहिये।

11. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने तक दरूद पहुँचने का ज़रीया बयान फ़रमाते हैं : बेशक अल्लाह के कुछ फ़रिश्ते (इस काम पर) है कि जो (दुनिया की मज्लिसों में और मुसलमानों के आस-पास) घूमते रहते हैं और मेरी उम्मत के (दरूद) सलाम मेरे पास पहुँचाते रहते हैं।

12. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : (एक मर्तबा) जिब्रील अ़लै0 से मेरी मुलाक़ात हुयी तो उन्होंने खुशख़बरी सुनाई और कहा - आप का रब फ़रमाता है कि जो शख़्स आप पर दरूद भेजेगा मैं (उस पर अपनी) ख़ास रहमत नाज़िल करूँगा, और जो आप पर सलाम भेजेगा मैं उस पर ख़ास सलामती नाज़िल करूँगा, तो इस पर मैं ने अल्लाह के सामने शुक्र का सज्दा अदा किया।

13. एक और हदीस मे आया है कि हज़रत उबय्यि बिन क-अ़ब रज़ि0 ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा : ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ! मैंने ज़िक्र और दुआ़ का (अपना तमाम समय) आप पर दरूद पढ़ने के लिये ही ख़ास कर दिया है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तब तो तुम्हारी तमाम कठिनाइयाँ सरल (और ज़रूरतें पूरी) हो जायेंगी, और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ हो जायेंगे ----।

14 हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजेगा अल्लाह पाक उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमायेंगे।

15. हदीस शरीफ़ में आया है कि एक दिन नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये तो आप के चेहरे से

खुशी ज़ाहिर हो रही थी, आप ने फ़रमाया : मेरे पास (अभी-अभी) जिब्रील आये और कहा : आप के रब ने फ़रमाया है - ऐ मुहम्मद! क्या तुम इस बशारत से प्रसन्न न होंगे कि तुम्हारी उम्मत में से जो शख़्स भी तुम पर एक मर्तबा दरूद भेजेगा मैं उस पर दस बार रहमतें नाज़िल करूँगा। और तुम्हारी उम्मत में से जो शख़्स भी तुम पर एक मर्तबा सलाम भेजेगा तो मैं दो मर्तबा उस पर सलामती नाज़िल करूँगा।

16. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजता है अल्लाह उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं और दस नेकियाँ लिख दी जाती हैं, और दस गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं, और दस दर्जे बुलन्द कर दिये जाते हैं।

17. हदीस शरीफ़ में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाय : जो शख़्स नबी पर एक मर्तबा दरूद भेजता है अल्लाह पाक और उस के फ़रिश्ते उस पर सत्तर मर्तबा रहमतें (और रहमत की दुआयें) भेजते हैं।

18) हज़रत अ़ली रज़ि0 फ़रमाते हैं हर दुआ (अल्लाह के दरबार तक पहुँचने से) रुकी रहती है यहाँ तक कि (दुआ करने वाला) नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर और आप की आल पर दरूद भेजता है (तब अल्लाह के दरबार तक पहुँचती और क़बूल होती है)

19) हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 से रिवायत है कि हर दुआ

नोट - सलात- सलाम की कैफ़ियत (यानी) अल्फ़ाज़ और तरीक़े इस से पहले पृष्ठ पर बयान किये जा चुके हैं।

आसमान और ज़मीन के दर्मियान रुकी रहती है (अल्लाह पाक तक) उस का कोई हिस्सा भी नहीं पहुँचता, यहाँ तक कि तुम अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद भेजो (तब वह दुआ अल्लाह के सामने पेश होती और मक़बूल होती है)

20) शैख़ अबू सुलेमान दारानी (अब्दुर्रहमान शामी-वफ़ात 214 हि०) रह० ने फ़रमाया : जब तुम अल्लाह तआ़ला से अपनी किसी हाजत की दुआ माँगो तो उस से पहले अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दरूद-सलाम भेजो, फिर जो चाहे दुआ माँगो, और आख़िर में दरूद-सलाम भेजो (यानी हर दुआ के आख़िर में दरूद-सलाम ज़रूर पढ़ो) इसलिये कि अल्लाह तआ़ला (वादा के मुताबिक़) अपने करम से उन दोनों दरूदों को तो क़बूल फ़रमायेंगे ही, और उन की मेहरबानी से यह दूर है कि वह उन के दर्मियान की दुआ को छोड़ दे (और क़बूल न करें)

★

सलात -सलाम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ
وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى
مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ كُلَّمَا ذَكَرَهُ
الذَّاكِرُوْنَ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْهِ كُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ
وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मु-हम्मदिनंव्व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा सल्ले-त अ़ला इब्राही-म वअ़ला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+अल्लाहुम्म बारिक् अ़ला मु-हम्मदिंव्व-अ़ला आलि मु-हम्मदिन् कमा बा-रक्-त अ़ला इब्राही-म व-अ़ला आले इब्राही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद+अल्लाहुम्म सल्लि अ़लैहि कुल्लमा ज़-क-रहुज़्ज़ाकिरि-न+अल्लाहुम्म सल्लि अ़लैहि कुल्लमा ग़फ़-ल अ़न् ज़िक्रिहिल् ग़ाफ़िलू-न व-सल्लिम् तसली-मन् कसी-रन्

तर्जुमा - "ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने इब्राहीम (अ़लै०) पर और इब्राहीम (अ़लै०) की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमायी, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ बुज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर और उन की आल पर बर्कतें नाज़िल फ़रमा, जैसे तू ने इब्राहीम (अ़लै०) पर और

इब्राहीम (अ़लै0) की आल पर बर्कतें नाज़िल फ़रमायी, बेशक तू ही तारीफ़ के लायक़ बज़ुर्ग है। ऐ अल्लाह! तू नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर उस समय तक रहमतें नाज़िल फ़रमा जब तक कि उन का ज़िक्र करने वाले ज़िक्र करते रहें। और ऐ अल्लाह! तू नबी करीम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ऊपर उस समय तक रहमतें नाज़िल फ़रमा जब तक कि उन की याद से ग़ाफ़िल रहने वाले ग़ाफ़िल रहें- और बहुत-बहुत सलाम भेजे।

★

दुआ़

اَللّٰهُمَّ بِحَقِّهٖ عِنْدَكَ ارْفَعْ عَنِ الْخَلْقِ مَا نَزَلَ بِهِمْ وَلَا تُسَلِّطْ
عَلَيْهِمْ مَنْ لَّا يَرْحَمُهُمْ فَقَدْ حَلَّ بِهِمْ مَا لَا يَرْفَعُهٗ غَيْرُكَ
وَلَا يَدْفَعُهٗ سِوَاكَ، اَللّٰهُمَّ فَرِّجْ عَنَّا يَا كَرِيْمُ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

अल्लाहुम्म बि-हक्क़िही अि़न्-द-कर्-फ़अ़् अ़निल् ख़ल्क़ि मा न-ज़-ल बिहिम्, वला तु-सल्लित् अ़लैहिम् मन् ला यर्-हमुहुम्, फ़-क़द् हल्ल बिहिम् मा ला यर्-फ़अ़ुहू ग़ैरु-क वला यद्-फ़अ़ुहू सिवा-क, अल्लाहुम्म फ़र्रिज् अ़न्ना या करीमु, या अर्-ह-मर्राहि मी-न+

तर्जुमा – "ऐ अल्लाह! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के उस के हक़ के तुफ़ैल में, जो तेरे दरबार में उन का है तू (अपनी) मख़्लूक़ से उस मुसीबत को दूर कर दे जिस में वह गिरफ़्तार हैं, और तू उन पर ऐसा हाकिम मुसल्लत न फ़रमा जो उन पर रहम न करे, इसलिये कि मख़्लूक़ पर (इस वक़्त) ऐसी मुसीबत पड़ी है जिस को न तेरे सिवा कोई उठा सकता है, न दूर कर सकता है। मेरे मौला! तू हमारी मुसीबत दूर कर दे, ऐ बहुत-बहुत करम करने वाले, ऐ सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाले!

★★★★★